॥ श्री गोवर्धननाथो विजयते ॥

पुष्टिमार्गीय कीर्तन संग्रह

खण्ड - १ (प्रथम)

वर्षोत्सव के पद

(जन्माष्टमी से रास पर्यन्त)

अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य जगद्गुरु श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्यजी

-:: प्रकाशक :: -

वैष्णव मित्र मंडल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर

अनुक्रमणिका

वर्षोत्सव के पद (खंड प्रथम)

कीर्तन संग्रह

जन्माष्टमी की बधाई के पद

■ राग देवगंधार

■ राग देवगंधार

■ राग देवगंधार

■ राग भैरव

■ राग रामकली

■ राग बिलावल

■ राग आसावरी

■ राग आसावरी

■ राग धनाश्री

■ राग जेतश्री

■ राग सारंग

■ राग नट

■ राग मल्हार

■ राग काफी

■ राग देश

■ राग गोरी

■ राग जैजैवंती

नाल छेदन के पद

छठी के पद

पूतना वध के पद

पलना के पद

■ राग आसावरी

चंदन के पलना के पद

■ राग देवगंधार

■ राग टोडी

फूल के पलन के पद

■ राग आसावरी

■ राग आसावरी

कुल्हे के पद

■ राग रामकली

■ राग आसावरी

जोगी लीला के पद

ढाढी के पद

■ राग धनाश्री

■ राग धनाश्री

■ राग धनाश्री

■ राग परज

■ राग जेतश्री

■ राग सारंग

■ राग काफी

■ राग मारू

ढाढी के पद

■ राग बिलावल

■ राग देश

■ राग ईमन

■ राग बिलावल

■ राग आसावरी

■ राग आसावरी

■ राग जेतश्री

■ राग धनाश्री

बाल लीला के पद

■ राग धनाश्री

■ राग टोडी

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग नट

■ राग पूर्वी

■ राग गोरी

■ राग ईमन

■ राग कान्हरो

■ राग कान्हरो

■ राग केदारो

■ राग बिहाग

शकटासुर वध लीला के पद

■ राग बिलावल

तृणावर्त वध लीला के पद

■ राग बिलावल

■ राग सूहो

दावानल पान लीला के पद

■ राग केदारो

■ राग बिलावल

■ राग नट

श्री चंद्रावलीजी की बधाई (भाद्रपद सुद ५)

■ राग सारंग

ललिताजी की बधाई

श्री बलदाऊजी की बधाई के पद
(भाद्रपद सुद छट्ठ)

■ राग सारंग

विशाखाजी की बधाई
(भाद्रपद सुद सातम)

■ राग सारंग

श्री राधाजी की बधाई के पद
(भाद्रपद सुद ८ आठम)

■ राग देवगंधार

■ राग खट

■ राग भैरव

■ राग रामकली

■ राग बिलावल

■ राग बिलावल

■ राग आसावरी

■ राग धनाश्री

■ राग जेतश्री

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग सारंग

श्री राधाजी के पलना के पद

श्री राधा जी के ढाढी के पद

श्री राधाजी के बाललीला के पद

श्री नवनागरी के पद

श्री वामन जयंती के पद (भाद्रपद सुद १२)

■ राग धनाश्री

■ राग सारंग

दान के पद

(भाद्रपद सुद ११ थी भाद्रपद वद अमास)

■ राग देवगंधार

■ राग देवगंधार

■ राग बिभास

■ राग मालकौंस

■ राग ललित

दान लीला के पद

■ राग बिलावल

■ राग बिलावल

■ राग बिलावल

■ राग आसावरी

दान के पद

■ राग आसावरी

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग नट

■ राग सारंग

■ राग नट

■ राग पूर्वी

■ राग गोरी

■ राग पीलु

■ राग जैजैवंती

■ राग श्याम कल्याण

■ राग कल्याण

■ राग अडानो

■ राग कान्हरो

■ राग केदारो

■ राग बिहागरो

श्री रामचन्द्रजी के करखा के पद

(आसो सुद १ थी सुद ९ सांझे भोग आरती वखते गावानां)

नव विलास के पद
(आसो सुद १ थी सुद ९)

दश उल्लास के पद

देवी पूजन के पद
(आसो सुद १ थी सुद ९)

दशहरा के पद (आसो सुद दसम)

भोग सरायवे के पद

दशहरा मान के पद

दशहरा के दूसरे दिन मंगला के पद

रास के पद

■ राग टोडी

■ राग खट

■ राग श्रीराग

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग सारंग

■ राग पूर्वी

■ राग मालव

■ राग सोरठ

■ राग श्री

■ राग गौरी

■ राग गौरी

■ राग हमीर

■ राग नायकी

■ राग रायसो

■ राग कल्याण

■ राग जेजेवंती

■ राग ईमन

॥ अथ जन्माष्टमी बधाई ॥

★ राग देवगंधार ★ व्रज भयो महरिकैं पूत जब यह बात सुनी ॥ सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गणित गुनी ॥ व्रज पूरव पूरे पुन्य रूपी कुल सुथिर थुनी ॥ ग्रह लग्न नक्षत्र बलि सोधि कीनी वेद धुनी ॥१॥ सुनि धाईं सब व्रजनारि सहज सिंगार कियें ॥ तन पहरें नौतन चीर काजर नैन दियें ॥ कसि कंचुकी तिलक लिलाट शोभित हार हियें कर कंकण कंचन थार मंगल साज लियें ॥२॥ वे अपने अपने मेल निकसीं भांति भलीं ॥ मानों लाल मुनिनकी पांति पिंजरन चूर चलीं ॥ वे गावें मंगलगीत मिलि दश पांच अलीं ॥ मानों भोर भयौ रवि देखि फूली कमल कलीं ॥३॥ उर अंचल उड़त न जान्यौ सारी सुरंग सुहीं ॥ मुख मांड्यो रोरी रंग सेंदुर मांग छुहीं ॥ श्रम श्रवनन तरल तरौना बेनी शिथिल गुहीं ॥ शिर बरषत कुसुम सुदेश मानो मेघ फुहीं ॥४॥ पीय पहलें पौहोंचीं जाय अति आनंद भरीं ॥ लई भीतर भवन बुलाय सब शिशु पाँय परीं ॥ एक बदन उघारि निहारत देत असीस खरी ॥ चिरजीयौ यशोदानंद पूरन काम करी ॥५॥ धन्य धन्य दिवस धन्य रात्र धन्य यह पहर घरी ॥ धन्य धन्य महरिजूकी कूँख भागि सुहाग भरी ॥ जिन जायो एसौ पूत सब सुख फलन फरी ॥ थिर थाप्यो सब परिवार मनकी शूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लिये ॥ गुहि गुंजा घसि वनधातु अँग अँग चित्र ठये ॥ शिर दधि माखनके माँट गावत गीत नये ॥ संग झांझ मृदंग बजावत सब नंद भवन गये ॥७॥ एक नाचत करत कुलाहल छिरकत हरद दही ॥ मानों बरखत भादोंमास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित्त जाय कौतक तहीं तहीं ॥ रस आनंद मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥८॥ एक धाय नंदजूपै जाय पुनि पुनि पाँय परैं ॥ एक आप आपुहिं माँझ हँसि हँसि अंक भरैं ॥ एक अंबर सबही उतारि देत निशंक खरैं ॥ एक दधिरोचन ओर दूब सबनके शीश धरैं ॥९॥ तब नंद न्हाय भये ठाड़े अरु कुश हाथ धरैं ॥ नांदीमुख पितर पुजाय अंतर सोच हरैं ॥ घसि चंदन चारू मँगाय विप्रन तिलक करैं ॥ वर गुरुजन द्विजन पहराय सबनके पाँय परैं ॥१०॥ गन गैया गिनी न जाय तरुन सुवच्छ बढ़ी ॥ निन

चरैं यमुनाजूके काछ दूने दूध चढ़ी ।। खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग मढ़ी ।। ते दीनी द्विजन अनेक हरखि असीस पढ़ी ।।११।। तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिये ।। मथि मृगमद मलय कपूर माथें तिलक किये ।। उर मणिमाला पहराय बसन विचित्र दिये ।। मानों बरषत मास अषाढ दादुर मोर जिये ।।१२।। वर बंदी मागध सूत आंगन भवन भरै ।। ते बोलें लै लै नाम हित कोऊ ना बिसरै ।। जिन जो जाँच्यौ सो दीनी रस नंदराय ढरै ।। अति दान मान परधान पूरन काम करै ।।१३।। तब रोहिनी अंबर मंगाय सारी सुरंग घनी ।। ते दीन बधून बुलाय जैसी जाय बनी ।। वे अति आनंदित बहोरि निज गृह गोप धनी।। मिलि निकसीं देत असीस रुचि अपुनी अपुनी ।।१४।। तब घरघर भेरि मृदंग पटह निसान बजे ।। वर बांधी वंदनमाल अरु ध्वज कलश सजे ।। तब ता दिनतें वे लोग सुख संपति न तजे ।। सुनि सूर सबनकी यह गति जे हरि चरन भजे ।।१५।।

★ राग देवगंधार ★ आज बन कोऊ वह जिन जाय ।। सब गायन बछरन समेत घर लावौ चित्र बनाय ।।१।। ढोटा हो व्रज भयौ रायजूकें कहत सुनाय सुनाय ।। चहुँ दिश घोष यही कोलाहल उर आनंद न समाय ।।२।। कितही विलंब करत बिन काजैं वेगि चलौ उठि धाय ।। अपने अपने मनके चीते नैनन देखौ आय ।।३।। एक फिरत दधि दूब देत है एक रहत गहि पाय ।। एक वसन पट देत बधाई एक उठत हँसि गाय ।।४।। बाल विरध नर नारिनके मन भये चौगुने चाय ।। सूरदास प्रमुदित ब्रजवासी गिनत न राजा राय ।।५।।

★ राग देवगंधार ★ नैनभर देखौं नंद कुमार ।। जसुमति कूँख चंद्रमा प्रगट्यौ या व्रजको उजियार ।।१।। बन जिन जाऊ आज कोऊ गो सुत गाय गुवार ।। अपने अपने भेष सबै मिलि लावौ विविध सिंगार ।।२।। हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम मंडित करो दुवार ।। पूरो चौक विविध मुक्ताफल गावौ मंगलचार।।३।। चहुँ वेदधुनि करत महामुनि होत नछत्र बिचार ।। उदय पुन्यको पुंज साँवरो सकल सिद्धि दातार ।।४।। गोकुलवधू निरखि आनंदित सुंदरताकौ सार ।। दास चतुर्भुज प्रभु सब सुखनिधि गिरिधर प्रान अधार ।।५।।

★ राग देवगंधार ★ यह सुख देखौ री तुम माई ॥ बरसगांठि गिरिधरनलालकी बहोरि कुशलसों आई ॥१॥ आगमके दिन नीके लागत उर सुख लहरि उठाई॥ ऐसी बात कहत ब्रजसुंदरि अपुअपुने मन भाई ॥२॥ फिरि हँसि लेत बलाय कूंखिकी जिहिं जन्में जू कन्हाई ॥ तुमारें पुत्र भयो नंदरानी सब तन तपत बुझाई ॥३॥ नंदकुमार सकल या ब्रजमें आनंद वेलि बढ़ाई ॥ श्री विट्ठलगिरिधर पूरननिधि सबहिन भूखें पाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ जन्म फल मानत यशोदा माय ॥ जब नंदलाल धूरि धूसरबपु रहत कंठ लपटाय ॥१॥ गोद बैठि गहि चिबुक मनोहर बातें कहत तुतराय ॥ अति आनंद प्रेम पुलकित तन मुख चुंबत न अघाय ॥२॥ आरति चित्त विलोकि बदनविधु पुनिपुनि लेत बलाय ॥ परमानंद मोद छिनछिन कौ मोपै कह्यो न जाय ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ आज ग्रह नंदमहरकैं बधाई ॥ प्रातसमैं मोहन मुख निरखत कोटि चंद छबि छाई ॥१॥ मिलि ब्रजनारी मंगल गावत नंदभवन में आई ॥ देत असीस जीयौ जसुमतिसुत कोटिक बरस कन्हाई ॥२॥ नित आनंद बढ़त वृन्दावन उपमा कही न जाई ॥ सूरदास धन्य धन्य नंदरानी देखत नैन सिराई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ नंदमहरकैं आज बधाई ॥ जसुमति उदर नवल विधु प्रगट्यौ सकल कला सुखदाई ॥१॥ नाचत सब मिलि करत कुलाहल आनंद मंगल गाई ॥ ब्रजजन देत विविध पटभूषन फूले अंग न माई ॥२॥ आंगन मोतिन चौक पुरावत बंदनबार बंधाई ॥ निरखि हरखि गोविंद मगन मन बहोत न्यौछावरि पाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ सामरो मंगल रूप निधान ॥ जा दिनतें हरि गोकुल प्रगटे दिन दिन होत कल्यान ॥१॥ बैठी रहौं श्याम गुन सुमरौं रैन दिना सब याम॥ श्रीभटके प्रभु नैन भर देखौं पीतांबर घनश्याम ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ आज ब्रज भयौ सकल आनंद ॥ नंदमहर घर ढोटा जायौ

पूरन परमानंद ॥१॥ मंगल कलश विराजत द्वारैं गावत गीत अमंद ॥ नाचत तरुनी और गोप सब प्रगटे गोकुलचंद ॥२॥ विविध भांति बाजे बाजत हैं निगम पढ़त द्विज छंद ॥ छिरकत दूध दही घृत माखन प्रफुलित मुख अरविंद ॥३॥ देत दान व्रजराज मगन मन फूले अंग न माई ॥ देत असीस जियौ जसुमतिसुत गोविंद बलि वलि जाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ आज गोकुलमें बजत बधाई ॥ नंदमहरकैं पुत्र भयौ है आनंदमंगल गाई ॥१॥ गाम गामतें जाति आपनी घर घरतें सब आई ॥ उदय भयौ जादौं कुलदीपक आनंद की निधि छाई ॥२॥ हरदी तेल फुलेल अच्छत दधि बंदनवार वंधाई ॥ नंदीसुर नंदराय घरनि घर सबहिन देत बधाई ॥३॥ आज लालकौ जन्मद्यौस है मंगलचार सुहाई ॥ परमानंददासकौ जीवन तीन लोक सचुपाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ व्रजमें फले फिरत अहीर ॥ ढोटा भयौ नंदबाबाकें सुखनिधि श्यामशरीर ॥१॥ मंगल कलश दूध दधि अच्छत बेद पढ़त द्विज धीर ॥ मांगन ग्वाल बधाई आये दिये यशोदा चीर ॥२॥ फूले नंदराय पहरावत छिरकत कुमकुम नीर ॥ परमानंददासको ठाकुर प्रगट्यो जादौंवीर ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ व्रज में घरघर बजत बधाई ॥ नंदमहरकैं पुत्र भयो री जाकौ नाम कन्हाई ॥१॥ ज्ञातिकर्म करि रीति जुगतिसों नालकपीड़ बनाई॥ अधिक दान दियो विप्रनकौं अनधन द्रव्य अघाई ॥२॥ बहनि सुवासिन याचन आई देहौं वीर बधाई ॥ तेरे घर अवतार लियो है आपुन त्रिभुवनराई ॥३॥ एकनकौं सारी पहरावत एकनकौं पटचीर ॥ एकनकौं गढ दान देत है विप्रन कंचन हीर ॥४॥ याचक जन मिलि याचन आये गावत नंददुवार ॥ एतौ धन देओ तुम हमकों जो नीको होय हमार ॥५॥ हरख्यौ गोकुल गाम सब हरखे हरखे सुरनर नारी ॥ माधोदास भक्त सब हरखे हरखी जसुमति महतारी ॥६॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू सुख पायौ सुत जाय ॥ बड़ेडे गोपवधूरानीके हँसि हँसि लागत पाय ॥१॥ पौढ़ी महरि गोद लै ढोटा आछी सेज बिछाय ॥ बोलि लिये ब्रजराज सबन मिलि सुत मुख देखौ आय ॥२॥ जे जे बदन वदी तुम हमसों ते सब देहु चुकाय ॥ ताते लेहु चौगनौ हमपै कहत जात मुसिकाय ॥३॥ हमतो पिया बहोत धन पायौ चिरजीयौ दोऊ भाय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन लाड़िलौ तुम बाबा मैं माय ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ सखीरी काहेकौं गहरु लगावति ॥ सबकोऊ ऐसौ सुख सुनिकैं क्यों नाहिन उठि आवति ॥१॥ आज सो बात विधाता कीनी जो जाके मन भावति ॥ सुतको जन्म यशोदाके गृह तहाँ लगि तोहि बुलावत ॥२॥ दधि रोचन भरि वेगि चलो मिलि कनक थार कर लावति ॥ साँचेहु सुत भयौ नंदकें तोहि नहीं बौरावति ॥३॥ अंचल उड़त शिथिल अलकावलि सुमन सुधा बरषावत ॥ सूरदास शोभित ते अवसर जहाँ तहाँतैं उठि धावत ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू जायौ पूत सुलच्छन ॥ विप्रन दान दिये मनि कंचन वधूवनकों पट दच्छन ॥१॥ जन्मत गयौ घोषको नसिकैं सब संताप ततच्छन॥ सूरदास प्रभु प्रगट भयेहैं निज दासनके रच्छन ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ आज अति बाढ्यौ है अनुराग ॥ पूत भयौरी नंदमहरकैं बड़ीबैस बड़भाग ॥१॥ दई सुवच्छ लच्छ द्वै गैया नंद बढ़ायौ ताग ॥ गुनी गणक बंदीजन मागध पायौ अपनौ लाग ॥२॥ फूले ग्वाल मानों रणजीते आनंद फूलै बाग ॥ हरद दूध दधि माखन छिरकैं मच्यौ भदैया फाग ॥३॥ गोपी गोप ओप सबके मुख गावत मंगलराग ॥ परमानंददास भक्तनकौ अब भयौ परम सुहाग ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ आज नंदराय कैं पूत भयौ ॥ करौ बधायौ मनकौ भायौ उरको शूल गयौ ॥१॥ मंगलचार करत भवननमें आई सकल ब्रजबाल ॥ गावत आये गीत गोप सब नाचत आये ग्वाल ॥२॥ लैत बलाय रानी रायजूकी वारत मोतिन माल ॥ हम निजकरि बसैं या ब्रजमैं किये तुमारे लाल ॥३॥

जा दिनको करि रहे मनोरथ सो दिन क्यौंहू पायौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरसे ढोटा अब विधि भाग बढायौ ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ नंदरायकें नवनिधि आई ॥ माथें मुकुट श्रवन मणि कुंडल पीत बसन अरु चारि भुजाई ॥१॥ बाजत बीन मृदंग शंख धुनि घसि अरगजा अंग चढ़ाई ॥ दधि पीवत और चंदन छिरकत रपटि परत हैं लैत उठाई ॥२॥ अच्छत दूब लिये चढ़ बड़े द्वारन बंदनमाल वंधाई ॥ सूरदास सब मिले परस्पर दान देत नंद मन न अघाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू सब ब्रज न्यौति बुलायौ आवत जात रहें नर नारी कैसो लगत सुहायौ ॥१॥ बाजे संग सकल गोपिन के ग्वाल लियैं कर थारी ॥ अति आनंद सबै मिलि गावत कीये रुचिर सिंगारी ॥२॥ तिलक करत लालन बलिजूकौं मांडत हैं सिंघ द्वार ॥ भीतर आय देहरी मांडत जहाँ भये नंदकुमार ॥३॥ जसुमति बैठि रहसि हँसि बोलत भलें भलें तुम आई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल की बरसगांठि अब होऊ बधाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति फूली फूली डोलति ॥ अति आनंद रहत सगरौ दिन हँसि हँसि सबसों बोलति ॥१॥ मंगल गाय उठति अति रससौं अपने मनको भायौ ॥ विहँसि कहति देखौ ब्रज सुंदरि कैसो लगत सुहायौ ॥२॥ भाँति भाँति गजमोतिनके गृह आछे चौक पुराये ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनलाल ते सबकी असीसन पाये ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ फूले गोप ग्वाल ब्रज राय ॥ जायौ पूत नंदजूकी रानी आनंद उर न समाय ॥१॥ आछी आछी गाय सिंगारी दीनी द्विजन बुलाय ॥ मनिमाला बस्तर पहराये हँसि हँसि पकरे पाय ॥२॥ बैठे जुरे नंदगृह आंगन शोभा कही न जाय ॥ अति रसभरी उमगि व्रज सुंदरि सबै उठति मिलि गाय ॥३॥ हरद दूब अच्छत रोरीसौं मांडत डोलत द्वार ॥ श्री विट्ठलयशोदाके नंदन गोकुल प्राणआधार ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ फूलि अति बैठें हैं ब्रजराज ॥ फूले कहत सकल ब्रजवासी

जन्म सुफल भयौ आज ॥१॥ देखि देखि मुख कमलनयनको आनंद उर न समाई ॥ फिरि फिरि देत बधाई मगन भये सबहिनकौं नंदराई ॥२॥ डोलत फिरत नंदगृह आंगन अति आनंद भरे ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरके देखत मन उल्लास करे ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति अति आनंदसौं गावति ॥ लेत नाम गिरिधरनलाल सुखकी बेलि बढावति ॥१॥ आपुसमैं जो नंदजुकी रानी हँसि हँसि सबन बुलावति । यह दिन बरसगांठिको क्योंहूं सबके पुन्यन पावति ॥२॥ देखि देखि मुख सुत अपनेको अनगिनति सब बारति ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनलालपै गायन दान दिवावति ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ भयौ व्रजराज महरकैपूत ॥ लै लै नाम बुलावत गावत आवौ सकल संयूत ॥१॥ यह सुनि स्त्रवण सबै उठि धाये अति आनंद भरे ॥ सुंदर दूब अक्षत भरि दीये कुमकुम साथिये धरे ॥२॥ नाचत ग्वाल करत कुलाहल मंगलचार करैं ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर प्रगटे ते सब सुखते न टरैं ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू उरके शूल मिटाये ॥ पाँयन परति सकल व्रजसुंदरि जिन जाय कुमार दिखाये ॥१॥ कौन कौनकी पूजा कीनी किहिं किहिं जतनन पाये । ऐसौ सुत तुमहीने जायौ सुकृत आड़े आये ॥२॥ चिरजीयौ दिन बढौ चौगनो सदाई तुम हुलरायौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालकौ नितही मंगल गायौ ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति तिहारी कूखि सिहाई ॥ जो वारैं सो थोरौ लागत जनमे कुंवर कन्हाई ॥१॥ ये दिन बरसगांठिके आये नित नित लागत नीकौ॥ अति आनंद चहूं दिसि देखियत सुख उपजत अति जीकौ ॥२॥ चाहत फिरत सकल व्रजबासी गोपवधू नंदराई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालको मुख चूंबत न अघाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ आज नंदरायके परम बधायौ ॥ बाढ्यौ भाग सुहाग सबनको महरि यशोदा जायौ ॥१॥ झुंडन आवत मंगल गावत सुभग सिंगार

किये ॥ सुख आनंद चंद बरषाये प्रफुलित होत हिये ॥२॥ लेत्त बलाय राय रानीकी जात सबै बलिहार ॥ धरति संभारि सुधारि साथिये बांधति वंदनवार ॥३॥ छिरकत हरद दहि नारी सब नाचत किलकत ग्वाल ॥ लाज उघारैं तन न संभारै और नाचत व्रजवाल ॥४॥ बांह उठाय कहत सुख पाये पूजे काम हमारे ॥ श्रीविट्ठलगिरिधारी प्रगटे रायजू पुन्य तिहारे ॥५॥

★ राग देवगंधार ★ गोकुल प्रगटे भये हरि आय ॥ अधम उधारन असुर संहारन अंतरजामी त्रिभुवनराय ॥१॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ पुलकि गात उरमैं न समाय ॥ गदगद कंठ बोल नहीं आवै हरषवंत व्है नंद बुलाय ॥२॥ अब हो कंत दैव परसन भयौ पुत्र भयौ देखौ मुख आय ॥ दौरि नंद जब सुतमुख देख्यौ सो सुख शोभा बरनी न जाय ॥ ३॥ जब वर पायौ तब घर आयौ आनंद मगन व्है बजी बधाय ॥ सूरदास पहले यह मांग्यौ दूध पिवावत जसुमति माय ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ डोलत अति फूले सब ग्वाल ॥ करि करि चाऊ सिंगारत गायन भयौ नंदके लाल ॥१॥ फिरि फिरि आय नंदग्रह आंगन गहत महरिकै पाय ॥ भलौ पूत जायौ नंदरानी गोकुलकौं सुखदाय ॥२॥ देत बधाई विनु मर्यादा जो जाके मन भाय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन देखिकैं आनंद उर न समाय ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू धन्य जनम है आज ॥ ढोटा भयौ सुनतही स्रवनन फूलि गये व्रजराज ॥१॥ धनि धनि गोप ग्वाल धनि गोकुल धन्य सकल व्रजनारी ॥ पूरी मन कामना हमारी सुंदर बदन निहारी ॥२॥ ऐसी कोऊ करै नहिं रानी तुम बिनु पूरन बात । श्री विट्ठलगिरिधरनलाल मुख सबकोऊ देखि सिहात ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू तुम ऐसौ सुत जायौ ॥ जाके प्रगटतही या व्रजमैं गृह गृह सब सुख पायौ ॥१॥ गोपी ग्वाल गाय बछरा सब कोऊ लगत सुहायौ ॥ नंदराय एकजात सबनकौं पाटंबर पहरायौ ॥२॥ दूने चाय उठत

उर अंतर सबहिन मंगल गायौ ॥ श्री विठ्ठलगिरिधर मुख देखत जीवन सुफल करायौ ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ विधाता यह दिन वेगि दिखायौ ॥ जो दिनको सबकोऊ लोचतहै नंदरानी सुत जायौ ॥१॥ जसुमति या ढोटाके लीये कहा देव तुम धायौ ॥ वैगिही भई कूखि तुम सनमुख मनको चीत्यौ पायौ ॥२॥ फिरि फिरि रहसि सकल व्रजसुंदर वारति आपु मनभायौ ॥ श्री विठ्ठलगिरिधरनलालने उर सुख वोहोत जनायौ ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ नंदरानी बडे भाग तिहारे ॥ जाकी कूखि भयौ ऐसौ सुत जीवन प्रान हमारे ॥१॥ कहा कहूँ या सुखकी बातें उठत चौगुने चाय ॥ सब मिलि हम तुमहीपैं आवति फिरि फिरि पकरत पाय ॥२॥ अपने अपने मनको चीत्यौ करत सकल व्रजनारी ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन लाल पर पानी पीवत वारी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू भले काम तुम कीने ॥ हँसि हँसि कहत सकल व्रज सुंदरि जाय पूत सुख दीने ॥१॥ हम यह नई सुन सुन व्रजरानी मन अभिलाष पुजायौ ॥ तुम पर कहा कहा हम वारैं सुंदर बदन दिखायौ ॥२॥ एसेई कौतूहल दिनदिन होउ सदा यह आंगन ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल ये अपने कुलके मांडन ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू सारन कूखि तुमारी ॥ ऐसे लाल भये तोमेंते जीवन मूरि हमारी ॥१॥ सबहिन रोमरोम सुख पायौ तुमारे ढोटा जाये ॥ दूनी जौति चढी धरघरपै सुंदर लागत गाये ॥२॥ गावत फिरत सकल व्रजवासी माथे दूव चढ़ाये ॥ श्री विठ्ठलगिरिधरनलालके आवत लोग बधाये ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ भये अव पूरन भाग तुमारे ॥ बड्डे गोप कहत नंद आगे जीवन धन्य हमारे ॥१॥ बोहोत दिनन के सोच जिते हैं ते सब भूले आज ॥ दोऊ सुत लाये सुख देखौ अटल रहो व्रजराज ॥२॥ सब द्विज वेद पढ़त ढिंग बैठे तिनके पूजत पाय ॥ मुदरी रतन जटित मनिमाला वसन देत पहराय ॥३॥

पुत्र जन्मतैं अति हुलसे व्रजराज दान बहु देत ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनलाल कौं असीस सबनकी लेत ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ सुनतही गृहगृहतैं उठि धाँई ॥ बरसगांठि आई लालनकी सब फूलत न अघाँई ॥१॥ फूलत अति आनंद नंद सब फूलत जसुमति माई ॥ फूलत कुमरि भान सब फूलत आये रहसि बधाई ॥२॥ फूलत गोपवधू मुख निरखत आवत झुंड बनाई ॥ चंद्रावलि व्रजमंगल रोहिणी आदर लेत बुलाई ॥३॥ सब सुख भरी कूखि जसुमतिकी ताकी लेति बलाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरको सोहिलो पैयत देव मनाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ रायजूके ढोटा भयो सुनि चली व्रजनारी ॥ काजर नैन सुहाग माँग भरि कुमकुम खोरि सँभारी ॥१॥ मनमें निधरक भई तिहूँ छिन गावत गीत उछारि ॥ अप अपने भवननते निकसीं वेगि वेगि पगधार ॥२॥ मंगलथार जटित रतननके शोभित हाथ धरैं ॥ फूले बदन रौम रौम सब फूले आनंद हियो भरैं ॥३॥ आई भवन करत कुतूहल देखो भाव उघारी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर नंदरानी तुम जने हमें सुखकारी ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ ऐसौ माई बहुरि वहौ दिन आयौ ॥ नंदराय चलै न्यौतनको सब व्रज होत बधायो ॥१॥ तिलक आरती करति यशोमति सबहिनपै तिलक करावैं ॥ बरसगांठिके मंगल आछे प्रेम भरी सब गावैं ॥२॥ गोद लाल दोऊ इत उत्त सब आगें बाजे बाजें ॥ गावत नाचत सुघर सुनावत नई नई भांतिन साजैं ॥३॥ निकसे रथन जुराय महर सब मन प्रफुलित सुख पावैं । श्रीविट्ठलगिरिधरनलालकूं आगे लैंन सब आवैं ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ ललनकौं गृहगृहकी लै धावैं ॥ गजमोतिनके चौकन ऊपर अमोल पामड़े बिछावैं ॥१॥ भाये मनोरथ करत सबै मिलि देखिदेखि हीयो सिरावै ॥ चिनि चिनि बस्तर रतनन आभूषन रचिरचिकें पहरावैं ॥२॥ अति सुगंध सोंधो लै लै कर अपने हाथ लगावैं ॥ श्री विट्ठलगिरिधरन कुंवरको नई नई रीति सिखावैं ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति तुमारौ पूरन भाग ॥ बरसगांठिके सब व्रज सुंदरि भीजि रही अनुराग ॥१॥ जसुमति गावति और सुख पावति संग लिये व्रजबाल ॥ सबन मनोरथ पूज बढ़ाये रायनंदजूके लाल ॥२॥ रोमरोम प्रफुलित नंदरानी सुंदर वदन फुलाये ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरकी मैया मेवन गोद भराये॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू गावति प्रेम भरी ॥ बैठी शोभित भवन भीरसौं प्रफुलित होत खरी ॥१॥ अति आनंद कहत फिरि फिरि मुख विधि ऐसी जो करी ॥ बरसगांठिके उदित उछाहन और सब सुधि बिसरी ॥२॥ करि नौछावरि लेत बलायन रानीकी सगरी ॥ श्री विट्ठलगिरिधरन हमारी धीरज आई धरी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू सब आनंद उर खोलै ॥ अपने भाग्य भरे मंदिरमें गावति गावति डोलै ॥१॥ गोद लाल अंगुरिसों बलिजू पाछें आय गये नंदराय॥ बरजत सबन सुवन सुनत दुरि आपु नखत रानीके भाय ॥२॥ दुर्लभ वाव करी विधि हमसौं विहसत कहत बुलाय ॥ श्री विट्ठलगिरिधरन गोद दै जसुमति रही सकुचाय ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू यह दिन लगत सुहायौ ॥ जै दिन चिंतत रहै उर अंतर आज करत मन भायौ ॥१॥ कहत न बनैं कछू या सुख की प्रेम मगन सब गावैं ॥ कहि कहि पूत व्रजराज महरको लालै लै हुलरावै ॥२॥ तैसेई आनंदराय बैठे सबहिन देत बधाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर यह ढोटा तुमरी साध पुजाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ नंदरानीने ढोटा जायौ ॥ धावति गावति आवति सुंदरि मन इच्छा फल पायौ ॥१॥ हरद दूब अक्षत दधिकुमकुम थार लिये कर साजी ॥ थापै धरत गहगहे द्वारन गये शूल सब भाजी ॥२॥ पाँयन परति करति नौछावरि फिरिफिरि लेति बलाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर की मैया देत बधाई जाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू मनही मांझ सिहात ॥ अपने लालके जन्मद्यौसते फूली अंग न समात ॥१॥ गामगामकी न्यौति ग्वालिनी झुंडन आईं साथ ॥ लेत फिरत दोऊजन आदर नंदबवा और मात ॥२॥ गोपी ग्वालनकी गृह

आंगन भई भीर अति भारी ॥ यह सोहिलो चौकपर बैठे श्रीविट्ठलगिरिधारी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ यह दिन कैसेहुँ आयौ ॥ नंदरानी बरसगांठिको बिधाता चौक दिखायौ ॥१॥ बैठि चौक पर सुतन जात मिल हँसि व्रजराज बुलाये ॥ गोद यशोमति इतकी गोदमें कुंवर कान्ह बैठाये ॥२॥ ऐसोई दिन ऐसोई सुख थिरकरि रहौ पुराई ॥ सर्वसु वारि कहत फिरि फिरिकैं जिन माई दीठ लगाई ॥३॥ चंद्रावलि व्रजमंगल सबमिलि रहसि करत मन भाये ॥ श्री विट्ठलगिरिधर रायरानी प्रगट परम सुखपाये ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ सब कोऊ ऐसेई मुखबोलै ॥ पूत भयौ आनंदरायकैं उर उच्छाहन खोलै ॥१॥ पहलें सवन दूव दधि कुमकुम धरी रायजूके सीस ॥ देवभान वृषभान कहत सब यह दिन कीयौ जगदीश ॥२॥ लियौ बहोरि आपुनो सुख व्रज ऐसौ सुत प्रगटाई ॥ नांचि उठे व्रजनंद सबै मिल मांखन मुख लपटाई ॥३॥ नाचति चंद्रावलि व्रजमंगल नाचत सब व्रजनारी ॥ श्री विट्ठलगिरिधर पर भूषन देतहैं वारि उतारी ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ मंगल गावतिहैं व्रजनारी ॥ महरि देहरी भीतर आवति देखत बदन उधारी ॥१॥ नाचत गोप ग्वाल रस भीने और नाचत नंदराय ॥ काहू गिनत नहीं उर अंतर व्रजजन अति सुखपाय ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ आनंदराय बिराजत आज ॥ भये नंदकेनंद चकृत वे करत सुफल सुखराज ॥१॥ बदन प्रफुलित नैन चुमत रस झलमलात सब अंग ॥ झलमलात चीरा माथेपर पेचनि लाल सुरंग ॥२॥ झलमलात वागौ सौंधेसौं झलकत कुंवर उच्छंग ॥ झलझलात सब सभा चहूं दिसि सुख आनंद तरंग॥३॥ राजाभान गोहने जै जै गोप ग्वाल सब पूरन गाऊँ ॥ विप्र भाट चारन बंदीजन यह पढ़त मुख लै लै नांऊं ॥४॥ सुभर पहुँचेन पहुँचिका मुदरी बाजूबंद सु जवाई ॥ कंठहार श्रवनन गजमोती झलक न बरनी जाई ॥५॥ वचन संतोष संतोष सबन चित सबहिन पुरवत आस ॥ परम उदार भार सबही रज उग्र तेज

प्रकाश ॥६॥ परमभाग लछिन मंगल निधि रानीसी ग्रह नारी ॥ बलि गिरिधरनरायजू ऊपर सूरसेन बलिहारी ॥७॥

★ राग देवगंधार ★ आज व्रज घरघर बजत बधाई ॥ जसुमतिरानी ढोटा जायौ लागत परम सुहाई ॥१॥ भादौं कृष्णपक्ष शुभ आठें जन्म लियो हरि आई ॥ वसुदेव देवकी मान जगत गुरु आनंदकी निधि पाई ॥२॥ बरसानेते भान कीरतिकौं लै चलै ग्वाल लिवाई ॥ नाचत गावत करत कुलाहल भादौं मास सुहाई ॥३॥ हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम सुंदर देत वधाई ॥ रोरी तिलक सबनके माथें मगन भये अधिकाई ॥४॥ बैठे जुरे सव नंद भवनमें शोभा बरनी न जाई ॥ नंदमहोत्सव होत भवनमें मंगलसाज सुहाई ॥५॥ धन्य जन्म करि मानत अपनौ मगन भये नंदराई ॥ श्री विट्ठलगिरिधर चिरजीयौ सबहि सुखनिधि पाई ॥६॥

★ राग देवगंधार ★ सुनि चली सुंदरी पूरनभाग ॥ धावति गावति गीत परम सुख अप अपने अनुराग ॥१॥ शिथिल अलक झलकत सारिन में चंद चुंवत मुख आय ॥ निकसे उमगि रोंमरोंमनते उर अंतरके भाय ॥२॥ जूथन आय भवन भवनते रायरानीजूके पास ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल तुम पूजई हमारी आस ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रानीजू तुमहूंकौं ये दिन आयौ ॥ फिरि फिरि कहत यहै चंद्रावलि यह सुख वेगि हि पायौ ॥१॥ गोदभरी ऐसे ढोटासौं तुमारौ भाग फलायौ ॥ शिरपर छत्र आनंदरायसे विधि यह हमहि दिखायौ ॥२॥ ऐसी ऐ भई सुनो रानीजू यह घर पूत कन्हाई ॥ श्री विट्ठलगिरिधर तुम जाये हम तन दाह बुझाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ भीजी चंद्रावलि परमसुहाग ॥ गावति नाचति दै कर तारी नारीजू खोले भाग ॥१॥ झलकत मांग सुरंग सेंदुरसौं काजर नैन भरे ॥ झलकति डुलकति अंगन सारी सुभ सिंगार करे ॥२॥ मांडे बदन हरद रोरिसों दूध दही और लौनी ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनलालके मंगल करत सलोनी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ आज भलौ दिन लागत माई ॥ जायौ पूत नंदजूकी रानी आनंद उर न समाई ॥१॥ गृहगृहतें निकसी व्रजसुंदरि शोभा कही न जाई॥ झुंडन गावति चलीं रायगृह लीयें संग बधाई ॥२॥ पौढी महरि लियें सुत अपनौ कैसी लगत सुहाई ॥ श्री विट्ठलगिरिधर चिरजीयौ जुरि सब देखन आई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ सुनौ हो सपूती जसोदारानी ॥ तुम्हारे कुमार आधार सबनके कहत हौं बात संकानी ॥१॥ तुम्हारो सुहाग भाग अति पूरन पूतन गोद भरानी ॥ आनंदराय ललनके रससों ऐसेंई रहौ सुखानी ॥२॥ अचरा लगे रहौ दोऊ ढोटा मणि रहौ माथें दिपानी ॥ कहा कहूँ और कहत न आवे यह घर व्रजकी जिवानी ॥३॥ हम मोह भरि सब देत असीसनि रहौ यह बेलि बढ़ानी ॥ श्री विट्ठलगिरिधरसौं कुंवर गोपी ऐसी रहौ खिलानी ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ तुमरोई सबहै मेरी माई ॥ तुमारौ आवन जान हमारे ऐसौई रहौ सदाई ॥१॥ यह लहनों बड़ूडेनके पून्यन हमरे प्रकटे आई ॥ हाँ हो और रायजूके पुन्यन तुमरे पुन्य सराई ॥२॥ और भाग तुम ग्वाल बाल के जिनमें खेलत जाई ॥ और भागि इन गाय वछरनके जिनकी करत चराई ॥३॥ और भागि ये दूध दहीके जाकी करत लुटाई ॥ श्री विट्ठलगिरिधर जहाँ खेलत धनि धनि यह अंगनाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ गोकुल बरषत आनंद मेहा ॥ ब्रह्मा शिव सुरपति जाके बस सो प्रकट्यौ नंदगेहा ॥१॥ बाजे वजत होत कुलाहल शब्द सुन्यौ नरनारी॥ ताते चलिये भये भावते अब तन व्यथा निवारी ॥२॥ सजि सजि निकट गामके वासी आये महरिके धाम ॥ गलिनगलिनमें भीर भई बहु पग धरिबे नहीं ठाम ॥३॥ करिकै राय जुहार सबनसों भीतर लये बुलाई ॥ भले पधारेहौ जू मेरे करत अनेक बड़ाई ॥४॥ दूध दही छिरकतहैं सबपै मुदित ग्वालिनी ग्वाल ॥ गावत विमल विमलयश व्रजजन मंगलगीत रसाल ॥५॥ छिरकत हरद दही पय तरुनी अतिही शोभा देत ॥ हालत खोलत बोलत रसमय व्रजजन भये सहेत ॥६॥ अंबर भूषन द्रव्य रायजू दिये सबन मंगाय ॥ जैसौ जाके

मनकौ मान्यौ लेत हिये सचुपाय ॥७॥ अपने अपने टोल चले वे दै असीस सुखदैन ॥ कृष्णदास निरखि यह शोभा महा सिराये नैन ॥८॥

★ राग देवगंधार ★ शोभा देखिरी नंदघरैं ॥ प्रकट्यौ पूत सकल सुखदाई पूरन भाग भरैं ॥१॥ नव सत साजे बाजन बाजैं गावत ग्वाल खरैं । छिरकत हरद दही और माखन तन सुधि सब बिसरैं ॥२॥ गोरस कीच मची आँगन में पाँय नहीं ठहरैं ॥ अंक भरत तरुन वृद्ध बालक काहूसूँ न डरैं ॥३॥ दान दिये बहु नंदरायजू सबके दरिद्र टरैं ॥ कृष्णदास यह कौतुक लखि सुर पुहुपन वृष्टि करैं ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ व्रजपति यह सुख पूरे भाग ॥ जा निधिकौं तप करत महा मुनि सदा दिवस निशि जाग ॥१॥ सखी बुलावौ मंगलगावौ पूरौ मोतिन चौक ॥ इतनी महरि सुनी जब श्रवनन टेरे सब व्रज लोक ॥२॥ वधू सिंगार कियें जब आईं मानौं वे शशि डार ॥ भूषन झलके कंचनसे तन लखि सकुची त्रिय मार ॥३॥ और गोप जूथन जुरि धाये लाये मंगलसाज ॥ पौरीजाय तब नंदजूकी पूजै मनके काज ॥४॥ गावत गीत बधाई जुवती होत चित्त अति चाई ॥ विकसित आनन मनहुँ कमल नव उरमें मोद न माय ॥५॥ ग्वाल अचानक ह्वै पाछे सिर नावत दधिके माँट ॥ फिरत तहाँ वे विह्वल जित तित सुधि न परे कित बाट ॥६॥ बोलत आपुसमें मन भायौ रहत नहीं कछु कान ॥ सुरनारी आनंदित यह दुति देखन चढ़ीं विमान ॥७॥ दिये अति व्रजराज सबनकौं धन मानों बरष्यो मेहा ॥ बोलत कृष्णदास शोभा बन आये वे सब गेहा ॥८॥

★ राग देवगंधार ★ व्रजमें आज महा आनंद ॥ जनम्यौ पुत्र नंदजूके अद्भुत श्रीगोकुलकौ चंद ॥१॥ विविध भाँतिके बाजे बाजत मंगल गावत नार ॥ व्रजजन आये नंद बधाये जहाँ नंद दातार ॥२॥ दूध दहीके कुंभ सीस धरि लीयैं हैं वे ग्वार ॥ गोरस सबहिन ऊपर छिरकत कीच भई गृह द्वार ॥३॥ मुँह मांगे करि दान नंदजू बाढे कीरति कोट ॥ कृष्णदास जे मांगन आये बांधे नवविधि पोट ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ व्रजमें घरघर आनंद आज ॥ पूत भयौरी नंदमहरकें सकल घोष सिरताज ॥१॥ गृहगृहते सुनि सुनि चलीं गोपी हाथन मंगल साज ॥ नाचत हँसत करत कुतूहल गावति सुघर समाज ॥२॥ दूध दही घृत काँवरि भरि भरि आये गोप बहु गाज ॥ छिरकत आपु समांझ परस्पर छांडि सकल कुल लाज ॥३॥ बाजत ताल पखावज आवज ढोलक बीना झांझ ॥ सूरदास प्रभु प्रकट भये हैं भूमी भार उतारन काज ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ सखी व्रज गोकुल मंगलचार ॥ जसुमति पूत सांवरो जनम्यो व्रजजन प्राण आधार ॥१॥ नंदराय प्रमुदित नरनारी दधि बरखत सुखसार ॥ व्रजाधीश प्रभु गावत बहुधुनि वेद न पावत पार ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ आज सखी भयो अचल आनंद ॥ नंदराय प्रमुदित जसुमति सुतजायो गोकुलचंद ॥१॥ बगरनि बंदनमाल साथिये धुजा पीतरंग फंद ॥ व्रजाधीश प्रभु व्रजजन गावत पंच शब्दद्विजछंद ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ यह सुख कह्यो कौंनपे जाय ॥ बरसगांठ आई लालनकी कोउ फूलतनअधाई ॥१॥ फूलत अति आनंद आनंद सब फूलत जसोमतिमाय॥ फूलत कुंवरि भान सब फूलत आये रहसि बढाय ॥२॥ फूलत गोपवधू मुख निरखत आवत झुंड बनाय ॥ चंद्रावलि व्रजमंगल रोहनि आदर लेत बुलाय ॥३॥ सब सुखभरी कूख जसुमती की ताकी लेत बलाय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरको सोहिलो पैयत देव मनाय ॥४॥

★ राग भैरव ★ सब मिलि आवौ गावौ बजावौ मृदंग आज हमारे लालजूकी बरसगांठ ॥ कनक थाल भरभर मुक्ताफल लै नौछावर करवावौ ॥१॥ नवनव पल्लव वंदनमाला द्वारद्वार बँधावन ॥ आनंदघन प्रभुकौ जन्म सुनतही लाग्यौ सुजस सुहावन ॥२॥

★ राग भैरव ★ नंद वधावन चलि व्रजवनिता ॥ डगमगी चाल चलत तरुनी सब सुंदर रूप बनी अति ललिता ॥१॥ बनघन फूल रह्यो चहुँ दिसतें उमगि

उछंग चली ज्यों सरिता ॥ सरस रंग श्रावन जैसें उमड्यो व्रजजन मन आनंदित हरिता ॥२॥

★ राग रामकली ★ हरि मुख देखियौ वसुदेव ॥ कोटि काम स्वरूप सुंदर कोऊ न जाने भेव ॥१॥ चारिभुजा जाकें चारी आयुध देखि हो नर ताहि ॥ अजहूँ मन परतीत नाँही कहे नंदगृह लै जाहि ॥२॥ झरे तारे परे पहरुवा नींद व्यापी गेह ॥ निस अंधियारी वीज चमकै सघन बरसै मेह ॥३॥ कंस सोयौ स्वान सोये मुक्त भये दुवार ॥ बँधी बेड़ी छूटि गई यह कहो कौन विचार ॥४॥ सिंध आगें शेष पाछें बहै जमुनापूर ॥ नासिकालों नीर आयौ पार पहलौ दूर ॥५॥ श्रीमुखते हुंकार कीनों दीयौ जमुनापार ॥ वसुदेव मन परतीत आई बालक गृह अवतार ॥६॥ नंदसौ मनुहार कीनौ कहत है वसुदेव ॥ कहै सूर सुत जानि अपनौ बाहोत कीजै सेव ॥७॥

★ राग रामकली ★ सोहिलरा नंदमहर गृह आज बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति माई ॥ नरनारी मिलि मंगल गावै ऋषि मुनि वेद पढ़त ब्रह्मा शिव सुर फूले सुरपति ॥१॥ भयौ आनंद तिहूँ पुर घरघर भक्त अभय कीने दान अति ॥ जगन्नाथ प्रभु प्रकट भये हैं कूखि सिरानी रानी जसुमति ॥२॥

★ राग रामकली ★ सुनौरी आज मंगल बधायौ है ॥ नंदमहर घर रानी जसोदा ढोटा जायौ है ॥१॥ घोष घोष प्रति गलिन गलिन प्रति आनंद दरसायौ है । घरघरते नर-नारी मुदित जुरि जूथन धायौ है ॥२॥ लै लै साज समाज सब व्रजराजपै आयो है ॥ गावत गीत पुनीत परम रुचि लगत सुहायौ है ॥३॥ धरति साथीये तोरन बाँधति दधि छिरकायौ है ॥ नाचत कूदत करत कुलाहल मुरज बजायौ है ॥४॥ नंदराय सतकार सबनकौ कियौ मनभायौ है ॥ वेदोगति गोदान द्विजनकौं अनगन द्यायौ है ॥५॥ गर्ग पराशर अन्वाचार्य मुनि जातकर्म करायौ है ॥ वासुदेव श्रीकृष्ण सुवनकौ नाम धरायौ है ॥६॥ व्रजवासिनके पाँय परत सब शीश नवायौ है ॥ बारंबार निहारि कमलमुख हियौ सिरायौ है ॥७॥ धनि धनि रानी जसोमति तुम व्रज सुबस बसायौ है ॥

बहुत दिनाकी आसा पूरि वांछित फल पायौ है ॥८॥ दिन दिन अधिक अधिक तिहारे गृह उत्सव आयौ है ॥ मनि मानिकके भूषन अंबर जाचक जन लुटायौ है ॥९॥ हरखे देव सुमन वरषे नभ निशान बजायौ है ॥ परमानंद नंद नंदनको सुयश सुनायौ है ॥१०॥

★ राग रामकली ★ लाल की बरसगांठिहें आजू ॥ बाजन बाजें सबें बिधिनीके कृष्णके न्हावन काज ॥१॥ फूले फिरत सबें रंग भीनें पुनि पुनि देत असीस॥ द्वारिकेस प्रभु अति ही मनोहर जीयो कोटिबरीस ॥२॥

★ राग रामकली ★ बधाईरी नंदके भई ॥ सुंदर श्याम प्रगट भए गोकुल आप नई ॥१॥ नांचत सब गोपी ग्वाल छिरकत हरद दही ॥ रामराय भगवान जोरी परम दई ॥२॥

★ राग रामकली ★ सखी हों अपनी चाहसों आई ॥ ऐसो दिन नंदकूं सुनियत उपज्यो कुंवर कन्हाई ॥१॥ बाजत व्रज निसान सुचिकी बिधि रूंझ मुरज सहनाई ॥ महरिमहर देऊ आथ लुटावत आनंद उर न समाई ॥२॥ चलो सखी हमहू मिलजैये नेंक करो अतुराई ॥ कोउपहरी कोउपहरनी कोउ ऐसे ही उठिधाई ॥३॥ कंजनथार दूबदधिरोचन गावत चली बधाई ॥ भांतिभांति मुरि चली. जुवति उपमा बरनीनजाई ॥४॥ अमर विमान चढे सुख देखत जय धुनि शब्द सुनाई ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेत हित दुष्टनके दुखदाई ॥५॥

★ राग रामकली ★ हरिमुख देखि बावानंद ॥ कमलनेंन किशोर मूरति कला सोलें चंद्र ॥१॥ सीस मुकुट जराय जगमग मोर पिछ सुरंग ॥ हसनि विगसनि लसनि मनधन ठाडे ललित त्रिभंग ॥२॥ कटि किंकिनी झनकार झनकत संगीत उठत तरंग ॥ बदनपर अलकें बिराजत मानो वल्लभ अंग ॥३॥ लाल लकुटी करजु सोभित चाल हस्ति मतंग ॥ पाय नूपुर अतिहि रुनझुन शब्द उठत उमंग ॥४॥ पीतपट सुभ कंध सोहे घन छटा मानो संग ॥ मुक्त गुंजमाल उर पर किधों त्रिबेनी गंग ॥५॥ ऐसी शोभा निरखि मोहनकी नर्तत सदा सुगंध ॥ रसिकराय दयाल लीला गिनत अनतन रंग ॥६॥

★ राग रामकली ★ हरि वदन उघारि निहारि जसोदा ज्यों तेरे नेंन सिरावे । अविनासी आदि पुरुषोत्तम प्रेम फंदा परे आवे ॥१॥ कौन स्वरूप धर्यो हे भक्त हीत ताहि निगम रटि गावे ॥ संकर सुरमुनि व्यास नारद सोउ पार नहि पावे ॥२॥ को समुझे यह भाव भेद सो अभेद कैसें भावे ॥ रामकृष्ण प्रगटे गिरिधारी नंदरानी जुके लडावें ॥३॥

★ राग बिलावल ★ महामहोच्छव श्रीगोकुलगाम ॥ प्रेममुदित जुवती जस गावत श्यामसुंदरको लै लै नाम ॥१॥ जहाँतहाँ लीला अवगाहत खरिक खोरि दधिमंथन ठाम ॥ करत कुलाहल निस अरु बासर आनंदमें बीतत सब जाम ॥२॥ नंदगोप सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनंदनिधि सखी स्वरूप शोभा अभिराम ॥३॥

★ राग बिलावल ★ जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ आनंद तूर बजायौ हो ॥ कंचन कलश होम द्विज पूजा चंदन भवन लिपायौ ॥१॥ दिश दशहीते बरखि कुसुम अति फूलन गोकुल छायौ ॥ नंदनके इच्छा मन पूजी मन वांछित फल पायौ ॥२॥ आनंद भरे करत कुलाहल उदित मुदित नरनारी ॥ निरभय भये निसान बजावत देत निशंक नगारी ॥३॥ नाचत महर मुदित मन कीने पात बजावत तारी ॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ मोद विनोद आज घर नंद । कृष्णपक्ष आठैं निशि प्रगटे या गोकुलके चंद ॥१॥ वंदनवार अरविंद मनोहर बीच बने पटकीर सुछंद ॥ गोपी ग्वाल परस्पर छिरकत पुलकित विहरत मत्त गयंद ॥२॥ भवन द्वार गोमय वर मंडित वरषत कुसुम उमापति इंदू ॥ विठ्ठलदास हरद दधि मधु घृत रंजित पान करत मकरंद ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आनंद आज नदजूके द्वार ॥ दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे श्याम मनोहर ग्वार ॥१॥ चंदन सकल धेनु तन मंडित कुसुम दाम शोभित आगार ॥ पूरन कुंभ बने कंचन के वीच रुचिर पीपरकी डार ॥२॥ युवती यूथ मिलि गोप विराजत बाजत प्रणव मृदंग सुतार ॥ हितहरिवंश अजिर व्रज

वीथिनि दूध दही मधु घृतके खार ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आज नंदजूके द्वारैं भीर ॥ गावत मंगल गीत सबै मिलि प्रगटे हैं सुंदर बलवीर ॥१॥ एक आवत एक जात विदाह्वै एक ठाड़े मंदिरके तीर ॥ एकनकौं गौदान देतहै एकनकौं पहरावत चीर ॥२॥ एकनकौं फूलमाल देतहै एकनकौं घसि चंदननीर ॥ सूरदासने नवनिधि पाई धन्य यशोदा पुन्य शरीर ॥३॥

★ राग बिलावल ★ धन्य गोकुल जहाँ गोविंद आये ॥ धन्य धन्य नंद सुमंगल निसदिन धन्य जसुमति जिन गोद खिलाये ॥ धन्य यह बालकेलि जमुनातट धन्य वन सुरभी वृंद चराये ॥ धन्य यह समय धन्य यह लीला धन्य यह वेनु अधर धरि गाये ॥२॥ धन्य यह चरन सदा सुखकारी संत जननके हृदे रहाये ॥ धन्य सूर उखल धन्य गोपी जाके हेत गोपाल बंधाये ॥३॥

★ राग बिलावल ★ सो गोविंद तिहारे व्रजबालक ॥ प्रगट भये घनश्याम मनोहर धरे रूप दनुज कुल कालक ॥१॥ कमलापति त्रिभुवनपति नायक भवन चतुर्दश नायक सोई ॥ उत्पत्ति प्रलय कालको कर्ता जाके किये सबै कुछ होई ॥२॥ सुनो नंद उपनंद कथा यह आयौ क्षीरसमुद्रकौ वासी ॥ वसुधा भार उतारन कारन प्रगट ब्रह्म वैकुंठनिवासी ॥३॥ ब्रह्मा महादेव इंद्रादिक विनती करि यहाँ लाये ॥ परमानंददासकौ ठाकुर बहुत पुन्य तपके फलपाये ॥४॥

★ राग बिलावल ★ जसुमति मुदित मुदित सब गोकुल नंद मुदित मन अधिक भावरी ॥ खग मृग मुदित मुदित द्रुम वेली महरि मुदित जहाँ धरत पावरी ॥१॥ बालक मुदित भवन में खेलत हलधर मुदित अनुज सुभावरी ॥ जुवती मुदित भई छबि निरखत हमरे त्रियनकौ यह न्हावरी ॥२॥ यमुना मुदित भई तिहिं औसर मुदित भयौ तन परम चावरी ॥ जन त्रिलोक प्रभु काहे न मुदित ह्वै उदित भयौ ब्रजकुलकौ रावरी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ शोभा सिंधु न अनत रहीरी ॥ नंदभवन भरि उपटि सखीरी

व्रजकी वीथिन फिरत बही ॥१॥ देखन आज गई हुति सजनी बेचन गोकुल मांझ दही ॥ कहा कहि कहौं चतुर सखीरी कहत न मुख शशि हू न लही ॥२॥ जसुमति उदर अगाधि उदधिते उपजी यह जू कही ॥ परमानंद प्रभु इंद्र नीलमणि व्रजजुवतिन उर लाय लई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ नंदनंदन वृंदावन चंद ॥ यदुकुल नभ तिथि दुतिय देवकी प्रगटे त्रिभुवन बंद ॥१॥ जठर कुहूते बृद्ध बारूणी दिस मधुपुरी सुछंद ॥ वसुदेव शंभु सीस धरि आने गोकुल आनंदकंद ॥२॥ व्रज प्राची यशोदा राका निस सरद रितु नंद ॥ उडुगन सहित सखा संकरषन तम कुल दनुज निकंद ॥३॥ गोपीजन चकोरचित बाँध्यौ पलनिवारि दुख द्वंद ॥ सूरदास कला षोडश परिपूरन परमानंद ॥४॥

★ राग बिलावल ★ गोकुल घरघर होत बधाई । गावति मंगल नारी घोषकी बाजे विविध बजाई ॥१॥ देत न्यौछावरि पटभूषन लै बंदीजन पहराई ॥ रामकृष्ण जन्मे गिरिधारी सब व्रजके सुखदाई ॥२॥

★ राग बिलावल ★ नंदके आंगन बजत बधाई ॥ नाचति गावति गोपिका मिलि गोरस कीच मचाई ॥१॥ हरषे नंदलाल जो देखत हीयरें रहे लगाई ॥ मनही मन अति होत प्रफुल्लित मानौं रंक निधि पाई ॥२॥ वसन विचित्र आभूषन दीने ग्वालिनी सब पहराई ॥ देत असीस चिरजीयो नंदसुत फूली अंग न समाई ॥३॥ बाल विरध नरनारिनके मन फूल भई अधिकाई ॥ घरघर मंगल होत सबनके रघुवीर बारनें जाई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ बाल विनोद भामती लीला अति पुनीत मुनि भाखीहो ॥ सावधान ह्वै सुनौं परीक्षित सकल देव मुनि साखीहो ॥१॥ कालिंदीके कूल वसत और मधुपुरी नगर रसाला ॥ कालनेमि उग्रसेन वंशमें उपजे कंस भूपाला ॥२॥ आदि ब्रह्म जननी सुरदेवी नाम देवकी बाला ॥ दई विवाहि कंस वसुदेव हिं अघभंजन उरसाला ॥३॥ हय गज रतन हेम पाटंबर आनंदमंगल चारा ॥ समुदित भई अनाहद वानी कंस कान झनकारा ॥४॥ याकें गर्भ

अवतरै जो सुत करिहै प्रानप्रहारा ॥ रथते उत्तरि केस गहि राजा कीयौ गर्व पट तारा ॥५॥ तब वसुदेव दीनह्वै भाखे पुरुष न त्रिय वध करही ॥ मोकौं भई अनाहदबानी ताते सोच न टरही ॥६॥ आगे वृक्ष फले जो विषफल वृक्षहि बिन किनसरही ॥ याहि मारि तोहि और विवाहूं अग्र सोच क्यों करही ॥७॥ बालक काज धर्म जिन छांडो राय न ऐसी कीजे ॥ याके गर्भ अवतरै जो सुत सावधान ह्वै लीजे ॥८॥ बाचा वंध कंस करि छोड़े तब वसुदेव पतीजे ॥ मानौं मृगी चरत गहबरमें नैननीर उर भीजे ॥९॥ पहिलो पुत्र देवकी जायौ लै वसुदेव दिखायौ ॥ बालक देखि कंस हँसि दीनो तब अपराध क्षमायो ॥१०॥ कंस कहा लरकाई कीनी कहि नारद समुझायौ ॥ जाकौ भरम करत है राजा मानौं पहलैं आयौ ॥११॥ यह सुनि पुत्र कंस फिरि मांग्यौ यह विधि सबन संघार्यो॥ तब देवकी भई तन व्याकुल कहांलौं प्रान प्रहार्‍यौ ॥१२॥ कंस वंशको नाश करतहै कहाँलौं नीच उधारौ ॥ यह दुष्ट कबहिं मैंटिहै श्रीपति कबहू संभारौ ॥१३॥ धेनुरूप धरि पोहोमि पुकारी शिवविरिंचिके द्वारा ॥ सब मिलि गये तहाँ पुरुषोत्तम सोवत अगमअपारा ॥१४॥ क्षीरसमुद्रमध्यत यौं कहि दीरघ वचन उचारा ॥ उद्धरूं धरनि असुरकुल मारौं धरि नरतन अवतारा ॥१५॥ छूछी मसक पवन पानी ज्यों तैसौई जन्मविकारा ॥ पाखंडधर्म करतहै पामर नाहिंन चलत तुमारा ॥१६॥ मारग छांडि अमारगसौं रति बुद्धि विपरीत विचारी ॥ अमृत छांडि विषय विष अचवत देत अधमपति गारी ॥१७॥ सुरनर नाग तहाँ पशु पंछी सबकौं आयुस दीनौ ॥ गोकुल जन्म लेहु संग मेरे जो चाहत सुख कीनौ ॥१८॥ जिहि माया विरंची शिव मोहे सोई ब्रह्म हरि चीन्हौं ॥ देवकीगर्भ आकर्षित रोहिनी आप वास हरि लीनौ ॥१९॥ हरिके गर्भ वास जननीकौ बदन उजारौ लाग्यौ ॥ मानौं शरदचंद्रमा प्रगट्यौ सोच तिमिर तनु भाग्यौ ॥२०॥ जिहिं क्षण कंस आय टाड़ौ भयौ देखि महातम जाग्यौ ॥ अबकी बेर मेरो अरि आयो आपु अपुनपो त्यागो ॥२१॥ दिन दश गये देवकी अपनो बदन निहारन लागी ॥ कंस

काल जिय जानि गर्भमें अति आनंद सभागी ॥२२॥ सुर मुनि देव वंदना आये सोवतते उठि जागी ॥ अविनाशीको आगम जान्यो सकल देव अनुरागी ॥२३॥ कछुक दिना जब गये गर्भकि आगम उदर जनायो ॥ कासों कहों सखी कोऊ नाहीं चाहत गर्भ दुरायो ॥२४॥ रोहिनी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलाये । सकल लोकनायक सुखदायक आप जन्म धरि आये ॥२५॥ माथे मुकट सुभग पीतांबर उर सोहत भृगरेखा ॥ शंख चक्र भुज चारि बिराजत अति प्रताप शिशु वेखा ॥२६॥ जननी निरखी भई तब व्याकुल यह न चरित्र कहूं देख्यो ॥ बैठी सकुच निकट पति बोले दुहुं न पुत्रमुख पेख्यो ॥२७॥ सुनि वसुदेव एक आन जन्मकी नौतन कथा सुनाऊं ॥ तुम मांग्यो में दियो नाथ ह्वै तुमसो बालक पाऊं ॥२८॥ शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक जोग आदि नहीं आऊं ॥ भक्तवत्सल है मेरो बानों बिरदहिं कहा लजाऊं ॥२९॥ यह कहि महामोह अरुझायो शिशु ह्वै रोवन लागे ॥ अहो वसुदेव जाहु लै गोकुल तुम हो परम सभागे ॥३०॥ घन दामिनि धरनी मिलि गरजे महाकठिन दुःख भारे ॥ लै वसुदेव धसे जमुना महिं तीनलोक उजियारे ॥३१॥ आगे जाऊं जमुनाजल डूबों पाछे सिंघ डहारें ॥ जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहिं बिचारें ॥३२॥ चरन पसार परसि कालिंदी तरवन नीर तहाँ आगे ॥ शेष सहस्र फन ऊपर छायो लै गोकुलको भागे ॥३३॥ पोहोंचे जाई महरि मंदिरमें मनहीं न शंका कीनी ॥ देखी परी जोगमाया वसुदेव गोद करलीनी ॥३४॥ तुरतहिं वेगि मधुपुरी पोंहोंचे सकल प्रगट पुर कीनी ॥ देवकी गर्भ जाई है कन्या राय न बात पतीनी ॥३५॥ यह सुनि खड्ग लै धायौ राजा तब देवकी आधीनी ॥ यह कन्या अब बकसि बंधु तू दासी जानि करि दीनी ॥३६॥ क्रूर कंस अपवंशविनासन समुझे विन रिस कीनी ॥ न जानिये होय छल कीनों अपगति गति करि चीनी ॥३७॥ पटकत शिला गई आकाशहिं भुज द्वेचारि लगाई ॥ गगन गई बोली सुरदेवी कंस मृत्यु नियराई ॥३८॥ जैसें मीन जालमें क्रीड़त नैनन आप लखाई ॥ तैसेंई कंस काल ढूंक्यो है ब्रजमें

यादौराई ॥३९॥ जैसे व्याल भेक कूं ढूंके वेगिहि चीरा ताके ॥ जैसें सिंघ आप मुख निरखै परे कूपमें डांके ॥४०॥ तैसेई कंस परम अभिनायक भूल्यौ राजसभाके ॥ गतिकी गति पति तेरी जाके हाथ मृत्यु है ताके ॥४१॥ यह सुनि कंस देवकी आगें रह्यौ चरन शिर नाई ॥ बहु अपराध करे शिशु मारे लिख्यौ न मेट्यौ जाई ॥४२॥ काकें शत्रु जन्म लियो है बूझौ मतौ बुलाई ॥ चारि पहर सुख सेज परे निस नैंकु नींद नहीं आई ॥४३॥ देश देशते दूत बुलाये कासौं है छल कैसो ॥ अवगति अजर अजित अमरनकर ताको बल जैसो ॥४४॥ दिनही दिनसो पुरुष होतहै बढ़त असुरबल वैसो । बुझत नहीं त्रन वार बुझाये न पलिका खननेसो ॥४५॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनंद तूर बजायो । कंचन कलश होम द्विज पूजा चंदन भवन लिपायो ॥४६॥ बरन बरन रंग ग्वाल वने मिलि गोपिन मंगल गायो । विविध व्योंम कुसुम सुर बरखत फूलन मंडप छायो ॥४७॥ आनंद भरे करत कुलाहल उदित मुदित नरनारी॥ निरभय भये निशान बजावें देत निशंकन गारी ॥४८॥ नाचत महर मुदित मन कीने पात बजावत तारी ॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी ॥४९॥

★ राग बिलावल ★ सुनरी सखी व्रज आज बधाइ बाजही ॥ पंच शब्द दरबार मधुर ध्वनि गाजही । मोतिन चौक पुरावही वंदन द्वार वंधाय । नाचत गावत सब मिले हो । सो हरषित देत बधाय ॥ बधाई बाजही ॥१॥ पलना रत्न जडाव नंद घरहीमें साज्यो । गज मोतिनके झूमक दक्षिण चीरसो ढांक्यौ । पचरंग डोरी करग्रही झुलावत जसोदा माय । चुटकी दै दै झुलावही हो । उर आनंद न माय ॥बधाई.॥२॥ पीत झगुली शिर कुल्हे श्याम अंग राजत भारी । गोरोचन कौ तिलक अलक राजत घुंघरारी । काजर नैनन आंजिके मसि बिंदुका ढिंग लाय इहि बानिक मेरे मन बसौ । निजजन बल बल जाय ॥ बधाई बाजही. ॥

★ राग बिलावल ★ प्रगटे मोहन मंगल माई ! कृष्णपच्छ भादौं निसि आठें घर झर बजति बधाई ॥ बंदीजन औ भाट ब्राह्मन देस देस तै आए ॥ दिए पटंबर

भूषन अंवर जो जाके मन भाए ॥ तुम बिन और कौन त्रिभुवन में दियो मनहिं वढाई । 'परमानँद' प्रभु के हित कारन औ सब जात जिबाई ॥

★ राग बिलावल ★ नंदमहर घर प्रगटें श्याम । गोपीजन आनंद हुलसिकें । परममुदित गावत गुण ग्राम ॥१॥ गोप सवें मिलि भेटि ले आये हीरा रत्न वहुत धरिदाम ॥ सुरदास प्रभुको मुख निरखत पूजे सकल मनोरथ काम ॥२॥

★ राग बिलावल ★ मिलिआवोरी सजनी मंगलगाइये ॥ध्रु.॥ महरि जसोमतिके भयो सुत बेग वधावें जाइये । आज कोसो द्योसशुभदीन बडे भागन पाइये ॥१॥ घसि चारु चंदन लीपि आंगन मोतिन चोक पुराइयें । सींकन सहित सवारि साथीये बंदन माल बंधाइये ॥२॥ हिये हुती सोइ द्रगन देखी आनंद प्रेम बढाइये । हित अनुप हमारी जीवनि विधनां तु चिरजाइये ॥३॥

★ राग आसावरी ★ धन्य यशोदा भाग तिहारौ जिन ऐसौ सुत जायौ । जाके दरस परस सुख उपजत कुलकौ तिमिर नसायौ ॥१॥ विप्र सुजन चारन बंदीजन सबै नंदगृह आये । नौतन सुभग हरद दूब दधि हरषित सीस बंधाये ॥२॥ गर्ग निरूप कीये शुभ लच्छन अवगति है अविनासी । सूरदासप्रभुकौ यश सुनिकैं आनंदे व्रजवासी ॥३॥

★ राग आसावरी ★ जुरि चली हैं बधावन नंदमहर घर सुंदर व्रजकी बाला । कंचनथार हार चंचल छबि कही न परत तिहिं काला ॥१॥ डहडहे मुख कुमकुम रंगरंजित राजत रसके ऐसा । कंचन पर खेलत मानों खंजन अंजनयुत बने नैना ॥२॥ दमकत कंठ पदिक मनि कुंडल नवल प्रेम रंग बोरी । आतुर गति मानों चंद उदै भयौ धावत त्रिखित चकोरी ॥३॥ खसि खसि परत सुमन सीसनते उपमा कहा बखानों । चरन चलन पर रीझि चिकुरवर बरखत फूलन मानों ॥४॥ गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई । बदन विलोकि बलैयां लै लै देत असीस सुहाई ॥५॥ मंगल कलश निकट दीपावलि ठाँय ठाँय देखि मन भूल्यो । मानों आगम नंदसुवनके सुवन फूल व्रज फूल्यो ॥६॥ ता पाछें गन गोप आपसों आये अतिसै सोहैं । परमानंदकंद रसभीने निकर पुरंदर को

हैं ॥७॥ आनंदघन ज्यों गाजत राजत बाजत दुंदुभी भेरी । राग रागनी गावत हरखत बरखत सुखकी ढेरी ॥८॥ परम धाम जगधाम श्याम अभिराम श्रीगोकुल आये । मिटि गये द्वंद्व नंददासनके भये मनोरथ भाये ॥९॥

★ राग आसावरी ★ देखो अद्भुत अवगति की गति कैसो रूप धर्‍यौ है हो । तीन लोक जाके उदर बसत हैं सो सूपके कोने पर्‍यौ है ॥१॥ नारदादि ब्रह्मादिक जाकों सकल विश्व सर सांधें ताकौ नार छेदत ब्रज जुवती बाँटि तगासौं बांधे॥२॥ जा मुखकों सनकादिक लोचत सकल चातुरी ठाने । सोई मुख निरखत महरि जसोदा दूध लार लपटाने ॥३॥ जिन श्रवनन सुनी गजकी आपदा गरुडासन विसराये। तिन श्रवननके निकट जसोदा गाये और हुलराये ॥४॥ जिन भुजान प्रहलाद उबार्‍यौ हरनाकुस उर फारे । तेई भुज पकरि कहत ब्रजगोपी नाचौ नैक पियारे ॥५॥ अखिल लोक जाकी आस करत हैं सो माखन देखि अरे हैं । सोई अद्भुत गिरिवरहूँ ते भारे पलना मांझपरे हैं ॥६॥ सुरनर मुनि जाकौ ध्यान धरत हैं शंभु समाधिन टारी । सोई प्रभु सूरदासको ठाकुर गोकुल गोपबिहारी ॥७॥

★ राग आसावरी ★ बरसगांठि गिरिधरनलाल की गोपिन न्यौत बुलाये जू ॥ जसुमति मुदित सबन बोलनकों घरघर नंद पठायेजू ॥१॥ गामगाम प्रति पोरिपौरि प्रति घरघर नंद पधारे । आदर दै बड्डे गोपिनकों एक आसन बैठारे ॥२॥ गाम गामते शकट जोरिकें नंद महर घर आये । सुनि ब्रजरानी ब्रजवासिन मिलि सन्मुख कलश पठाये ॥३॥ घरघर धूप दीपावलि करिकें निज मंदिर पधराये । आदर दै बड्डे गोपिनकों जोरि सभा बैठाये ॥४॥ प्रेममुदित गावत नरनारी जसुमति मंदिर आईं । कंचनथार बधाये सजि सजि न्यौतौ टीको लाईं ॥५॥ चंदन अगर कपूर सुवासित आंगन भवन लिपाये । बंदनमाला साथिये द्वार मोतिन चौक पुराये ॥६॥ कनकपीठि तापर युग धरिकें दक्षिण चीर बिछाये । महर महरि गिरिधरन गोद लै मुदित तहाँ बैठाये ॥७॥ अन्वाचार्यमुनि गर्ग पराशर कुश आसन पधराये । बड्डे देव पूजाय लालकों बहुविधि

दान दिवाये ॥८॥ बंदीजन सबद्वारें गावें घुरे निसान नगारे । देव दुंदुभी गगन बजावत व्रज कुतूहल भारे ॥९॥ दै असीस द्वारे तहाँ याचक भये सबन मन भाये । मोह मांगे सबहिनकों नखसिख पटभूषण पहराये ॥१०॥ राई लोन उतारि आरती प्रमुदित मंगल गाये । अति उछाह भरि भरि लालनकों सबकी गोद दिवाये ॥११॥ बरन बरन आभूषन सारी व्रजतरुनी पहराई । प्रमुदित बहुरि चलीं निजगृहकों मानों रंक निधि पाई ॥११॥ नंदराय बड़्डे गोपिनकों चरनन सीस नवाये । जोरि उभय कर करत बीनती कृपा पुन्य फल पाये ॥१३॥ गोपवृंद ऋषिवृंद बिदा ह्वै देत चले आसीसा । व्रजपति व्रजरानी हरि हलधर जीवो कोटि बरीसा ॥१४॥

★ राग आसावरी ★ बरसगांठि लाल गिरिधरकी हों अबही सुनि आई । मंगल गावति चौक पुरावति घर घर बजत बधाई ॥१॥ ध्वजा पताका तोरनमाला बंदनवार बंधाई । बाजत ताल पखावज आवज झांझन झमक लगाई ॥२॥ गोपीग्वाल परस्पर नाचत दधिकी कीच मचाई । देखि देखि ब्रह्मा शिव नारद कुसुमन वृष्टि कराई ॥३॥ कहिये कहा कहत नहीं आवे बरनों कहा बड़ाई । नंदनंदनकी या छबि ऊपर आस करन बलि जाई ॥४॥

★ राग आसावरी ★ जनम सुतकौ होत ही आनंद भयो नंदराय । महामहोच्छव आज कीजे बाढ्यो मन न रहाय ॥१॥ विप्र वैदिक बोलिकें करि स्नान बैठे आय । भाव निर्मल पहरि भूषन स्वस्ति वाचन पढ़ाय ॥२॥ ज्ञातिकर्म कराय विधिसों पितर देवपूजाय । करि अलंकृत द्विजनकों द्वे लक्ष दीनी गाय ॥३॥ सात पर्वत तिलन के करि रतन ओघ मिलाय । कर कनक अंबरन आवृत दिये विप्र बुलाय ॥४॥ पढे मंगल विप्र मागध सूत बंदी अघाय । गीत गावें हरखि गायक नाचत नट नचवाय ॥५॥ बाजनियां मन वहोत हरखे विविध बाजे लाय । जान मंगल भेरि दुंदुभी फेरफेर बजाय ॥६॥ ध्वजा पताका व्रज विचित्रित भवन भवन धराय । बसन पल्लव रचे तोरन द्वार द्वार बंधाय ॥७॥ वृषभ गाय सुबच्छ हरदी तेल तन लपटाय । बसन बर्ह सुवर्णमाला धातुचित्र

बनाय ॥८॥ गोप आये भेट लै लै दूध दधि संग लाय । पाग पटुका झगा भूषन महामोल सुहाय ॥९॥ सुनतही भई मुदित गोपी जसोदा सुत जाय । बसन सकल सिंगार अंजन आदि तन भूषाय ॥१०॥ कहा मुखकी कहूँ शोभा भई सो बरनी न जाय । मानों कुमकुम केसरा मधि कमलकी शोभाय ॥११॥ लिये बल करि अति उतावल चली तन बिसराय । श्रवन कुंडल पदिक हिरदे पहरें अति उजराय ॥१२॥ विविध बसन बनाये सिरते खसि कुसुम बरखाय । नंदजूके भवन पैठी वलय प्रगट लखाय ॥१३॥ अति विराजत भये कुंडल हृदें हार कंपाय । बहुत दई असीस योंही रहो ब्रज सुखदाय ॥१४॥ भई रस उन्मत नाचत लोकलाज गमाय । अजन जन्म निःशंक गावें हृदें प्रेंम बढ़ाय ॥१५॥ बजे बाजे जन्म उत्सव विविध ध्वनि उपजाय । नंद के घर कृष्ण आये धर्म सब प्रगटाय ॥१६॥ गोप नाचत दूध दधि घृत नीर सरस न्हवाय ॥ विवस तकि नवनीत लोंदा डारत हाथ उठाय ॥१७॥ बड़े मन ब्रजराज भूषन बसन गाय अनाय । सूत मागध विप्र बंदी किये बोल बिदाय ॥१८॥ घरन पठये मनोरथ सब गुनिनके पुरवाय ॥ हरि आराधन और सुतकौ उदै हृदें लाय ॥१९॥ ग्रह पुजाये गणिक उत्तम भली भांति बुझाय। दे असीस चले घरन प्रति परस्पर बतराय ॥२०॥ दै वड़ाई कंठ भूषन हार बसन मँगाय । नंद दीने पहर फूली फिरत रोहिनी माय ॥२१॥ सकल ब्रजमें भई संपति रमारूप बसाय । करन लीला रसिकप्रीतम रहे ब्रजमें छाय ॥२२॥

★ राग आसावरी ★ प्रथमही भादोंमास अष्टमी रोहिनी बुधवारी । प्रगटे कूखि महरि जसोदाके लाडिले गिरिधारी ॥१॥ सुनि ब्रज जुवती अपने श्रवनन जहाँ तहाँते धाई । मंगल थार धरैं हाथनपर गावति गावति आई ॥२॥ मंडित द्वारे धरत साथिये रोपति वंदनमाला । पाँयन परत कहत रानीसों भले जने तुम लाला ॥३॥ करत बधाई जसुमति माई मगन भई रस भारी तुम्हारी कूखि पर हम नंदरानी वारिवारि सब डारी ॥४॥ बाजत थारी और मृदंगा और बाजतहै ताला । हरद दहीकी कांवरि लै लै आये गोप गुवाला ॥५॥ बैठे फूल तबे नंद

अतिही सबहिन देत बधाई । हरी हरी दूब विप्र भाटन लै रायजूके सीस धराई ॥६॥ विनती करत कहत रायजूसों धन्य जन्म विधि कीयौ । ऐसौ सुत प्रगट्यौ तुम्हरे गृह आज सुफलहै जीयौ ॥७॥ नाचत गावत करत कुलाहल मगन भये रस भारी । फिरिफिरि पहरि हुलसि दैवेकों भूषन बसन उतारी ॥८॥ दीने दान विप्रभाटनकों माला मुदरी चीरा । रतनजड़ित कुंडल पहराये मोती झलकत हीरा ॥९॥ आनंद रस उच्छाह भावसों सब व्रज उमग्यौ आज । फूले डोलें यह मुख बोलैं पुत्र भयौ व्रजराज ॥१०॥ तब नंदरानी अपनी सखिनसों आनंद राय बुलाये । पूरन भाग चुंवत रस आनन विहँसत भीतर आये ॥११॥ हँसि करि बोली जच्चा सुहागिन आओ पिय मन भाये । बैठि मतो करिये विलसनकों हम घर लालन आये ॥१२॥ चरुवा चढावनकों पिय मेरी पहलें सास बुलावौ। रतनजटित गादी मूढ़ापर आनि कैं बैठावो ॥१३॥ चरुवा चढ़ावनको नखसिखलौ आभूषन पहिरावौ । भांतिभांतिके चीर पाटंबर इतनी बेर मंगावो ॥१४॥ साथिये धरनकों ननद हमारी तुम पिय बोलि लै आवो । रतनजटित अपने सिंघासन आनिके बैठावो ॥१५॥ साथिये धरनको नेग बोहोत है सो दीजे मनभायो । तातें कहत सुनों पिय तुमसों यह दिन क्योहूँ पायौ ॥१६॥ हँसि व्रजराज कहत रानी सों यातें, चौगनो दैहैं । ऐसौ सुत तुम जाय दिखाये देतहू न अघैहें ॥१७॥ चंद्रावली व्रजमंगल राधे करिकरि लाड बुलावौ । उनहींके भागि दियो फल हमकूँ उनहीं पै मँडवावो ॥१८॥ हमही तुमही लालन लेकें उनकी गोद बैठावो । उनको चीत्यो भयो हमारें लाले तुमहि खिलावौ ॥१९॥ और पिय मेरी द्योरानी जिठानी आदर दै बोलि लावौ । भाँतिभाँति सारी आभूषन सबहीकों पहरावो ॥२०॥ थैला भरिभरि दाम मँगावो देहु रोंहिनी हाथा । हँसिहँसि खरचै रानी रोंहिनी जाकी सिरानी गाथा ॥२१॥ गाढ़ा भरिभरि सोंजपंजीरी इतनी बेर मंगावौ । गुड़, घी, दाख खुरेरी मेली पंजीरी बहोत सनावौ ॥२२॥ भरिभरि मेरी द्योरानी जिठानी हँसिहँसि करिकें लैहैं । यह दिन हम कों दियो विधाता देखिदेखि सुख पैहैं ॥२३॥ हँसि व्रजरायजू वाहिर आये माय वदनि बोलि लाये ॥ सगरी

सोंज धरी लै आगें करी आप मन भाये ॥२४॥ सास नवलदे चरुवा चढ़ावै आछे चीति बनाये । झांकिझांकि देखत नंदरानी चरुवा बहोत मन भाये ॥२५॥ सोना मोती हीराके सब आभूषन पहराये । हँसिहँसि पहरे सास नवलदे केऊक जोरी मंगाये ॥२६॥ बेटी श्यामदे धरत साथिये आछे मोरि संभारे । मोतिनके अक्षत कुमकुम लै चीत किये उजियारे ॥२७॥ गुड़ घी पूजि सात्त सींकनसों दुहूँ ओर चिपकाये । सथियनकौ उद्योग देखिकें रानीजू बहोत सिहाये ॥२८॥ देत भतीजेकों झगुली कुलही और हाथनकों चूरा । खगवरिया कटुला लटकन और पाँयनको पनसूरा ॥२९॥ इतनौ दैकरि मानदे श्यामदे रामदे झगरो ठान्यौ । तुमरो देन सुनों वीर मेरे एकौ नहीं मन मान्यो ॥३०॥ हँसि ब्रजराज कहत बहननिसों कहो कहा अरु दीजे । बांह पकरिकें कहत रामदे कह्यो बीर मेरो कीजै ॥३१॥ लैहैं भाभीजूकी पायल ते हैं अति वहु मोली । रानीजूको बंटा लाय आय रायजू खोली ॥३२॥ तुमारी ननद हटीली छबीली ते क्योंहूँ नहीं मानें । बोलि लई पास भाभीजू दै करिकें मुसकानें ॥३३॥ भाँतिभाँति सारी आभूषन तुम हम सब पहरायौ । मोहों माँग्यौ सो दीयौ बधाई जो हमरे मन भायो ॥३४॥ तुम्हरे घुरसारको अलल बछेरा सो छोरि हों लैहों । बहुत ठाठ गाय भैंसनिके इतनों लै घर जैहों ॥३५॥ दीने ठाठ गाय भैंसनिके अरु दीने रथ जोरे । घोड़ाघोड़ी बछेरा बछेरी वहु दीने खोलि डोरे ॥३६॥ गाड़ा भरिभरि सौनों दीनों दीने मोती हीरा । कै लख गाम दिये अनगिनती ऐसे राय जू बीरा ॥३७॥ मुरि करि वेटी श्यामदे एक होंस वीर मेरें । रत्नजटित सुखपाल मंगावो जैहें आछी तेरें ॥३८॥ इतनी सुनि आनंद रायजू दियो सुखपाल मंगाई। तामें वैठी बेटी श्यामदे भतीजेको नेग चुकाई ॥३९॥ इतनौं लै करि चली श्यामदे मुरिमुरि देत असीसा आनंदराय कुँवर वलि गिरिधर जीवौ कोटि बरीसा ॥४०॥ बीरन मेरे जग उजियारे भाभी कुल उजियारी । चित्र विचित्र कूखि यशोदाकी जिन जायो गिरिधारी ॥४१॥ सोने कूखि मढ़ाय यशोदा प्रगट्यौ सुखदाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल पर बारबार बलि जाई ॥४२॥

★ राग आसावरी ★ गावौ गावौ मंगलचार बधावौ नंदकें। आवौ आंगन कलश साजिकें दधिफल नूतन डार ॥१॥ उरसों उर मिलि नंदराय गोप सबै निहार। मागध सूत बंदीजन मिलिकें द्वार करत उच्चार ॥२॥ पायौ पूरन आस करि सब मिलि देत असीस। नंदरायकौ कुँवर लाड़िलौ जीवौ कोटि बरीस ॥३॥ तब व्रजराज आनंद मगन मन दीने वसन मंगाय। ऐसी शोभा देखिकें जन सूरदास बलि जाय ॥४॥

★ राग आसावरी ★ रानीजू जीवौ दूल्हौ तेरौ व्रजजीवन जायौ ॥ गोकुलकौ कुलमंडन पूत हम पायौ ॥१॥ देखि दृगकमल जब श्यामगात सुहायौ। लै करि निज गोद मोदसों हुलरायो ॥२॥ पूरबकृत पुन्यपुंज भागि बड़े तें पायौ। कूखिकी बलिहारी जाऊँ जस कल्यान गायौ ॥३॥

★ राग आसावरी ★ रानीजू ये सुत यह सुख ऐसौ सुहाग रहौ चिरको नित माई। अब निधरक भय जाय तुम बिधि यह बेर सिराई ॥१॥ रानी यह आंगन द्वारे बगरन रहौ नित भीर सुहाई। और रहौ गावत गीत ग्वाल सब रहौ वर चौक पुराई ॥२॥ रानीजू तुम रहौ आनंद भरी रस जीवौ सुतै खिलाई। और रहौ आनंदराय खिलावत शुभ गोद बैठाई ॥३॥ रानीजू हम रहें निरखत बदन लालकौ सकल काज बिसराई। श्रीविट्ठल-गिरिधर-निधि प्रगटे जुग बहु जतन बनाई ॥

★ राग आसावरी ★ तुमरे भागि सुनौ मेरी गोपी भयो ऐसौ लाल हमारें। अब चिरजीवौ भागि सबनके खेलो मेरे तुम्हारे ॥१॥ हों सुख देखों तुम सुख देखो प्यावो दूध मल्हावो। मेरे लालकी तुम सब भाभी उबटि न्हवाय बैठावो ॥२॥ तुम लेहु गोद लगावो छाती मुख चुमो और खिलावो। श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल को गंगा करन सिखावो ॥३॥

★ राग आसावरी ★ नंदमहर घर आज बधाये। बरसगांठि कुशल दिन आये ॥१॥ भवन सुवासित आंगन लिपाये। जसुमति मोतिन चौक पुराये ॥२॥ लालन उबटन उबटि न्हवाये। करि सिंगार रुचि तिलक

बनाये ॥३॥ आरती वारि मनमोद बढ़ाये । यह सुख निरखि उर नैन सिराये ॥४॥ घरघरते सब टीके आये । व्रजभामिनि मिलि मंगल गाये ॥५॥ पंचशब्द बाजन बजवाये । द्वारन बंदनवार बंधाये ॥६॥ मागध बंदी विप्र सुनि आये । व्रजरानी बहुदान दिवाये ॥७॥ भूषन पाटंबर सब पहिराये । करि न्यौछावरि दास मन भाये ॥

★ राग आसावरी ★ हेरी बाजे मंदिलरा महावन । नंदराय गृह पुत्र भयौ है हरखि देत बहुधन ॥१॥ नाचत गावत ग्वालिनी मिलि बोलत मधुरे वचन । हरदी दूध दही लपटावत उमगे प्रेममगन मन ॥२॥ नवसत साजि सिंगार नारि मिलि मंगल गावत मुनि जन । श्रीविट्ठल गिरिधारी कृपानिधि नाम यशोदानंदन ॥३॥

★ राग आसावरी ★ हमारे राय घर ढोटा जायौ जसुमति कूखि सिराईजू । सुनि सब चलीं गृह गृहते साजि बधायो लाईजू ॥१॥ हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम कंचन थार सुहाई । नवसत साजि सिंगार यूथ मिलि जसुमति मंदिर आई ॥२॥ देखि नंद आनंद बढ्यौ अति महरि निरखि सुख पाई । तिलक करत आनंद रायकें लै शीश दूब धराई ॥३॥ कोरे चीति संभारि साथिये बंदनवार बंधाई । तिलक करत प्यारे लालनकों न्योंतौ दै सुख पाई ॥४॥ सुनिसुनि ग्वालन गाय बहोरी जुरि बालक सब आये । दूध दही माखन काँवरि भरि भरि धरिधरि कांधे लाये ॥५॥ नाचैं गावैं करत कुलाहल प्रमुदित ह्वै नरनारी । मुख नवनीत लगाई डारि दधि हँसिकें दै कर तारी ॥६॥ महामहोच्छवके रस माते तनमन सुधि बिसराई । महरि झुलावति सुतहिं पालने आनंद देत बधाई ॥७॥ कुल प्रोहित ढिंग बोलि नंदजू नांदी मुख पितर पुजाये । हेम रत्न पाटंबर भूषण देत सबन मन भाये ॥८॥ यह सुख मुख बरनत नहिं आवै निरखि नैन मन फूले। हरखि देवगण बरखत सुमनन कौतुक देखत भूले ॥९॥ देत असीस चले नरनारी यह दिन नित प्रति आवौ । चिरजीयो जसुमति तेरो सुत व्रजपति लाड़ लड़ावो ॥

★ राग आसावरी ★ देवक उदधि देवकी सीप वसुदेव स्वांति जल बरख्यौ हो । उपज्यौ सुवन विमल मुक्ताफल सुनि सुनि सब जग हरख्यौहो ॥१॥ निर्मोलिक

नग हाथ यशोदा नंदजू को चित्त आकरष्यौ । बिधि नारद शिव शेष जौहरी तिनपै जात न परख्यौ ॥२॥ सुर नर मुनि जाकौ ध्यान धरतहैं सो व्रज जुवतिन निरख्यौ । सोई श्यामा उर हार बिराजत कल्यान श्रीगिरिधर सरीखौ ॥३॥

★ राग आसावरी ★ भाग बड़ो जसोदाजु नंद को प्रगटे कुँवर कन्हाई हो ॥ जबते जन्म भयो ढोटाको तबतें नव निध पाई हो ॥१॥ ऊपमाँ कहा कहों बालक की मोपें बरनि न जाई हो ॥ कोट कुबेर सिंघ द्वारे ठाड़े तिनसों हम बड़ाई हो ॥२॥ जरा वियोग रोग भय नाही घरघर मंगल गाई हो ॥ और महा सिध भवन भवन प्रत सूरदास बलजाई हो ॥३॥

★ राग आसावरी ★ सुनि गोपीजन आनंद भई हैं हरिजूकी जन्म बधाई । करि सिंगार चारु अंगनमें देत असीस सुहाई ॥१॥ वदन तंबोल नैन अंजनदै सेंदुर मांग भराई । पिय अनुराग सुहाग भरी नव कुमकुम आड़ बनाई ॥२॥ अंचल तल कुंडल छबि झलकत परत कपोलन झाँई । मानों भोर भयौ रवि कंजन किरण पियूष पिबाई ॥३॥ ग्रथित कुसुम छूटत कबरिनते चरन परत छबि छाई । मानों सोहत मेघ नलिन पर फूल फुहीं बरखाई ॥४॥ मणि गण हार विराजत उर पर कंचुकी नील कसाई । मानों श्याम प्रगट हृदय भयौ उर पर झलकत झाँई ॥५॥ झलकत बलय कंज नूपुर ध्वनि मोहन श्रवन सुहाई । मंगल थार संभारि दुहुं कर मंगल गावत आई ॥६॥ मंगल बदन निहारत बारत तन मन धन बिसराई । मंगल पूरब मिले सनेही मंगल रूप कन्हाई ॥७॥ मंगल गोप मगन मन नाचत मंगल दधि छिरकाई । मंगल भूषण वसन पहरि सब मंगल दरश दिखाई ॥८॥ मंगल श्रीयमुना गोवर्धन मंगल पुंज भराई । मंगल सुभग पुलिन वृंदावन मंगल लता द्रुम छाई ॥९॥ मंगल हरद तेल चूरन जल सींचत हरख बढ़ाई । मंगल नंद यशोदारानी मंगल निधि प्रकटाई ॥१०॥ मंगल वल्लभ व्रज मंगल निधि चरन रज सीस चढाई । नित मंगल रसिकनके जीवन मंगल लीला गाई ॥११॥

★ राग आसावरी ★ भादोंबदि निसि आठ बलि नंदरानी सुत जायो कन्हाई ।

तिहिछिन नंदराय मुखप्रफुलित वहसुख कह्यो न जाई ॥१॥ गुरुसे विप्रबुलाय जोतसी भुखन बसन बनाई । स्वस्तियन जाति कर्म पुत्रको करत तबें चितचाई ॥२॥ पितर देवपूजा सुभ विधिसों कीनी बेदवताई । मानों तिहुं लोक जीति अब लीये कीरति जग प्रगटाई ॥३॥ गैयां तुरत सिंगारि द्विजनकों दीनी तिन मन भाई । मानों सदा सब देत कामनां सुरभी सुद्धी बिसराई ॥४॥ तिल गिरिरत्न अमोल दान करि मंगल स्वस्ति पढ़ाई । मानों कुबेरसें किये सकल द्विज संपति कितिक लुटाई ॥५॥ तब सुनि गोप वधु घरघरते निकसी गावत बधाई । मानों नंदघर सागर मिलिवेको बिबिध त्रिवेनी आई ॥६॥ सुंदर बदन कमल ससि सरसे बरसे सुधा मिठाई । कंचन दामिनि तें तन सुंदर खंजन नेन निकाई ॥७॥ सोभित कान तरुकली झुमक रंगरंग नगन जड़ाई ॥ मानों शुक्र कुंज गुरु बुध हितसों बेंठे करि समताई ॥८॥ सारी झीनी हँस गज गवनी ओर सभा बसुधाई । लहेंगा बहु रंग कंचुकी गाढी वेनि सिथिल गुहाई ॥९॥ सुभ्र कुसुम सुथरे केसनतें गिरत पग न ढिग जाई । कीरति लपट मानों मधुकर सब पीवत कंजन रसधाई ॥१०॥ हार पदिक चमकत मुख चिवुकें नूपुर पग अरुनाई । मानों तीयरुप कमल फुलवारी रची विविध रंग झाई ॥११॥ कंचन थाल लियें सब कर मृदु कुंकुम आदि धराई ॥ मानों उदें राव बहुत सरसके केवलनपर हित टाई ॥१२॥ प्रेम मग्न व्रजराज कुंवर में तन सुधि सब बिसराई। अति सुगंध लपटी चहुं दिसतें जसोमति निकट बुलाई ॥ १३॥ पूरन परमानंद रूपकों निरखत द्रगन अघाई । सकल कला ससिउदित द्विज मानों जुगजुग तिमिर नसाई ॥१४॥ पूजत नंदरानी सुत तिहिछिन बोलत सुधा सनाई ॥ भाटन ओर सुततरुनी गन कीनी कबित बडाई ॥१५॥ पूछत नाम करन रिषि सब मिलि गर्ग बतायो सो केंसो ॥ केंहे अचल सुखद व्रज मंडल ओर न दूजो एसो ॥१६॥ तुम्हारे मन अभिलाख हती यह दिन दिन होत सवायो । अबिचारित धन मन ज्यों त्यों यह परम पदारथ पायो ॥१७॥ कोऊ कहत यह सिसु उछंग ले यह छिनु कंठ लगाऊ कोऊ कहत तन पीत झगुलिया उर करला

पहराऊं ॥१८॥ कोऊ कहें कर चुंबन प्रेमसों तोतरे बचन बुलाऊं । कोऊ कहें मनि जटित खिलोनां लें आइ सों लडाऊं ॥१९॥ सकल सुहागिनि रुचिर भालपर चित्रित कुंकुम आडें । सेंदुर मांग सवांरि परस्पर हँसत कपोलन गाडें ॥२०॥ रतितें सरस सकल कमलासी भवन भवन प्रति डोले । बांधत बंदन माल साथिये तोरन नग वहु मोलें ॥२१॥ चहचारों यह सुनत गोप सब जीततित तें उठि आये । मानों सुरनर अति चतुर काम छबि भेटि महरिको लाये ॥२२॥ कुंकुम तिलक दूब धरि दधि घृत दूध महर सिरनायो । नाचत हँसत कोऊ कछु गावत गोरसकीच मचायो ॥२३॥ बाजत दुंदुभी ढोल सप्तसुर ग्राम सहित मृदुबीने । रंभा आदि अपछरा तुंबर तिनहूकी छबि छीने ॥२४॥ पटभुखन वहु मोल वारिके मन वांछित सब दीनें । कहत सदा चिरजीयो लाल यह किये महारस भीने ॥२५॥ कंचन कलस धुजा रंगराजे पीरे चमकत जो हे । कंसादिक जीतन कारन यह चपलात अति सोहें ॥२६॥ लीला सिंधु छबीले श्याम गुन कबि कोऊ कहा बिचारें । वल्लभ कुल यदुनाथ तन धनि व्रजाधीश उर धारें ॥२७॥

★ राग आसावरी ★ नंदराय प्रमुदित श्री जसोमति सुत जायो सुखदाई हों ॥ भादों कृष्ण अष्टमीकी निसि अचल महानिधि आइहो ॥१॥ तरुनी गन नख सिख सजीआई गावत कहत बधाई हो ॥ पूरत चोक बिबिध रंगनके मंगल कलस धराई हो ॥२॥ बेरख बंदन माल ग्रेह प्रति बसुधा सुधा बनाई हो ॥ वाजत पंच शब्द सुथरे सुर जाचक आस पुराई हो ॥३॥ द्विज वर सबकों देत दछिनां कीरति त्रिभुवन गाई हो ॥ सब जग अमित संपदा फेली व्रजजन अति चित चाइ हों ॥४॥ तरुनि गनकों रंगरंग सारी देत असीस महाई हो ॥ गाय बच्छ व्रजबासी प्रफुलित जमुनां बन सरसाई हो ॥५॥ सेवकजनकी पूरी आसा देव कुसुम बरखाई हो ॥ व्रजाधीश चिरजीयो लाडीलो सोभा बरनी न जाई हो ॥६॥

★ राग आसावरी ★ पूत भयोरी नंदरायकें नांचत गावत ग्वाल ॥ बदत न काहू जगमें आली वारत हाटकलाल ॥१॥ हरद दूब दधि मांखन छिरकत जब

प्रगटे गोपाल ॥ चतुरबिहारी संतनके हित गोकुल आये परम कृपाल ॥२॥

★ राग आसावरी ★ आज वधावो माई नंद दरबार ॥ व्रज बनिता मिलि मंगल गावे ॥ सजि चलो कंचन थार ॥१॥ धुजापताका कदली रोपो द्वारें वंदन वार सकल सुवासनि धरो साथिये जसुमति परम उदार ॥२॥ कंचन सींकधरो अति सज्जित मुक्ता लसत सुढार ॥ प्रफुलित भये कमल मुखमानों दिनकर किरनि अधार ॥३॥ लालहि देखत सब सुख उपजत वारत नग मनिहार ॥ गरीबदासकों दइहें पंजीरी बोलि सकल परिवार ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ पुत्र भयो है आज श्रीव्रजराजे । प्रथम यथामति बरनही हों पुष्टि मारग रसरूप । भूतल प्रगट भये आयकें हो श्रीगोकुलके भूप । श्रीव्रजराज के दूर गये दुःख भाज ॥ श्रीव्रजराजके. ॥१॥ व्रजवासी सब सुनतही हो आवत चहुंदिश धाय । लै काँवर दूधकी हो तनकी सुधि विसराय ॥ श्री. ॥ जिन छांड दिये घरकाज ॥ श्री.॥२॥ हरद दूधदधि अक्षत कुम्कुम देत परस्पर सींच । भीर भई नंदद्वारमें हो आंगन माची कीच ॥ श्री. ॥ तिन तजी लोककी लाज ॥ श्री. ॥३॥ नंदभूप कर नचावहींहो देह दशा गये भूल । मंगल स्नान करावहीं मन पुत्र जन्मकी फूल ॥ श्री. ॥ सुत सबहिनके सिरताज ॥श्री.॥४॥ गर्ग परासर बोलकें हो जातकर्म कर नंद । श्रुतिपुरान गुन गावहीं हो प्रकटे आनंद कंद ॥श्री.॥ करत वेदधुनि गाज ॥श्री.॥ ५ ॥ चंदन भवन लिपावहीं हो धरत साथिये चीति । मोतिन चौक पूरावहीं हो करी वेद विधि रीति ॥लि.॥ कलश लिये सब साज ॥श्री.॥६॥ दुंदुभि देव बजावहीं हो चहुंदिशि घुरे निशान । बहुविध बाजे बाजहीं हो करत सप्तसुर गान ॥श्री.॥ गावत सहस समाज ॥श्री.॥७॥ देत असीस सबै व्रजनारी जसुमति कूख सिराय । मंगल साज सिंगार सुभग तन मेर धरत लै आय ॥श्री॥ चरन नूपुर धुनि राज ॥श्री.॥८॥ जाचक जन मनि माल पैहराई विप्रन दीनी गाय । सोना मोती हीरा पन्ना दीये भंडार लुटाय ॥श्री.॥ देत व्रजराज ॥श्री.॥९॥ श्रीवृषभान आदि गोपनको बोहोत कर्‍यौ सनमान । प्रकट्यौ

नंददासकौ ठाकुर देत अभय पद दान ॥श्री.॥ तुम करौ श्री गोकुलराज ॥श्री.॥१०॥

★ राग धनाश्री ★ बधाई माई आज बधाई ॥ध्रु.॥ आज बधाई सब व्रज छाई । व्रजकी नारि सबै जुरि आईं ॥१॥ सुंदर नंदमहरजूके मंदिर । प्रगट्यौ है पूत सकल सुख कंदर ॥२॥ होत ही ढोटा व्रजकी शोभा । देखि सखी कछु और ही ओभा ॥३॥ मालिनसी जहाँ लक्ष्मी लोलै । बंदनवार बाँधती डोलै ॥४॥ बगर बुहारत फिरत अष्टसिधि । कोरेन साथिया चीतति नवनिधि ॥५॥ ग्रहग्रहतें गोपी गमनी जब । रंगीली गलिनमें भीर भई तब ॥६॥ वीथी प्रेमनदी छबि पावें । नंदसदन सागरको धावें ॥७॥ हाथन कंचन थार रहे लसि । कमलन चढ़ि आए मानों शशि ॥८॥ मंगल कलस जगमगे नगके । भागे सकल अमंगल जगके ॥९॥ फूले ग्वाल मानों रणजीते । भये सबनके मनके चीते ॥१०॥ कामधेंनुते नेक न हीनी । द्वै लक्ष गाय द्विजनकों दीनी ॥११॥ नंदराय तहाँ अति रस भीने । पर्वत सात रतनके दीने ॥१२॥ नंदराय गृह माँगन आये । ते बहोर्‍यौं मांगन न कहाए ॥१३॥ घरके ठाकुरकें सुत जायौ । नंददास तहा सब सुख पायौ ॥१४॥

★ राग धनाश्री ★ आज सुहायौ री माई । देखत होत परम सुखदाई ॥१॥ महरि यशोदा ढोटा जायौ । आनंदरायको वंश बढायौ ॥२॥ सगरे घोख कुलाहल भारी । गृहगृहते निकसीं व्रजनारी ॥३॥ सुंदर मांग जटित नग टीके। प्रफुलित बदन लगत हैं नीके ॥४॥ मोतिनहार भार आनंदके । भायन लहरि उठत हिय उनके ॥५॥ मंगलथार जटित कर लीने । गावत गीत घोर सुर कीने ॥६॥ बेगिवेगि पग धरत उताल । देखे आय रायजूके लाल ॥७॥ धन्य घरी यह पूत होनकी । धन्य कूखि जसुमति सौनकी ॥८॥ जसुमति हम तुम पर बलिहारी । अपने कुलकी करी रखवारी ॥९॥ नाचत ग्वाल गोप रसगावें । फिरफिर नंदमहरजूके आवें ॥१०॥ दधि माखनके माँट उठावें ।

नरनारिनके सीस नवावें ॥११॥ फूले फिरत सबै रंग भीने । उतारि भूषन वसन बहु दीने ॥१२॥ बैठे रायजू वेद पढावें । अपने लालके नक्षत्र दिखावें ॥१३॥ पाँय पूँजी विप्र पहराये । दीये दान आप मन भाये ॥१४॥ फिरि हसिकें वृषभान बुलाये । और सब लरिका गोप उठाये ॥१५॥ पहराये भान गोप जे राजा । कहत किये तुम पूरन काजा ॥१६॥ ढाढी मागध चारन बोले । गहने चीरन देत अमोले ॥१७॥ फिरि सारी अति सुरंग मंगाईं । व्रजसुंदरि सगरी पहराईं ॥१८॥ सबहिनके कीये सनमान । बैठे राय महाबल दान ॥१९॥ कोरैन साथिये वंदन वारे । झूमि रहे सबहिनके द्वारे ॥२०॥ सुनि गायनके ठाठ मंगावें । विधि करिके विप्रनको दिखावें ॥२१॥ वीथी प्रेमनदी छबि पावें । नंद सदन सागरको धावें ॥२२॥ श्रीविट्ठलगिरिधर निधि रासी । फूलि गये सगरे व्रजवासी ॥२३॥

★ राग धनाश्री ★ माई राणीलारो जाईयो अरी सब नाचो गावो आय । आनंदरायके घर सोहिलो बिधि दीनों है तरसाय ॥१॥ आवो चंद्रावली रोहिनी राधे लेहु गोद उठाय । आवौ व्रज सुंदरि भावति व्रजमंगल लेहु बुलाय ॥२॥ सारी पहरौ झिमझिमि नखसिख सिंगार बनाय । काजर देहौ गहगह्यौ मुख पीयर बहुत लगाय ॥३॥ यह घर पूत सुहावनौ यह आनंद कहू न माय । श्रीविट्ठल आंगन रायके सिर हरद दही लपटाय ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ जसुमति सुत जन्म सुनि फूले व्रजराजहो । बडेबैस पूरन घर आयौ यह काजहो ॥१॥ व्रज गाय सिंगारी सब बसन भूषण साज । देखनकों आय जुरे गोपी गोप समाज ॥२॥ सगरे मिलि नाचें गावें छांड़ि लोक लाज॥ दूध दही माखन लै छिरकें करि गाज ॥३॥ नंद सबन दीने धेनु रतन बसन नाज । प्रगट भये रसिक प्रीतम गोकुल सिरताज ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ नंदरायके भवन बधाई ॥ध्रु.॥ चलो सखी मिलि मंगल गावौ । मन आनंद सिंगार करावौ ॥१॥ आंगन मांझ भईं सब ठाड़ी । जहाँ प्रभा अति भारी बाढ़ी ॥२॥ भरत परस्पर नारी आंकौ । खेलत हैं वे निपट

निसाकौ ॥३॥ चहुंदिशि ते वे बाजे बाजें । एक ओर जुवती सब गाजें॥४॥ जो कोऊ ऐसो औसर पावत । दूध माँट सीसतें नावत ॥५॥ आंगन दधि घृत पयके सागर । प्रगट भयो सुत व्रज उजियागर ॥६॥ अति भई राय सदनमें शोभा । देखत ही सबको मन लोभा ॥७॥ दियो सबनको मुखको भाख्यो। दान मान गोकुलको राख्यो ॥८॥ और अधिक कछु कहत न आवे । निरखत रसिक प्रीतम सुखपावे ॥९॥

★ राग धनाश्री ★ कमल नयन ससिवदन मनोहर देखिये विचित्र गति ॥ स्याम सुभगतन पीत बसन हुते उरबन माल सोहे अति ॥१॥ नखमणि मुकुट प्रभा अति उदित चितें चकित उन मांन न पावत ॥ अति प्रकास निसि बिमल तिमिर छटि कलमलाय पतिहि जगावति ॥२॥ दरसन मुखी सुखी अति सोचति खट सुत सोच सुरति अति आवति ॥ सूरदास प्रभु होऊ पराकृत भुजा चारिको चिह्न दुरावति ॥३॥

★ राग जेतश्री ★ सोहिलरा नंद महर घर जसुमति जायौ है पूत ॥ध्रु.॥ ज्ञाति कर्मकौं व्रजपति आये लियें विप्रकी भीर ॥ गाय बच्छ सब जुरिकें लाए तिनके संग अहीर ॥१॥ नांदीमुख करि दई विप्रन हरखि असीस सुहाई । पंच शब्द मिलि बाजन लागे व्रजजन संग लगाई ॥२॥ जबही यह बात सुनी सुख की बरसाने बजी बधाई । कीरत सहित वृषभान गृह आये भई है सजन मन भाई ॥३॥ जब जसुमतिजू सुनी ये बातें कलश पंच बड़कीने ॥ मंगल वोहोत बजाय घोखमें भान भवनमें लीने ॥४॥ बाल देखि परिक्रमा दीनी टीकौ भेंट मंगाई । अति आनंद भयौ सबहिनके मनमें धरी है सगाई ॥५॥ मुनिके बचन सत्य करि माने विदा महरियै मांगी । गदगद पुलकी रोम भये ठाड़े दरशन दै बड़भागी ॥६॥ अपनी अपनी काँवरि कांधे धरें शीशनपर माँट । दै शिर दूब बँधावत माथे बंदीजन और भाट ॥७॥ गरीबदास कछु यह जस बरन्यौ लघुमति अपनी घातें । जसुमति वोलि पंजीरी दीनी व्यास वंशके नातें ॥

★ राग जेतश्री ★ आज सखी सपनें श्री गोकुल सोवन फूलन फूल्यो ॥ तिहि

समें शब्द सुन्यो तम चरको मेरो मन आनंद भूल्यो ||१|| सुनो हो सहेली गुनगहेली सपनों भावहें नीको || नंद बबाजीके पुत्र भयो हें भांवतो सवहीको ||२|| हों अपने गृहतें उठी रावर मांगत जात मथानी || पहली पोरितें सुनि आइ व्रज बधाई जानी ||३|| अरी भटू में सुन्यो नांहिनें तेरे कहाँ सुधि पाई || भली भई विधि कूख सिरानी गोरी जशोदा माई ||४|| एक सखी अब धावत आवत लें मुक्ता मनिमाल || हस्त कमल सिर सोंह करत हों भयो हे नंदजूकें लाल ||५|| सहज सिंगारजु जेंसें तेंसें अति आनंदित धाई || अक्षत गोमय दूब सींकरज मंदिर बंधन आई ||६|| ओर सखी मिलि धावत आवत अंचल सूरति बिसारी || साथीपूरेकी सोंज चलोलें कर धरि कंचन थारी ||७|| मधुर मधुर सुर गावत आवत गीत जसोमति भाये || बिहसि कह्यो सबसों पाय लागनों तुम असीस फल पाये ||८|| अति विचित्र बहु धरत साथिये गृह मंडत बहुवेसा || कंचन कलस सकल व्रज बेरंख बंदनवार सुदेसा ||९|| परम उदार नंदजूकी रानी सकल सुवासनी बोली || बरन बरनके सारी लहेंगा ओर कटावकी चोली ||१०|| मोहन उपर वारि न्योछावर करत प्रान बलिहारी || पाय लागी मुख चूंबि गोदलें खगुवावो रख गुवारी ||११|| आंखि अजावन नंद सुहागिन पाई हे नूपुर झारि || साथीयरेकी सोंज चलो लें करमहि कंचन थारी ||१२|| हसि व्रजराज खिरकमें आये जहां सुरभिन की ठाटी || दिये घूमरि घोरीके खेला ओर पियरे मुखपाटी ||१३|| शत्रु मारि भुवभार उतारो जन साधुनके काजा || वृंदारण्य बिहारी हूजो सकल लोकके राजा ||१४|| उर अंचल लें देत असीसा विनती सुनहु विधाता || सकल भोग नंदराय भोगवें जुग जुग उरकु सराता ||१५|| दास गुपाल साथ यह लीला गुन गोविंद जुके गावें || हरिभक्तकों होऊ कृपानिधि सकल पदारथ पावें　||१६||

★ राग सारंग ★ यह चिरजीयो तुमारे भाग्य बड़ेही पायौ || लेति बलाय सकल गोपीजन तुम ऐसौ सुत जायौ ||१|| अति आनंद भयौ सबहीकें घरघर बजत

बधायो ॥ शोभा कही न जात या व्रजकी जवते ये घर आयौ ॥२॥ यह उच्छाह समात न मनमें अति रस मंगल गायौ ॥ श्रीविट्ठल गोकुलके जीवन गिरिधर सुख उपजायौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ ढाढ़ी कहति सकल व्रजनारी ॥ तुमारौ सुत चिरजीवौ हो रानी वांधी सुखकी पारी ॥१॥ जादिन ते तुम्हारे गृह प्रगटे भये सबन मन चाय ॥ फूले ग्वाल गोप अति डोलत फिरिफिरि रस गुन गाय ॥२॥ नेंकहु रह्यौ न जात भवनमें और कछू न सुहाय ॥ श्रीविट्ठल प्राननके प्यारे गिरिधर उर लपटाय ॥३॥

★ राग सारंग ★ वरसगांठि या नंदरायके सबकोऊ हुलसत करत बधाये ॥ पहलें तो प्रकटे ऐसे तब इनकें ऐसे सुत आये॥१॥ मंगलचार होत अति दूनों गजमोतिनके चौक पुराये ॥ ललनबबाकौ आजसोहिलौ व्रजनारिन मंगल जुरि गाये ॥२॥ देत दान सबही विप्रनके और बैठि करि वेद पढ़ाये ॥ दुहुँ ओर राजत दोऊ ढोटा व्रजराज चौकपर लगत सुहाये ॥३॥ बाजे बजत भीर अति भारी गाँमगाँमतें गोप बुलाये ॥ आरती होत होत नोछावरि नरनारी उठि सब पहराये ॥४॥ विंहसत सुख मानत नंदरानी जिन यह कुँवर लाड़िले जाये ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन राय बलि ये ढोटा व्रजनंद लड़्याये ॥५॥

★ राग सारंग ★ बरस गाँठिको चौक आज व्रजरानीकों यह लगत सुहायौ ॥ गावत गीत सकल व्रजसुन्दरी सुखके मूलकौ यह बधायौ ॥१॥ दोऊ कुँवर राजत अचरा गहें और बैठे ढिंग हँसि व्रजराय ॥ धन्य कूँखि रानी तिहारी सुख देखति जसुमति सी जाय ॥२॥ चाइन देति चौक मोतिनके अतिही हुलसत सब व्रजनारी ॥ तिलक करति अक्षत रोरीसों और आरती उतारी ॥३॥ ए चार्‍यौ सोहिले सुनो रानी बेगि तुमारे गृह आवौ । गाम गामते सब नरनारी ऐसेंई दिनदिन न्योति बुलावौ ॥४॥ ऐसेंई आनंद होत जन्म भरि ऐसेंई बाजे गाजि बजावो । श्रीविट्ठलगिरिधर दोऊकों माई बाबा तुम सदा मल्हावौ ॥५॥

★ राग सारंग ★ मंगल गावति हैं व्रजनारी । बाहिरतें घर भीतर आवत देखत बदन उघारी ॥१॥ नाचत ग्वाल गोप रसभीने और नाचत नंदराय । काहू गिनत नहीं उर अंतर व्रजजन सब सुखपाय ॥२॥ अति उच्छाह बढ्यौ सबहिनकें कोऊ कितहूँ न समाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन मनोरथ सबके पूजये आई ॥३॥

★ राग सारंग ★ रानी आनँदसों हँसि देति । गामगामतें ग्वालिनि आईं तिनको आदरलेति ॥१॥ ऐसोहूँ दिन कस्यौ विधाता बहोरि जन्मको आई । हरद दूब अक्षत थारनमें शोभितकर कर धर लाई ॥२॥ माथें तिलक करत लालन कें दोहरी बजत बधाई । श्रीविट्ठलगिरिधरनलालकौ मुख देखत न अघाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज महावन मंगलचार । पूरनचंद्र प्रगटे जसुमति गृह भक्तन प्रान आधार ॥१॥ बजत बधाई अति मनभाई सुनि आईं व्रजनारी । गावति मंगल धरत साथिये बांधत बंदनवार ॥२॥ फूले ग्वाल करत कुतूहल देत हैं बसन उतारी । ढोटा भयौ है नंदरायकें नाचत सब नरनारी ॥३॥ देत दान राय मनभाये भरिभरि रतनन थार । दधिकौ उदधि भयौ आंगनमें कीच मची सिंघद्वार ॥४॥ निकसीं देत असीस सबै मिलि सुंदरि परम उदार । यह शोभा कछु कहत न आवै दास निरखि बलिहार ॥५॥

★ राग सारंग ★ चलौ भैया आनंदरायपें जैये । जसुमति लाल लाड़िलो जन्म्यो कछुक बधाई पैये ॥१॥ याचक जन आवत मांगनकों सुरभी हेम पट दीने॥ दुख दारिद्र नसे सबहिनके जन्म अजाचिक कीने ॥२॥ घुरत निशान शब्द सहनाई बाजत है जो बधाई । मानिनी सब मिलि मंगल गावति मोतिन चौक पुराई ॥३॥ कौन पुन्य तप कीने नंदजू कहै न आवै पार । परमानंद प्रभु बैकुंठ जाके व्रज लीनौ अवतार ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज नंदके आनंद । आनंदमें नाचत गोपी सब प्रगटे गिरिधरचंद्र ॥१॥ नाचत गोपी ग्वाल आंगनमें अनेक सिंगार करें । गावत गीत प्रेमसों भींजे माथें दह्यौ धरें ॥२॥ खेलत हँसत देत करतारी नाचत सुधि न संभारें । लटकि लटकि भुज धरत सबनपर अति रससों सबधारें ॥३॥ देत

बधाई लेत रायपै सब व्रज मगन भये। श्री विट्ठलगिरिधरनलालनें सब सुख आय दये ॥४॥

★ राग सारंग ★ चलो भैयाहो नंदमहर घर बाजत आज बधाई। जायो पूत यशोदारानी गोकुलमें निधि आई ॥१॥ कोऊ वन जिन जाऊ गायलै आवौ चित्र बनाई। करौ कुलाहल नाचौ गावौ हरद दही लपटाई ॥२॥ छिरकत चोबा चंदन वंदन हरद दूब वेराई। माखन दूध दहीकी कादों भादोंमास मचाई ॥३॥ नाचत गोपी मंगल गावति घरघरतें सब आई। विहँसित बदन नैन तन पुलकित उर आनंद न समाई ॥४॥ बाजत ताल पखावज आवज बिचविच बैन सुहाई। जयजय ध्वनि सब बोलत डोलत पुनि कुसुमन बरखाई ॥५॥ परम उदार सकल व्रजवासी घरघर बात लुटाई। जाचक धन लै भये अजाची व्यास चरन रज पाई ॥६॥

★ राग सारंग ★ नंदरानी सुत जायौ महरिके मंदिर बेग चलौरी ॥ चली जाऊ वह बाट सामई जाकी ऊँची पौरी ॥१॥ सोने सींक धरौ लै साथिये चंदनसों चरचौरी। बंदनवार द्वार द्वारन प्रति बीच आमकी मौरी ॥२॥ दिये महावरी पाँयन चायन नाइन लै लै दौरी ॥ उठौ सदनते बसन सँभारौ भूषन सबै सजौरी ॥३॥ आवो गावो बैठो सब मिलि पूजो शंकरगौरी। ब्याह बधाये काज पराये विलंब न कीजे बौरी ॥४॥ नाचत बिरध तरुन और बालिक बीच बीच लरकौरी ॥ चोबा चंदन बंदन दीये दीये केसरखौरी। सकल उछाह भयौ या व्रजमें भाजि गयौ सब भौरी। जनगोविंद वीर बलभद्रकी सबहिन लागी ढौरी ॥६॥

★ राग सारंग ★ आनंदकी निधि नंदकुमार। प्रगट परिब्रह्म नट भेष नराकृत जगमोहन लीला अवतार ॥१॥ श्रवनन आनंद लोचन आनंद मनमें आनंद आनंद मूर्ति। गोकुल आनंद गाइन आनंद नंद यशोदा आनंद पूर्ति ॥२॥ सब दिन आनंद धेनु चरावत बेंनु बजावत आनंदकंद। खेलत हँसत कुतूहल आनंद राधापति वृंदावनचंद ॥३॥ शुकमुनि आनंद भक्तन निशदिन आनंद

रासविलास। चरनकमल अनुराग निरंतर अति आनंद परमानंददास ॥४॥

★ राग सारंग ★ बधाये आज नंदमहर घर फूले फिरत नरनारी। एक गावत एक मृदंग बजावत एक नाचत दै दै तारी ॥१॥ तोरन चित्र संवार साथिये द्वार बांधी बंदनवार। जगन्नाथ प्रभु प्रगटे व्रजमें सब भक्तन हितकारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ सोरन कलस धुजा पौरिनपर आछी भाँति सवारें। हरद दही रोरिनके छिरके सब गोपिनके द्वारे ॥१॥ भीर रहत नरनारिनकी यह गावत गीत बधाये। काहू नहीं सुहात कछु अब ललन भाँवते पाये ॥२॥ आनंदमें बीतत सगरौ दिन इन ढोटा के जाये॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन प्रगटिकें बहुत बधाए गवाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ नंद मन आनंद भयौ अति। पुत्र जनम सुनिकें मन फूले दान देति जियमें बाढ़ी रति ॥१॥ करत बेद धुनि विप्र बिमल मन येइ है गति। सूरदास प्रभुकी सुंदरता देखि लजानों रतिपति ॥२॥

★ राग सारंग ★ आजुकौ तिलक नंदमहरघर। मगन सबैं नाचत नारी नर ॥१॥ जायौ पूत जसोदारानी। मोहन मूरति सब सुखदानी ॥२॥ रंगरंग पहरै अंबर गोपी। सुंदरता देखि उपमा लोपी ॥३॥ सोभित मंगल बाजे बाजत। हरद दही घृत छिरकत लाजत ॥४॥ तनमन फूले सब सुख सानें। पर जुवती पर पुरुष न जानें॥५॥ भरि भरि भाँवरि लेत सु अंक। बरख्यौ गोरस माची पंक ॥६॥ सुनि सुनि फूले सब व्रज के जन। मुदित महामन देत सबै धन ॥७॥ द्विज बंदी जन मंगत जनगन। नंद दयौ भायौ जाके मन ॥८॥ दामोदर हित कीरत गाऊँ। माँगौ प्रेम बधाई पाऊँ ॥९॥

★ राग सारंग ★ नंदमहर घर बाजे बधाई। जसुमति कूँख प्रगट भये श्रीहरि आनंदकी निधिआई ॥१॥ मंगल साज लियें व्रजसुंदरि गावत गीत सुहाई। आनंद अधिक बढ्यौ निरखत हैं फूली अंग न माई ॥२॥ नंदराय बहु दान देत हैं मानो धन झरलाई। हरखित भये सकल व्रजके जन कृष्णकौ किंकर बलिजाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आनंदरायजू कें परम बधायौ । सबहिन भाग सुहाग सब नीकौ महरि जसोदा जायौ ॥१॥ झुंडनि आवत मंगल गावत सुभग सिंगार कियौ । मुख आनंद चंद बरखाये होत प्रफुल्लित हियौ ॥२॥ लेत बलाय आछी रानीकी जाति सबै बलिहार ॥ धरत सुधारि सवारि साथिये रोपत बंदनवार ॥३॥ छिरकत हरद दहीं रोरिनसों नाँचत किलकत ग्वाल ॥ लाल उधारे तनन बिसारे अरु नांचत व्रजबाल ॥४॥ बांह उटायें कहत सुख पाये पूरे काज हमारे ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर गृह प्रगटे रायजू पुण्य तुम्हारे ॥५॥

★ राग सारंग ★ महरिके मंदिर बेगि चलौरी । चली जाव वह धाम सामहीं जिन कहूँ बीच परौरी ॥१॥ मालनि बांधत बंदन मालें बीच आमकी मौरी । देत महावरि पाँइन चाईन डोलत दौरी दौरी ॥२॥ रमकी झमकी फिरत गुजरियाँ भूषन वसन सजौरी । विबिध बधावें काज परावें बिलंब न कीजे बौरी ॥३॥ हाथन कंचन थाल बिराजत बिच मोतिन सों रौरी । जन गोविंद बलवीर दरसकों सबहिन लागी ढोरी ॥४॥

★ राग सारंग ★ बधायो आज भयौ सखीरी जसुमति जायौ पूत ॥ सुभ बोहोर धुनि गावत नरनारी मानो सदन पुरहूत ॥१॥ नंदराय प्रमुदित विधि दीये दान विप्र मागध जन सूत ॥ व्रजाधीश प्रभु गोकुल राजौ दूरि करन कलि धूत ॥२॥

★ राग सारंग ★ कहौ व्रज गोपी गोप बधाई ॥ गावहु नंदरानी सुत जायौ बालकृष्ण निधि पाई ॥१॥ धेंनु रची द्विज कंचन दीये जाचक जन नँदराई ॥ व्रजाधीश प्रभु सुनि व्रजनारी कुसुम झरी बरखाई ॥२॥

★ राग सारंग ★ श्री गोकुल सुखद सदा सखी नंदराय सदन सोभित जसुमति सुत प्रगट भये व्रजजन सुखदाई । गोपी गोप सुंदर बसन बहु रंग बहुमोल भूषण पहिरे रति पति लजात मोतिन चौक पुराई ॥१॥ द्वार बेंरख बंदनमाल व्रजपुर रमनीय दुंदुभि मृदंग ढोल वीन किन्नरि बाजत सहनाई । ताल झांझि सुर मंडल महुवरि भेरि बाजे अनेक व्रजाधीश मंगल गावत गायक सुधराई ॥२॥

★ राग सारंग ★ अहो ! नँदरानी कौ भाग्य बड़ौ कहाँ लौं वरन्यों जाई । तीन

भुवन जाके बंधन में तिहिं हरि सुभग कर राखी बँधाई ॥ नाना विधि के भोग बनाए सबै स्वादु रस सों अधिकाई । चिरजीयौ जसोदा ! पूत तिहारौ कछुक जूठन 'परमानँद' पाई ॥

★ राग सारंग ★ आज नंदरायकें आनंद भयौ । नाचत गोपी करत कुलाहल मंगलचार ठयौ ॥१॥ राती पीरी चोली पहरें नौतन झूमकसारी चोवा चंदन अंग लगाये सेंदुर माँग सँभारी ॥२॥ माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल लै आये । बाजत बैन पखावज महुवरि गावति गीत सुहाये ॥३॥ हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम आँगन बाढ़ी कीच । हँसत परस्पर प्रेंम मुदित मन लागलाग भुज बीच ॥४॥ चहुँ बेदध्वनि करत महामुनि पंच शब्द ढमढोल । परमानंद बढ्यो गोकुल में आनंद हृदें कलोल ॥५॥

★ रास सारंग ★ सब ग्वाल नाचें गोपी गावै । प्रेंम मगन कछु कहत न आवै ॥१॥ हमारे राय घर ढोटा जायौ । सुनि सब लोक बधाये आयौ॥२॥ दूध दही घृत काँवरि ढोरी । तंदुल दूब अलंकृत रोरी ॥३॥ हरद दूध दधि छिरकत अंगा । लसत पीतपट बसन सुरंगा ॥४॥ ताल पखावज दुंदुभि ढोला। हसत परस्पर करत कलोला ॥५॥ अजिर पंक गुलफन चढ़ि आये । रपटत फिरत पग न ठहराये ॥६॥ वारिवारि पट भूषन दीने । लटकत फिरत महारस भीने ॥७॥ सुधि न परै को काकी नारी । हँसिहँसि देत परस्पर तारी ॥८॥ सुर विमान सब कौतिक भूले । मुदित त्रिलोक विमोहत फूले ॥९॥

★ राग सारंग ★ आज महा मंगल महराने । पंच शब्द ध्वनि भीर बधाई घरघर वे रखवाने ॥१॥ ग्वाल भरें काँवरि गोरसकी बधू सिंगारत बानें । गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माठ ढराने ॥२॥ नामकरन जब कियौ गर्गमुनि नंद देत बहु दानें । पावन जस गावति कटहरिया जाहि परमेश्वर मानें ॥३॥

★ राग सारंग ★ आंगन नंदके दधि काँदौ । छिरकत गोपी ग्वाल परस्पर प्रकटे जगमें जादौ ॥१॥ दूधलियौ दधिलियौ लियौ घृत माखन माँट संयूत । घरघरते सब गावत आवत भयौ महरकें पूत ॥२॥ बाजत तूर करत कोलाहल वारिवारि

दै दान । जीयौ जसोदा पूत तिहारौ यह घर सदा कल्यान ॥३॥ छिरके लोग रंगीले दीसें हरदी पति सुवास । मेहा आनंद पुंज सुमंगल यह व्रज सदा हुलास ॥४॥

★ राग सारंग ★ घरघर ग्वाल देतहैं हेरी । बाजत ताल मृदंग बाँसुरी ढोल दमामा भेरी ॥१॥ लूटत झपटत खात मिठाई कहि न सकत कोऊ फेरी । उनमद ग्वाल करत कोलाहल व्रज बनिता सब घेरी ॥२॥ ध्वजा पताका तोरनमाला सबै सिंगारी सेरी । जयजय कृष्ण कहत परमानंद प्रकट्यौ कंस को बैरी ॥३॥

★ राग सारंग ★ नंद महोच्छव हो बड़ कीजै । आपने लालपर वारि नोछावरि सब काहूकों दीजे ॥१॥ विप्रन देहु गाय और सोनों भाटन रूपौ दाम । व्रजजुवतिन पाटंबर भूषण पूजे मनके काम ॥२॥ नाचो गावो करो बधाई अजन जन्म हरि लीनों । यह अवतार बाललीला रस परमानंद हि भीनों ॥३॥

★ राग सारंग ★ तुम जो मनावत सोई दिन आयौ । अपनों बोल करौ किन जसुमति लाल घुटुरुवन धायौ ॥१॥ अब चलिहै पाँयन ठाढ़े ह्वै महरि बजाय बधायौ । घरघर आनंद होत सबनके दिन दिन बढ़त सवायौ ॥२॥ इतनौ वचन सुनत नंदरानी मोतिन चौक पुरायौ। बाजत तूर तरुनी मिलि गावत लाल पटा बैठायो ॥३॥ परमानंद रानी धन खरचत ज्यों विधि वेद बतायौ । जादिनकों तरसत मेरी सजनी गहि अंगुरियन लायौ ॥४॥

★ राग सारंग ★ गह्यौ नंद सब गोपिन मिलिकें देहु हमारी बधाई । अखिल भुवनकी जो है महासिधि सो तुमरे गृह आई ॥१॥ बाजत तूर करत कोलाहल मंगलचार सुहाई । कंचुकी ऊपर कच लर लटकत ये छवि बरनि न जाई ॥२॥ दै दै कनिक पाटंबर भूषण ग्वाल सबै पहराई । परमानंद नंदके आंगन गोपी महानिधि पाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ ग्वाल बधाई माँगन आये ॥ गोपी गोरस सकल लिये संग सबही आय सिरनाये ॥१॥ अब ये गर्व गिनत नहीं काहू पाये मनके भाये । जहाँ नंद बैठे नाँदीमुख जहाँ गहनकों धाये ॥२॥ बरन बरन पट पाये व्रजजन

उर आनंद न समाये । जनभगवान यशोदारानी जियके जीवन जाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ नंद बधाई दीजै ग्वालन । तुम्हारें श्याम मनोहर आये गोकुलके प्रतिपालन ॥१॥ युवतिन बहु विधि भूषन दीजे विप्रनकों गौदान । गोकुल मंगल महा महोच्छव कमल नैन घनश्याम ॥२॥ नाचत देव विमल गंधर्व मुनि गावें गीत रसाल । परमानंद प्रभु तुम चिरजीयौ नंद गोपके लाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ नंद बधाई बाँटत ठाढ़े । बड़ीबैस ढोटा जायौ है अति आनंद बर बाढ़े ॥१॥ काहू गैया काहू भूषण काहू बसन अनेक मनमें आन करत सुरपतिसों गहें आपुनी टेक ॥२॥ फूले फिरत गोप सब बालक गावत परस्पर भाखत । गिरिधरदास कल्यान युवतीजन देवेकों कछुअन राखत ॥३॥

★ राग सारंग ★ गोकुलमें बाजत कहाँ बधाई । भीर भई है नंदजू के द्वारे अष्ट महासिद्धि आई ॥१॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक जाकी चरन रेनु नहीं पाई । सोई नंदजूको पूत कहावै कौतुक सुनों मेरी माई ॥२॥ ध्रुव अंबरीष प्रहलाद विभीषण नितनित महिमा गाई । सो हरि परमानंदकौ ठाकुर ब्रजजन केलि कराई ॥३॥

★ रास सारंग ★ नंदगृह बाजत कहाँ बधाई । जुरि आई सब भीर आँगनमें जन्मे कुँवर कन्हाई ॥१॥ सुनत चलीं सब ब्रजकी सुंदरि कर लिये कंचन थाल । कुमकुम केसरि अक्षत श्रीफल चलत ललित गति चाल ॥२॥ आज भैया यह भली भईहै नंदजू तुम घर ढोटा जायो । हृदौ कमल फूल्यौ जो हमारौ सुनत बहोत सुखपायौ ॥३॥ दान मान विप्रन बहु दीने सबकी लेत असीस । पोहोप वृष्टि करत परमानँद सूरजु कोटि तेतीस ॥४॥

★ राग सारंग ★ नंदजु तुमारें जायौ पूत । खोलि भंडार अब देहु बधाई तुमारे भागि अद्भुत ॥१॥ लै लै दधि घृत दे हरी पखारौ तोरन माल बँधाई । कंचन कलश अलंकृत रतनन विप्रन दान दिवाई ॥२॥ विप्र सबै मिलि करत वेद ध्वनि हरखित मंगल गाये । सब दुख दूरि गये परमानंद आनंद प्रेम बढ़ाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ पूत भयौरी नंदके सब नाचौ गावौ ग्वालिरी । बदत न काहू परस्पर आलीरी बारत हाटक लाल ॥१॥ हरद दूब दधि चंदन छिरकत प्रकट

भये गोपाल । चतुर बिहारी भक्तन हित कारन गोकुल आये परम कृपाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ नाचत हम गोपाल भरोसें । गावत बाल विनोद कान्हके नारदके उपदेसें ॥१॥ संतनको सर्वस सुखसागर नागर नंदकुमार । परम कृपाल यशोदानंदन जीवन प्रान आधार ॥२॥ ब्रह्म रुद्र इंद्रादि देवता जाकी करत किवार । पुरुषोत्तम सबहीके ठाकुर यह लीला अवतार ॥३॥ स्वर्ग नर्कको अब डर नाहीं विधि निषेध नहीं आस । चरनकमल मन राखि श्यामके बलि परमानंददास ॥४॥

★ राग सारंग ★ देख सखी गोरसकी आंगन बाढी कीच महरकें । हरद दही माखन मथि छिरकत भरि सबमाँट डहरकें ॥१॥ ढोटा भयौ नंदबाबाके सुनिसुनि प्रीत पहरकें । घरधरते गोपी सब धाईं रही न ज्ञाति गहरकें ॥२॥ जसुमतिकी इच्छा मन पूजी लागी हुती अहरकें । गिरिधरदास कल्यान जो सुख ब्रजमें सो सुख न ब्रह्मा हरकें ॥३॥

★ राग सारंग ★ जसोदा फूली मात न मनमें । नाचत गावत देत बधाई जोवत जुवती जनमें ॥१॥ गोकुलके कुलको रखवारो प्रकट्यो गोपगननमें । काल्हि फिरें बालिक बलिके संग जैहैं वृंदावन में ॥२॥ सूकत धाननकों ज्यों पान्यों यों पायौ या पनमें । गिरिधरदास कल्यान कहत ब्रज महरि मगन सुसदनमें ॥३॥

★ राग सारंग ★ गोकुल आज कुलाहल माई ॥ ना जानों यह अष्ट महासिधि कहौ कहाँते आई ॥१॥ बोले नामकरके कारन गर्ग विमल यश गाई ॥ परमानंद संतन हित कारन गोकुल आये माई ॥२॥

★ राग सारंग ★ कृष्ण जन्म आनंद बधाई । सुरतरु कामधेनु चिंतामनि विविध प्रकार कछु बरनी न जाई ॥१॥ अंतरीक्षजन फिरत अबनीपर मिलत परस्पर दूब बँधाई । प्रफुलित हृदौ ब्रजवासिनको बाल बिरध गावत हरखाई ॥२॥ भई भीर नाचत नरनारी बाजे बजत गिने नहीं जाई । सुरपुर अति आनंद भयौ है हरखि पुहुप बरखा बरखाई ॥३॥ सुतकौ बदन निहारि सखी सब बारति भूषण बलाई । रतन कूखि रानी जसुमतिकी निरधन जाकी करत बड़ाई ॥४॥

तब नँदराय मगन भये ठाढ़े कनक रतन मनि धेनु मँगाई । विप्र पुनीत वेद धुनि उचरत दान मनो बरखा बरखाई ॥५॥ नंदलालकौ वदन निहारत हरखत सब मिलि करत बधाई । तिहूंलोक आनंद भयौ है सूरदास निरखत बलिजाई ॥६॥

★ राग सारंग ★ नंदराय घर भयौ है ढोटा ना हेली आवौहो । बाजत तूर तरुनी मिलि गावति करि करि मनमें चावौ ॥१॥ श्रीफल दूव अक्षत फल रोरी कंचन थार भरावौ । कदली खंभ पात नूतनके बंदनवार बँधावो ॥२॥ नामकरनके गर्ग पुरोहित तिनपै वेद पढ़ावो । जनगोविंद नंद घर आनंद बाजत अनंत बधावो ॥३॥

★ राग सारंग ★ चलौ भैया उत जाई महरिकें कपरा कोटिक लूटतहैं । पोटें बाँधि बाँधि शिरपर धरि लै लै लोग विखूटतहैं ॥१॥ रमकि झमकि फिरत गुजरिया अंचल छोर छूटत हैं रपटत गिरत उठत रसमाते दधिके माट फूटतहैं॥२॥ एकन गाढ़े मोलन बाढ़े एक यों सहस कूटत हैं । एक ओर लघु नीके बाजे गहरे घोट घूटत हैं ॥३॥ एक भाट भिखारी ब्राह्मण आपुस माँझ झूटतहैं । खबर न परत कहूँ दबी आँगुरिन माला मोतिन टूटत हैं ॥४॥ उतै महरके अगनित दरबन अरबन हाथ ऊठतहैं । दीयौ न कोऊ महरिकों पहरें बसनन फाटत फूटतहैं ॥५॥ पहर बधाई घरघर माई द्वार किवार खूटतहैं ॥ जनगोविंद बलवीरनके गुन निसदिन गुनी गन छूटतहैं ॥६॥

★ राग सारंग ★ ब्रजमें होत कुलाहल भारी । आनंदमगन ग्वाल सब नाचत देत परस्पर तारी ॥१॥ नंदरायके भवनमें आवत आनंदित ब्रजनारी । पुत्र जन्म सुनि हरख भयौ है परमानंद बलिहारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ सुनि देवकी को हितू हमारे । असुर कंस अपवंश विनासित शिर ऊपर बैठे रखवारे ॥१॥ ऐसौ को समरथ त्रिभुवनमें जो यह बालक नेंकु उबारे । खरग धरे तिहिं देखत अवनीपर छिनमांझ पछारे ॥२॥ यह सुनिकें अकुलाई प्यारी भरि नैंनते आँसू ढारे । दुखित भये वसुदेव देवकी प्रगट भये धरिकें भुज चारे ॥३॥ बोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मोते उबरे तो यह मारे । अति दुखमें सुखदियौ पितु मातें सूरके प्रभु भवन पधारे ॥४॥

★ राग सारंग ★ सब कोऊ नाचत करत बधाये। नरनारी आपुस में लैलै हरद दही लपटाये ॥१॥ गावति गीत भाँति भाँतिन के रूप अम अपने मन भाये। काहु नहीं संभार रही तन प्रेम पुलकि सुख पाये ॥२॥ नंद की रानी नैं यह ढोटा भले नक्षत्र ही जाये। श्री विट्ठल गिरिधरन खिलौना हमारे भागिन आये ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज नंदरायकें ढोटा जाये सबन वोहोत सुखपाये बड़्डे गोपनके घरघरते आवत बजत बधाये ॥१॥ पूरन भाग्य सकल व्रजसुंदरि गावति गीत सुहाये ॥ सारी सुरंग नौतन चोली तन रचि सिंगार बनाये ॥२॥ सगरे घोख बढ्यौ यह आनंद जे चीते ते आये ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन प्रगटिकें सोच वहाये ॥३॥

★ राग नट ★ मंदिलरा वाजे नंदरायके राजे माई आनआन भांति ॥ ऐसो द्योस माई आज को ऐसी सवन सुहाति ॥१॥ या धरती पर माई द्वै बडे बरसानों नंदगाम ॥ बरसानें वृषभानजु नंदीसुर नंदधाम ॥२॥ जुगन जुगन माई द्वे भले व्रजरानी अरु नंद ॥ उनकें श्रीमोहन ओतरे या व्रजपूरन चंद ॥३॥ व्रजनारी हरखें सबे या व्रजके वसो वास ॥ नितप्रति जायों नंदरायकों गावतहें बलिदास ॥४॥

★ राग नट ★ नंदग्रह बाजत आज बधाई ॥ नाचत गावत करत कुलाहल उर आनंद न समाई ॥१॥ गोप सबें मिलि भेट बहुतलें आये अति अतुराई ॥ सूरदास महर मनहि मन फूले अंग न माई ॥२॥

★ राग मल्हार ★ मंदिल वाज्यौ रे बाज्यौ सकल घोष सुहायो गाज। हमारे राय घर ऐसो ढोटा जायौ जसुमति आज पूर मनके काज ॥१॥ सुनिसुनि चलीं अली गृहगृहते सजिसजि नव सत साज। दधिघृत भरि काँवरि काँचे धरि आये गोप समाज ॥१॥ धरि सिर दूब तिलक करि माँथे साथिये धरि दुहूँ वाज। भीतर जाय बदन निरखत ही बंधी प्रेम की पाज ॥३॥ श्रीवृषभान देत पट भूषन धेनु देत व्रजराज। अविचल रहौ जमुनजल ज्यों थिर व्रजजनके सिरताज ॥४॥

★ राग मल्हार ★ बधाई री बाजत आज सुहाई श्रीगोकुलराजके धाम । रानी जसुमति ढोटा जायौ है मोहन सुंदर श्याम ॥१॥ सुनि सब गोप घोषके वासी चले बर बसन बनाय । तापुरकी मंगल व्रज बीथिन भीर न निकस्यौ जाय ॥२॥ आईं सब गोप वधू मिलि साधन हाथन कंचन थार । कमल बदन सब बनी कमलासी झलकत कुंडल हार ॥३॥ नाचत ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत खोरें गात । देत मँगाय बसन पट भूषण फूले अंग न मात ॥४॥ जो जाके मन हुती कामना सो पुजाई नँदराय । नंददासकों दई कृपाकरि अपने ललनकी बलाय ॥५॥

★ राग मल्हार ★ आँगन दधिको उदधि भयौ । गोपी ग्वाल फिरत महरानें सकल संताप गयौ ॥१॥ वकसत पगा पिछौरी गुनियन अति आनंद भयौ । नंद यशोदाके मन आनंद धोंधीके प्रभु जनम लयौ ॥२॥

★ राग मल्हार ★ होंतौ एक नई बात सुनि आई । महरि यशोदा ढोटा जायौ आँगन बजत बधाई ॥१॥ कहिये कहा कहइ नहीं आवै रतन भूमि छबि छाई। नाचत विरध तरुन और बालिक गोरस कीच मचाई ॥२॥ द्वारें भीर गोप ग्वालनकी वरनों कहा बड़ाई । सूरदास प्रभु अंतरयामी नंदसुवन सुखदाई ॥३॥

★ राग मल्हार ★ मैं सखी नई चाँह एक पाई । ऐसो दिवस नंदजुके सुनियत उपज्यौ पूत कन्हाई ॥१॥ बाजत पणव निशान पंच विधि रुंज मुरज सहनाई। गाँगगाँम व्रज हाट लुटाये आनंद उर न समाई ॥२॥ चलो सखी हमहूँ मिलि जैहें वेगि करौ अतुराई । कोऊ भूषन पहरि पहरावत चलौ सवेरें जाई ॥३॥ कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चली बधाई । भाँतिभाँति बनि बनि युवतीगण उपमा कछू न आई ॥४॥ अमर विमान चढ़े सुख देखत जयजय शब्द सुहाई। सुरदास प्रभु भक्त हेतु है दुष्टनकों दुखदाई ॥५॥

★ राग काफी ★ श्रीव्रजराजके धाम बधाई बाजही ॥ बधाई ॥ धुनि सुनि उठी अकुलाय मेघन ज्यों गाजही ॥मेघन॥१॥ जहाँ तहाँ ते चली धाय अटकि नंदपौरपें ॥अटकि॥ वे गावत मंगल गीत ऊँचे स्वर घोरपें ॥ ऊँचे ॥२॥

नौतन सहज सिंगार कीये अंग अंगमें ॥कीये॥ बसन लहेरीया भाँति बहु रंग रंगमें ॥बहु॥३॥ धूम मची सिंहद्वार हेरी दै दै गावही ॥हेरी॥ प्रेम उमग व्रजनार गिने नहीं काउही ॥गिने॥४॥ कोऊ नाचे कोऊ गाय कोऊ कर तारीदे ॥कोऊ॥ कोऊ शिरतें दधिमाट फोर कर डारीदे ॥फोर॥५॥ बाबानंद नचावत ग्वाल नाचे बड़भूपही ॥नाचे॥ सब तन यों रसवेस भये एक रूपही ॥भये॥६॥ याचक गुनी अनेक जुरे नंदधाममें ॥ जुरे॥ मनवांछित फल देत हीरा मणि दानमें ॥हीरा॥७॥ देत असीस जियौ व्रजराजकौ लाड़िलौ ॥व्रज॥ चंद सूरजको तेज तपै सुख बाढ़िलौ ॥तपे॥८॥ श्रीवल्लभके चरण शरण सुख पावही ॥शरण॥ तोपै रसना रसिक रसाल सदा गुन गावही ॥सदा॥९॥

★ राग काफी ★ एरी सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि ॥ व्रज घरघर आनंद भयौ । दधिकाँदो आँगन नंदके ॥ध्रु.॥ एरीसखी बाजत ताल मृदंग और बाजे सब साजिकें ॥ भवन भीर व्रजनारि पूत भयौ व्रजराजकें ॥१॥ घोषघोषते बाम वसनन सजिसजिकें गईं ॥ रोहिनी महाबड़भागि आदर दै भीतर लईं ॥२॥ बिछुवनके झनकार गलिन गलिन प्रति ह्वै रहे ॥ हाथन कंचन थार उर पर श्रमकन च्वेरहे ॥३॥ ग्वाल गोपिका जात रावरौ सगरौ भरि रह्यौ ॥ फूले अंग न मात सबनकौ भागि उघरि रह्यौ ॥४॥ जहाँ व्रजरानी आप सेंन कीयौ ढोटा भयें॥ तहाँ कुतूहल होत मिलि जुवती जूथन गये ॥५॥ निरखि कमल मुख चारु आनंदमय मूरति भई ॥ लये अंचल पटछोर मन भाई असीसें दई ॥६॥ राय चौकमें घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि ॥ पकरि पकरिकें ग्वाल बोल लेत भुज भुजन पेलि ॥७॥ कावरि मथना माँट अगनित गिनें नहीं जातहैं ॥ धरे भरे सब ठौर कहाँलों सदन समातहैं ॥८॥ होत परस्पर मार माखनके गेंदुक करे॥ एक एककूं ताकि बदन अंग लेपत खरे ॥९॥ ऊपरते दधि दूध शीश सीसन गागरि ढरें ॥ घोंटुनलों भई कीच रपटि रपटि सगरे परें ॥१०॥ व्रज गोपिनके चोर भींजिलगे अंगअंगसों ॥ गावतहें जुर झुंड अपने अपने रंगसों ॥११॥

हो हो बोलें ग्वाल हेरी दै दै गावहीं ॥ जोरिजोरि सब बांह बावा नंद नचावहीं ॥१२॥ नंदराय बड़भाग नाचतमें देखत बने ॥ फिरत मंडलाकार अंगअंग सुखमें सने ॥१३॥ चिबुक केश सब स्वेत उरपर सगरे छै रहे ॥ रंग कुमकुमारंग दधि दूधन उरझे रहे ॥१४॥ भाल विशाल रसाल फेंटा शीस सुहावनों ॥ तोंदि थलक और चाल नाचैं मृदंग मिलावनों ॥१५॥ गहिगहिकें भुज भूलरहे गोप सुखमानिकें ॥ रपटि परे जिन नंद सावधान यह जानिकें ॥१६॥ आँगन उदधि आनंद पंक चढ्यौ कटिलों भयौ ॥ दई पनारी खुलाई सरिता ज्यों बीथिन गयौ ॥१७॥ भानसुतामें जाई मिल्यौ रंग आनंदमें॥ कलिंदनंदनी आप सुख लूटत यह फंदमें ॥१८॥ यह औसर सब साधि घोष नृपतिजू न्हाइयौ ॥ जे वरसोंदी खात ते सब विप्र बुलाइयौ ॥१९॥ पूजा पितर कराय दान करत बहु भायसों ॥ घरके मागध सूत झगरतहैं व्रजरायसों ॥२०॥ मेंटत सगरी रारि मन धन देत अघाइकें । करत बहुत सनमान भूषन पट पहरायकें ॥२१॥ विधिसों गाई सिंगरि दई द्विजन केई ठाटसों । जो माँगौ सो देहुँ कहत नंद विप्र भाटसों ॥२२॥ अभरन अंबर छाय सहस्र पाँच दश आइयौ । हँसिहँसि रोहिनी आप व्रज तरुनी पहराइयौ ॥२३॥ घरघर घुरत निसार कही न जात कछूये जियकी । मंगलमय व्रज देश फिरत दुहाई गाजकी ॥२४॥ व्रज दशाकौ रूप कहा कहूँ सखी या समें । निरख निरख नंददास नृत्य करतहैं ता समें ॥२५॥

★ राग काफी ★ मेरी जसुमति जच्चा अहो रानी धन्य धन्य भागि ॥टेक॥ तोसी सील सपूती और न कोई । अखिल लोकनाथ जनसी सिज्या सोई ॥१॥ जाके उदर उपज्यौ ब्रह्मा भ्रम भारी । सोई कमलनाल जतन करतहै ब्रजनारी ॥१॥ आदि अंत जगतकी गति जाकों सूझें । ताकी यह रासि लग्न विप्रन बूझें ॥३॥ सकल जीव जंतुनकों भोजन पहुँचावै । ताहि छतियाँ लाई लाई दूध पिवावै ॥४॥ जाके गुन गान शेष निशदिन गाये । विश्व कुशल काज अनायास आये ॥५॥ गणपति सरस्वती जाकी करतहें प्रशंसा । यादव

नरेश ये मुनिमानस हंसा ॥६॥ जाकी पदरज शिव विरंची विश्व हेरें । सूरदास ऐसौ ध्यान वसौ हिय मेरें ॥७॥

★ राग देश ★ बाजे वधाइयाँ वे सईयां नंददे दरबार । हुवा सुत सोहनां वे मनदा मोंहानां सुकुंवार । आई सुनी गोपियां वे हिलिमिलि गावही खुशीयाल । जुरे सब लोक मंगनवे गुनीगन बोले दै दै ताल ॥ गुनीदे ताला ताला नाचै ॥वाहवाव॥ आंगनपह पटमांचै ॥वाहवा॥ नंददा लाल जीवो ॥वाहवा॥ दुधा अमृत पीवो ॥वाहवा॥ खुशी दिल पावा झूमां ॥वाहवा॥ ललादी तुंनीचूमां ॥वाहवा॥ उसदा मंगल गावां ॥वाहवा॥ दान दुपट्टा पावां ॥वाहवा॥ पावां पटदान मोती वे ॥ जावां दिल फूल दे घरमांह ॥ असाढा हाथ टोडर वे ॥ वाजूवंध झूलदे बिचु बांह ॥ तुजपर घोलियां ये ॥ जसोदे बोलियां दै सुनाय ॥ धनि धनि आजदा दिन वे ॥ दैदी दान क्यों न मगाय ॥ महरनै दान मँगाया ॥वाहवा॥ कंचन झर बरखाया ॥वाहवा॥ हे बड भागन तूरी ॥वाहवा॥ करी मुरादेपुरी ॥वाहवा॥ बीच खुशी दील गाढे ॥वाहवा॥ मंगल मुखी तु साढे ॥वाहवा॥ जन्म जन्म गुन गावां वाहवा ॥ नागर दरशन पावां ॥वाहवा॥

★ राग गोरी ★ हेरी हेरीरे भैया हेरीहेरी ॥ ध्रु. ॥ हेरीदै किन गावही भलौ बन्यौ है काज ॥ रानी जसुमति ढोटा जायौ आयौ व्रजमें राज ॥१॥ पट पीरौ प्यौसारकौ रानी जसुमति पहिरै ताहि ॥ दामिनिके भोरें गयौ मोमन धोखौ आहि ॥२॥ नेतिनेति जासों कहै ध्यान न आवे रूप ॥ सो या बाबा नंदके पर्‌यौ देखियत सूप ॥३॥फूले फिरत गुवालिया विप्रन बूझत धाई ॥ कहा कूँवरकौ नामहै हमसों कहौ सुनाई ॥४॥ नामनकी गिनती नहीं सबहिनके सिरताज ॥ पहलौ तो सुनिलेहु भैया जाको नाम गरीब निवाज ॥५॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्रवें क्षीर प्रवाह बढ़ायौ ॥ चाटत चरन गोपालके मानों इनहींकौ जायौ ॥६॥ सब ग्वालन मिलि मतौ मत्यौ करि मनमें आनंद । आवो पकरि नचाइये व्रजपति बाबानंद ॥७॥ ऊँचे मानकौ चोंतरा बैठे हैं सिरदार ॥ देखत

भोरौसौ लगै वाकौ चित्त उदार ॥८॥ लघु भैया पाँयनपरे सकुचतहैं व्रजराज॥ उठि किन दादा नाचही पूत भयौहै आज ॥९॥ नाचत बावानंदजू संग लिये सब ग्वाल ॥ मलकत थोंदा हालही देखि हँसी व्रजबाल ॥१०॥ एक ओर व्रज ग्वालिया एक ओर सब पोंनि ॥ पहराबत मधु मंगलै या व्रजकी महतोंनि ॥११॥ फूलि कह्यौ वृषभानजू पूरब पून्य सगाई ॥ कीरत कन्या होइगी तौ देहों कुंवरकन्हाई ॥१२॥ भैयाभैया कहि टेरियौ कहा बड़े कहा छोट॥ ठकुराई तिहुँ लोककी दुरी अहीरन ओट ॥१३॥ यह पद गायौ हेतसों गंग ग्वाल सुखपाय। रौंमरौंम रसना करों तो मोपै बरन्यौ न जाई ॥१४॥

★ राग गोरी ★ ॥ हेरी हेरींरे भैया हेरी हेरींरे ॥ध्रु.॥ सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज। रानी जसुमति ढोटा जायौ आयौ व्रजमें राज ॥१॥ उपनंद कहैं नंदसों मेरे मनकौ भाव। उठि किन बाबा नाचहू आज भलौ बन्यो है दाव ॥२॥ नाचनकों बाबा उठे संगलिये वड़े ग्वाल। मलकत थोंदा हालही निरखि हँसी व्रजबाल ॥३॥ उपनंद कहे तव नंदसों गैया सकल मँगाई। नांदीमुख पूजा करें सब विप्रन दई बुलाई ॥४॥ बहोत भाँति बस्तर दिये जैसो जाकौ लाग। काहूकों पटुका दिये काहू दीनी पाग ॥५॥ काहूकों चादरि दई काहू दीनी खोर ॥ काहूकों दुपटा दिये करि करि पीरे छोर ॥६॥ काहूकों झगुला दिये काहू दई कवाई। काहू दीनी पावरी सब बागे दिये बनाइ ॥७॥ माधो ग्वाल सवसों कहे सुवस बसो व्रजवास। श्रीजसुमतिजू के लाड़िले हम कबहूँ न छाँडे पास ॥८॥

★ राग गोरी ★ हेरी हेरींरे भैया॥ हेली दै किन गावहु हो भलौ बन्यौ हे काज। रानी जसुमति ढोटा है जन्यौ आयौ व्रजमें राज ॥१॥ पटआयौ प्यौसाररसों और जसुमति पहिरै तायि ॥२॥ नेतिनेति जासूँ कहें ध्यान न आवै रूप। सो घर बावा नंदके परयौ देखियत सूप ॥ ३॥ फूले फिरत गुवालिया हो विप्रहि पूछे धाय ॥ कहा कुँवरकौ नाम है बेग बतावौ आय ॥४॥ नामन की गिनती नहीं और सबहिनको सिरताज ॥ पहलेंहि तो यह सुन्यो याकौ नाम गरीब

निवाज ॥५॥ बूढ़ीबाँझ स्रवें सबै हो खीर समुद्र बहाय ॥ चाटत चरन गुपालके मानों इनहीकी जाय ॥६॥ सब ग्वालन मिलिमतौ मत्यौ हो मनमें अति आनंद ॥ आवौ पकरी नचावहूं व्रजपति बाबा नंद ॥७॥ ऊंचे मणि कौ चोंतरा हो जहाँ बैठ्यो परम उदार । देखत गोरो सो लग्यौ भोरो चित्त उदार ॥८॥ लघु भैया पाँयन परे अरु सकुचे व्रजराज ॥ उठि किन बाबा नाँचहू हो पुत्र भयें ते आज ॥९॥ बाबा नंद नचावहीं हो संग लिये सव ग्वाल । नाचत थोंदा हालियो हो देखि हँसे व्रजबाल ॥१०॥ सुबल कहें मधु मंगला चलि नंदीसुर जाहीं । जसुमति जूके हाथकी माँगि खुरचनी खांहीं ॥११॥ एक ओर सब ग्वारिया एक ओर सब पोंनी । पहरावत मधुमंगलें या व्रजकी महतोंनी ॥१२॥ फूलि कह्यौ वृषभानजू हो पूरब पुन्य सहाई ॥ किरति कन्या हें जनी देंहों कुँवर कन्हाई ॥१३॥ मैया मैया कहि टेरहीं कहा बड़े कहा छोट । ठकुराई तिहुँ लोककी होउरी अहीरन ओट ॥१४॥ यह पद गायौ हेतसौं हो गंग ग्वाल सुख पाय । रोम रोम रसना करों मोपै तोउ न बरन्यौ जाय ॥१५॥

★ राग गोरी ★ आज बधायो श्रीव्रजराजकें रानीजू जायोहै मोंहन पूत ॥ध्रु.॥ मास भादों घोस आठें रोहिनी बुधवार ॥ यशोदाकी कूखि प्रगटे श्रीकृष्ण लियौ अवतार ॥१॥ बहोत नारि सुहाग सुंदर सबै घोषकुमारी । सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर गारी ॥२॥ पुत्र मानों भये घरघर निर्तत ठामठाम । नंदद्वारें भेट लै लै उमग्यौ गोकुल गाम ॥३॥ साथिये श्यामा धरत द्वारें सात सींक बनाय ॥ नव किसोरी मुदित ह्वै ह्वै गहत जसुमति पाय ॥४॥ चौक चंदन लीपिके आरती धरीहे संजोय ॥ कहत घोषकुमार ऐसौ आनंद जो नित होय ॥५॥ एक मानिनी मंगल गावे लीला गावें ग्वाल ॥ एक माखन दूध दधि लै छिरकत फिरतहैं बाल ॥६॥ एक हेरी दै दै नाचे एक झटके धाई ॥ एक काहू बदत नाँही एक खिलावत गाई ॥७॥ एकनारी वृद्ध बालिक एक जोबनजोरि ॥ एक काहू बदत नाँही एक हँसत मुख मोरि ॥८॥ कृष्ण जन्म प्रेम सागर होत घोष विलास ॥ देखि व्रजकी संपदा जन फूले माधौदास ॥९॥

★ राग गोरी ★ मंदिलरा बाजेही बाजे बाजे माई नंदराय दरबार ॥ध्रु.॥ धुनि सुनि चलीं अली जिततिततें नवसत साजि सिंगार। भूषण वसन विचित्र कीये शुभ ग्रह लग्न विचार ॥१॥ तिलक साज रोरी अक्षत लै श्रीफल कंचनथार। प्रेम मगन भई गावति आवति सब मिलि मंगलचार ॥२॥ दामिनिसी भामिनी चहुँदिशितें आईं भवन मँझार। जसुमति सुत घनश्याम विलोकत देति अपनपौ वारि ॥३॥ बदन विलोकत हियौ न तोषत इकटक रही निहार। मनहुँ चंद लखि थकित चकोरी भई है सकल मनुहार ॥४॥ साथिये चित्र किये शुभ युवतिन बाँधी बंदनवार। मानों अखिल भुवनकी शोभा राजत गोप दुवार ॥५॥ आये गोप ओपसों ब्रजजन फूल्यौ सब परिवार। हँसिहँसि मिलत नंद आनंदित करत सकल मनुहार ॥६॥ पितर पुजाय बहुरि नांदीमुख कीनों कुल व्यौहार। नामकरन पुनि कियौ गर्ग मुनि शुभ ग्रहलग्न विचार ॥७॥ कामधेनु सम दई हैं द्विजनकों विधिसों धेनु अपार। औरनकों पाटंबर अंबर ह्वै गये भवन भंडार ॥८॥ ढाढ़ी भाट बिरध गोपनके करत जो यश उच्चार। विप्र असीस देत चिरजीयौ महरि मनोहर बार ॥९॥ काँवरि कंध धरें अति हरखत सुनि आये सब ग्वार। हरदी दूध दह्यौ वरखावत मानों घन भादों धार ॥१०॥ गोरस कीच मची व्रज बिथिनि दूध दही बहे खार। सगबगे वसन नंद मिलि ग्वालन नाचत झूमत तार ॥११॥ नाचत नंद थोंदि हालत है आनंद उर न संभार। हँसिहँसि ग्वाल बालन गहे फेंटा अभरन लिये उतारि ॥१२॥ दुंदुभी शब्द किये नभ सुरनर मुनि उचरत जयजयकार। नाचत सनक सनंदन नारद चतुरानन त्रिपुरारी ॥१३॥ रिद्धि सिद्धि दीनी जो जाँची श्रीव्रजराज उदार। दामोदर बलि राम कृष्णकौ दरसन प्रान अधार ॥१४॥

★ राग गोरी ★ बधावौ व्रजराजकें गावौ सखि मंगलचार ॥ध्रु.॥ रानी जसुमति कूखि चंद्रमा प्रगट्यौ पूरन कला प्रकास। सुधा वृष्टि व्रजजन शीतल किये त्रिविध ताप तन नास ॥१॥ कुमुद कलीसी फूली जुवती नंद भवनमें आई। प्रमुदित नैन चकोर बदन लखि आनंद उर न समाई ॥२॥ रीझी प्रान करति

नोछावरि छिनुछिनु लेत बलाय । फूले ब्रजजन बदत न काहू मानौं रंक निधि पाय ॥३॥ जुवतिनकों पहरावत नयेनये भूषन वसन अमोल । ब्रजरानी लगि पाँय सबनके हँसिहँसि देत तंबोल ॥४॥ पहरे गोप ओप पट भूषन उपमा बरनी न जाय । कविजन कहत लजात निरखि सुख मानौं लोकके राय ॥५॥ मागध सूत विप्र बंदीजन आवत ब्रज पति धाम । ढाढ़ी भाट बिरध गोपनके लै लै बोलत नाम ॥६॥ देत तिन्हें गोगज बसन कंचन मणि मुक्तादान । मान करि नंद सबनकों पूरे मनके काम ॥७॥ कंचन मणिमय बने झरोखा हीरा लगे अपार । निरखि सदन छबि निधिपति सुरपति लजत कोटि शत मार ॥८॥ भवन चतुर्दश तीन लोक आनंद रह्यौ जहाँ तहाँ छाय । दामोदर बलि रामकृष्णकौ रहसि बधायौ गाय ॥९॥

★ राग गोरी ★ आज बधायौ नंदरायकें गोपी गावें मंगलचार ॥ध्रु.॥ आई जो मंगल कलश लैकें ता ऊपर फूल डार । अक्षत रोचन दूब लै चली विविध फूल भरि थार ॥१॥ घरघरतें गावति चलीं ब्रजजन झुंड अपार । चलीं सबै मिलि महरिके घर देखन नंदकुमार ॥२॥ देख मोहन आसपूरी सबै देत असीस । नंदमहरकौ लाड़िलौ चिरजीयौ कोटि बरीस ॥३॥ महरि दानजो बोहोत दीयौ और दियौ नंदराय । ऐसौ सुख देखौ सदा जन सूरदास बलि जाय ॥४॥

★ राग गोरी ★ कौन सुकृत इन ब्रजवासिनको वदत विरंचि शिव शेष । श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष ॥ध्रु.॥ जोति रूप जगधाम जगतगुरु जगतपिता जगदीश । योग यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल ईश ॥१॥ एक एक रोम कूप विराट सम अनंत कोटि ब्रह्मांड । लिये उछंग बाहि तात यशोदा अपने निज भुजदंड ॥२॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंच तत्व चहुँखान । बालक होई झूलत ब्रजपलना जसुमति भवन निधान ॥३॥ अनुदिन श्रवण सुधारस पंचम चिंतामणिसी धैन । सो तजि जसुमतिकौ पय पीवत भक्तनकों सुखदैन ॥४॥ करन हरन प्रभु दाता भुक्ता विश्वंभर जगजानि । ताहि लगाय माखनकी चोरी बाँध्यो है नँदरानि ॥५॥ रवि शशि कोटि कला सम लोचन

त्रिविध तिमिर मिटि जात । अंजन देत हेत सुतके चक्षु लै कर काजर मात ॥६॥ कमला नायक बैकुंठ दायक दुख सुख जाके हाथ । काँधे कामरी कर लकुट नग्न पद बन बछरनके साथ ॥७॥ वेद वेदांत उपनिषद षटरस अरपत भुक्तत नाँहि । गोप ग्वालनकी मंडली मोहन हँसिहँसि जूठिन खाँहि ॥८॥ क्षिति नापी तृपद करुनामय बलि छल दियौ पतार । देहरी उलंघ सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंददुवार ॥९॥ बकी बकासुर शकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास । कंस केसी को यह गति दीनी राखे चरन निवास ॥१०॥ भक्तवत्सल प्रभु पतित उधारन रहे सकल भरपूर । मारग रोकि पर्‍यौ हट द्वारें पतित सिरोमणि सूर ॥११॥

★ राग गोरी ★ मेरे मन आनंद भयौ हों तो फूली अंग न माऊँ ॥ध्रु.॥ सात साखकौ मेरो राजा जाधर बजत बधायौ । देवकुसुम बरखतहैं नीकें रानी जसुमति ढोटा जायौ ॥१॥ चलौ सुवासनी सब मिलि साथिये कंचन थाल सजाई ॥ भाभीजूसों झगरौ कीजै आज भली बन आई ॥२॥ बाजे बाजत सचसों नीके कीरति भली नचाई । पुत्र भयो व्रजराज नृपतिकें अष्ट महासिधि आई ॥३॥ हयगज चीर हीर मनिमानिक भादों झरी लगाई । गरीबदास और बुद्धिमतिकों बहोत पँजीरी खवाई ॥४॥

★ राग जैजैवंती ★ माई आजतो गोकुलगाम कैसो रह्यौ फुलकें । गृह फूले दीसे जैसे संपति समूलकें ॥१॥ फूलीफूली घटा आई घरहर घूमकें ॥ फूली फूली बरखाहोत झर लायौ झूमकें ॥२॥ फूल्यौ फूल्यौ पुत्र देखि लियौ उर लूमिकें॥ फूली है यशोदा माय ढोटा मुख चूमिकें ॥३॥ देवता आगिन फूले घृत खाँड होमिकें । फूल्यौ दीसे दधिकाँदौ ऊपर सो भूमिकै ॥४॥ मालिन बाँधे बंदनमाला घरघर डोलिकैं। पाटंबर पहराय अधिके अमोलकें ॥५॥ फूले हैं भंडार सब द्वारे दीये खोलिकें ॥ नंदराय देत फूले नंददास बोलिकें ॥६॥

★ राग जैजैवंती ★ माई आजतो बधाई बाजे नंद गोपरायकें ॥ जादों कुल जादोंराय प्रगटे हैं आइकें ॥१॥ आनंदे सब गोपी ग्वाल नाचतहैं दै दै ताल

अतिहि हुलास भयौ जसुमति मायकैं ॥२॥ कृष्ण पक्ष मास भादों गोकुलमें दधिकाँदों मोतिन बधावे भामा महलमें जाइकें ॥३॥ सिरपर दूब दधि भेटें बावा सभामधि द्विजनकों दीनी गाय वहोत मँगायकै ॥४॥ ढाढ़ी और ढाढ़िन गावें मृदंग झाँझ बजावें हरखि असीस दीनी मस्तक नवायकें ॥५॥ गरें मुक्ता मनिमाल हीरा जराये लाल भिक्षुक भूपति भये महा दान पायकें ॥६॥ माँग्यौ जिन जोई जोई दियौ ताहि सोई सोई दीनी जन सूरको तब भक्ति मँगाइकें ॥७॥

★ राग जैजैवंती ★ माई आजतो बधाई बाजे मंदिर महरकें। फूले फिरें गोप ग्वाल ठहर ठहरकें। फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग अंग फूले तरवर मानों आनंद लहरकें ॥१॥ फूले बंदी जन द्वारें फूले बाँधें बंदनवारै फूले जहाँ जोई सोई गोकुल शहरकें। फूले फिरें जादोंकुल आनँद समूल मूल अंकुरित पुन्य पुंज पाछिले पहरके ॥२॥ उमग्यौ यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंज गरजत कारे भारे यूथ जलधरके। निर्तत मगन फूलि फूलि रति अंगअंग मनके मनोज फूले हलधर हरके ॥३॥ फूले द्विज संतवेद मिटि गयौ कंस खेद गावत बधाई सूर भीतर महरके। फूली है यशोदारानी सुत जायौ सारंगपानी भूपति उदार फूले भार टार्‍यौ धरिके ॥४॥

★ राग रायसो ★ व्रज मंडल आनंद भयौ। प्रगटे श्री मोहनलाल ॥ व्रजमंडल॥ व्रज जुवती चली भेट लै। हाथन कंचन थार ॥१॥ जाय जुरे नंदरायपें। बाँधी बंदनवार ॥ जाय जुरे ॥ कुमकुमके दीये साथिये। सोहनी मंगल गाय ॥२॥ कान्ह कुँवर देखन चले। हरखित होत अपार ॥ कान्ह॥ देखदेख व्रज सुंदरी। अपनौ तन मन वार ॥३॥ जसुमति लेत बुलायके। अंबर दीये पहराय ॥ जसुमति ॥ आभूषन वहु भाँतिके। देत सबन मन भाय ॥४॥ दै अशीश घरकों चले चिरंजीयो कुँवर कन्हाई ॥ दे अशीश ॥ सूरश्याम विनती करै। नंदराय मन भाई ॥५॥

★ राग रायसो ★ श्रीव्रजराजके आँगन बाजत रंग बधाई श्रवन सुनत सब गोपीका। आतुर देखन आई ॥१॥ बदि भादों आठें दिना। अर्धनिशा

बुधबारी ॥ कौलव कर्ण रोहिणी । जन्मे हैं नंदकुमार ॥२॥ गोप आपसों राजत । आये हैं तीहिं काल ॥ नाचत करत कुलाहल । बारत मुक्तामाल ॥३॥ बाजत दुंदुभी भेरी पटह नीसान सोहाय । दही हरदी मिल छिरकत ॥ आनंद मंगल गाय ॥४॥ ध्वजा पताका तोरन । द्वारे द्वार बंधाय ॥ कनक कलश शुभ मंगल । भुवन भुवन धराय ॥५॥ जाचक जुरी मिलि आवत । करत शब्द उच्चार ॥ पुष्पवृष्टि सुरपति करै । बोलै जयजयकार ॥६॥ देत अशीश सबें मिलि । मनमें मोद अपार । जसोमति सुतपर तन मन । नंददास बलिहार ॥७॥

★ राग रायसो ★ गोकुल गाम सुहावनौ । प्रगटे प्रान आधार ॥ भादोंवद शुभअष्टमी । नक्षत्र रोहिणी बुधवार ॥१॥ श्री देवकीकी कूख प्रगटे । श्रीकृष्ण लियौ अवतार । श्रवन सुनत ऊठ धाई ॥ जहाँ तहाँ ते व्रजनार ॥२॥ मंगल कलश लिये सिर गावत । मंगल चार ॥ सिंदुर माँग सँवारी । अँग अँग सजे सिंगार ॥३॥ श्याम कंचुकी सोहै । मृगमद तिलक लिलार ॥ कच कुसुमन शोभत है । मानों नभ गन तार ॥४॥ कुच मध मोतियन माल । मानौ सूर सुरीधार ॥ जेहर अनवट बिछुवा । पग नूपुर झनकार ॥५॥ रँगीली गलिनके बीच । करिणी जूथ अपार ॥ आय मिलि गिरिधरनपें । सकल वेद डरडार ॥६॥ बदन उधार निहारत । चिरजीवो नंदको लाल ॥ शोभापर बलिहारी जन गोविन्द बलिहार ॥७॥

★ राग कान्हरो ★ यह धन धर्महीं तैं पायौ । नीकें राखि यशोदामैया नारायण व्रज आयौ ॥१॥ जाधनकों मुनि जप तप खोजत बेदहू पार न पायौ । सो धन धर्‍यौ क्षीरसागरमें ब्रह्मा जाय जगायौ ॥२॥ जाधनतें गोकुल सुख लहियत सगरे काज सवारें ॥ सो धन बारबार उर अंतर परमानंद बिचारे ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ हरि जनमतही आनंद भयौ ॥ नवविधि प्रगट भईं नँदद्वारे सब दुख दूरि गयौ ॥१॥ वसुदेव देवकी मतौ उपायौ पलना बाँस लयौ । कमलाकांत दियौ हुंकारो यमुना पार दयौ ॥२॥ नंदजसोदाके मन आनंद गर्ग

बुलाय लयौ । परमानंददासकौ ठाकुर गोकुल प्रकट भयौ ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ ऐसौ पूत देवकी जायौ । चारयों भुजा चारि आयुध धरे कंस निकंदन आयौ ॥१॥ भरि भादों आधीराति अष्टमी देवकी कंत जगायौ ॥ देख्यौ मुख वसुदेव कुँवरकौ फूल्यौ अंग न समायौ ॥२॥ अब ले जाहु बेगि इहि गोकुल बहोत भाँति समुझायौ ॥ हृदय लगाय चूमी हरिकौ मुख पलनामें पौढ़ायौ ॥३॥ तब वसुदेव लियौ करपलना अपने सीस चढ़ायौ ॥ तारे खुले पहरुवा सोये जाग्यौ कोऊ न जगायौ ॥४॥ आगे सिंघ शेष ता पाछें नीर नासिका आयौ ॥ हूँक देत वलि मारग दीनौ तब तरवन जल आयौ ॥५॥ नंद यशोदा सुनों विनती सुत जनि जानि परायौ ॥ जसुमति कहै जाउ घर अपने कन्या लै घर आयौ ॥६॥ प्रात भयौ भगनीके मंदिर प्रोहित कंस पठायौ ॥ कन्या भई कूखि देवकीकें सखियन शब्द सुनायौ ॥७॥ कन्या नाम सुन्यों जब राजा पापी मन न पत्यायौ ॥ क्रोध उपाय कंस मन काँप्यौ राजा बहोत रिसायौ ॥८॥ कन्या मँगाय लई राजानें धोबी पटकन आयौ भुजा उखारि लै गई उरते राजा मन बलखायौ ॥९॥ बेदहू कह्यौ स्मृतिहू भाख्यौ सो डर मनमें आयौ । सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे भयौ भक्तन मन भायौ ॥१०॥

★ राग कान्हरो ★ भादोंकी अति रेनि अँध्यारी । द्वार कपाट बाट भट रोके दिश दिश कंत कंस भय भारी ॥१॥ गरजत गगन महा डर लागत बीच बहै यमुना कारी । तातें यह सोच जिय आवत क्यों दुरिहें शशिवदन उजारी ॥२॥ तब पति बोलि वचन करि राखी वर काहै न ताहि दिन मारी । देखौ धौ ऐसौ सुत बिछुरत कहौ कैसे जीवे महतारी ॥३॥ सुनिसुनि दीन वचन देवकीके दीनबंधु भक्तन भयहारी । कटि गये निगड़ उघरि गये गोपुर सूर सुमघवा वृष्टि निवारी ॥४॥

★ राग कान्हरो ★ अंधियारी भादोंकी राति । बालक और वसुदेव देवकी पड़े पड़े पछितात ॥१॥ बीच नदी घन गरजत बरखत दामिनी आवत जात । बैठत उठत सेज सोवरिमें कंस डरन अकुलात ॥२॥ गोकुल वाजे वजत बधाई

सुनि कनहेर सिहात । सूरदास आनंद नंदकें देत कनिक नगदात ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ आठें भादोंकी अँधियारी । गरजत गगन दामिनी कोंधति गोकुल चले मुरारि ॥१॥ शेष सहस्र फन बूँद निवारत सेत छत्र शिर तान्यौ। वसुदेव अंक मध्य जगजीवन कहा करैगो पान्यौ ॥२॥ यमुना थाह भई तिहिं औसर आवत जात न जान्यौ । परमानंददासको ठाकुर देव मुनिन मन मान्यौ ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ भादोंकी रैनि अँधियारी। शंख चक्र गदा पद्म बिराजत मथुरा जन्म लियौ बनवारी ॥१॥ बोलि लिये वसुदेव देवकी बालक भयौ परम रुचिकारी। तुम लै जाहु बेगि इहि गोकुल अधम कंसको मोहि डर भारी ॥२॥ सोवत स्वान पहरुवा चहुँदिस खुले कपाट गये व्है न्यारी। पाछें सिंध डहारत ढूँकत आगें है कालिंदी भारी ॥३॥ तब जीय सोच करत ठाढ़े ह्वै अविधि कहा विधाता ठानी । कमलनैनको जानि महातम जमुना भई तरवन तर पानी ॥४॥ पोहोंचे हैं गृह नंदगोपके जिनकी सकल आपदा टारी। गोविंदप्रभु बड़भाग यशोदा प्रगटे हैं गोवर्धनधारी ॥५॥

★ राग कान्हरो ★ गावत गोपी मधु मृदुबानी। जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यशोदारानी ॥१॥ गावत वेद भारती गावत नारदादि मुनिज्ञानी । गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥२॥ गावत चतुरानन जगनायक गावत शेष सहस्र मुखरास। मन क्रम वचन प्रीति पद अंबुज अब गावत परमानंददास ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ सवते श्रीनंदराय बड़भागी। प्रकटे पुत्र मनोहर जिनके कीरति जग में जागी ॥१॥ दये कनिक मनि दान अचल तिन दूजौ न ऐसौ त्यागी परमानंद बसों गोकुलमें फिरि कमला पग लागी ॥२॥ हिरदे दूध दह्यौ लपटावत भये वल्लभ अनुरागी । श्रीविट्ठलगिरिधारी कृपानिधि लीला प्रेम सों पागी ॥

★ राग कान्हरो ★ अहो विप्र सो उपाय कछु कीजे। जा उपायतें या बालककों राखि कंसते लीजे ॥१॥ मनसा वाचा कहत कर्मना नृपको कौन पतीजे ॥

छलबलकरि उपाय कैसे हुँ काढि अनतही दीजे ॥२॥ नाँहि ऐसौ भागि हमारो सुख लोचन पुट पीजै ॥ सूरदास ऐसे सुतको यश श्रवनन सुनिसुनि जीजै ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ प्रगट भए हरि श्री गोकुलमें । नाचत गोपी ग्वाल परस्पर आनंद प्रेम भरे हैं मनमें ॥१॥ गृह गृहतें आईं व्रजसुंदरी कंचन थार धरे हाथनमें। 'परमानंददास' को ठाकुर नंद जसोदाके है घरमें ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ हुँ सेवुं श्रीगिरिधरन छबीलो श्रीमोहनलाल रंगीलो स्याम । ओर अनेक अवतार धरत हे वासों नहीं मेरे कछु काम ॥१॥ पिता नंद जाके जननी जसोदा बड़ो वीर जाको बलराम। त्रिया जाकी वृषभाननंदनी श्रीराधा प्यारी जाको नाम ॥२॥ जाके गिरि गोवर्धन मथुरा नगरी व्रज वृंदावन । श्रीगोकुल गाम मानिकचंदको एही कृपाफल नित्यप्रति दरसन व्रजमें ठाम ॥३॥

★ राग नाइकी ★ आनंद वधावनो नंद महरजूके धाम । बड़भागिन जसुमति जायौ है कमल नैन घनश्याम ॥१॥ बजत निशान मृदंग ढोल रव मंगल गावत गावत बाम । देत दान कंचन मणि भूषण धेनु बसन लै लै नाम ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन व्रज जन मन अभिराम ॥ हरिनारायन श्यामदासके प्रभु भाई प्रगट हैं पूजन काम ॥३॥

★ राग नाइकी ★ जन्मलियौ शुभ लगन विचार । कृष्णपक्ष भादों निशि आठें नक्षत्र रोहिनी और बुधवार ॥१॥ शंखचक्र गदा पद्म विराजत कुंड मनि उजियार। मुदित भये वसुदेव देवकी परमानंददास बलिहार ॥२॥

★ राग नाइकी ★ फूले गोप ग्वाल नंदराय। व्रजनारी घर घर तें आईं प्रफुलित आनँद उर न समाय ॥१॥ जा कारण सब निकट बुलाये देत दान कंचन मनि गाय । करत वेद ध्वनि व्रजपति आगे सूर निरखि परम सुख पाय ॥२॥

★ राग नाइकी ★ शुभ दिन मंगल आज नीकौ । रानी जसोमति ढोटा जायौ सोहत श्री व्रजकुलकौ टीकौ ॥१॥ मिलि व्रजनारी कहत चिरजीयो बल्लभ सुवन भावतौजी को । वृंदावन ससिकौ मुख निरखत सुख त्रिभुवनकौ लागत फीकौ ॥२॥

★ राग नाइकी ★ भई मेरे मनकी बातजु माई । आजु रैंनि सपनौ भयौ मोकों नंदके घर चली आई ॥१॥ हरद दूब कुमकुम दधि अक्षत दधि कुमकुम गोरससों नाई । मोकों जसुमति बहोत पहराई कहा बरनों जु बड़ाई ॥२॥ इक पलना पर पौढ्यौ है बालक मोतिन झूमक लाई । व्रजनारी घरघर तैं आईं लालकी लेत बलाई ॥३॥ घरघर चौक पूरत मिलि भामिनि बंदनबार बँधाई । ग्वाल बाल सब देत बधाई रतनन भूमि सब छाई ॥४॥ जागि परीचितयौ महरानौ कान्ह कुँवर दरसाई । रसिक प्रीतम या सुखके कारन आयौ व्रजमें माई ॥५॥

★ राग नाइकी ★ प्यारे हरिकौ विमल यश गावत गोपांगना । मनिमय आँगन नंदरायके बालगोपाल करें जहाँ रिंगना ॥१॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुवन टेकत जानु पाणि मेरे छगनकौ मगना । धूसर धूरि उठाई गोद लै मात यशोदाके प्रेमको भाग्यना ॥२॥ त्रिपद भूमि मापी न आलस भयौ अब जो कठिन भयौ देहरी उलंघना । परमानंदप्रभु भक्तवत्सल हरि रुचिर हार कंठ सोहे बघनखना ॥३॥

★ राग नाइकी ★ मिलि मिलि गुंजत आँगनन बधाई । घर घर नाचत छिरकि दूध दधि मंगल भये सबन मन भाई ॥१॥ मानसरोवर हंस ज्यों राजत विप्रन दान दैनकों अघाई गोविंदप्रभुकी उपमा कहा कहों तीन लोक कीरति गाई ॥२॥

★ राग नाइकी ★ भादों आठें अर्धनिसाको जाये मथुरा जादौराय ॥ प्रकट चत्रभुज देख दंपति मनवांछितही सो फल पाय ॥१॥ अद्भूत रूप देखि चकित है यह अचरज क्यों समझौ जाय । द्वारकेश प्रभु यह कहे हम तीन जन्म सुत तुम पितु माय ॥२॥

★ राग नाइकी ★ सुनि बड़भागिन हो नँदरानी गोद खिलावत लाल । आनँदकी निधि मुखलाल कौ ताहिं निहारत निश और बासर छवि नहीं परत बखानी ॥१॥ गुन अपार बुद्धि विस्तार कही न परत निगमबानी । हरिनारायन श्यामदासके प्रभु देखौ जसुमति कूख सिरानी ॥२॥

★ राग नाइकी ★ सब मिलि आओ मंगल गाओ धुनि । आली भादों मास सुहायो रसबूंदन अमीझर लायो व्रजरानी ढोटा जायो ॥१॥ घर घर ते गोपी

आई मिलि चावर चूरो लाई नंदरानीकी कूख सिराई ॥२॥ तिहिं बिरिया बूंद सुहाई व्रजकी व्रज-जीवनि पाई तहां बाजत विविध बधाई ॥३॥ आली श्याम घन जस गावे व्रजवासीको अमृत प्यावे वृन्दावन वसिबो भावे ॥४॥

★ राग विहाग ★ आनंद तिहिं काल प्रगटे हरि आयौ । देखि दंपति अद्भुत सुतकों अति विस्मय मन पायौ ॥१॥ मोर मुकुट पीतांबर पहिरे चार भुजा दरसायौ । शंखगदादि बिराज उदायुध उभय स्तुति गुन गायौ ॥२॥ फिर चित आई ऐसें प्रभुकों कंस दुष्ट दुरें लागे । प्रभु आसय लै चले नंदघर चौकी कोउ न जागे ॥३॥ बालक द्वै भुज सुवाई वसुदेव गमन जब कीनौ । कपाट पौरिया सोये सेस छत्र कर लीनौ ॥४॥ जमुना आवत पंथ दियौ गोकुल पहुँचे आई। माया लई उठाय गोद श्रीकृष्ण तहाँ पधराई ॥५॥ लै आये माया मथुरामें मोहिनी रोंवन लागी । कह्यो पौरिया जाय कंससौं बालक भयौ सुभागी ॥६॥ कंस आय देखि कन्या यों याही कहा हों मारों । को जानै जु दैवगति कैसी सिलापै जाय पछारों ॥७॥ पटकत अष्ट भुजा ह्वै नभते बानी यहै सुनाई । द्वारकेस प्रभु प्रगट भये व्रज तोही मारिवे आई ॥८॥

★ राग विहाग ★ रावलके कहें गोप आज व्रज धुनि ओप कान दै दै सुनो बाजे गोकुल मँदिलरा । जसोदाकें पूत भयो वृषभानजूसों कह्यो गोपी ग्वाल लै लै धाये दूध दधि गगरा ॥१॥ आगे गोपवृंद वर पाछे त्रिय मनोहर चल न सकत कोऊ पावत न डगरा । चतुर्भुजप्रभु गिरिधारीको जन्म सुनि फूल्यौ फूल्यौ फिरत नारद जैसे भँवरा ॥२॥

★ राग बिहाग ★ श्रवन सुनि सजनी बाजे मंदिलरा । आज निशि लागत परम सुहाई । अति आवेश होत तन मनमें श्रीगोकुल बजत वधांई ॥१॥ दै दै कान सुनत अरु फूलत रावलके नरनारी । नंदरानी ढोटा जायौ है होत कुलाहल भारी ॥२॥ अति ऊँचे चढ़ि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल । गैयाहो बगदाबौरे भैया भयौ नंदके लाल ॥३॥ आनंदभरि अकुलाय चलीं सब सहज सुंदरी गोपी । प्रादुर्भाव यशोदा सुतको तामें तनमन ओपी ॥४॥ चंचल साज सिंगार

चंदमुखी चंचल कुंडल हारा । हाथन कंचन थार बिराजत पग नूपुर झनकारा॥५॥ बरखत कच कुसुमन शोभित गली दरश चोंप जिय भाई । गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई ॥६॥ धन्य दिन धन्य यह राति आजकी धन्य धन्य यह सब गोरी । श्याम सुंदर चंदै निरखत मानों अखियाँ त्रिखित चकोरी ॥७॥ शोभा जुत आई कीरति अपने गृह मानि बधाये । याचक जन घन घन ज्यों बरखत भान गोप तहँ आये ॥८॥ आय जुरे सब गोप ओपसों भयौ जो मनकौ भायौ। पंचामृत सीसनतें ढारत नाचत नंद नचायौ ॥९॥ नाचत ग्वाल बाल रसभीने हरद दही भरि राजैं इत निशान उत भेरि दुंदुभी हरखि परस्पर बाजें ॥१०॥ खग मृग द्रुम दिशि दिशि भवननमें देखियत हैं सरसाने । प्राननके आयें इंद्रौ ज्यों यों व्रजजन हुलसाने ॥११॥ ध्वजा वंदनमालालंकृत्त नंद भवनमें सोहै । व्योम विमानन भीर भई लखि अमरनकौ मन मोह ॥१२॥ महाराज व्रजराज नंदपै जो माँग्यौ सो पायौ । जाकें ऐसौ पूत भयौ ताकौ न्याय जगत यश छायौ ॥१३॥ जिनको सुख सुमिरत व्रह्मादिक यों हुलसै व्रज गेही । कहि भगवान हित रामराय प्रभु प्रगटे प्रानसनेही ॥१४॥

★ राग देश ★ आज उनमादियाँ वे बधाई देश व्रजभूपाल । हुवा व्रज चंद छौना वे सलौना साँवरा गोपाल ॥ व्रजमें सादियाँ वे करें रायजा दीयाँ कुलरीत ॥ उतारो लोंन राई वे सखी सब गावें मंगल गीत ॥टेक॥ सखी सब मंगल गावा ॥वाहवा॥ गुनि मिलि चोल मगावा ॥वाहवा॥ बजावें ढोलक झाँझे ॥वाहवा॥ फूलेसे गावें माँझे ॥वाहवा॥ सुनावें बात अनूती ॥वाहवा॥ सदा तुम रहो सपूती ॥वाहवा ॥ लाल केसरके जामा ॥वाहवा॥ करपर ढोल दमामा ॥वाहवा॥१॥ इसदी बलाइयाँ वे परोसे रेसमंदिर जाय ॥ रहौ दिन-रात खुसीयाँ वे लड़ावौ कान्ह गोकुलराय ॥ करौ नित्य रंग रलीयाँ वे, खिलावो लाल कंठ लगाय ॥ यह अरदास मेरी वे कुँवरदा दरसतो दिखलाय ॥टेक॥ कुँवरदा मुख दिखलाया ॥वाहवा॥ खुसिदा खिलत दिलाया ॥वाहवा॥ खुलाया माल खजाना ॥वाहवा॥ लुटाया मूल

अमोला ॥वाहवा॥ भरे सो फेर न रीते ॥ वाहवा ॥ गुनिजन भये बचिते ॥वाहवा॥ कहि सो फेर न बांचे ॥वाहवा॥ भये हैं व्रजपति सांचे ॥वाहवा॥२॥

★ राग देश ★ बाजे बधाइयाँ वे सैयाँ नंददे दरबार ॥ हुवा सुत सोंहना वे मनदा मोंहना रीझवार ॥ आई सब गोपियाँ वे हिलमिल गावहि खुशीआला ॥ जुरे सब गोपमंडल वे गुनीजन गावें दै दै ताल ॥टेक॥ गुनी दै ताला नाचे ॥ वाहवा ॥ आँगन पहपट माँचे ॥ वाहवा ॥ नंददा लाला जीवौ ॥वाहवा॥ दूधा अमृत पीवो ॥वाहवा॥ उस दे मंगल गावें ॥वाहवा॥ दान दुपट्टे पावें ॥वाहवा॥ बीच खुशी दिल गाढ़े ॥वाहवा॥ मंगलमुखी दुसाढ़े ॥वाहवा॥१॥ चाल॥ पावा पट दान मोती वे सँडि फुल दे दिलमाँज तुझपर घोलियाँ वे जसोदे बोलीआन सुनाई ॥ सँडि हाथ टोडल वे बाजुबंद झूम दे दे भुजचारु ॥ धन्य धन्य आजदा दीन वे दे दी दान क्यों न मँगाय ॥टेक॥ महेरने दान मँगाया ॥वाहवा॥ कंचन झर बरखाया ॥वाहवा॥ हे बड़ भागन तूरी ॥वाहवा॥ कर मुरादें पूरी ॥वाहवा॥ जनम जनम गुन गावें ॥वाहवा॥ नागरी दरसन पावें ॥वाहवा॥

★ राग पूर्वी ★ प्रगट्यौ आनंदकंद गोकुल गोपाल भयौ आई निधि नंदके गृह अखिल भवनकी । सजल जलद स्याम बरन सोभित अति चरन कमल उपमाकौ नाँहिन कोऊ देऊँ कवनकी ॥१॥ छिरकत दधि हरद बाल फूले फिरत ग्वाल सबै लै चलीं सब दूध दह्यो भवन भवनकी । नंददास बंदी जस द्वार रह्यौ ठाढ़ौ गावै महिमा कछु उग्र रुचितर माखनकी ॥२॥

★ राग मारू ★ आज कहूँते या गोकुलमें अद्भुत बरखा आईहो ॥ मणिगण हेम हीर धाराकी व्रजपति अति झरलाई ॥१॥ बानी वेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखि हरियारे ॥ दधि घृत नीर क्षीर नानारंग बहि चले खार पनारे ॥२॥ पटह निसान भेरि सहनाई महा गरजकी घोरें ॥ मागध सूत वद चातक पिक बोलत बंदी मोरें ॥३॥ भूषन बसन अमोल नंदजू नरनारिन पहराये शाखा

फल दल फूलन मानों उपवन झालर लाये ॥४॥ आनंद भरी नाचत व्रजनारी पहरें रंगरंगकी सारी ॥ वरनवरन बादरन लपेटी विद्युत न्यारी न्यारी ॥५॥ दरिद्र दावानल बुझे सबनके याचक सरोवर पूरे । बाढ़ी सुभग सुजस की सरिता दुरित तीरतरु चूरे ॥६॥ उल्ह्यौ ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल॥ छायाहित अकुलाय गदाधर तक्यौ चरनकौ मूल ॥७॥

★ राग मारू ★ श्रीगोपाल लाल गोकुल चले हों बलिबलि तिहिंकाल । मोद भरे वसुदेव गोद लै अखिल लोक प्रतिपाल ॥१॥ अरुन उदय जैसें तम फूटत खुलि गये कुटिल कपाट । महावेग बल छांडि आपनों दीनी श्रीयमुनावाट ॥२॥ भोर भयें जैसे कुमुदिनी मूँदत कंसादिक भये मोहे । संत जननके मन अम्बुज वन फुले डहडहे सोहे ॥३॥ बारबार फुहीं फूलसी बरखत अंबुद अंबर छायौ । अपनों निज वपु शेष जानि तहँ बूँद बचावन आयौ ॥४॥ परम धाम जग धाम श्याम अभिराम श्रीगोकुल आये । नंददास आनंद भयौ व्रज हरखित मंगल गाये ॥५॥

★ राग मारू ★ सुखद रविकोटि सम भवन भ्राजे । उदयौ आनंदनिधि गुप्त संकेतमें प्रगट दुंदुभी दिव्य तूर बाजे ॥१॥ कमललोचन अद्भूत अमित शोभा बढ़ी पढ़ि न आबै बदत निगम चारौ । शिव ब्रह्मा सुर वचनते धरनी कौ प्रगट प्राणेश ह्वै भार टार्‌यौ ॥२॥ महामुनि कंठ जीवन मुक्तिकी रूप ब्रह्म शाखा त्रिय शक्ति कीनी । सहस्र कुंतल बिथुरी कंज मधुपावलि पीवत मकरंद झनकार हीनी ॥३॥ सांख्य योगाधिपति श्रवन कुंडल धरें हरे नैनन एन तात माता । दसन दामिनी छटा श्याम अंग घन घटा हृदें श्रीवत्स अंक विश्वत्राता ॥४॥ हरित बनमाल दुति कंठ हिंडोलगति देखि सुरनाथ कर धनुष छाँड्यौ । चार आयुध चार भुजनमें धरें छबि देखि वसुदेव आनंद बाढ्यौ ॥५॥ निगम आगम वचन मेघ गंभीर सम सुखद सरस विस्तार कीनौ । विविध उपदेश आनकदुंदुभीकौं दियौ मुदवति ब्रह्मपथ बोध दीनौ ॥६॥ जननी जाचन हेत द्वै भुज प्रभुभये स्तुति प्रसन्न वदन कहा कहूँ शोभा । कुसुम सुकुमारसुत प्रसूत प्रपंच युत गति मति कथित

तहाँ भये सुलोभा ||७|| जड़ जात लोह बंधत मोक्ष भयौ प्रीति करि स्मरण किये क्यों न लेखे | असुरगण यूथ यूथाधिपति भ्रम भयो चले व्रज ईश तहाँ कहाँ विशेष ||८|| सप्तपातालते नागपतिकी छटा आई प्रभु शीशपर छत्र तान्यौ | कूजत कोकिल पवित्र सिंघकल माधुरी धन्य वसुदेव सुत अधिक मान्यौ ||९|| द्रुम लता फूली स्तवकाकार होइकें विवशभये प्राणपति चरन लागे | जलद कण एकएकहि परत हरि हेत मनहुँ पुलकित वृक्ष स्रवत रागे ||१०|| सिंधुके निकट गये महाभक्त मेघ तव पति जानि लाजिके कटक भाजे | आपगति स्थूल सुर जानि आपहि खिसेहेत याते विधु नक्षत्र राजे ||११|| जगतहिं को भवत विशुद्ध मति सौरिमहाभाग्य वर भाग्य गाऊँ | तरणिजा कूल अति अमिय पूरण बहे गवनकौ हेत सुनिजे बनाऊँ ||१२|| सिंधुगृहणी सुतानाथ आये जानि ब्रीड़ाते सकुच अति तन दुरायौ | कनक अर्घादि उपचारकों थकि रहे जामात्रा बहुत आनंद पायौ ||१३|| चले अंतर मध्य वृष्टि घोषमें जसुमति भवनमें अपर अजनी | लीनी दुहिता हाथ कुँवरको तहाँ धरें हरण करि नाथ ब्रह्मांड रजनी ||१४|| व्रजनाथ नंद आनंदमय विमल वपु सुख देन निज रूप प्रगट कीनौ | लीला विस्तार करि रिपु यूथ सकल हर धरि गिरिराज व्रज राखि लीनौ ||१५||

★ राग ललित ★ सोहिलौ गाऊ ललाको | श्री व्रजराज दुलारे ललाको नानो वारो चिरजीयो जुग जुग उदयो मनाऊं ||१|| नित मोहन मुख चंद निहारों नैनन हियो सिराऊं | 'परमानंद' नंदजू के द्वारे दौर दौर हौं आऊं || लख फली अंग न समाऊं ||२||

★ राग मालकौंस ★ मेरी गत अगाध रे मोपै बरनी न जात निरंजन निराकार नारायन | सात द्वीप सप्त साहेर अष्टकुल पर्वत मेरु रच्यो है सप्त धीरायन ||१|| तुंही तेज पवन पानी तुंही धरती आसमान | तुंही सूरज तुंही चन्द्र तुंही उडुगण तारायन | कहत 'तानसेन' प्रभु घटघटमें करत गान | अगम निगम सकल सृष्टि सुधारायन ||२||

★ राग मालकौंस ★ सब मिल आवो गावो बजावो मृदंग बजावो आज हमारे

लालनजुकी बरसगांठ । सात सखी मिल मंगल गावो कनक थार मोतियन चौक पुरावो ॥१॥ सुघर पंडित बुलावो सुभघरी दिन लावो आवो लालन आवो हार पहेरावो । जगन्नाथ प्रभुकी कीरति सुन दिन दिन नोछावर पावो ॥२॥

★ राग मालकौंस ★ बाजे रे आज बाजे मंदिलरा नंदराय दरबार । गुनी गंधर्व मिल मंगल गावे मालनीयां गुंथे हार ॥१॥ एक आवत एक भेट चढावत एक वारत मुक्ता थार । कृष्णदासकी जींद कुरवानी वारतहें घरबार ॥२॥

★ राग बिभास ★ भादोंकी अष्टमी आधी रात्रमें कान्ह भयो सबके मन भायो॥ जोरि बटोरि धर्यो धन सोंरीमेंसोरी जसोदाजु लुटायो ॥१॥ मोदसों गोद लिये हुलरावत प्रान पियारे कों प्रान सो पायो रोहनी में भयो मोहनी मूरति नंददास लखि हि पोसिरायो ॥२॥

★ राग टोडी ★ मंदिलरा बाजें मधुर सुर नंदराय दरबार ॥ जसुमति जायो सपूत छबीलो कुलदीपक अवतार ॥१॥ व्रज बनिता मिलि करत साथिये घरघर मंगलचार ॥ मालनि वंदनमालें बांधति वारत मोतिन थार ॥२॥ द्विजबर अरु जाचक बंदीजन देत असीस अपार ॥ व्रजाधीश प्रभु पर बरसावत देव कुसुम सुखसार ॥३॥

★ राग टोडी ★ देत गज बाज आज व्रजराज बिराजे गोपीन के सिरताज ॥ देस देस ते खट दरसन आवत मनवां छीत फल पावत किरत अपरंपार ऊंचे चढ़े दान जहाज ॥१॥ सुरभी तिल पर्वत अर्ब खर्ब कंचनमन दीने सो सुतहीत के काज ॥ हरिनारायन श्यामदास के प्रभु को नाम कर्म करावन मेहर मुदित मन वंधि है धर्म कि पाज ॥२॥

★ राग टोडी ★ परम सुख नंदराय घर जसुमति ढोटा जायो ॥ व्रजकी तरुनी नख सिख बनिआई प्रमुदित करत बधायो ॥१॥ गोप सकल दधि दूध परस्पर छिरकत हितचित चायो ॥ विप्रनकों गौदान देतहें जाचक जन मन भायो ॥२॥ व्रजपुर बेंरख बंदन मालें मोतिन चौक पुराये ॥ बाजत पंच शब्द मधुरें सुर देवकुसम बरखायो ॥ अतिरवनीय रमा क्रीडन लखि व्रजाधीश गुण गायो ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ ऐसो माई बहुरि वहौ दिन आयौ ॥ नंदराय चलै न्यौतनको सब व्रज होत बधायो ॥१॥ तिलक आरती करति यशोमति सबहिनपै तिलक करावैं ॥ वरसगाँठिके मंगल आछे प्रेम भरी सब गावैं ॥२॥ गोद लाल दोऊ इत उत सब आगें बाजे बाजैं । गावत नाचत सुघर सुनावत नई नई भाँतिन साजैं ॥३॥ निकसे रथन जुराय महर सब मन प्रफुलित सुख पावैं । श्रीविट्ठलगिरिधरनलालकूँ आगें लेंन सब आवैं ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति विहसति फूसति भारी ॥ बरसगाँठिके शोभित बधाये लै आवति व्रजनारी ॥१॥ चंद्रावलि व्रजमंगल रोहिणी दूधन अरघ बढ़ावें ॥ इततें गाय उठत उततें वे आदर दै बैठावैं ॥२॥ लिये बुलाय रायजू अथाँई हँसि हँसि सबही दिखावैं ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनकूँ गोद लै तिलक आरती करावैं ॥

★ राग देवगंधार ★ सुनि चली गृहगृहतें व्रज बाल ॥ सौभग थार सिंगार कीये तन पहरें सारी लाल ॥१॥ गावति भाव उमगि अपनेनसों आई भवन उताल। आरती करति कहत रानीसों सब व्रज कियौ निहाल ॥२॥ बदन निहारि वारि सर्वसु दै मगन भई अति भारी । ऐसे मनोरथ तुमही पुजाये हम बलि रानी तुमारी ॥३॥ नाचत नचावत बाजे बजावत सबकोऊ आँगन आई । श्री विट्ठल गिरिधर निधि हमारी दियो नंदरानी जाई ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ मिली मंगल गावौ माई । आज लाल कौ जन्मद्यो सहै बाजत रंग बधाई ॥१॥ आँगन लीपौ चौक पुरावौ विप्र पढ़न लागे वेद । करौ सिंगार श्याम सुंदरकौ चोवा चंदन मेद ॥२॥ आनंदभरी नंदजूकी रानी फूली अंग न समाई । परमानंददास तिहीं औसर बोहोत न्योछावरि पाई ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ रानीजू आपुन मंगल गावें । आज लालको जन्म द्योसहै मोतिन चौक पुरावें ॥१॥ गाँमगाँमतें जाति आपनी गोपिन न्यौति बुलावें । अन्वाचार्य मुनि गर्ग परासर तिनपै वेद पढ़ावें ॥२॥ हरदी तेल सुगंध सुवासित लालें उबटि न्हवावें । हरि तन ऊपर वारि न्यौछावरि जन परमानँद पावै ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ यशोदारानी सोवन फूलें फूली । तुम्हारें पुत्र भयो कुल मंडन वासुदेव समतूली ।।१।। देत असीस बिरध जे ग्वालिनी गाँमगाँमते आई । लै लै भेट सबे मिलि निकसीं मंगलचार बधाई ।।२।। ऐसे दसक होई जो औरे सबकोऊ सचुपावे । बाढ़ो वंश नंदबाबाको परमानंद जिय भावे ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ यशोदारानी जायौ है सुत नीकौ । आनंद भयौ सकल गोकुलमें गोप बधू लाईं टीकौ ।।१।। अक्षत दूब रोचन वंदन नंदे तिलक दहीकौ । अंचल वारि वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारौ जीकौ ।।२।। अपने अपने भवनते निकसीं पहरे चीर कसूंभी कौ । यादवेंद्र व्रजकुल प्रतिपालक कंस काल भय भीकौ ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ आज बधाई बाबा नंदके व्रज मंगल चार । आँगन माची कीच फूलीं गोपिका व्रज मंगल चार । आँगनथार हाथन सजे ।।व्रज.।। अक्षत रोरी बीच ।।फूली.।। साथिये धरत है द्वारमें ।।व्रज.।। नानाचित्रविचित्र ।।फूली.।। मोती चौक पुरायकें ।।व्रज.।। बंदनवार बँधाय ।।फूली.।। हरदी तेल सुगंध ही ।।व्रज.।। लालहि उबटि न्हवाय ।।फूली.।। पट भूषण पहरावही ।।व्रज.।। नख शिख अंग सिंगार ।।फूली.।। तिलक करत नंदलालको ।।व्रज.।। प्रमुदित सब व्रजबाल ।।फूली.।। लै दर्पन मुख देखहीं ।।व्रज.।। मंद मंद मुसकात ।।फूली.।। नाचत गावत सबै मिलि ।।व्रज.।। मंगल गीत बधाई ।।फूली.।। हरद दही उड़ावहीं ।।व्रज.।। भई घुंटरुलों कीच ।।फूली.।। नाम करणकों गर्ग मुनि ।।व्रज.।। मोतिन माल पहराई ।।फूली.।। देत दान बाबा नंदजु ।।व्रज.।। विप्रन भाट बुलाय ।।फूली.।। सौने सींग मढ़ावहीं ।।व्रज.।। विप्रन दीने दान ।।फूली.।। सारी सुरंग मगायकें ।।व्रज.।। व्रज तरुनि पहराय ।।फूली.।। बानी पढ़त द्विज आँगने ।।व्रज.।। करत वेदध्वनि गान ।।फूली.।। गाम गामते ज्ञाति सबै ।।व्रज.।। आए नंद दरबार ।।फूली.।। मोहन बदन निहारकें ।।व्रज.।। आनंद उर न समाय ।।फूली.।। धन्य भादों वदी अष्टमी ।।व्रज.।। धन्य

रोहिणी बुधवार ॥फूली.॥ धन्यधन्य नंदजसोमति ॥व्रज.॥ धन्य धन्य गोपी ग्वाल ॥फूली.॥ दुंदुभी देव बजावहीं ॥व्रज.॥ पुहुपन वृष्टि कराय ॥फूली.॥ कही न जात यह सुखही ॥व्रज.॥ सूरदास बल जाय ॥फूली.॥

★ राग धनाश्री ★ सबनसों कहति जसोदामाय जन्मदिन लालकौ फिरि आयौ ॥ध्रु.॥ जब बीते सब मास बहोरि आयौ पुनि भादों। दिन आठें बुधवार होत गोकुल दधिकाँदौ। बोलि लईं व्रजसुंदरि हिलिमिलि मंगल गाय। बाँधति बंदनवार मनोहर मोतिन चौक पुराय ॥१॥ केसरि चंदन घोरि कान्ह बलि प्रथम न्हवाये। नानावसन अनूप कनिक भूषन पहराये। रोरी कौ टीकौ दियौ अंजन नैन लगाय। देत नौछावरि रोहिनी फूली अंग न माय ॥२॥ बजत बधाई द्वार नगारे भेरी ढोला। व्रज कौतूहल होई उमग्यौ मानों सिंधु कलोला ॥ भई दुंदुभी की गरजना सुर विमान चढ़ि आये। शिव विरंचि स्तुति करें सुर सुमनन बरखाय ॥३॥ गाम गामतें विप्र भाट गंधर्व जु आये। जाकौ जेसौ चाउ दान तिन तैसो पाये। भली भाँति पूजा करी नीके नंद जिमाय। दै असीस घरको चले सोंधे सौ लपटाय ॥४॥ ऐसी लीला देखि फिरत फूले व्रजवासी। फूली धेनु और बच्छ फूली द्रुम कंज पलाशी। गोवर्द्धन फूल्यौ सदा फूली श्रीयमुना बहाई। रामदास मन फूल भई श्रीगिरिधरकौ जस गाई ॥५॥

★ राग बिलावल ★ प्रगटे मथुरा माँझ हरी। मात तात हित पुत्ररूप मिस अपनी प्रतिज्ञा सत्यकरी ॥१॥ श्यामवर्ण वपु उरपर भृगुपद जटित कंचन शिर क्रीट खरी। चारिभुजा बनमाल कोटि रवि शंख चक्र गदा पद्म धरी ॥२॥ द्वार कपाट भेद चले व्रजपति तब सुर कुसुमन वृष्टिकरी। परमपुरुष भगवान जानि जिय वसुदेव मन अति भीति हरी ॥३॥ जयजय शब्द बोलि निसान ध्वनि व्योम विमानन भीर भरी। गोविंद प्रभु गिरिधर जसुमतिसुत भक्तन हित आये नंदघरी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ आनंदे आनंद बढ्यौ अति। देवन मिलि दुंदुभी बजाये

निशि मथुरा प्रगटे जादोंपति ॥१॥ गावत गुण गंधर्व पुलकि चित नाचे सुरभारीजु रसिक रति । विद्याधर किन्नर सुकंठ कल तिहिं तिहिं ताल जात उघटगति ॥२॥ शिव विरंचि सनकादि अगोचर फूले चित न मात अमित मति । बरषत सुर समूह सुमन गण हरखत कलोल करतजु मुदितगति ॥३॥ कमलनैन अति बदन मनोहर देखियत ये विचित्र अनूपगति । श्याम सुभग तन पीतवसन दुति और मानो सोहैजु सुभग अति ॥४॥ नख मणि मुकुट प्रभा अति उदित चित चकित भये अनुमान न पावत । अति प्रकाश निशि विमल तिमिर छट झलमलात रतिपतिहिं लजावत ॥५॥ दरशन सुखी दुखी अति सोचत खटसुत सोक सुरति उर आवत सूरदासप्रभु भये हैं प्राकृत भुजके चिह्न सबैजु दुरावत ॥६॥

★ राग बिलावल ★ जन्मलियो जादौंकुलराय । करि करुणा वसुदेव देवकी अद्भुत बालक दरस दिखाय ॥१॥ अंबुज नैन अमोल मुकुटमणि रतन जटित कुंडल झलकाय । कोमल अलक श्याममुख ऊपर श्रीवत्स लक्ष्मी उर शोभाय ॥२॥ कौस्तुभमणि पीतांबर सोहे चारिभुजा शंखादिधराय । कटिकिंकिनी करकंकन अंगद बनमाला पदकमल बनाय ॥३॥ कोटिचंद भानु उदय मानों सुमरि सुखद भुव तिमिर नसाय । मात तात आश्वासन करिकें प्राकृत होई चले व्रज धाय ॥४॥ मात तात छुड़ाई बंधते गोपुर दिये किवार खुलाय । शेष सहस्रफन बूंद निवारत जमुना चरन परसि भई थाय ॥५॥ लै वसुदेव गये श्रीगोकुल नंदघरनि की सेज सुवाय । निज सामर्थ योगमाया लै मोहन मथुरा दई है पठाय ॥६॥ जागी महरि उठी जब जसुमति नंदमहरके लिये बुलाय । जयजयकार भयौ गोकुलमें व्रजजन आनँद उर न समाय ॥७॥ गोपीग्वाल गोप सब व्रजजन स्रवन सुनतही रंक निधि पाई । हरद दूब अक्षत रोरीसों कर कंचनके थार भराई ॥८॥ बाजत ताल पखावज आवज मुरली दुंदुभी शब्द सुहाय । नंदमहर घर ढोटा जायौ दधि लै छिरकत करत बधाय ॥९॥ ध्वजा पताका तोरनमाला गृहगृह मंगल कलश धराय । चित्रविचित्र किये प्रमुदित मन दधि माखनके माँट लुटाय ॥१०॥ तब व्रजराज गोपसों मतौ करि अति आदरसों

विप्र बुलाय । हेम गो रत्न भूमि दक्षना दै आशीरवचन विप्र पढ़ाय ॥११॥ यहि विधि भयौ महोत्सव व्रजमें सुर समाज कुसुमन वरषाय सचिपति देव मुनि चढि विमानन अंबर लियौ है छाय ॥१२॥ गोविंदप्रभु नंदनंदन देखत कोटिक मनमथ गये लजाय । श्रीविट्ठलपद रज प्रतापबल यह लीला संपतिमें पाय ॥१३॥

★ राग सारंग ★ देवकी मन चकित भई । देखौ आय पुत्र मुख काहे न ऐसी कबहुँ होय दई ॥१॥ माथें मुकट पीत पट काँधे भृगुरेखा भुज चारि करें । पूरब कथा सुनाई कही हरि तुम माँग्यौ यह रूप धरें ॥२॥ छूटे निगड़ सुवाऔ पलना द्वार कपाट उघास्यौ । अब लैजाहु मोहि तुम गोकुल यह कहिकें शिशुरूपहि धास्यौ ॥३॥ तबही रोय उठे वसुदेव सुनि नंदभवन गये । बालक धरि वसुदेव कन्या लै आप सूर मधुपुरि आये ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज बधाईको दिन नीकौ । नंदघरनी जसुमति जायौ है लाल भामतौ जीकौ ॥१॥ पंच शब्द बाजे बाजत घरघरते आयौ टीकौ । मंगल कलश लियें व्रजसुंदरि ग्वाल बनावत छींकौ ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवौ कोटि बरीसौ । परमानंददासको ठाकुर गोप भेष जगदीसौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ धन्यहो नंद जगवंदते सुकृत्त फल आज व्रज चंद आनंद पूरन सुदृढ । नभसि वदी वसु बुद्ध रोहिनी नक्त्त मधि होत प्रादुर्भाव सप्रफुलित परिवृढ़ ॥१॥ लग्न द्रग चंद युत सिंघ रवि सुवन बुध केतु कवि मंद रिपु नासकीनों । मकर मंगल मीन देव गुरु सम युक्त सफल सुफल करि मानि लीनों ॥२॥ सुनत पत्रिका मृदंगादि शंखध्वनि झालरी भेरि कर आदि दैकें । पंच जे शब्द उच्छाहसों बाजहीं नाचत त्रिय गोप गावत अनेकें ॥३॥ पढ़त द्विज वेद यश वदत मागध सूत पूत गुणरूप आकृति विराजै । ये अनुभव द्वारकेशकौ अब्द प्रति वल्लभाधीश कृपयैक छाजै ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ रानी तेरौ चिरजीयौ गोपाल । बेगि बड़ौ बढ़ होय विरध लट महरि मनोहर बाल ॥१॥ उपजि पस्यौ यह कूखि भाग्य बल समुद्र सीप जैसे लाल । सब गोकुलके प्राण जीवन धन वैरिनके उरसाल ॥२॥ सूर कितौ जीय

सुखपावत है देखत श्यामतमाल । रज आरज लागौ मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल ॥३॥

★ राग सारंग ★ सबमिलि ग्वालिनी देत असीस । नंदरानी ढोटा जीवौ कोटि बरीस ॥१॥ धन्य यह कूँखि भरी सुभ लच्छिन जिन सगरौ ब्रज छायौ । ऐसौ पूत जायौ नंदरानी जिन करि अटल बसायौ ॥२॥ अब यै बेगि बढ़ौ तुमरे गृह ठुम ठुम खेलत डोलै । श्री विठ्ठलगिरिधर रानी तुमसों मैया कहि कहि बोलै ॥३॥

★ राग सारंग ★ यशोमति सबहिन देति बधाई । मेरे लालकी मोहि विधाता बरसगांठि दिखराई ॥१॥ बैठि चौक गोद लै ढोलन आछी लगन धराई । बोहोत दान द्यावत सब विप्रन लालन देखि सिहाई ॥२॥ रुचिकर देहु असीस ललनकों अप अपने मन भाई श्रीविठ्ठलगिरिधर गहि कनियाँ खेलत रहौ सदाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ ग्वालिनि निकसी देत असीस ॥ तुम्हारौ ढोटा अहो नंदरानी जीवौ कोटि बरीस ॥१॥ बरनबरन सारी पहराई चोली राती पीरी ॥ माथें करी खोरि कुमकुमकी हाथनमें दई बीरी ॥२॥ रानीजू तुम्हारौ यह दिन आयौ मंगलचार बधाई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरकी मैया करिकरि खुसी पटाई ॥

★ राग नाइकी ★ जसुमति तिहारो घर सुबस सो । सुनरी जसोदा तिहारे ढोटाको न्हावत हू जिनि बार खसो ॥१॥ कोऊ करत मंगल वेद ध्वनि कोऊ गाओ कोऊ हँसो । निरखि निरखि मुख कमलनैन को आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥२॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवो कोटि बरीसो 'परमानंद' नंद घर आनंद पुत्र जन्म भयो जगतनसो ॥३॥

★ राग सारंग ★ लालको सुफल जन्मदिन आयौ । गामगामतें जात आपनी मोतिन चौक पुरायो ॥१॥ दिन दस पेहेलें बाजे बाजत पंच शब्द घनघोर । सब मिलि गावत गीत बधाई घोख कुतूहल सोर ॥२॥ प्रथम सप्तमी राजभोगमें बल्लभ मोहन भोग । करत बियारू नंद जातिमिलि सैनभोग संजोग ॥३॥ भादों कृष्ण उदित रवि आठें वह व्रत दिन ठहेराय । कृष्ण जन्मदिन पुत्र जनम ते

अति प्रफुलित नंदराय ॥४॥ घटिका द्वैक रातिही तवतें उठे कृष्ण गुन गाय। लाल न्हवावत पंचामृतसों व्रज युवती मंगल गाय ॥५॥ पुनि पुनि लै अरु अंग उबटनौ केसर सोहै गात। उष्णोदक लै न्हवावत लालन अंग अँगौछत मात॥६॥ रंग केसरी बागौ कुलही सूथन पटका लाल। आभूषन वहुबिधिसों पहरे काजर नैन विशाल ॥७॥ भाल तिलक गोरोचन मृगमद कमलपत्र दोऊ गाल। गुंजा मोर चंद्र धर बैठे सिंहासन नंदलाल ॥८॥ सनमुख ते सिंगार लड़ैती भूषन भाव अनूप। श्याम अंतरी सारी केसरी राजत जुगल स्वरूप ॥९॥ उपर पीतांबर लै ओढ्यौ व्रजजन गावत गीत। कनकथारमें मोती साथिये मुठिया आरती चीत ॥१०॥ अक्षत पीरे कुमकुम बोरे तिलक करत है मात। भेट धरत पुनि मुठिया वारत आरती करी बली जात ॥११॥ तिल गुड़ मेल दूध ओंट्य पुनि बीरा देत विशेष। हरखित दान देत नँदवाबा द्वारिकेश मुख देख ॥१२॥

★ राग बिलावल ★ नंदमहरकें पूत भयो। बडी बेस जायो हें ढोटा निरखत सब संताप गयो ॥१॥ घरघरतें सब चली जुवती जन अंग अंग सुभग सिंगार किये। कुंभनदास गिरिधरके प्रगटें नांचत सब मिलि मुदित हिये ॥२॥

माहात्म्य के पद

(मंगला शयन सुधी)

★ राग ललित ★ तेरी गति अगाध मोपे बरनी न जाय निरंजन निराकार नारायण सप्त द्वीप सप्त खंड अष्टकुल पर्वत को मेरु रच्यो सप्त धारायन ॥१॥ तू ही चंद तू ही सूरज तू ही उडगन के तारे तू ही तेज पवन पानी तू ही धरनि आसमान। तानसेन के प्रभु घटघट में करत ज्ञान अगमनिगम सकल सृष्टि धरत ध्यान ॥२॥

★ राग विभास ★ प्रातसमें हरिनाम लीजिये आनंदमंगलमें दिन जाय ॥ चक्रपाणि करूणामय केशव विघ्नविनाशन यादवराय ॥१॥ कलिमलहरण तरण भवसागर भक्तचिंतामणि कामधेनु ॥ एसो समर्थ नाम हरीको वंदनीक पावनपद रेनु ॥२॥ शिव विरंचि इंद्रादि देवता मुनिजन करत नामकी आस ॥ भक्तवत्सल हरिनाम कल्पतरू वरदायक परमानंददास ॥३॥

★ राग बिभास ★ करत हैं भगतनि की सहाई। दीनदयाल देवकीनंदन समरथ जादौराई ॥ हस्त-कमल की छाया राखै जगत निसान बजाई। दुष्ट-भवन-भय हरत घोष-पति गोवर्द्धन लियो उठाई ॥ कृपा-पयोधि भगत-चिंतामनि ऐसें बिरद बुलाई। 'परमानंददास' प्रतिपालक बेद बिमल जसु गाई ॥

★ राग बिलावल ★ गोविंद तिहारो स्वरूप निगम नेति नेति गावें ॥ भक्तके वश श्याम सुंदर देह धरें आवें ॥१॥ योगी मुनि ज्ञान ध्यान स्वपने नही पावें॥ नंद घरनि बांधिताहि कपि ज्यों नचावें ॥२॥ गोपीजन प्रेमआतुर संगलागी लोलें ॥ मुरलीको नाद सुनत गृहतजि वन डोलें ॥३॥ वेदपुराण स्मृतिकथा कहत शुक बिचारी ॥ परमानंद प्रेमकथा सबहिनते न्यारी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ सो मुख व्रजजन निकट निहारत। जा मुखकों चतुरानन ज्ञानिन साधन करि करि हारत ॥१॥ जा मुख कों श्रुति नेति नेति प्रति शिव सनकादिक आरत। सो मुख नंदगोपके गोकुल बन वछरा गौ चारत ॥२॥ जामुखकौ शेष सहसमुख नाम लेत दिन टारत। सो मुख परमानंद यशोदा लै उछंग चुचकारत ॥३॥

★ राग विलावल ★ सो वल कहा भयौ भगवान। जिहिं बल मीनरूप जल थाप्यौ लिये निगम हति असुर परान ॥१॥ जिहिंवल कमठ पीठि पर गिरिधर सजल सिंधु मथि कियौ वितान। जिहिं बल रूप बराह दशन पर धरी धरा करि पुहुप समान ॥२॥ जिहिंबल हिरणकश्यप उर फार्‍यौ भये भक्तकों कृपा निधान। जिहिंबल बलि पाताल पठायौ बसुधा त्रिपद करी पर मान ॥३॥ जिहिं बल विप्र तिलकदै थापे रक्षा आपु करी विद्यमान। जिहिं बल रावण के शिर तोरे कियौ विभीषण नृपति समान ॥४॥ जिहिं बल जाम्बवंत बल मर्‍यौ जिहिं बल भूप विपति सुनि कान। सूरश्याम अब धामअवधि पर चढ़ि न सकत प्रभु खरे अयान ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ जनुनी चांपत भुजा श्यामकी ठाडे देखि हसत बलराम। चौद भुवन उदर जाके कहुं गिरिवर धार्‍यौ बहुत कर वाम ॥१॥ कोटि ब्रह्मांड रोम

रोम प्रति तिहिं तिहिं निशि वासर धाम । जोई आवत सोई देखि चक्रित व्है कहत करे हरि ऐसे काम ॥२॥ नाभिकमलते ब्रह्मा प्रगट्यो देखि जलार्णव तज्यो विश्राम । आवत जात बीच ही अटक्यो दुखी भयो खोजत निज धाम ॥३॥ तीनसो कहत सकल व्रजवासी कैसे कर राख्यो गिरि श्याम । 'सूरदास' प्रभु जल थल व्यापक फिरि फिरि जन्म लेत नंदधाम ॥४॥

★ राग सारंग ★ जाकों वेद रटत ब्रह्मा रटत शंभु रटत शेष रटत नारद शुक व्यास रटत पावत नहीं पाररी ॥ ध्रुवजन प्रल्हाद रटत कुंतीके कुंवर रटत द्रुपदसुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपालरी ॥१॥ गणिका गज गीध रटत गौतमकी नार रटत राजनकी रमणी रटत सुतन देदे प्याररी ॥ नंददास श्रीगोपाल गिरिवरधर रूपजाल यशोदाको कुंवरलाल राधा उरहाररी ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ भक्त-बछल गोपाल दयानिधि देवनि कों सुख दीनों । अति प्रताप वेद नहिं समुझत तनक ही में लघु तन कीनों ॥ बलि राजा कें अति कृपा जिहिं निगम नेति करि गीनों । 'परमानंद' पूरन कृपा हरि घर बसि आनँद दीनों॥

★ राग सारंग ★ चक्र के धरनहार गरुड के असवार नंद के कुमार मेरो संकट निवारो जू ॥ यमलार्जुन नारे गज ग्राहे तें उबारे नाग के नाथन हारे मेरे तू अधार हैं जू ॥१॥ जल हू तें कियो न्यारो इंद्र हू कों गर्व गार्‍यौ व्रज कें रक्षनहार बिरद बिचारों जू ॥ द्रुपद सुता की वार नेक हू न करी अवार अब कहा वार 'सूर' सेवक तिहारों जू ॥२॥

★ राग मालव ★ पद्म धर्‍यौ जन ताप निबारन चक्रसुदर्शन धर्‍यौ कमल कर भक्तनकी रक्षाके कारन ॥१॥ शंख धर्‍यौ रिपु उदर विदारन । गदा धरी दुष्टन संघारन ॥ चारों भुजा चारों आयुध धरे नारायन भुवभार उतारन ॥२॥ दीनानाथ दयाल जगत गुरु आरति हरन भक्त चिंतामनि । परमानंददासकौ ठाकुर यह औसर औसर छाँडो जनि ॥३॥

★ राग मालव ★ मोहन नंदराय कुमार प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरण सरोजवंदो स्यामघन गोपाल । ललित कुंडल

गंडमंडित चारुनैन विसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला शेष संकर देत। दास परमानंद प्रभु हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

★ राग मालव ★ बंदे धरन गिरिवर भूप। राधिकामुख कमल लंपट मत्तमधुप स्वरूप ॥१॥ बंदे रसिक वर संगीत सुखनिधि। क्वनित वेणु अनूप ॥ कहि कृष्णदास उदार उरपर लोलमाल अनूप ॥२॥

★ राग मालव ★ प्रलय प्रयोधि जले धृतवानसिवेदं ॥ विहित विहित्र चरित्र मखेंद ॥ केशव धृत मीन शरीर जय जगदीश हरे ॥१॥ क्षिति रति विपुलत्तरेतव तिष्ठति पृष्ठे ॥ धरणि धरण किणचक्र गरिष्ठे ॥२॥ केशवधृत कच्छप रूप जय जगदीशहरे ॥२॥ वसति दशन शिखरे धरणि तव लग्ना ॥ शशिनिकलंक कलेवनिमग्ना ॥ केशवधृत सूकर रूप जय जगदीशहरे ॥३॥ तव कर कमल वरे नख मद्भूत श्रृंगम ॥ दलित हिरण्यकशिपु तनु भृंगं ॥ केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीशहरे ॥४॥ छलयसि विक्रमणेबलिमद्भुत वामन ॥ पद नख नीरजनितजन पावन ॥ केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे ॥५॥ क्षत्रिय रुधिर भये जगदपगदपापं स्नपयसिपयसि शमित भवतापं ॥ केशवधृत भगृपतिरूप जय जगदीशहरे ॥६॥ वितरसिदिक्षुरणे दिक्पति कमनीयं, दशमुखमौली बलिंरमणीयं ॥ केशवधृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ॥ ७॥ वहसिवपुषि विषदेवसनं जलदाभं ॥ हलहतिभीतिमिलित्तयमुनाभं ॥ केशवधृत हलधर रूप जय जगदीशहरे ॥८॥ निंदसियज्ञ विधेरहहश्रुतिजातं ॥ सदयहृदय दर्शित पशुघातं ॥ केशवधृत शुद्ध शरीर जय जयदीशहरे ॥९॥ म्लेच्छनिवहनिधनेकलय सिकरवालं धूमकेतु मिवकिमपिकरालं ॥ केशवधृत कल्किशरीर जय जगदीशहरे ॥१०॥ श्री जयदेव कवेरिदमुदित मुदारंग ॥ श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारं ॥ केशवधृत दशविधरूप जय जगदीशहरे ॥११॥

★ राग गोरी ★ नमो नमो जे श्री गोबिंद आनंदम ब्रज सरस सरोवर प्रफुलित बदन नील अरविंद ॥१॥ जसुमति नेह नीर नित पोखत नव नव ललित लिलाद सुख कंद ॥ ब्रज पति ऋन प्रताप प्रफूलित परसत सुजस सुवास अमंद ॥२॥

सहचरी जाल राल माल संगनि बरस रंग रंग खेलत आनंद ॥ अलि गोपीजन नैंन 'गदाधर' सादर पीबत रूप मकरंद ॥३॥

★ राग गोरी ★ गोवर्धननाथ गोकुल पति गरुडागामी गोपीजन वल्लभ जे मुकुंद गोबिंद गुपाल ॥ कान्ह कृष्न केसो किसोर हरि स्याम सुंदर दीनानाथ दामोदर रघुपति परमेसुर पुरुषोत्तम अपरंपार पुरनि निश्चय नंदलाल ॥१॥ नारायन नरहरि मुकुंद मधुसुदन माधो मुरारि रनछोड छबिलौं केवल नैनं बिसाल ॥ कहि 'कल्यान' बृजराज श्री विट्ठल प्रगटे हे यहाँ मंथन केसी कंस काल ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ चरनकमल बंदों जगदीश जे गोधनके सँग धाये ॥ जे पदकमल धूर लपटाने कर गहि गोपिन के उर आये ॥१॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजत राजसूयमें चलि आये ॥ जे पदकमल पितामह भीषम भारत देखन ते आये ॥२॥ जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदय कमलके अंतर राखे ॥ जे पदकमल रमा उर भूषन वेद भागवत जे भाखे ॥३॥ जे पदकमल लोकत्रय पावन बलि राजाकी पीठ धरे ॥ ते पदकमल दास परमानंद गावत प्रेम पियूष भरे ॥४॥

★ राग कान्हरो ★ वंदो चरन सरोज तुम्हारे ॥ सुंदर स्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्रान पियारे ॥१॥ जे पद पद्म सदासिव कों धन, सिंधु सुता उर तें नहि टारे ॥ जे पद पद्‍म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रहलाद संह्मारे ॥२॥ जे पद पद्‍म फिरत वृन्दावन अहि सिर धरि अगनित रिपु मारे ॥ जे पद पद्‍म परस ब्रज जुवती सरबसु दे सुख सदन बिसारे ॥३॥ जे पद पद्‍म लोकत्रय पावन सूर सूरि दरस कटत अध भारे ॥ जे पद पद्‍म परसि ऋषि पत्नी मृग अरु व्याध अमित खल तारे ॥४॥ जे पद पद्‍म फिरत पंडव घर दूत भये सब काज संवारे ॥ जेई पद पंकज 'सूरदास' सुख करन बचन अहि फन प्रति धारें ॥५॥

★ राग कान्हरो ★ जाकुं नेक श्यामको बानो ॥ ताके निकट न जाय जन कोऊ कहारंक कहा रानो ॥जाकु.१॥ माला कंठ सिर तिलक विराजत अरु चंदन लपटानो । शंख चक्र गदा पद्म विराजत सो कहा रहेगो जानो ॥जाकु.२॥

रविसुत कहत पुकार पुकारी सुनके दूत अकुलानो। सूरदास कहत यह हितकी समज सोच जियजानो ॥जाकु.३॥

★ राग कान्हरो ★ उधो जो जन मोहि संभारे ताकुं विसारूं न पलक घरीरे। काटूं कठिन कर्मकि संकट राखु सुख आनंद भरीरे ॥उधो.॥ जो मोही भजे भजुं हुं ताकुं यही प्रतिज्ञा मोय आय परीरे। सदा समीप रहु ताहीके गुप्त हती सो प्रकट करीरे ॥उधो.॥ ज्यों भारतमें वरहीके अंडा राख लिये गजघंट परीरे। सूरदास ताही डर काको निशवासर जो जपत हरीरे ॥उधो.॥

★ राग कान्हरो ★ वंदु चरण सरोज तिहारे ॥ श्याम श्रीअंग कमलदल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे। जे पद पद्म सदाशिवको धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे ॥ जे पद पद्म परसि जल पावन सुरसरी दरस कटत अघ भारे। जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नि नृग ओर व्याध पतित बहु तारे। जे पद पद्म तात रिपु त्रासत मन वच कर्म प्रहलाद सम्हारे। जे पद पद्म रमित वृंदावन अगनित प्रबल मल्ल बहु मारे। जे पद पद्म रसिक व्रज युवति सुतपति तन मन धाम बिसारे। जे पद पद्म भ्रमति पांडव दल सारथी ह्वै सब काज सुधारे। सूरदास तेई पद पंकज त्रिविध तापके हरन हमारे ॥

★ राग कान्हरो ★ हरि को भक्त माने डर काके। जाके करजोरे ब्रह्मादिक देव सबे दंडोती जाके। सिंघ सखा कर ग्रामवसावे यह विपरीत सुनी नहीं देखी। हाथी चढे कुकरकी शंका यह धोंकोन पुराणन लेखी। सुगम लोग अरु विगम मूढमति कृपा सिंधु समरथ सब लायक। परमानंददासको ठाकुर दीनानाथ अभयपददायक ।

★ राग कान्हरो ★ जो हरि चरन सरोज विमुख भये विप्र जनमते कहाजु सर्यौ। जो कोउ श्वपच भजत भगवंते कहो अब ताको कहा विगर्यो ॥ वेदव्यास सरखे अधिकारी अंशकला द्विजरूप धर्यौ। सत्तरे पुराण किये परसीधे तोऊ अंतःकरन जर्यौ ॥ जब नारदमुनि तत्व बतायो सुख उपज्यो संताप टर्यौ। भज कृष्णदास काज सब सरहे करम धरमते कोउ न तर्यौ ॥

★ राग बिहाग ★ जुगल में जुगल जुगल के नाम ॥ चाप त्रिकोण मीन गोपद नभ अर्द्ध इंदु घट वाम ॥१॥ जंबू ध्वज रेखा अंकुश यव स्वस्तिक बज्र सरोज अष्टकोण ये दक्षिण राजत देखत लजे मनोज ॥२॥ इत हे अंकुश छत्र चक्रध्वज इंदीवर यव रेख ॥ गदा अंबुज रथ कुंडल बेंदी शैल शक्ति झख देख ॥३॥ व्रह्मादिक सनकादिक शंकर ध्यान न आवत जेव ॥ तेई श्रीवल्लभ प्रतापतें द्वारकेश नित्य सेव ॥४॥

★ राग मालव ★ वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मुद्बिभ्रते ॥ दैत्यान दारयते बलिंछलयेत क्षत्रक्षयं कुर्वते ॥ पौलस्तयं जयते हलंकलयते कारुण्य मातन्वते ॥ म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृति धृते कृष्णायतुभ्यं नमः ॥१॥

नाल छेदन के पद

★ राग देवगंधार ★ झगरिनि ठान्यों झगरौ हरिकौ नाल छुवन नहीं देही। जाही नालतें व्रह्मा उपज्यौ सोई नालहै ऐही ॥१॥ शिव नारद जाकौ यश गावें जसोदा जायौ सोई। मनि मानिक खपरौटी लैहों तोलों छुवे न कोई ॥२॥ छेद्यौ नाल अंकमें लीने जनम सुघुँटी पिवाई। रोहिनी क्षमा क्षमा करि राखत सूरदास बलि जाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ जसोदा नाल न छेदन देहों। मनिमय जटित हारग्रीवाकौ वहे आज हों लैहों ॥१॥ औरनके हैं सकल गोप मेरें एकै भवन तुह्मारो। मिटि जो गयौ संताप जनमकौ देख्यौ नंद दुलारो ॥२॥ बोहोत दिननकी आशा लागी झगरिन झगरौ कीनौ। मनमें विहँसत है नंदरानी हार हियेकौ दीनौ ॥३॥ जाकौ नाल आदि व्रह्मादिक सकल विश्वआधार। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मेंटनकों भूभार ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ झगरिन तें हों बोहोत खिजाई। कंचनहार दियें नहीं मानत तुही अनौखी दाई ॥१॥ बेगि तू नार छेदि बालककौ जातहै ब्यार भराई। सत संयम तीरथ व्रत कीने तब यह संतति पाई ॥२॥ दीजे बिदा जाऊँ घर

अपने कालि साँझकी आई ॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे भक्तनकै सुखदाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ जसुमति लटकत पाँय धरै । भलौ मनैहों झगरिन तू मति मनहीं डरै ॥१॥ दीनों हार ढार मनि कंचन मोतिन थार भरै । सूरदास स्वामी प्रगटे हैं ओसर पै झगरै ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ कहै झगरिन मैं बड़भागिनि निरख्यौ है नंदजूकौ लाल । जाकौ दरश देव नहीं पावें सो पायौ इहि काल ॥१॥ यह औसरमें कैसे पायौ कौन पुन्य कहो कैसे जायौ । प्रभुकी कृपा बिना कोउ पावत लैहों अब अपनों मन भायौ ॥२॥ जातिन छोटी करमनि मोटी देव निकट कोऊ बैठ न पायौ । में अपने हाथन करि लीनों नाल छेदनकों मोहि बुलायौ ॥३॥ अपनों जनम सुफल करि मानँत दुर्लभ दरशन सुलभ पायौ । सगुनदास तिन सब कछु पायौ जिहिं पारसतें लोह मिटायौ ॥४॥

★ राग बिलावल ★ झगरिनि झगरत नंदसों थौरो नहि माँगें । ज्यों ज्यों मन हरि निहोरहीं त्यों त्यों उठि लागें ॥१॥ पूरन तप बड़भागिनि जसोदा सुत जायौ । शिव विरंचिकौ ईश है तेरे घर आयौ ॥२॥ तीन लोक जाके उदरमें अचरज है महा री । ताकौ छेद्यौ नाल हों देंहों हो कहा री ॥३॥ सों हों माँगों कहा री कृपा करी पाऊँ । बिखै बिकार बिसारिकें जस जगमें गाऊँ ॥४॥

★ राग बिलावल ★ काहै झगरिनि में बड़भागिनि निरख्यौ है नंदजूको लाल । जाकौ दरस देव नहिं पावें में पायो है इहि काल ॥१॥ यह औसरेमें कैसें पायौ कौन पुन्य कोंनै जान्यौ । प्रभुकी कृपा बिना कछु पावत लैहों अब अपनों मन मान्यौ ॥२॥ जातिन छोटी करमनि मोटी देव निकट कोऊ बैठन पावै ॥ मैं अपने हाथन करि लिनों नारछेदनकों मोहि बुलावै ॥३॥ अपनौ जनम सुफल करि मानँत दुर्लभ दर्शन सुलभ पायौ । सगुनदास तिन सब कछु पायौ जिहि पारस ते लोह मिटायौ ॥४॥

छठी के पद

★ राग सारंग ★ मंगल द्योस छठीकौ आयौ । आनंदे व्रजराज यशोदा मनहुँ अधन धन पायौ ॥१॥ कुँवर न्हवाई जसोदा रानी कुलदेवीके पाँय परायौ । बहुत प्रकार विजन धरि आगें सब विधि भलौ मनायौ ॥२॥ सब व्रजनारी बधावन आईं सुतकौ तिलक करायौ । जयजयकार होत गोकुलमें परमानँद यश गायौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज छठी जसुमतिके सुतकी चलौ बधावन माई । भूषन बसन साज मंगल लै सकल सिंगार बनाई ॥१॥ भली बात विधि करी बैस बड़ सुत पायौ नँदराई । पुन्य पुंज फूले व्रजवासी घर-घर होत बधाई ॥२॥ पूरनकाम भये निजजनके जीवेंगे यश गाई । परमानंद बात भई मनकी मुद मरजाद नसाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ दूनों मंगलहै अति आज । छै दिनके माई भये कुशलसों फूलत हैं व्रजराज ॥१॥ हुलसी बहोत नंदजूकी रानी यै सुत पुन्यन पये । फिरि-फिरि हाथ रोहिनीके दै दाम बहोत खरचाये ॥२॥ संध्या समय चौक पर बैठी मंगलगीत गवाये । पूजत छठी कान्ह कुँवरकी अरु लै पाँय पराये ॥३॥ फिरि फिरि ग्वाल गोप सब पूजत और पूजत व्रजनारी श्रीविट्ठलगिरिधर चिरजीयौ माँगत ओलि पसारी ॥४॥

★ राग सारंग ★ गोद लियें गोपाल यशोदा पूजत छठी मुदित मन प्यारी । बड़्डे वार सनेह चुचाते चूँबत मुख दै दै चुचकारी ॥१॥ कुलदेवता मनाई सबनकूँ बरन बरन पहरावत सारी । गोपी ग्वाल हरखि गोकुलके नाचत हँसत दै दै करतारी ॥२॥ कंचनथार आरती सजि सजि लै आई सब व्रजकी नारी । वारी लालपर लछीरामकों हरखि नंद दई नवनिधि टारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ पूजति छठी कान्ह कुँवरकी थापे पीत लगाई । कंचनथार लिये व्रज वनिता रोचन देत सुहाई ॥१॥ पनवारो भरि खीर खाँड घृत पापर बरा

बनाये । मेवा दाख बदाम छुहारे मन मोहन मन भाये ॥२॥ आँजति आँखिजु सबही सुवासिन माँगत नैन भराये । सूरदासप्रभु तुम चिरजीयौ घरघर मंगल गाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ ब्रजपुर घरघर अति आनंद । प्रगटे हैं जसुमतिके ढोटा दूर गये दूख द्वन्द्व ॥१॥ साज छटीको लाई वनिता गावत गीत सुछन्द । नंदराय तब छठी पूजिकें दिये दान सुखकंद ॥२॥ भीतर जाय महरिपै देखे सुंदर मुख अरविंद। करत आरती अवलोकत मुख द्वारकेस मन फंद ॥३॥

पूतना वध के पद

★ राग विलावल ★ देखौ यह विपरित नई । अद्भुतरूप नारि एक आई कपट हेत क्यों सहै दई ॥१॥ कान्हहि लै जसुमति कोवातें रुचि लै कंठ लगाई । तब उन देह धरी जोजनि लों श्याम रहे लपटाई ॥२॥ बड़े भाग है नंदमहरकौ बड़भागिनि नँदरानी । सूरश्याम उर ऊपर उबरे यह सब घर घर जानी ॥३॥

★ राग विलावल ★ मथुरापति जिय अधिक डरानौ सभा माँझ असुरनके आगें बारबार शिर धुनि पछितानौ ॥१॥ ब्रजभीतर उपज्यौ मेरौ रिपु मैं जानि यह बात । दिन ही दिन वह बढ़त जात है मोकों करी है घात ॥२॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिनक माँझ संघारी खटदिन कौ बालक भयौ तानें पय पीवत ही मारी ॥३॥ अबहीतें यह हाल करत है दिनदिन होत प्रकास । सेनापति सुनाय बात यह नृप मन भयौ उदास ॥४॥ ऐसौ कौन मारी है ताकों मोंहि कहै सौ आई । वाकों मारी अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सों जाई ॥५॥

★ राग आसावरी ★ रूप मोहिनि धरि ब्रज आई । अद्भुत साजि सिंगार मनोहर असुर कंस दै पान पठाई ॥१॥ कुच बिच बाँटी लगाई कपट करी बालघातिनि परम सुहाई । बैठी हुती जसोदा मंदिर हुलरावत सुत श्याम कन्हाई ॥२॥ प्रगटी आनि जु तहाँ पूतना प्रेरित काल अवधि नियराई । आवत पिकि बैठना दीनो कुसल पूँछि अति निकट बुलाई ॥३॥ पौढ़ाये हरि सुभग पालने नंदघरनि

कछू काम सिधाई । बालक लियौ उठाय दुष्टमति हरखित स्वस्तन पान कराई ॥४॥ बदन निहारी हरि प्रान हरि लीनौ परी राक्षसी जोजन ताँई । सूरज दई जननी गति ताकों कृपासिंधु सुख धाम पटाई ॥५॥

★ राग आसावरी ★ प्रथम कंस पूतना पठाई । नंद घरनि सुत लिये जहाँ बैठी चली चली निजधाम जु आई ॥१॥ अतिमोहनि नाम धरी लीनौ देखत ही सबके मन भाई । जसुमति देखि रही वाकौ मुख काकी बधू कोंन धों आई ॥२॥ नंदसुवन तबही पहेंचानी आसुर घरनी असुर की जाई । आपुन ब्रज समान भये हरि मानी दुःखित भई भई पराई ॥३॥ अहो महरी पाँ लागन मेरौ में तुमरो सुत देखन आई । यह कही गोद लिये अपने तब त्रिभुवन पति मन मन मुसकाई ॥४॥ मुख चुँम्यो गहि कंठ लगाये विष लपटे स्तन मुख नाई । पय सँग प्रान खेंचि हरि लीने जोजन एक परी मुरझाई ॥५॥ त्राहि त्राहि ब्रजधन आई अति बालक क्यों बच्यौ कन्हाई । अति आनँद सहित हरि पायौ हिरदे माँझ रहे लपटाई ॥६॥ करवरटरी मेरेकी घरघर करत आनंद बधाई । सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यौ नृपराई ॥७॥

★ राग टोडी ★ आज हों राजकाज करी आँऊँ । बेग संघारूँ सकल घोष शिशु जो मुख आइसो पाऊँ ॥१॥ मोहन मूर्छन बसीकरन पढ़ि अगनित देह बढाऊँ। अंग सुभग है मधु मूरती सजी नैनन माँझ समाँऊँ ॥२॥ घसि कंकोल चढ़ाय उरोजनि लै लै रुचिसों प्याऊँ । सूर सोच मन अवही हरि हों तो पूतना कहाऊँ ॥३॥

पलना के पद

★ राग रामकली ★ प्रेंख पर्यंकशयनम् । चिरविरहताप हरमति रुचिर मीक्षणं प्रकट प्रेमायनम् ॥ध्रु.॥ तनुतर द्विज पंक्तिमति ललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् । इयदवधिपरमेतदाशया समभवज्जीवितं तावकीनाम् ॥१॥ तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनी मानहरणम् अग्रिमे वयसि किमु भावि का

मेऽपि निजगोपिकाभावकरणम् ॥२॥ व्रजयुवति हृद्यकनकाचलानारोढु मुत्सुकं तव चरण युगलम् । तेन मुहुरुन्न मनभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ॥३॥ अधिगोरोचना तिलकमलकोद्ग्रथित विविध मणिमुक्ताफल विरचितम् । भूषणं राजते मुग्धतामृत भरस्यदि वदनेंदु रसितम् ॥४॥ भ्रूतटे मातृ रचितांजन बिंदु रतिशयित शोभया दृग्दोषमपनयन् । स्मर धनुषि मधुपिबन्नलिराज इव राजते प्रणयि सुख मुपनयन् ॥५॥ वचन रचनोदारहास सहज स्मिता मृत चयैरार्ति भरमपनयन् । पालय सदा स्मान स्मदीय श्रीविट्ठले निजदास्य मुपनयन् ॥६॥

★ राग रामकली ★ लालयति दोलिका मंच शयनम् । तिलक गोरोचनं भाल मुक्ताफलं कुटिल कुंतल मुखं चकित नयनम् ॥१॥ चरण संचालनं मोद भरगायनं प्रतिबिंब दर्शनेन मृदुल हासम् । बाललीला परमपद सुनूपुरधरं भाषणोत्फुल्ल नासाविकासम् ॥२॥ अंगुष्ठ चोषकं गूढरस पोषकं स्वल्प संतोषकं कृष्णचंद्रम्। गोपिका जनमनोमोद संपादनं तदभिलषिता कृतौ विगततंद्रम् ॥३॥

★ राग रामकली ★ नंदकौ लाल व्रज पालने झूलै । कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूलै ॥१॥ नैन अंजनरेख भेख अभिराम सुटि कंठ के हरि किंकिनि कटि मूले । नंददासनि नाथ नंदनंदन कुँवर निरखि नागरि देह गेह भूले ॥२॥

★ राग रामकली ★ यह नित नेंम जसोदाजू मेरें तिहारेलाल लड़ावनकों । प्रात समय पालनें झुलाऊं संकटभंजन जस गावनकों ॥१॥ नाचत कृष्ण नचावत गोपी कर कठताल बजावनकों । आसकरन प्रभु मोहन नागर निरखि बदन सचुपावनकों ॥२॥

★ राग रामकली ★ प्रेंखपर्यंक गिरिधरन सोहें । प्रेम आनँद भरी गोपिका कर धरें देत झोंटा तहाँ काम मोहें ॥१॥ मंद मोहन हँसत दंत कांती लसत बजत नुपूर मधुर रुनत कारि । भाल मसि बिंदु केसरी तिलकहि लसै नैंन अंजन मनसिज बानमारी ॥२॥ अलक राजत मुख भुज पसारत सुख हरत गोपांगना मान तिहि

समय तहाँ । देत सुख सिंधु गोपिका मननकों सूर शोभा निरखि वारि तन मन जहाँ ॥३॥

★ राग रामकली ★ पलना झूलौ मेरे ललन प्यारे मुसकानकी बलिहारी हों तिलतिल हटन करौजु दुलारे ॥१॥ काजर हात भरौ जिन मोहन अरु हैं नैना रतनारे । सिर कुलही पहराय पेंजनी तहीं जाहु जहाँ नंददुवारे ॥२॥ यह विनोद धरनीधर निरखत मात पिता बलभद्रददारे । सूरनर मुनि सब कौतिक भूले देखनकों तहाँ सूर हँकारे ॥३॥

★ राग रामकली ★ पलना स्याम झुलावत जननी ॥ सुतकी लेत बलाय जसोदा हँसिवेकी छबि जात न बरनी ॥१॥ अंग अंग के भाव अवलोकत पाँयन सरस घूँघरूँ बजनी । अति अनुराग परस्पर गावत प्रफूलित वदन नंदजूकी घरनी ॥२॥ किलकि किलकि प्रभुभुजा पसारत अंकन लेत यशोदा गवनी । सूरदास बड़भाग्य महरिके पूरन भई पुरातन करनी ॥२॥

★ राग रामकली ★ अपने बाल गोपालै रानीजू पालने झुलावै । बारंबार निहारि कमल मुख प्रमुदित मंगल गावै ॥१॥ लटकन भाल भृकुटी मसि बिंदुका कठुला कंठ बनावै । सदमाखन मधुसानि अधिक रुचि अँगुरिन करिकें चटावै ॥२॥ कबहुँक सुरँग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै । देखि देखि मुसिकाय साँवरौ द्वै दतियाँ दरसावै ॥३॥ सादर कुमुद चकोर चंद ज्यों रूप सुधारस प्यावै । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लालकों हँसि हँसि कंठ लगावै ॥४॥

★ राग रामकली ★ गोपाल माई पालनें झुलायौ । सुरमुनि देव कोटि तैतीसों कौतिक अंबर छायौ ॥१॥ जाको अंत न ब्रह्मा पावै शिव सनकादि न पायौ। सो सुत देखों नंद यशोदा गोदमें घालि खिलायौ ॥२॥ नाचत हँसत करत किलकारी मन अभिलाष बढायौ । सूरश्याम भक्तन हित कारन नाना भेख बनायौ ॥३॥

★ राग रामकली ★ पलना नंद महर घर आयौ । दिव्य कनिक बहु रतन अमोलिक हीरा बहोत जरायौ ॥१॥ गजमोतिनके झूमका बनाये दक्षिन चीर

बिछायौ । नखशिखलों सिंगार साँवरौ पुलकित प्रेम झुलायौ ॥२॥ जसुमति अति आनंदित वदनी विप्रन दान दिवायो । व्रजनारी आई झुंडन मिलि हरखित मंगल गायौ ॥३॥ सुरनर मुनि सब कौतिक भूले गगन बिमानन छायो । सूरदास प्रभु शिशु व्है पौढें गिरिधर श्याम धरायौ ॥४॥

★ राग रामकली ★ जसुमति पलना सुतहि झुलावै । निरखि मुखारविन्दकी शोभा मनमें अति सचुपावै ॥१॥ विविध भाँतिके लै लै खिलौना बैठी आप खिलावै। देखि देखि मुसिकात मनोहर द्वै दतियां दरसावै ॥२॥ लै पलनातें हुलसि हुलसिकें अस्तन पान करावै । यह सुख तीनलोकमें नाहीं सूर कहा कहि गावै ॥३॥

★ राग रामकली ★ जसुमति मदन गुपाल झुलावति । देखि सैन गति त्रिभुवन कंपत शिव विरंचि डर पावत ॥१॥ स्याम अरुन आलस अति लोचन उभय पलक मिलि आवत । जनु रविगति सकुच कमल जुग निस अलि उड़न न पावत ॥२॥ चौंकि चौंकि शिशुताई प्रगटकरि छिनु इक माँहि आवत । जानों निशापति करि रवि किरणा श्रुति भंडार समावत ॥३॥ कर शिरपर धरि श्याम मनोहर ऊपर अधिक छबि पावत । सूरदास मानों पन्नग सुत प्रभु ऊपर फन छावत ॥४॥

★ राग रामकली ★ व्रजरानी हो सुत हुलरावै । आछी मुख चुंबत लालनकौ अति रस मंगल गावै ॥११॥ निरखि निरखि सुंदर बदन तन फिरि फिरि लै उर लावै । कबहुँक नेंक लाल अपनेकों पलना मेलि झुलावै ॥२॥ रतन जटित बघना कर पोंहोंची लटकन अति छबि पावै । श्री विट्ठलगिरिधर नंदनंदन जसुमतिके जिय भावै ॥३॥

★ राग रामकली ★ पलना घर भीतर व्है आयो । रतन जटित हीरा गज मोती कुंदन दिव्य जरायौ ॥१॥ आछे शोभित बने झूमिका दच्छिन चीर बिछायौ । सुंदर डोरि बाँधि रेसमकी लाल सुरंग बनायौ ॥२॥ विप्र बोलि व्रजराज हुलसिके शुभ मुहूर्त जो धरायौ । झूलेंगे गिरिधरन श्रीविट्ठल सबहिनके मन भायौ ॥३॥

★ राग रामकली ★ झूलावति अपनौ सुत पलना । अति रस भरी जुरी सब

गावत अति प्यारी नंदललना ॥१॥ कुलही पीत झगुली पहराई शोभित सुंदर गात । कटुला रतन जटित कर पोंहोंची लटकन सब लटकात ॥२॥ सुंदर बदन कमल मुख चुंबत लेति उठाय उटाय । फिरि फिरि अस्तन पान करावत राखत उर लपटाय ॥३॥ देखिदेखि हँसत व्रजसुंदरी यह सुख कह्यौ न जाय । श्री विट्ठलगिरिधर पिय निरखत भाग्य बड़े तें पाय ॥४॥

★ राग रामकली ★ रानीजू आछे वसन बिछाये । सुंदर सुत अपने हाथन लै पलना माँझ सुवाये ॥१॥ आस पास बैठी व्रज सुंदरि नीके मंगल गाये । आनँदराय गोप वधुन मिलि सवहिन हुलसि झुलाये ॥२॥ फिरि आये व्रजराज नंद सव देखि बहोत सुख पाये । जिननें गढ्यो पलना जो लालकों ते सब हँसि पहराये ॥३॥ गृहगृहकी तव भईं आरती मोतिन पूरि सँभारी । श्रीविट्ठलगिरिधरन झुलावत नंदरानी व्रजनारी ॥४॥

★ राग रामकली ★ पलना झूलौ हो नंदलाल । कमलनैन सुखदेन सकल व्रज सुंदर जसुमति बाल ॥१॥ पाँयन नूपुर छुद्र घंटिका कर पोंहोंची अति चार । कंठ कंठश्री कर मधि अंगद उर बघना अरु हार ॥२॥ श्रवनन कुंडल नासा बेसरि अंजन नैन विशाल । गोरोचन कस्तूरी कुंकुम तिलक बन्यौ बिच भाल ॥३॥ अलकावलि मुक्तावलि गूँथी बिच लर लटकन लटके । शोभा निरखत सबहीको मन जहाँ तहाँ ते अटके ॥४॥ बेनी गुही जसुमति सुंदर श्याम पीटि पर सौहे । मानों मेघ पर नील मेघ छबि चितवतही चित मोहै ॥५॥ परम मनोहर मुरली तेरी लै ढिंग पलना पौढ़ी । अपनौ पीतांबर कटिलों कान्हर अपनेही कर ओढ़ी ॥६॥ विविध खिलौना ढिंग राखोंगी ज्यों भावे त्यों खेल। मेवा मिश्री और मिठाई माखन मुखमें मेल ॥७॥ जसुमति माई चाइसों यह विधि अपनों सुत हुलरावै । हरि लीला यह आनँदकी निधि रसिक सदाई गावै ॥८॥

★ राग रामकली ★ बैटी रानी जसुमति लाले झुलावै । लाले झुलावै अरु नैन सिरावै ॥१॥ सीस कुल्हे अरु मोतिन माला । छगनमगन मेरे नैन

विशाला ॥२॥ नेति नेति निगम जाहि भाखें । सो जसुमतिकौ पय पान चाखें ॥३॥ चितै दृष्टि मन अति सचुपावै । भाल कपोल दिठौना लावै.॥४॥ व्रजमें नहीं कोऊ बड़भागिनी ऐसी । सूर प्रभुकी मैया जैसी.॥५॥

★ राग रामकली ★ रानीजूकौ छगनमगन झूलै पलना । झुमझुमाति झूमरि मोतिनकी किलकि किलकि हँसे नंदललना ॥१॥ खुलि रही पीत झँगुलिया सामल तन नेह रूप भीज्यौ ललना । निरखि निरखि गावति व्रज सुंदरि नैन हियें बसौ ललना ॥२॥ भीजी जरूली झलके सोंधेसों ललकि ललकि मन ललना। जगमगात न समात हियेमें भावरी भावत ललना ॥३॥ घर न सुहाई रह्यौ परै नहीं काहू देखि देखि यही ललना । श्री विट्ठलगिरिधरनलालकौ गावत भावत ललना ॥४॥

★ राग रामकली ★ झूलो पालनें गोविंद । दधि मथों नवनीत काढ़ों तुमकों आनंद कंद ॥१॥ कंठ कठुला ललित लटकन भृकुटी मनके फंद । निरखि छवि छिनछिन झुलाऊँ गाऊँ लीला छंद ॥२॥ द्वै दूधकी दँतियाँ सुखकी निधियाँ हसत जब कछु मंद । चतुर्भुज प्रभु जननी बलि गिरिधरन गोकुलचंद ॥३॥

★ राग रामकली ★ झूलो पालनें बलि जाऊँ । स्याम सुंदर कमल लोचन निरखि अति सचुपाऊँ ॥१॥ अति उदार विलोकि आनन पावत नहीं अघाऊँ चुटकी दै दै नचाऊँ हरिकों चूमि चूमि उर लाऊँ ॥२॥ रुचिर बाल बिनोद तिहारे निकट बैठी गाऊँ । विविध भाँति खिलोना लै लै गोविंद प्रभुकों रिझाऊँ ॥३॥

★ राग रामकली ★ झूलो पालने नंदनंद । गहत फुदान दुहूँकर करि हँसत किलकत मंद ॥१॥ चुवत मुखते लार रस मानों कमलते मकरंद । निरखि गोपी अतिहिं फूलें अधर रस सुख कंद ॥२॥ चरन कोमल अरुन मानों पल्लव नव महकंद । गहि अंगुठा बदन मेलत पीवत रति रस चंद ॥३॥ पौढ़ि सगरे अंग नचावत खेलत मिलवत फंद । रसिक मेरे मन बसौ यह बाललीला छंद॥४॥

★ राग रामकली ★ निज ब्रह्मांड सु पालनों जगहिं झुलावन हार । ताहि पलना पौढायकें झुलावत व्रजकी नारि ॥१॥ पोढ़ि पालनें चरणदल मुख मेलत कहि

देत । चरणामृत महिमा लखे भक्तनके सुख हेत ॥२॥ पौढ़ि पालनें लाड़िले उद्यम किये अनेक । पटकी पूतना शकट पुनि तृणावर्त से नेक ॥३॥ पलना झूलत मुग्ध व्हैकें कोटि ज्ञान गंभीर । ताहि झुलावत पालनों श्रुतिरूपा आभीर ॥४॥

★ राग रामकली ★ हों अपने लालके गुन गाऊँ । बारबार पलनातें लै लै कनियाँ लै हुलराऊँ ॥१॥ कटुला कंठ रुचिर पोहोंची कर नाक नथुनी पहराऊँ । श्रीविट्ठल गिरिधरनलालकों आँगन बैठि खिलाऊँ ॥२॥

★ राग रामकली ★ नँदरानी हरिहि लड़ावे । रतन जटित पौढ़ाय पालनें प्रेम नेह हुलरावे ॥१॥ कमलनैन मुँदि कर किलकत यों कर चरन चलावे । लै बलाय सुंदर मुख चुंबत उर आनंद बढ़ावे ॥३॥ पोंछत आँखें पलकन भाल डिटौना बनावे । राई लोन उतारि शीशतें केहरि नख पहरावे ॥३॥ मानत सुफल जनम अपनों करि जिय अभिलाष बढ़ावे । देहु वर निज उदैराजप्रभु जग गोपाल कहावे ॥४॥

★ राग रामकली ★ व्रजनारी सुत पलना झुलावे । आछो मुख चुंबत लालनकौ अति रस मंगल गावै ॥१॥ निरखि निरखि सुंदर आनन तन फिरि फिरि लै उर लावे । श्रीविट्ठलगिरिधर नंद नंदन व्रजजन के मन भावे ॥२॥

★ राग रामकली ★ पलना झुलावति जसोदा मैया । कमलनैन हों वारी मुखपर लाड़िले कुँवर कन्हैया ॥१॥ दूध दही पकवान मिठाई और पिवावौ घैया । विविध खिलोना लेहु मेरे प्यारे बंगी भौंर चकैया गावत गीत रुचिर मृदु बानी अति प्रफुलित मन मैया । बालकेलि सुख निरखत गोविंद पुनि पुनि लेत बलैया ॥३॥

★ राग रामकली ★ पलना झूलत बालगोपाल । बलि गई इन बदन ऊपर चारु नैन बिसाल ॥१॥ कंठ हँसुली उरही बघना बनी मोतिन माल । करही पौहोंची अतिहि सुंदर जटित हीरा लाल ॥२॥ कुटिल केश सिरपै बिराजत लटकि आई भाल । मनहुँ अलिछोंना कमल पर निरखि मोहि बाल ॥३॥ चरन नूपुर कोंधनी कटि कुंडल झलकत गाल । अद्‌भुत रूप निहारि हरिकौ होत रसिक निहाल ॥४॥

★ राग रामकली ★ झुलावत जसुमति सुत पलना । कमलनैन सुख देंन बदन बिधु हुलरावत ललना ॥१॥ हाटक रुचिर जटित नग खग मृग देत विविध खिलोना । बलि बलि जाय मोहन या छवि पर पूरब फल फलना ॥२॥

★ राग रामकली ★ श्रीवल्लभराज कुमार झुलावत श्रीनवनीत प्रिये पलनाँ । गावत गुण गोविंदके चहुँ दिस जुरि सगरी व्रजकी ललनाँ ॥१॥ व्रज रानी लड़ावत लावत है उरमें लाल सम भूतलनाँ । मोहन विट्ठलनाथ कृपा करि पाइये और बछौ बलनाँ ॥२॥

★ राग रामकली ★ झूलौ पालने नंदलाल । जाऊँ बलि बलि बदन ऊपर चपल नयन बिसाल ॥१॥ कंठ कंठुला केहरीनख सुभग मुक्तामाल । गरे हँसुली कोंधनी कटी चरन नूपुरजाल ॥२॥ निकट बैठी जननी झुलावत भाग मानत भाल । लै खिलोना कहत हरिसों खेलिये मम बाल ॥३॥ कबहुँक सुतके गाय गुणगान देत करसों ताल । कबहुँ अँगुरी लाय लालहिं चलन सिखावत चाल ॥४॥ लेऊ माखन और मिश्री खाऊ मेरे लाल । निरखि यह सुख जसुमतिकौ सूर होत निहाल ॥५॥

★ राग रामकली ★ पालने झूलंत गिरिधरलाल । जननि जसोदा बैठि झुलावत निरखत बदन रसाल ॥१॥ बालक लीला गावत हरखित देत करनसों ताल । कुंभनदास बडभागिनि रानी वारत मुक्तामाल ॥२॥

★ राग रामकली ★ सुंदर श्याम पालनें झूलें । जसुमति माय निकट अति बैठि निरखि निरखि मन फूलैं ॥१॥ झुनझुना लैकें बजावत रुचिसों लालहिंके अनुकूलें । देखि हँसत किलकत मनमोहन देहदशा तब भूलें ॥२॥ बदन चारु पर छूटि अलक रहीं देखी मिटत उर सुलें । अंबुजपर मान्हुं अलि छोनाँ घिरि आये बहु टूलें ॥३॥ दसन दोऊ उघरत जब हरिके कहा कहुँ समतूलें । नंददास घन में ज्यों दामिनी चमकि डुरत कछु खूलें ॥४॥

★ राग रामकली ★ गोकुलचंद पालनें झूलत । हेरी हेरी व्रजराज झुलावत किलकि किलकि देखि मन फूलत ॥१॥ माखन मिश्री मेलि चखावत झुनझुना फेरि

बजाय सुनावत ।। द्वारिकेश प्रभु हँसि मुसकाय अंग पुलकि मन भावत ।।२।।

★ राग रामकली ★ गोकुलचंद पालनें झुलत । हौलें हौलें व्रजरानी झुलावति किलकि किलकि देख मन फूलत ।।१।। कीरतिलली बुलाई हरखसों लालन ढिंग पौढ़ाई । हों यह मुसकनि कर पद जुगपै लखि कापै बरनि न जाई ।।२।। माखन मिश्री राखि निकाई जलबीरा पकवान । अँगरा अनुराग दुँहनिकौ कुसुम माल धरि आन ।।३।। जो आवत सो अंबर लावत ऊपर धरि कछु रोक । वंगी झुनझुना फिरकि खिलावत फिरि दूहुँ बदन बिलोक ।।४।। गावत मंगलचार सोहिलौ बाजे बाजन द्वार । नंद महोत्सवके सुख ऊपर द्वारकेश बलिहार ।।५।।

★ राग रामकली ★ लालमाई पालनें झुलायौ सुरनर मुनि कोटी तेतीसों कौतिक अंबर छायौ ।।१।। जाकौ अंत न ब्रह्मा जानै शिव सनकादि न पायौ । सो सुत देख्यौ नंद जसोदा गोपी माँझ खिलायौ ।।२।। नाचत हँसत करत किलकारी मन अभिलाख बढ़ायौ । सूरदास भक्तन हितकारन नानाभेख बनायौ ।।३।।

★ राग रामकली ★ पलना झूलत श्याम छबीलौ । वहु विधि रंगखिलोनाँ कर मुख चुंबत द्रगना हठीलौ ।।१।। व्रजनारी गुन गावत सुतके कुलदीपक सुजस सुशीलौ । व्रजाधीश सुख नंदराय मन व्रजजन नेह नवीलौ ।।२।।

★ राग रामकली ★ पालनें झुलावत बालगोपाल । गादी बैठि झुलावत जसुमति अति पुलकित्त देखत व्रजबाल ।।१।। कबहुँक रोहिनि गोद लेयकें बोलौ बाबा बाबा लाल । कबहुँक कँधैया लेत गोपिका झुनझुना फिरकी खिलावत ख्याल ।।२।। कबहुँक नंदरायकूँ बैठत इत व्रजभूख न इत बलराम । यह सुख दरसन द्वारिकेशकौ मनवांछित पूरे सब काम ।।३।।

★ राग देवगंधार ★ झूलौ पालनें नँदनंदा । खं खं खं खं चूरा बाजे मनमें अति आनंद ।।१।। टुं टुं टुं टुं घूँघरू बाजें तननतननसी बंदी । नैन कटाक्ष चलावत गिरिधर मंदमंद मुख हँसी ।।२।। खट खट खट खट लकुटी बाजै चटक चटक बाजै चुटकी । नंद महर घर सोभा निरखत मोहन मनमें अटकी ।।३।। कुहु कुहु कुहु कुहु कोकिल बोलें झनन झनन बोलें भोंरा । पी पी पी पी पपैया बोलें

संगीतै सुर दौरा ॥४॥ झू झू झू झू झुन झुन बाजै फिरक फिरक फिरै फिरकी। गुडगुडगुडगुडगुडकी बाजें प्रेम मगन मन निरखी ॥५॥ ढो ढो ढो ढो ढोलक बाजें गुनन गुनन गुन गावें । राधा गिरिधरकी बानिक पर रसिकदास बलि जावें ॥६॥

★ राग देवगंधार ★ अद्भुत देख्यौ नंदभवनमें लरिका एक भला । कहा कहूँ अँगअँग प्रति शोभा कोटिक काम कला ॥१॥ गावति हँसति हँसावति ग्वालिनि झुलवति पकरि डला । परमानंददासकौ ठाकुर मोहन नंदलला ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ रतन जटित कंचन मणि मय नंदभवन मधि पालनों । ता ऊपर गजमोतिन लर लटकत अति तहाँ झूलत जसोदाकौ लालनौ ॥१॥ किलकि किलकि बिलसत मनहीं मन चितवत नैन बिशालनौ । परमानंद प्रभुकी छबि निरखत आवत छिनछिन कल न परत व्रजवालनौ ॥२॥

★ राग बिलावल ★ हों जु गई ही नंदभवनमें देख्यौ अद्भुत पलना । गजमोतिनके झूमिका बाँधे बैठे सुंदर ललना ॥१॥ पीत झगुलिया अतिही बनीहै भूषनकी छबि निरखी व्रज बलना । केसौदास नंदसुवन जबते देखे मोहि तबतें कलना ॥२॥

★ राग बिलावल ★ पालनैं झुलावत सुंदर श्याम । नखसिखलों सिंगार सु सोहत मोहत कोटिक काम ॥१॥ देखनकौं जुरि आई सबै मिलि सुंदर व्रजकी वाम। सूरदास प्रभु झूलत पलना झुलवतहैं व्रजभाम ॥२॥

★ राग बिलावल ★ सामरौ सुत पलना झूलै । निरखि निरखि जसुमति जिय फूलै ॥१॥ नैन विशाल भृकुटी मसि राजै । निरखि बदन उडुपति जिय लाजै ॥२॥ कठुला कंठ रुचिर पोहोंची कर । सुभग कपोल नाक बिंबाधर ॥३॥ भाल तिलक लर लटकन सोहै । मंद हँसन सबकौ मन मोहै ॥४॥ माखन मिश्री मेलि चटावें । बारबार प्रमुदित उर लावें ॥५॥ गिरिधर कुँवर जननी हुलरावै । चतुर्भुजदास विमल यश गावै ॥६॥

★ राग बिलावल ★ हालरौ हुलरावै माता । बलि बलि जाऊँ घोष

सुखदाता ॥१॥ अति लोहित कर चरन सरोजें । जे ब्रह्मादिक मनसा खोजें ॥२॥ जसुमति अपनौ पुन्य विचारै । बारबार मुख कमल निहारै ॥३॥ अखिल भुवनपति गरुड़ा गामी । नंदसुवन परमानँद स्वामी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ फूली चायन हुलरावे यशोदा जू लेत बलैया । अनूप पालनें झुलाय हरखसों अंचल ओलि माँगे विधिनापै जियौ मेरौ कान्ह ललैया ॥१॥ यह व्रजनायक यह व्रजशोभा गोपी ग्वाल गौ बच्छ पलैया । जगन्नाथ कविरायके प्रभु माई सब सुख फलन फलैया ॥२॥

★ राग बिलावल ★ जसोदा तेरे भागिकी कही न जाई । जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हैं आई ॥१॥ शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलिवे करत उपाय । ते नँदलाल धूरि धूसर वपु रहत कंठ लपटाय ॥२॥ रतन जटित पौढ़ाय पालनें बदन देखि मुसिकाय । झूलौ मेरे लाल जाऊँ बलिहारी परमानंद जस गाय ॥३॥

★ राग बिलावल ★ झुलौ पालनें बलिजाय माय व्रजके उजियारे । अबही दधि मंथू आनि देहुँगी नवनीत पाणि काहेकौं आर करत कान्ह कुंवर बारे ॥१॥ तुमतौ अति सुभग रूप नख शिख सुंदर स्वरूप मेरे व्रज भूपसों अब कौन कहै कारे। फेरों चकडोर बंगी फिरकनी नवरंग चंगी झूमरि मनि मानिक खचित भोंरा रतनारे ॥२॥

★ राग बिलावल ★ जसुमति सुतकौ पलना झुलावै । परसि चिबुक मृदु बचन बुलावै ॥१॥ मोसों ललन कहौ मेरी मैया । ऊँचे टेरि बुलावौ गैया ॥२॥ बोलि सुनावौ तोतरी बतियाँ । शीतल करौ लाल मोरी छतियाँ ॥३॥ बोलि लेहु बाबा कहि ताते । भैया कहि रामहिं मुसिकाते ॥४॥ बचन सुनन व्रज युवती ठाड़ी । तोसें सहज प्रीति अति वाढ़ी ॥५॥ ऊँचे सुर मधुरे किन गावौ। बाजत नूपुर शब्द सुनावौ ॥६॥ हँसत जाय ढिंग चुटकी बजावै । करिकरि कंठ गुलगुली हँसावै ॥७॥ देखौ मेरे सुत हों फिरकी फिराऊँ । झुनझुना लै कर नीके बजाऊँ ॥८॥ कबहुँक दरपन कर लै दिखावै । अँगुरी गहि यह कौन

कहावै ॥९॥ हँसत वदन लखि लेति बलैया । जिन लागौ लालै दीठि मेरि दैया ॥१०॥ कबहुँक दृग मींड़त दोऊ करसों । पोंछति जननी छोर अँचरसों ॥११॥ कबहुँक कर लै अँगूठा चूसें । व्रजजनको तन मन धन मूसें ॥१२॥ कर पोहोंची फुंदना मुख मेलें । बदन जृंभाय मुग्ध ज्यों खेलें ॥१३॥ चरन कमल दोऊ कर कर धरे । ध्वनि सुनि श्रवन मन हरे ॥१४॥ करवट लेत किंकिनी बाजै । श्रवन सुनत कोकिल मन लाजै ॥१५॥ लाल तेरे मित्र वुलावन आये । तिनके संग खेलौ मन भाये ॥१६॥ तेरे ढिंग धरी मेवा मिठाई। मुखमें मेलौ जो मन भाई ॥१७॥ बैठि सबनमें तोहि सिंगारों । भूषन वसन विविध तन धारों ॥१८॥ भरी तबकड़ी धरे खिलौना । खेलौ हँसौ मेरे श्याम सलौना ॥१९॥ लाल तेरे पलनाकी पंचरंग डोरी । लटकत है फूँदनाकी जोरी ॥२०॥ विविध कुसुमकी बंदन माला । बाँधीहै तेरे पलना लाला ॥२१॥ ऊपर ढँक्यौ पटोरौ पीरौ । पलना जड़्यौ रतन नग हीरौ ॥२२॥ गोरोचनकौ तिलक संभारों । विच मुक्ताफल बिंदु सुधारों ॥२३॥ भोंह निकट मसि बिंदुका सोहै । डीठि न लगै दई मन मोहै ॥२४॥ दधि मंथू नवनीत निकारों । मुखमें मेलि अपनपौ बारों ॥२५॥ आवौ गोद प्राननके प्यारे । आँगन बैठि खिलाऊँ लला रे ॥२६॥ छतियाँ लगावति चुंवत मुखकों। करत हेत जसुमति सब सुखकों ॥२७॥ जसोदा अपनौ भाग्य सराहै । बालक लीला मन अवगाहै ॥२८॥ बोलौ कछु देखूं दोऊ दतियाँ । अबही तनक दूध उपजतियाँ ॥२९॥ लाल तेरी मुरली ढिंग राखी । उठौ बलि जाऊँ बैन सुभाखी ॥३०॥ दूरि भयौ है व्रज अँधियारौ । श्याम सुंदर मेरौ जग उजियारौ ॥३१॥ कब मेरौ ढोटा पाँयन चलिहै । बलि संग लै बैरी दल मलि है ॥३२॥ इहि विधि कहति जननी व्रजरानी । रसिक प्रीतम बोले मृदुबानी ॥३३॥

★ राग बिलावल ★ यशोदा हरि पालनें झुलावै । हुलरावै हुलराई मल्हावै जोई सोई कछु गवै ॥१॥ मेरे लालकों आऊ नींदरियां काहे न आई सुवावै । तू

काहे न वेगि सौं आवै तोकों कान्ह बुलावै ॥२॥ कबहुँ पलक हरि मूँदि लेतहें कबहुँ अधर फरकावै । सोवत जानि मौन ह्वैकें रहै करिकरि सैन बतावै ॥३॥ इहि अंतर अकुलाई उठे हरि जसुमति मधुर हलावै । जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नित जसुमति पावै ॥४॥

★ राग बिलावल ★ पलना झूलत बालगोपाल । गादी बैठि झुलावत जसुमति अति प्रफुलित देखत व्रजबाल ॥१॥ कबहुँक रोहिनी गोद लेइकें बोलै हो हो बलिहारीलाल । कबहुँक कनियाँ लेत गोपिका झुनझुना फिर लावत ख्याल ॥२॥ यह सुख नंदभुवनकौ वैभव गुप्त प्रकट ततकाल । गुन सरूप सम द्वारकेस प्रभु परम तत्व जे जसोदाबाल ॥३॥

★ राग बिलावल ★ हालरौ हुलावत मैया हालरौ मेरे बारे कन्हैया हालरौ । हों बारी या बदन इंदुकी आछौ आछौ अलसानरौ ॥१॥ मेरे माई कमल नयन पर कपट किये आई होई । बाल गोविंद बेग तुरतही बकी बिगोई ॥२॥ सुनी देवता देख पावन अति तू पति है याकुलकौ । पुनि पूजी है देवकुल तो कुँवरि देहे मो बलकौ ॥३॥ यह सुख सूरदास इन नैनन दिशा दश दुनो होई । दुतियाकौ शशि ज्यों बढ़े शिशु निरख जन निज सोई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ रतनखचित कंचनकौ पलना तामधि झूलत गिरिधरलाल । जसुमति हरखी झुलावती गावती सुंदर गुण दै दै करताल ॥१॥ करी गुलगुली हँसावत हरिकों कबहुँक मुखसो चुँमती गाल । कुंभनदास किलकत नंदरानी अँगुरी गहीकें सिखावत चाल ॥२॥

★ राग बिलावल ★ जसोदा अति हरखित गुण गावै । मदनगोपाल झुलत हैं पलना आपुन बैठि झुलावै ॥१॥ शिव विरंची जाकों नहिं पावत ताकों लाड़ लड़ावै । भाँत भाँतके सुरँग खिलोना श्याम सुँदरकों खिलावै ॥२॥ माखन मिश्री और मलाई अँगुरिन करिकें चखावै । छीत स्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल रुचि करी सो पावै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ छांड मथानी मथनदे प्यारे गिरिधरलाल ॥ तुम झुलो सुत

पालने गाउं गीत रसाल ॥१॥ मोहन मथकहा जानहे झूठे करतहो आरि ॥ सिंधु मथननकी सुध भई तब हसेहें मुरारि ॥२॥ रवि प्रगट्यौ सुरभी दोहु मोहे तिहारी आस ॥ हठ छांडो भोजन करों बलिबलि माधोदास ॥३॥

★ राग आसावरी ★ मेरे लाड़िले गोपाल पौढ़ौ पालने झुलाऊँ ॥टेक॥ दधिकी मथन बेर मेरे सँग जागे । मैं मथन कियो तोलों रहे जानु लागे ॥१॥ जसुमति अतिही निकट हुलरावे । बाल विनोद प्रमुदित गावे ॥२॥ चौंकि चौंकि जननीकौ बदन निहारें । धाम काम जाय जिन बारवार संभारें ॥३॥ कहुँ न जाऊँ लाल तुमहिं हों लागी । जाहि जनें जग मैं भई हों बड़भागी ॥४॥ गोपकुल गायनको प्राण प्रतिपाल । सबको भावतौ मेरौ सुलछिन लाल ॥५॥ नींद भरी स्वायवेकों माय अभिलाखे । उर क्षीर धारनकों रोकि रोकि राखे ॥६॥ महरि मुदित मन तृपति न पावे । मदनमोहन श्याम सुतहिं लड़ावे ॥७॥

★ राग आसावरी ★ झूलत पलना महरि सुत कर लिये नवनीत । नैनन अंजन भ्रू मसिबिंदुका तन ओढ़ें पटपीत ॥१॥ बेनी देखि मंद हँसत हैं कछू कहत भयभीत । दै करतारी नचावत गोपी गावत मधुरे गीत ॥२॥ राई लौंन उतारत वारत होत जगत जयजीत । पूरन ब्रह्म गोकुलमें गोविंद रसना करौ पुनीत ॥३॥

★ राग आसावरी ★ गिरिधरलाल पालनें झूलें जसुमति आप झुलावे । देखि देखि मुख कमलनैनको बाल चरित्र यश गावे हो ॥१॥ कबहुँक सुरंग खिलौना लै लै नाना भांति खिलावे । चुटकी दै दै लाड़ लड़्यावे और कर ताल बजावै॥२॥ पुत्र सनेह चुचात पयोधर आनँद उर न समावे । चिरजीवौ नंदमहर दोऊ ढोटा सूरदास हुलरावै ॥३॥

★ राग आसावरी ★ रतन खचितकौ री पलना हुलरावति हालरिया दै झुलावति। बदन बिलोकत बारबार बलैया लेति जनम सुफल करि लेखति महरि मुदित मन अति सचुपावति ॥१॥ जगजीवन जायौ है जसोदा धन्य कूखि यों कहत गोपवधू मिलि मंगल गावति । गिरिधरदास कल्यान नंदराय फूले फिरत आनंदित कछु सुधिहू न आवति ॥२॥

★ राग आसावरी ★ कर पद गहि अँगुष्ठा मुख मेलत। प्रभु पौढ़े पालनें अकेले हरि हँसि हँसि अपने रंग खेलत ॥१॥ मुनि भयभीत भयौं भुव कंपन बाढ्यौ बड़ सायर जल झेलत। बिडरि चले जग प्रलय जानिकैं दिगपति दिगदंतौं न सँकेलत ॥२॥ शिव सकुचत बिधि बुद्धि विचारत शेष सहस्र शीशन पग पेलत। व्रजकी नारि तौ मरम न जानत समझि सूर शकट पग ठेलत ॥३॥

★ राग आसावरी ★ बारि मेरे लटकन पग धरौ छतियाँ। कमलनैन बलिजाऊँ वदनकी शोभित नेंन्ही नेंन्ही द्वै दूधकी दतियाँ ॥१॥ यह मेरी यह तेरी यह बाबा नंदजूकी यह बलभद्र भैयाकी यह ताकी जो झुलावै तेरौ पलना ॥ इहाँते चली खरखात पीवत जल परिहरो रुदन हँसौ मेरे ललना ॥२॥ रुनुक झुनुक पग बाजत पैंजनियाँ अलबल कलबल बोलौ मृदुबनियाँ। परमानंद प्रभु त्रिभुवन ठाकुर जाय झुलावै बाबा नंदजूकी रनियाँ ॥३॥

★ राग आसावरी ★ माई मीठे हरिजू के बोलना। पाँय पैंजनी रुनझुन बाजैं आँगन आँगन डोलना ॥१॥ काजर तिलक कंठ कठुला मनि पीतांबरको चोलना। परमानंददासकौ ठाकुर गोपी झुलावै झोलना ॥२॥

★ राग आसावरी ★ ऐसौ पलना झूलत ललना तुमसी माई झुलावै हो। देखत बाबा आनंदरायसे जिन कोऊ डीठ लगावै ॥१॥ जब तुम अपनी गाय बुलावत श्रवन सुनत सोई धावै। जब मुख चूमि देत अस्तन मुख यह सुख कहत न आवै ॥२॥ तुमारे भागिन ओर जसुमति ऐसौ सुतहि खिलावै। अरु अति भाग्य सकल गोपिनके जिनकी तपत बुझावै ॥३॥ लेत बलाय कुँवर बलिजूकी लोहोरौ वीर कहावै। श्रीविट्ठल गिरिधरनलालकौं तुमसी मैया भावै ॥४॥

★ राग आसावरी ★ माईरी कमलनैन श्यामसुंदर झूलत पलना। बाललीला गावत सब गोकुलकी ललना ॥१॥ लालके अरुन तरुन चरन कमल नखमनि शशि जोती। कुंचित कच भँमराकृत लर लटकत गजमोती ॥२॥ लाल अँगूठा गहि कमल पान मेलत मुख माँहीं। अपनौं प्रतिबिंब देखि पुनिपुनि मुसिकाई ॥३॥ रानी जसुमतिके पुन्य पुंज बारबार लालै। परमानंद स्वामि गोपाल सुत सनेह पालै ॥४॥

★ राग आसावरी ★ बारी बारी ब्रजराज कुँवर झुलौ हो पलना । छाँडो किन आरि ऐसी मेरे ललना ॥१॥ देखौ देखौ ब्रज जुवतीजन ठाड़ी मुख देखें । नैन खोलि मधुर बोलि जन्म करौ लेखें ॥२॥ हाहा हरि नैंक रहौ बिनवत तेरे तात। तन छीजे न रोस कीजे काहे न मुसिक्यात ॥३॥ मेरौ जिन टारौ कह्यौ तिहारी हौं मात । चाहें सोई माँगि लै हो मनकी कहि बात ॥४॥ अँसुवा भरे द्रगन हँसे आई गरें लागे । रसिकप्रीतम करुनाकर जननी प्रेंमपागे ॥५॥

★ राग आसावरी ★ झूलौ झूलौहो पलना । जिन करौ आरि ऐसी हँसौ मेरो ललना ॥१॥ तुमकूँ और मँगाऊँ खिलौना । काहेकौं हठौ खेलौ मेरे छौना ॥२॥ हौं ढिंग बैठि तुमहिं झुलाऊँ । गीत नये नये तोहि सुनाऊँ॥३॥ देखि लटकें ऊपरके फूँदना । दोऊ कर हरषि गहत नँदनँदना ॥४॥ तेरे चरनके नूपूर बाजें । श्रवन सुतन षटपद ज्यौं गाजें ॥५॥ सदमाखन तेरे कर देहौं । मुखमें मेलि बलैयाँ लैहौं ॥६॥ क्यों रोवै मेरे वहौत दुःखनकौ । मोकौं दायक सकल सुखनकौ ॥७॥ हुलरावति सुतको नँदरानी । रसिक सनेह भरी मृदुबानि ॥८॥

★ राग आसावरी ★ ब्रजरानी हो सुत पलना झुलावति । निरखि निरखि फूली गुण गावति ॥१॥ कबहुंक कर लै झुनझुना बजावति । वारबार लै फिरकी फिरावति ॥२॥ चुंबति मुख मन मोद बढ़ावति । कबहुंक स्तन पान करावति ॥३॥ चाहि रहत चित्त अचरज लावति । सुत सुखकौं कुल देव मनावति ॥४॥ कबहुंक दुहुंकर पकरि नचावति । सुख समूह सब दुख बिसरावति ॥५॥ गोद लियें सुत बाहिर आवति । ब्रज जुवतिनकौं खेल दिखावति ॥६॥ सुत उछंग लै चंद्र बतावति । मधुर वचन कहि बोल सिखावति ॥७॥ बड़भागिनि ब्रजरानी कहावति । रसिक सदा यह लीला भावति ॥८॥

★ राग आसावरी ★ ब्रज सुख तुम विलसत ब्रजरानी । कमलनैनकौं पलना झुलानी ॥१॥ नैन निरखि अँसुवनकी धारा । सब तन पुलकि प्रस्वेद

अपारा ॥२॥ देखिदेखि अचरज मन आने । यह सपनौ कैधौं साँचहि जाने ॥३॥ अपने धर्म की करे बड़ाई । मोहि बुढ्यांत महा निधि पाई॥४॥ धन्य धन्य मोहि यों लीये । मोहि विधाता यह सुत दिये ॥५॥ अपने ललनकों धरि हौं राखौं । काहु न देहुँ कछू नहीं भाखों ॥६॥ होय वड़ौ यह रणजीतेगौ। तव अपनौ करि व्रज चीतेगौ ॥७॥ कबहुँक कहै अनेक कहानी । हँसत ललन मुख लखि न अघानी ॥८॥ वारबार कर अंचल फेरै । पलकनी विछुरन मुख हेरै ॥९॥ कबहुँक लै सुत उठि करि नाचै । लट गोविंद कर गही खांचै ॥१०॥ व्रज जुवतिन में ठाडी फूले । सुनत वड़ाई त्रिभुवन भूले.॥११॥ रसिक प्रीतमकी लीला गावै । मन शुद्ध होई महा सुख पावै.॥१२॥

★ राग आसावरी ★ दिव्य कनिकको पालनौ रानी लालकों झुलावै। नैन निरखि मन विहँसत पुलकित बालविनोदहि गावै ॥१॥ लटकन कीर लगे मुक्ताफल हँसत निरखिकें चरन चलावै। पचरंग पाटके फोंदना नीके कर गहि मुख तन लावै ॥२॥ सुरँग हिंडोरा परम मनोहर वहु विधि सुतहिं खिलावै । जननी कर लखि मुकर मुद्रिका मुख प्रतिबिंब बतावै ॥३॥ अति सुख महरि मुदित नहिं समुझत कनियाँ लै हुलरावै। मेरे प्रान जीवन व्रज बल्लभ कहिकहि लाड़ लड़्यावै ॥४॥

★ राग आसावरी ★ देखौ झूलत पलना कन्हाई। बालरूप करि बाल भाव धरि जननीके सुखदाई ॥१॥ कोमल अरुन चरन युग सोहें दश नखकी अरुनाई। मानों भक्त अनुराग एकके दश विधि दैंई दिखाई ॥२॥ बारबार जब चरन उचावत नूपुर बाजत पाई । मानों भक्तजन अति आनंदित उठत उमड़ि रस गाई ॥३॥ कटि किंकिनी बिराजत अतिशय लटकत फुँदना स्याम । मदन भुजंग सीस पर शोभित लसत नीलमणि दाम ॥४॥ पीतांबर ढाँकत अंग जननी चरनन देत उड़ाई । मानों नील घनमें दामिनी बिच बिच प्रगट लखाई ॥५॥ कर अँगुरी मुदरी दशराजें नख चंद्रनके पास । मानों मणिधर पीयन चले हैं सुधा महा रस आस ॥३॥ दुहुँकर पोहोंची रतन जटित नग ता ढिंग फुँदना लटके। मानों अलिकुल सबै एक व्है चलत द्वारमें अटके ॥७॥ वाजूबंद जरे नग हीरा

उठत अनूपम जोती । मानों श्याम रस महासिंधुतें सुधा प्रकटसी होती ॥८॥ कंठाभरण खच्यौ रतननसों हरिके कंठ लग्यौ । मानों गह्यौ आसरौ उरमें बघना देखि भग्यौ ॥९॥ उर सोहे मोहै सबकौ मन बघना दुहुँदिश बाँक । ज्यों श्री उकसि नसके डरपि व्रज ओर कौन है राँक ॥१०॥ ताढिंग पदिक बिराजे अद्भुत मुक्ता । रतन जस्यौ मानों हृदयमें ही जुवतिन को सुध अनुराग धस्यौ ॥११॥ चिबुक बिराजत बदन चंदमें उपमा एक खरी । अधरबिंबते दशन लगत मानों च्वै एक बुंदपरी ॥१२॥ कहाकहूँ अधरनकी शोभा बरनी न जाय अपार । मानों कमलतें उदै होत रवि चुंबत कुसुम रससार ॥१३॥ नासा मुक्ता भूषन सोहत मधि सोहै लाल । मानों दुहुँनके द्वै मन बिच सोहै अनुराग विशाल ॥१४॥ श्रवनन मकराकृत दोऊ कुंडल झलकें ललित कपोल । मानों लावन्य सरसिमें मिलि दोऊ मकर करत कल्लोल ॥१५॥ बदन कमल अलकावलि राजे उपमा अद्भुत एक । जोरि पाँति सुर मानों बैठे पीवन अमृत अनेक ॥१६॥ मलयज तिलक चित्र मृगमदकौ ता मधि मुक्ता बिंदु । बदन चंद्र लखि भाज्यौ उडुपति मनु गढमें धसि रह्यौ इंदु ॥१७॥ लटकन भाल सीसते भूषन अति राजत है बोर । मानों केस सिंधुते आयौ मगन भये रवि भोर ॥१८॥ बेंनी गुही कुसुम आभूषन राजत हरिकी पीठि । मानों सिढ़ी सँभारी मनमथ चढ़न युवतीजन दीठि ॥१९॥ ऐसौ रूप विलोकत काकौ धीरज तवै रहै । व्रजजुवती सबहिनके देखत हरि कर आनि गहै ॥२०॥ जसुमतिके मन बालिक जुवतिनकौं मनमथ रूप धरै । अचरज रसिक बाललीलामें लीला और करै ॥२१॥

★ राग आसावरी ★ मात जसोदा दह्यौ बिलोवै प्रमुदित बाल गोपाल यश गावै। मंदमंद अँवर घनघारे रई घमरके लावै ॥१॥ नूपुर कंकन छुद्रघंटिका रजु आकरखत बाजै । मिश्रित ध्वनि उपजत तिहिं औसर देखि सचीपति लाजै ॥२॥ मंगलघोष सदा कुतूहल अजन जन्म हरि लीनौ । नंद जसोदाकौ सुकृत फल वपु दिखाय सुख दीनौं ॥३॥ शिव विरंचि जाके पद वंदत सो गोकुलके वासी । परमानंददासकौ ठाकुर पलना झूले सुखरासी ॥४॥

★ राग आसावरी ★ प्रिय नवनीत पालनें झूलें श्रीविट्ठलनाथ झुलावें हो। कबहुँक आप संग मिल झूलैं कबहुँक उतरि झुलावें हो ॥१॥ कबहुँक सुरंग खिलौना लै लै नाना भाँति खिलावें । चकरी बंकी फिरकनी लहेंटू झुन झुन हाथ बजावें ॥२॥ भोजन करत थार एक झारी दोऊ मिलि खाय खवावें । गुप्त महा रस प्रकट जनावें प्रीति नई उपजावें ॥३॥ धनि धनि भाग्य दास निज जनके जो यह दर्शन पावें । छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल निगम एक करि गावें ॥४॥

★ राग आसावरी ★ हों बलिहारी मेरे ललना । खेलन जिन दूरि जाहु तृणावर्त दलना ॥१॥ बलराम संग अँगुरी गहि सीखौ बलि चलना । जीवन घनश्याम सुंदर कंस मारि मलना ॥२॥ त्रिभुवन जाके तीन पाय वामन बलि छलना । सोई प्रभु रघुनाथ दास झूलत व्रज पलना ॥३॥

★ राग आसावरी ★ सुनि रे बढईया वेगि दैहो जो चाहे सो लेहु । पलना नंदजू के लालको सब छांडि मोहि गढि देहु ॥ रंगीला हो पलना ॥१॥ विश्वकर्मा रच्यो बैठि नंदजूके द्वार ॥ घोष लोग मनभावतो मिलि मंगल गावे नार ॥ रंगीलो हो पलना ॥२॥ चून्यो किरमची पाटसो चतुर चोकरी ल्याई । चित्तवत ही चिंता हरे ताको सुर नर मुनि जस गाई ॥ रंगीलो हो पलना ॥३॥ चंदनको पलना गढ्यो रे मनि अनूप मिलाई । तापर फूल जरायके ताकी सोभा बरनि न जाई ॥ रंगीलो हो पलना ॥४॥ सेत बिछौना अति बन्यो हो मनु हु दुग्धको फेनु । नील रत्नमनि सांवरो बीच बैठी लग्यो सुख देनु ॥ रंगीलो हो पलना ॥५॥ पलना पै ललना रहे हो गोप वधु चहुं ओर । एकनिके कर बिजना एक ढारत पवन झकोर ॥ रंगीलो हो पलना ॥६॥ लाल झुलाये पालने हो पहिराये सब ग्वार । ब्राह्मन भाट सुहागिनि मिलि पूज्यो सब परिवार॥ रंगीलों हो पलना ॥७॥ पहिराये पूजा करी हो बीरा दीने हात । देत असीस आनंदसों सुख निरखी जसोदा मात ॥ रंगीलो हो पलना ॥८॥ हरि प्रगटे पलना गढ्यौ हो बढ्यौ नंदजू को नाम । जिन जायो एसो सुखनिधि तामें उदयो

गोकुल गाम ।। रंगीलो हो पलना ।।९।। काम धाम सब छांडिके गई कुँवर के पास । आनंद मगन फूली फिरै बलि जाय 'गदाधर दास' रंगीलो हो पलना ।।१०।।

★ राग आसावरी ★ पलना पै पौढ़े हरि झूलत चरन अँगूठा मुख राखे । मानों की सुरसरि मधुर जानि जग आई मधुरकौ रस चाखे ।।१।। किधौं अनल सुत भक्तिरस स्वादनकों वेणु द्वारा अमृतरस बरखै । किधौं अनल सुत नरभावनकौं चरणोदक दै आ करखे ।।२।। किधौं ब्रह्मादिक बिभ्रमकारने के बिधु कंज मिलापकरे । द्वारकेश बली मुग्धभाव लखि नैन निमीलत अंकभरे ।।३।।

★ राग आसावरी ★ तोतरे बचन जसोदाजी बोले कानाकौं हुलराऊँगी । अपने लालकौ ब्याह करूँगी राधा दुलहनी लाऊँगी ।।१।। गौतम गरग ऋषि सुरकौ कुल दुरवासाकों बुलाऊँगी । श्री गिरिधर गोविंदकौ सेवक तापै जोग पुछाऊँगी ।।२।। लाड़कोट करि हौं अपने कौं मन अभिलाख पुराऊँगी । जोड़ी जुगल मनोहर देखौं तादिन मंगल गाऊँगी ।।३।। बहुत बधाई देहु बधैयन सबहीकौं पहिराऊँगी । नंदरायकौं कुल सबहीकौं चंदनसौं चरचाऊँगी ।।४।। नादवेद सुतसुख सबहीकों आनंदसो उपजाऊँगी । जनभगवान जसोदा भाखै संतनकों सुख धाऊँगी ।।५।।

★ राग आसावरी ★ झुलावै सुतकौं महरि पलना करलिये नवनीत । नैनन अंजन गाल मिसी बिंदुका तन ओढ़े पटपीत ।।१।। बेन देखत मंद हसत है कबहुँ होत भयभीत । दै करतार नचावत गोपी गावत मधुरे गीत ।।२।। राई लौन उतारति वारतिहै होत सकल अँगप्रीत । पूरन ब्रह्म गोकुलमें झूलैं परमानंद पुनीत ।।३।।

★ राग आसावरी ★ कनक रत्नमय पालनौ हो गढ्यौ रमार सूत्रधार । विविध खिलौना भाँतिकेहो गजमुक्ताके हार ।।१।। सुभगपालनें बैठिकैं झूलत है नंदबाल । मात सुकृत देखिके कौतुक कहि व्रजबाल ।।२।। जननी उबट न्हवाय कें अतिक्रमसों लिए गोद । पौढ़ाए पल पालने शिशु निरखि निरखि मनमोद ।।३।। अति कोमल दिनसातके अधर चरनकर लाल । सूरश्याम छबि अरुणता निरखि हरखि व्रजवाल ।।४।।

★ राग आसावरी ★ परम मनोहर वन्यौ है पलना झूलत है नंदलाल । जसुमति माय झुलाय हरखसों निरख हँसत व्रजबाल ॥१॥ फूल पलना मध्य झूलत ललना झूलत परम रसाल । कृष्णदास प्रभुकी छबि निरखत वारत मुक्तामाल ॥२॥

★ राग आसावरी ★ दिव्य कनिककौ बन्यौ पालनौ झूलतहै ललना । फूलनके फौंदना दीने हैं लटकाय मनोहर पलना ॥१॥ जसुमति हरख झुलावतही नंदराय मन मगना । परम हुलास भयौ गोपिन मन निरख सुरपुर पुष्प बरसना ॥२॥ फूलनके खंभ फूलनकी डाँड़ी फूलन तव आतन सूरदास यह छबि निरखतही वारत हैं फूले मुक्तामन ॥३॥

★ राग आसावरी ★ फूली फुली फिरत यशोदा मैया । फूले नंद झुलावत ललना मनही मन हुलसैया ॥१॥ सुनत गोपिका यह आनंद चली बेग उटि धैया । नंदराय आँगन मधि आई गावत है जु बधैया ॥२॥ फूलनकौ अति बन्यौ पालनौ झुलावत जसोमति मैया ॥ कृष्णदास यह छबि निरखतही परम हुलास भयौ मन मैया ॥३॥

चंदन के पलना के पद

★ राग रामकली ★ चक्षुश्रवा प्रियकौं पलना ललना तिहि माँझ झुलावत हैं । युवती मुख पंकज बंक चितै मिलिकैं क्षितिकौ सुत गावत हैं ॥१॥ व्रजराज त्रिया कर डोरि गहे हरुबै हरुबै हुलरावत है । दास गोपाल सबै व्रजभामिनि मिलि ऐसेंहिं लाल लड़ावत हैं ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ अरी मेरी माई लराऊँ हुलराऊँ हाल री । अगर चंदनकौ पालना घड़ायौ बिच बिच हीरा मोती लाल री ॥१॥ सखी सहेली मंगल गावें बाँधो बंदनवार री । कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु माई वारोंगी मोतिन माल री ॥२॥

★ राग टोडी ★ पालनों अति परम सुंदर गढ़ि लाऔरे वीर बढैया । शीतल चंदन

कटाय धरि खराद रँग लगाय पचरँग रेसम मँगाय विविध चोकरि बुनाय बिचविच हीरामोत्ती लाल लगैया ॥१॥ पालनौ आन्यौ अति मन मान्यौ आछोसौ दिन धराय रोप्यौ है रंग महल झूलै मेरौ बारौ कन्हैया। जनहरिया प्रभुकी मैया नँदरानी जोई माँगे ताहि देत बधैया ॥२॥

★ राग आसावरी ★ धन्य गोकुल धन्य जसुमति धन्य महर शिरमौर। जिन जायौ सुत सामरौ निश प्रगट भयौ मानों भोर। जगत तिमिर हर नंदलला ॥१॥ गृहगृहतें गोपी चलीं मिलि गावत मंगलचार। अरुन वरन वड़ लोचनी मानों शशि अंबुज अनुहार। गोकुल मंडन नंदलला ॥२॥ देत दान द्विज बोलिकें आँगन माँगन भई भीर। सागरहूसे नंदराय मनों उमगि चल्यौ तजि तीर। तात मुदित कर नंदलला ॥३॥ अगर चंदनकौ पालनों गढि लायौ बढ़ैया विचित्त। मानों बिमान विधिना रच्यौ बुधि आपुनही हरि हित्त। विधि वुधि दायक नंदलला॥४॥ हाटिक जटित फाटिक मणिमुक्ता विद्रुम रत्न बहु भाँति। मनु मंडल विधु भान मंद भृगु भौम जीव बुध पाँति। क्रांति कोटि रवि नंदलला ॥५॥ सुभग खिलौना पालनें रंग नील पीत अरु लाल। अति अद्‌भुत शोभा भई मानों विविध विविध खग माल। शोभा सागर नंदलला ॥६॥ मूरति बाँध्यौ पालनें वर झुलावति है ब्रजनारि। निरखि लाल भई पूतरी मानों चित्रलिखी जो चितारि। नैन सुफल सुख नंदलला ॥७॥ नखशिखलों अंगअंग रूप छवि को कहि सकै बनाई। मानों काम तजि धामकूँ रह्यौहै मैन मुरझाई। काम कोटि छबि नंदलला ॥८॥ चुचकारत हँसि जसुमति अरु गोद सुतनकों लेत। भुजगोरे मानों दामिनी घन परसि परम छबि देत। जननी जीवन नंदलला ॥९॥ मुक्तावलि उरराजही हरि लपटि कंठ मुसिकाई। मानों शुभ औसर इंद्र के सुनि नाचत उरवशी गाई। सदन सुहावन नंदलला ॥१०॥ धरि कपट तन पूतना आई सलज सलौन। मानों सिंघ घर पाहुनों ज्यों आयौ मृगकौ छौन। जानि शिरोमनि नंदलला ॥११॥ तनकतनक सुत गोपके मिलि खेलत शुभउच्चार। कनिकसौ आँगन नंदकौ धुनि मानों न्निगम चटसार। श्रुति सुखदायक

नंदलला ॥१२॥ अष्टसिद्धि ठाड़ी रहें अरु नवविधि नंद दुवार । खट ऋतु रहीं कर जोरिकें मानों अनुचर श्रीअनुहार । सकल सुखन सुख नंदलला ॥१३॥ शिव विरंचि जानें नहीं मद कीनों हरिसों रोस । मानों कनक कसौटी कीयौ भये दोऊ अमल उद्योस । देत अभय पद नंदलला ॥१४॥ सुनें सुनावे पालनों जो गावै यह सुखरास । शंभु शेष शुक शारदा कहें ता जनकों व्रजबास । व्रज के मंगल नंदलला ॥१५॥ मेघबूँद तारागिनें कोऊ लहरि निधिवार । रामदास कवि को कहै गिरिधर गुन अगम अपार । रामदास प्रभु नंदलला ॥१६॥

फूल के पलना

★ राग आसावरी ★ पलना फूल भर्यौ नंदरानी । ता मधिय झूलत छगन मगनवा निरखत नैन सिरानी ॥१॥ नानाबिधके खिलोना लै लै खिलावत मृदु मुसिकानी । रसिक प्रीतम झूलत मन फूलत किलकत व्रज सुखदानी ॥२॥

★ राग आसावरी ★ पलना झूलतहै नंदलाल । फूलनसों रचि रचिहिं बनायौ अति सुंदर व्रजबाल ॥१॥ करग्रही डोर झूलावत रानी फूली अंग न माई ॥ सुघरराय प्रभुकी छबि निरखत व्रजजन लेत बलाई ॥२॥

★ राग आसावरी ★ जसोदा मैया लालकों झुलावे । आछें बारे कान्हकों हुलरावे। कनियाँ कनियाँ अईयाँ अईयाँ यों कहि लाड़ लडावे । हुलुलुलु हुलुलुलु हैं हाँ हाँ हाँ कहि कैं गोद लियें खिलावे ॥१॥ दोऊ कर पकर जसोदा रानी ठुमकी पाँय धरावे । घननन घननन घुँघरुबाजें, झाँझरियाँ झमकावै ॥२॥ सूरदास मदनमोहनकों याही भाँति रिझावे । मं मं मं मं पप् पप् पप् पप् चच् चच् चच् चच् तत् ता थेई यह बिधी लाड़ लड़ावे ॥३॥

★ राग आसावरी ★ ललित त्रिभंग लाड़िलौ ललना । वृंदावन गहवर निकुंजमें युवतिन भुज झूलतहै पलना ॥१॥ भामिनी सुरत राधा सुखसागर चितवन चारु बिरह दुःख दलना । यमुना तट अशोक वीथिनमें कामिनी कंध बाहुधर चलना ॥२॥ नूपुर क्वणित चरण अंबुजपर मुखरित किंकिणी शोभित चलना।

कृष्णदास प्रभु नखशिख मोहन गिरिधरलाल प्रेम रस खिलना ॥३॥

राग आसावरी ★ ललित लाल रस पलना झुलाऊँ। हृदय कमलकी पटली धरकें मन झौंटा दै लाड़ लड़ाऊँ ॥१॥ नैन कमल शुभ बदन बिलोकत मुख पंकज गुनगान सुनाऊँ । चरनकमल नूपुर धुनि लैकें हावभाव निरतन उपजाऊँ ॥२॥ यह बिधि अपने प्राण पियाकूँ मनसिज सुख मन मोद बढाऊँ। उभयभाव उर अंतर लैकें सरसरंग रस सुख बरसाऊँ ॥३॥

★ राग आसावरी ★ पलना फूलन गूँथ बनायौ ॥ जाती जूही चमेली चंपा कनेर सुरंग सुहायौ ॥१॥ राईवेल गुलतुर्रा सोहत बीच फोंदना लै लटकायौ॥ लेकर गोद श्याम सुंदरकों जसुमति पलनामें बैठायौ ॥२॥ गोदी लियें हुलरावत गावत तन मन अति आनंद बढ़ायौ ॥ रसिक प्रीतमकी बानिक निरखत व्रज जन निरख निरख सुख पायौ ॥३॥

★ राग आसावरी ★ झूलौ हो लाड़ले ललना ॥ फूली जसोमती चाव झूलावत फूलन मध्य पलना ॥१॥ सुरपुर निरखि देव आनंदित वर्षावत बहु पुष्पना ॥ कृष्णदास प्रभुकी छबि निरखत वारत तनमन धना ॥२॥

★ राग आसावरी ★ फूलनकौ पलना झूलत ललना हरख जसोमति झुलावें हो। गहत डोर कर पाटकी मन प्रभु अति हुलसावें हो ॥१॥ बहु विधि विविध खीलोना लै लै गाय बजाय हूलसावें हो ॥२॥ नंद हरख मनभयौ निरख सुख गोपीजन मंगल गावें हो । रस यह देख देव हरखत भये सूर चरित्त जस गावें हो ॥३॥

★ राग आसावरी ★ विविध फूल पलना रच्यो ॥ हो नंदललना ॥ जननी हरखे झुलाई ॥ हो नंद ॥१॥ फूलन खंभ सोहावने ॥हो नंद.॥ फूल मयार बनाय ॥ झूलत फूलही हो नंदललना ॥२॥ झूमर फूलनकी बनी ॥हो नंद.॥ फूलन झूमका कराय ॥ झूलत हो नंद.॥३॥ फूलन लटकन लटक रही ॥हो नंद.॥ फूलनबेनी भराय ॥झूलत.हो नंद.॥४॥ बाजत मृदंग मोर जू ॥हो नंद.॥ गावत गीत रसाल ॥झूलत.हो नंद.॥५॥

'व्रजभूखन' प्रभु रसिक कुंवर ॥हो नंद.॥ दासनके प्रतिपाल ॥ झूलत. हो नंद ॥६॥

★ राग आसावरी ★ आज फलन भर्‌यौ पलना फलन भर्‌यौ पलना झूम रही लता चहुं ओर आज फलन भर्‌यौ पलना ॥टेक॥ बैठि रानी जसोदा झुलावे रानी ललना खिलावे रानी पलना झुलावे ॥ झुक झूले श्री बालकृष्णलाल आज फलन भर्‌यौ ॥१॥ शिश पाग चंद्रिका सोहे चंद्रिका सोहे लट लटकन तिलक सुभाल आज फलन भर्‌यौ ॥२॥ शिशफूल करनफूल झलकै करनफूल झलकै नासा मोती सिरपेच आज फलन भर्‌यौ ॥३॥ श्री कंठ धुकधकी माला सोहै धुकधकी माला सोहै हीराहार हमेल आज फलन भर्‌यौ ॥४॥ गुंजामाल कमल वनमाला कमल वनमाला चोटी मुदरी रसाल आज फलन भर्‌यौ ॥५॥ श्री विट्ठलनाथ संग मिलि खेलै संग मिलि खेलै 'निजजन' को समाज आज फलन भर्‌यौ ॥६॥

कुल्हे के पद

★ राग रामकली ★ अपने लालके गुन गाऊँगी । सुंदर रतन जटित पलनामें छगनमगनको झुलाऊँगी ॥१। लाल कुलहि पीत झगुली तन नाक नधुली पहराऊँगी । कंठ हसुली बधना कर पोहोंची कटि कोंधनी बनाऊँगी ॥२॥ रुनकझुनक पैंजनी घुंघरू निरखि निरखि सुखपाऊंगी । लट गूथों उज्वल मोतिनसों मटकन भोंह बनाऊँगी ॥३॥ हुलसि हुलसि लै लै पलनातें कनिया गोद खिलाऊँगीं । श्रीविट्ठल गिरिधरनलाल को आँगन बैठि मल्हाऊँगी ॥४॥

★ राग रामकली ★ अपने लालके गुन गाऊं । तुम झूलौ हौं हरखि झुलाऊँ प्रेम कलोलन जाऊँ ॥१॥ नखशिख लौं सिंगार बनाऊँ भाल डिठौना लाऊँ ॥ कुलह सुरंग सिर पीत झगुलिया हरि नखशिखलौं पहराऊँ ॥२॥ चकई भौंरा पाटके लटकन विविध खिलोंना खिलाऊँ । बार-बार पलनातैं लैकें स्तनपान कराऊँ ॥३॥ मधुमेवा माखन मिश्री लै प्यारें कौं जु चटाऊँ । श्रीविट्ठल

गिरिधरनलालकौं देखि देखि सुख पाऊँ ॥४॥

★ राग आसावरी ★ तुम व्रजरानीके लाला । अहो दधि मथति सुहाई के लाला ॥ध्रु.॥ दिव्य कनककौ पालनों लाल रतन जटित नगहीर । गजमोतिनके झूमिका लाल ऊपर दक्खिन चरि ॥१॥ घुटुरुवन चलत सुहावने लाल पग नूपुरकौ नाद । कटि किंकिनी रुनुझूनु करें लाल सुनत जननी अहलाद ॥२॥ आधे आधे बचन सुहावने लाल सुनत जननी मन मोद । मुख चुंबत स्तनपान दैं लाल लै बैठारति गोद ॥३॥ कुल्हे सुरँग सिर ताफताकी लाल झगुली पीत सुदेश । कंठ बघना कर पोहोंचियाँ लाल शोभित सुंदर वेश ॥४॥ तिलक खुल्यौ गोरोचना लाल घूँघरवारे केस । न्हाँनी न्हाँनी दतियाँ द्वै दूधकी लाल देखियत हँसत सुदेश ॥५॥ काजर लोचन आँजिकैं लाल भोंह मटुक दै ईठ । अपनौ लाल काहू देखन न दैहौं जिन कोऊ लावौ डीठ ॥६॥ प्रथम हनी तुम पूतना लाल शकट भंजन त्रन मारि । यमला अर्जुन तारिकें लाल अब किन छाँडौ आरि ॥७॥ मेरे लालकी मैया व्रजनारी बाप गोपकुल राज । धनिधनि तुमारे बलभद्र भैया करत सकल सुख काज ॥८॥ मेरे लालकी गैया अति बाढ़ी चरन वृंदावन जाँई । पान्यौ पीवें नदी यमुनाकौ अंजन खरि वेखाँई ॥९॥ मेरेलालहो प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ़ लेहु । मथुरा फेरौ व्रजराज दुहाई लाल गोप सखन सुख देहु ॥१०॥ लिये उठाय व्रजराज गोदकरि दै उगार हदें लाय । बहोरि लिये जननी गोद करि अस्तन चले हैं चुचाय ॥११॥ कहत यशोदा सुनौ मेरे गोविंद लेहुँ कनियाँ चढ़ाय । जों झूलौ तो पालनें झुलाऊँ नातर आँगन बैटि खिलाय ॥१२॥

जोगीलीला के पद

★ राग आसावरी ★ हे दैया मतवाला जोगी द्वारे मेरे आया है ॥ध्रु.॥ जटाजूट शिर गंग बिराजत त्रैलोचन मन भाया है । वृषभ ऊपर असवार होयकें श्रीगोकुलकों धाया है ॥१॥ बाघंबर पाटंबर सोंहे अंगछार लपटाया है । कर त्रिशूल डमरू लियें खप्पर सिंगीनाद बजाया है ॥२॥ अरुण नैन विजयाजु चढ़ायें आक धतूरा

खाया है । तिलक चंद्रमा भृकुटी ऊपर जोगी जुगत बनाया है ॥३॥ रुंडमाल गरैं बीच विराजत शेषनाग लपटाया है । अद्भुत रूप धस्यौ जोगीकौ मेरा गुपाल डराया है ॥४॥ देखों मैया तेरा बालक जिन मोय चटक लगाया है । सूरश्याम चरनरज बंदी दरशनमें सचुपाया है ॥५॥

★ राग आसावरी ★ आयो है अवधूत जोगी कन्हैया दिखलावे हो माई ॥ध्रु.॥ हाथ त्रिशूल दूजे कर डमरू सिंगीनाद बजावे । जटा जूटमें गंग विराजे गुन मुकुंदके गावे हो माई ॥१॥ भुजंगकौ भूषण भस्म कौ लेपन और सोहै रुंडमाला । अर्द्धचंद्र ललाट विराजे ओढ़नकों मृगछाला ॥२॥ संग सुंदरी परम मनोहर वामभाग इक नारी । कहै हम आये काशीपुरीतें वृषभ कियें असवारी ॥३॥ कहै यशोदा सुनौ सखीयौ इन भीतर जिन लाऔ । जो माँगै सो दीजो इनकों बालक मती दिखाऔ ॥४॥ अंतरयामी सदाशिव जान्यौ रुदन कियौ अति गाढ़ौ । हाथ फिरावन लाई यशोदा अंतरपट दै आड़ौ ॥५॥ हाथ जोरि शिव स्तुति करतहैं लालन बदन उघास्यौ । सूरदास स्वामी के ऊपर शंकर सर्वस वास्यौ ॥६॥

★ राग आसावरी ★ बाला मैं जोगी जस गाया । धन्य जसुमति तेरे तनकों जिन ऐसा सुत जाया ॥१॥ गुनन बड़ौ छोटौ जिन जानौ अलख पुरुष घर आया । जाकौ ध्यान धरत हैं मुनिजन निगम खोज नहीं पाया ॥२॥ जो चाहौ सो लीजियै रावल करौ आपनी दाया । देहू असीस मेरे या सुतकों बाढ़ै अविचल काया ॥३॥ ना हों लैहों पाट पाटंबर ना लैहों कंचन माया । अपने सुतकौ दरस दिखावौ जो मोय गुरु नें बताया ॥४॥ विनती कियें कहति नंदरानी सुनि जोगिनके राया । देखन न देहुँ तोहि दिगंबर बालक जाय दिठाया ॥५॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जाय दिठाया । अलख पुरुष है मेरा स्वामी सो तैंने भवन छिपाया ॥६॥ बालकृष्णकों लाय यशोदा करि अंचलकी छाया । दरसन पाय चरनरज बंदी सिंगी नाद बजाया ॥७॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नैनन नीर बहाया । देखत बनें कहत नहिं आवै नाटिक भला बनाया ॥८॥

ठाकुरदास महाप्रभु लीला महादेवलों लाया। लीला लाल ललित गुन अटक्यो चित्त नहिं चलत चलाया ॥९॥

★ राग आसावरी ★ काहु जोगियाकी दृष्टि लागी कन्हैया मेरौ रोवै हो माई। घरघर पूँछत फिरत जसोदा दूध पीवै ना सोवै ॥१॥ कहाँ गये जोगी नंदभवन व्रजमें फिरि फिरि हारे। फन जोगिया कों ढूँढ़ि निकासौ सुतकौ ताप निवारै॥२॥ चलिरे जोगी नंदभवनमें जसुमति मात बुलावें। लटकत लटकत शंकर आवें मनमें मोद बढ़ावें ॥३॥ आये जोगी नंदभवनमें राईलौन कर लीनौ। वारि फेरि लालनके ऊपर हाथ शीशपै दीनौ ॥४॥ रोग दोष सब दूरि गयो है किलक हँसे नंदलाला। मगन भई नंदजूकी रानी दीनी मोतिन माला ॥५॥ रहौ रहौ जोगी नंदभवनमें व्रजमें बासौ कीजै जब जब मेरौ लाला रोवै तबतब दरशन दीजै ॥६॥ तुम तो जोगी परम मनोहर तुमको बेद बखानैं। बूढ़ौ बाबू नाम हमारौ सूर श्याम मोहि जानें ॥७॥

★ राग आसावरी ★ काहू जोगीयाकी नजर लागी मेरौ बारौ कान्ह रोवै। घर घर हाथ दिखावै यशोदा दूध पीवै नहीं सोवै ॥१॥ चार डाँडी सरल सुंदर पालने झुलावें। पालनें नहीं सोवै मोहन गोद लियें हुलरावें ॥२॥ मेरी गली जिन बोलौरे जोगी अलख अलख कहि आवै। राई लोंन उतारि यशोदा सूरकौ प्रभु सुहावै ॥३॥

ढाढ़ी के पद

★ राग धनाश्री ★ हों व्रज माँगनौजू व्रज तज अनत न जाऊँ ॥ध्रु.॥ बड़्डे भूपति भूतल महियाँ दाता सूर सुजान। कर न पसारों सीस न नाऊँ या व्रजके अभिमान ॥१॥ सुरपति नरपति नागलोकपति मेरे रंक समान। भाँति भाँति मेरी आशा पूजी यै व्रज जन जिजमान ॥२॥ मैं व्रत करि करि देव मनाये अपनी घरनी संयूत। दियौ विधाता सब सुखदाता गोकुलपतिके पूत ॥३॥ हों अपनौ मनभायौ लैहों कित बौरावत वात। औरनकों धन घन ज्यों वरखत मो देखत हँस

जात ॥४॥ अष्टसिद्धि नवनिधि मेरे मंदिर तुव प्रताप व्रज ईश । कहत कल्यान मुकुंद तात करकमल धरो मम शीश ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ नंदजू मेरे मन आनंद भयौ सुनि गोवर्द्धन तें आयौ । तुह्मारें पुत्र भयौ हों सुनिकें अति आतुर उठ धायौ ॥१॥ बंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि देश देशतें आये । एक पहलेहीं आशा लागत बहोत दिननके छाये ॥२॥ तुम दीने कंचन मणि मुक्ता नाना बसन अनूप । मोहि मिले मारगमें मानों जात कहूँ के भूप ॥३॥ दीजै मोहि कृपाकरि सोई जो हों आयौ माँगन । जसुमतिसुत अपने पायन चलि खेलन आवै आँगन ॥४॥ कोटि देहुं तो पर्‌यौ रहुँगौ बिनु देखे नहीं जाऊँ । नंदराय सुनि बिनती मेरी तबही बिदा भलें पाऊं ॥५॥ तुम तौ परम उदार नंदजू जो माँग्यौ सो दीनौ । ऐसौ और कौन त्रिभुवनमें तुम सर को को कीनौ ॥६॥ मदनमोहन मैया कहि बोलें यह सुनिकें घर जाऊँ । हों तौ तुह्मारे घरको ढाढ़ी सूरदास मेरौ नाँऊँ ॥७॥

★ राग धनाश्री ★ नंदजू तुमारे सुख दुःख गये सबनके देव पितर भलौ मान्यौ। तुह्मारौ पुत्र प्रान सबहिनकौ भवन चतुर्दश जान्यौ ॥१॥ हों तौ वृद्ध पुरातन ढाढ़ी नाम सुनें सिरनाँऊँ । गिरि गोवर्धन बास हमारौ गिरि तजि अनत न जाऊँ ॥२॥ ढाढ़िन मेरी झाँझ बजावै हों हूँ हुरक बजाऊँ । मेरौ चीत्यौ भयौ तुमारें जो माँगों सो पाऊं ॥३॥ अब तुम मोकों करौ अजाची बहुर्‌यौ कर न पसारूँ । द्वारें रहूँ देहु एक मंदिर स्याम स्वरूप निहारूँ ॥४॥ महाप्रसाद तुमारे घरकौ बिनुं मांगें जो पाऊँ । जब जब जन्म धरों ढाढ़ीकौ तब जन्म कर्म गुन गाऊँ ॥५॥ लै ढाढ़ी कंचन मनि मुक्ता नाना वसन अनूप । टोडर और पाटंबर अंबर पहरे दीखे भूप ॥६॥ हँसि बोली ढाढ़िन ढाढ़ीसों अब कछु बरनि बधाई। ऐसौ दियौ न दैहै कोऊ जैसी जसुमति पहराई ॥७॥ हों पहरी पहर्‌यौ मेरौ ढाढ़ी दान मानकी अथाई । नंद उदार भये पहरावत देत सबै बनि आई ॥८॥ बालक बली भयौ नारायनदास निरखि निधि पाई । भक्ति करूँ पालनें झुलाऊँ यह मन अनत न जाई ॥९॥

★ राग धनाश्री ★ नंद उदै सुनि आयौ हों वृषभानको मगा। देवेकों बड़ो महर देत न करत गहरु लालकी बधाई पाँऊँ नंदको झंगा ॥१॥ तौ लों न बिदा व्है जाऊँ औरकें कहाँ बिकाऊँ जौ लों न भवन आवें ऋषिगर्गा। चिरजीवौ नंदको कुमार सूरके प्रान आधार जसुमति सुत चले अपने पगा ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ हों व्रजवासिनकौ मगा। श्रीवल्लभराज गोप कुल मंडन ए दोउ घरकों जगा ॥१॥ नंदराय एक दियौ पिछौरा तामें कनक तगा। श्रीवृषभान दियौ एक टोडर हीरा जटित नगा ॥२॥ कीरति दै कुँवरकी झगुली जसुमति सुतकौ झगा। किसोरीदासकौ दियौ कृपाकरि नील पीतकौ पगा ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ ढाढ़ी तें पढ़ि नंद रिझायौ। जसुमति सुतकी कीरति गाई सबहिनके मन भायौ ॥१॥ नंद सुवागौ अपने गरेकौ ढाढ़ीकों पहरायौ। दीनी धेनु धौरी और धूमरि अरु भंडार खुलायौ ॥२॥ ढाढ़िनकों सोनेके नूपुर गहनौ अगढ़ गढ़ायौ। रतन खचित खगवारो गरेकौ ढाढ़िनकूँ पहरायौ ॥३॥ तेरे भलें भलौ या व्रजकौ या घर मंगल गायौ। सूरदासकों सर्वसु दीनौ मंगल सुजस सुनायौ ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ व्रजमें अद्भुत ढाढ़ी आयौ। फूलि गये सब गोप मगन मन जबहिं बधायौ गायौ ॥१॥ कोऊ कहें इंद्र कुबेर वरुन है कोऊ कहे रति पति जैसो। कोऊ कहें लोकपाल दिगपाल है कोऊ कहें होई न ऐसो ॥२॥ भाखत विरद जो प्रेम मगन मन गोप सब जुरि आये। अष्टसिद्धि नवनिधि देंनकों मनमें धनद लजाये ॥३॥ हों ढाढ़ी सुरराज ईशकौ ताहि ईशहि जाचों। और देव नरदेवनको जस मनमें नेंकु न राचों ॥४॥ एक बेर दसरथ मैं जाच्यौ राम पुत्र भयौ जाकें। गर्ग महामुनि मोसों भाख्यौ सो सुत भयौ जसोदाके ॥५॥ ढाढ़ी कहै व्रजईशसों मेरे धन बहुतै हैं। रामकृष्णकौ दरसन पैहों तब ढाढ़ी घर जैहें॥६॥

★ राग धनाश्री ★ हौं तौ तिहारे घरकी ढाढ़ी जाचों नंद सुजान। सोई लेहुँ जो मनको भायौ नंदरायकी आन ॥१॥ धन्य नंद धन्य यशोदा धन्य धन्य जायौ पूत। धन्य धन्य भूमि धन्य व्रजवासी आनंद करत अकूत ॥२॥ घरघर होत

आनंद बधाई जहाँतहाँ मागध सुत । मनमानिक पाटंबर अंबर दीने नंद वहूत ॥३॥ हय गज हेम भंडार दिये सब फेरि भरे सौ भाँत । जबही देत तबही फिरे देखें संपत्ति घर न समात ॥४॥ ते मोहि मिले जात घर अपने मैं बूझी तव वात । हँसि हँसि दौरि मिले अंक भरि हम तुम एकै जाति ॥५॥ संपत्ति दैहुँ लैहुँ नहीं एकौ अन्न वस्त्रके काज । जो तुमपै हौ मांगन आयौ सोही लैहों व्रजराज ॥६॥ अपने सुतकौ बदन दिखावौ बड़े महर शिरताज । तुम साहिब हौ ढाढ़ी तेरो प्रभु मेरौ व्रजराज ॥७॥ चंद बदन दरसन संपत्ति दै सोई घर लै जाऊँ । जो संपत्ति सनकादिक दुर्लभ सो सब तुमरे ठाऊँ ॥८॥ व्रजमें रहों आन नहीं जाचों प्रसाद तिहारौ पाऊँ । हों तो जन्मजन्मकौ याचक सूरदास मेरौ नाऊँ ॥

★ राग धनाश्री ★ श्रीव्रजराजके हों ढाढ़ी द्वारें माँगन भीर ॥ देश देशतें जाचक आये पढत कीरत आभीर ॥ध्रु.॥ एक ढाढ़ी ढाढ़िन नाचै । पढ़ि वंश वृंदावन वाँचै ॥१॥ एक ढाढ़ी हुरक बजावै । व्रजकी कीरति यश गावै ॥२॥ एक ग्वाल मृदंग बजावत । एक ताल झाँझ लियें गावत ॥ एक अंबर सबै लुटावें । तव फूले अंग न समावें ॥४॥ एक सूवा पढ़ावत आवै । मोहनजूकौ सुजस सुनावै ॥५॥ एक ढाढ़ी निकट बुलावै । शुक्र कंचन चोंच मढ़ावै ॥६॥ एक ढाढ़ी सारो पाली । बोलन सिखवै बनमाली ॥७॥ सहचरी बोहोत जस गावै । ते लीला मनकों भावै ॥८॥ एक मैना मोर पढ़ावै। जसुमतिकी कूखि मल्हावै ॥९॥ कछु रीझेहैं नंदजूनकों ॥ लिखि पतियादीनी जिनकों ॥१०॥ एकन मृग छोना लै आन्यों । नखसिख सुंदर छवि वान्यों ॥११॥ एक नंद नंदन तन जोहें । सब गोपनकौ मन मोहें ॥१२॥ एक ढाढ़ी वगुला लायौ । सब गोपनके मन भायौ ॥१३॥ कछु रीझी हैं व्रजबाला । तिहीं दीनी मोतिन की माला ॥१४॥ एकमोर नचावत आयौ । तिहीं भीतर भवन बुलायौ ॥१५॥ व्है कुहुकुहु सुर भायौ । लै मोतिन तिनें चुगायौ ॥१६॥ एक ढाढ़ी बंदर लायौ । देखत सबके मन भायौ ॥१७॥

वह कूदि मुख मोरे । वनचर लै बुलाय त्रन तोरे ॥१८॥ एक हरे बाँसकी डरिया । फल फूलन सों वे भरिया ॥१९॥ एक हरद दूब दधि लावै । व्रजवासिन सीस बँधावे ॥२०॥ एक हरद दही लै छिरके । सब देवनके मन हरखे । गोवर्धन गावै ए हुलास । व्रजजन दासनके दास ॥२१॥

★ राग धनाश्री ★ श्रीवल्लभ पद बंदिकें कहूँ सुजस एक सार । पुत्र भयौ श्रीनंदके बड़ीवैस ततकार ॥१॥ श्रवन सुनत ढाढ़ी चल्यौ सुत दारा लै साथ। नृपतन मणि श्रीनंदकों आय नवायौ माथ ॥२॥ रूप सुंदर सोहनों भूषन वसन सुदेश । ढाढ़ी वाम विशद जश मानों नगर नरेश ॥३॥ बड़े बड़े सब गोपन मधि राजें श्रीमनि नंद । ज्यों उडुगनकी मंडली राजत पूरन चंद ॥४॥ मैं ढाढ़ी तुव वंशकौ सुनौ घोष मनिराय । सावधान व्है चित धरौ लागै मोहि बलाय ॥५॥ अहिपति सुरपति लोकपति वड़े लोक भूपाल । मन वच कर्म न जाँचि हौं विना एक व्रजपाल ॥६॥ व्रजमंडल सगरौ जितौ सब मेरे जिजमान । जिनमें यश जितने कहों आये सब परधान ॥७॥ सबहिनके जस बरनतहीमें बीति काल बहु जाय । वदन एक करनी अमित कछू कहूँ बुद्धि पाय ॥८॥ वंदन करि सब साधुकुल बरनत वंश उदार । जीवन मरनते छूटि हौ गाय सुनत नरनारि॥९॥ आवीरभानते सुभानते भये जानि उदार । अति विचित्र कहाँलों कहूँ ए गुन अमित अपार ॥१०॥ बसत महावन पवित्र स्थल जो हरिकौ निज धाम । घोष लोक गोकुल अधिक लीला अति अभिराम ॥११॥ जा रजकों शिव बंदही अज अरु शेष सुरेश । होंजु महिमा नहिं कहि सकत जानत आपुन लेश ॥१२॥ तिनकें चंदसूरज भये जैसें चंद प्रकास । इनके भीलकबाहु भये चार्‍यौं चक्र उजास ॥१३॥ काननशशि तिनकें भये कंजनाभ तिहिं जानि । ब्नीरभान तिनकें भये महा नृपति बहु मानि ॥१४॥ धर्मधीर तिनकें भये सर्व धर्म जा माँहिं । तिनकें भये कालिंदजू सो लंक दुहाई जाँहि ॥१५॥ कालिंदजूके दश पुत्र भये तेजभान गुनमान । धर्मधीर बलवीर बहु शील संतोषहिं जान ॥१६॥ जेसनजेवल कहे जकृत जैसो धन होय । कंठभान महा बुद्धि जो मन मेरे पुनि

सोय ॥१७॥ मनोरथ वारंगद भये चित्रसेन लघुजानि । महापुन्यके पुंजकों जिहिं नव नंद बखानि ॥१८॥ नौनंद आनंद निधि प्रगटे जिनके बाल । नाम लेत आनंद मन मिटत तिमिर कलि काल ॥१९॥ सुनंद जानि उपनंदजू महानंद कलिनंद । नंदवधू नव नंदजे नंद नंद प्रति नंद ॥२०॥ महाभाग्य महिमा अमित ज्यों शरदें पून्यों चंद । भक्ति तपस्या तेजतें प्रगट भये श्रीनंद ॥२१॥ पूर्व जन्ममें द्रोण जो बड़े वसुनमें जानि । धरा नाम जसुदा तहाँ महा तप करि यह मानि ॥२२॥ ब्रह्माजू आज्ञा दई ब्रजमें जन्म सुलेह । बालक व्हैकें तू लहौ कह्यो तथा श्रुति एह ॥२३॥ नंदघरनी आनंदमय जायौ मोहन पूत यह सुनि सब परिवार लै अपनी घरनी संयुत ॥२४॥ बालक बृंद जहाँ होतहैं सब कोऊ मोकों देत । अपनों सींच्यौ जानिके बे लेखत बहु हेत ॥२५॥ नाचिनाचि गुणगाय हों पायौ पहलौ दान । श्रीवल्लभ कुल कृपातें पायौ पद निरवान ॥२६॥ यह जाचकहै माँगिहों श्रीवल्लभपदकी रेंन । रसिक सदा वल्लभ रहौ नैनन वल्लभ बेंन ॥२७॥

★ राग धनाश्री ★ प्रथम प्रनउ ब्रजईश आशीष लीजैजु । कीजे परम उपकार बधैया दीजैजु ॥ध्रु.॥ पुत्र तुम्हारे कौ हो गावत भूत भविष्य वर्तमान । जब तब द्वार आन रहों पुनिद्वार न जाचों आन । बधैया दीजैजु ॥१॥ पहेले सपनौ पाईयौ हो मैं देख्यौ अद्भूत । यदुकुल प्रकट भये ब्रजभूषण नंदराय घर पूत॥२॥ बदि भादों आठें युग द्वापर अर्ध रेंन बुधवार । कौलव करण नक्षत्र रोहिणी जन्मे जगदाधार ॥३॥ द्वादश लग्न सुभग नवग्रह उदित अपरमित भेख । अगम निगम गर्गमुनिकीनौ जन्म पत्रकौ लेख ॥४॥ जिन जानौ मानसमति कोऊ देव देवनकौ देव । पूरनपुन्य अहीर अभैकृत याही जन्म याही भेख ॥५॥ गृह गृहतें सुनि सब गोपी कंचन थार लियें साज । पोहोप बधाओ कूख महरकी सो वन फूले ब्रजराज ॥६॥ हय गज रथ पाटंबर दीने दीने बहु भंडार । हों ढाढ़ी कबहू न अघाऊँ यद्यपि नंद दातार ॥७॥ हों माँगों यै जगमैयापै रहो पदरजकी ओट । नैन प्रभाव हारु जित तित रहौ चरणन तेरे लोट ॥८॥ भलेजु राजपूत

भयौ यह भक्त न पूजी आस । जन्म जन्म येही यश गावे बलि जाय चतुर्भुज दास ॥९॥

★ राग धनाश्री ★ नंदजु हों ढाढ़ी वृषभान गोपकौ लेंन बधाई आयौजू । रावलमें मैं सुनी बधाई जसुमतिने सुत जायौ ॥१॥ सुरपति नरपति नागलोकपति भयौ जु जयजयकार । वरखत कुसुम देवता सब मिल नंदराय दरवार ॥२॥ उदित भयौ कुल यह चंद्रमा पूरी मनकी आस । जिन जो माँग्यौ सो तुम दीनों भयौ त्रिभुवन उल्लास ॥३॥ तुम तौ परम उदार नंदजू दीने रतन भंडार । दान देंनकों अपने मनमें नांहिन करत विचार ॥४॥ जाचक भये सब भूप नंदजू बहोरि न माँगत दान । कीरति ओर कहाँ लगि बरनों भयेजु तेरे समान ॥५॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग भयौ न ऐसौ दाता । तुमारे जसको पार न पावत तीन लोक विख्याता ॥६॥ कल्पवृक्ष तिनके घर भीतर कामधेनुसी गैया । जिनकी कौन चलावे भैया जा घर गोकुलकौ रैया ॥७॥ जन्म जन्मकी आशा मेरी पूँजी गोकुलके राजा । पायौ दरशन तुमारे सुतकौ मनवाँछित भये काजा ॥८॥ एकवेर रज चरन कमलकी लै धारौ मेरे माथा । कृष्णदास वल्लभकुलकौ ढाढ़ी कीनौ जन्म सनाथा ॥९॥

★ राग धनाश्री ★ व्रजपति माँगियै जू दाता परम उदार । जाके हेम रुहेवरु दीजै हाती हाथ हथ्यार । अगनित नग मणि बसन मुकुट सिर धरत न लागे बार॥१॥ कामधेनु सुरपतिके सब कोउ गैया जानें एक । ऐसी बोलि बोलि विप्रनकों दीने ठाठ अनेक ॥२॥ जे मनकामना करी आये तुम तेउ कलपतरु कीन । तिन अपने घरही बैठे फिर फिर और न वरदीन ॥३॥ तुम माँगि माँगि बौ अजाची करत जाचक न जात । भये पुरंदर चले पुरनकों फूले अंग न मात ॥४॥ तुम्हरे पुत्र भयौ जग जान्यौ दीने नाना दान । बोलौ विरद बिदा नहिं कवै हौं नंद महर की आन ॥५॥ तव तुम तात बात कहि है हँसि देहै मोकों पाँत । तब उचित मन भायौ लैहों सुनि हो महरि सुजान ॥६॥ महरिया हो बास बसोंगो सदा करौं गुण गान । एक वार दिन दरस ए पाऊँ हरिजूकों जिजमान ॥७॥ दनुज

दवन नंद भवन प्रगट भए गरग बचन परमान । जगजीवन घनश्याम मनोहर कृष्ण स्वयं भगवान ॥८॥

★ राग धनाश्री ★ वधाइयाँ जसोदे वधाइयाँ । नंदरानी दे लाल उपनां सेस नहए सीज वाइयाँ । साजन चंगा साँइ कीता असीफूली अंग न माइयाँ ॥१॥ पुत्र जायौ जगजीवनि तंडि लगि याँ पर बड़ाइयाँ । भाग सुलखननूँ असीस वे धोलि धुलाइयाँ ॥२॥ आज सहीये सुख बसदानू ब्रज मैना सव भूलाइयाँ । आनंद भरी सोहनियाँ सब गोपी तो धर आइयाँ ॥३॥ बड़भागी नंद बेठा दे दामोह माँगी ठकुराइयाँ । दूध दही सिर पावै दै नाचे देवा राखे उमचाइयाँ ॥४॥ सुखी हुये सुरनर मुनिजन मानो रंक निधि पाइयाँ । रामराय प्रभु प्रगटिया भगवान गलाँ मन भाइयाँ ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ आजबावा नंद ही जाचन आयो ॥ जन्म सुफल करिवेकों अबमें रहस बधायौ गायौ ॥१॥ महर कहत या वालक के गुन किनहूँ न मोहि सुनायो ॥ भलौ-भलौ सब लोक कहत है सोई गीतन गायो ॥२॥ प्रथम मच्छ संखासुर भार्यो कमठ पीठ ठहरायौ ॥ श्रीवाराह नृसिंह औतरे दैतन नखन दुखायौ ॥३॥ श्री वामन विराट विस्तार्यौ वली पताल पठायौ ॥ परसराम पृथ्वी निक्षत्री करि लैकर बाह छुड़ायौ ॥४। रघुपति रावण शीश भुजाहत जानकी लै घर आयौ ॥ विभीषण को राजतिलक दै लंका में बैठायौ ॥५॥ अब श्रीकृष्ण प्रगटे पुण्यनते तुमरौ पुत्र कहायौ ॥ वालकेलि रसकेलि करेंगे नटवर भेष बनायौ ॥६॥ श्रीगोवर्द्धन सात दिवस वांये नख अग्र उठायौ ॥ दास विलास करें बृन्दावन गोपीन प्रेम बढ़ायौ ॥७॥ मारें कंस मल्ल अरू केसी मल्लन साल सलायौ ॥ जस अपार महिमा अनंत ब्रह्मा हूँ पार न पायौ ॥८॥ महरि कहत यह भलौ दसोंदिस सवहिनके मन भायौ ॥ बाबा विहँसि कह्यौरे घरते बकुचा वेगि मंगायौ ॥९॥ झगा पटुका अरु पाग पिछौरा नीके करि पहरायौ ॥ हरि दरियाई कौ दगला ऊपर उपनंद उढ़ायौ ॥१०॥

★ राग परज ★ नंद हो बरसाने कौ ढाढ़ी । जायौ पुत्र तिहारें सुनिकें मोहि

अधिक रुचि बाढ़ी ॥१॥ कारनहै कीरति ताहूकें सोहै त्रिभुवनसार । बालिक बिरध तवीसावासी सबके यहै विचार ॥२॥ प्रीति पुरातन हती पहलेंही अब है परम सगाई । पुत्र तिहारौ सुता भानुकी बिधिना बात बनाई ॥३॥ व्हैहै जो जगदीश्वर करिहै तुम लै ढाढ़ी दान । हय गज हीर यूथ गाइनके अरु मुक्ताफल कान ॥४॥ अचिरकाल सुख आनि कहेंगे भक्ति देहु ममतात । अग्रदास ढाढ़ी प्रण कीनौ तबही दानकी बात ॥५॥

★ राग परज ★ लाल पर ढाढ़िन वारनें कीनी । पुलकी रोम रोम नंदरानी नोंछावरि बहु दीनी ॥१॥ गौर वरन एक श्याम बरन दोऊ शोभाके ऐना । रोग दोष लागौ मेरी अँखियन दीठ लगौ जिन नैना ॥२॥ रतन जटित आँगनमें खेलत जब देखोंगी आई । झूमरि पारि नचोंगी तादिन मुरि मुरि लैहुँ बलाई ॥३॥ व्रजमें निकट बसावौ मोकों नित प्रति आसीस देहों । वृषभान गोप कीरति मंगल गृह दूनी बधाई लैहों ॥४॥ जसुमति पट भूषन पहराई ढाढ़ीकों नंदराय । कर हल नाच नचे जब दोऊ रति पति निरखि लजाय ॥५॥ यह सुख निरखत शिव ब्रह्मादिक नारदसे मुनि रीझे । ढाढ़ी क्यों न भये या व्रजमें राम कृष्ण गुण भींजे ॥६॥

★ राग जेतश्री ★ रंग भींनी ढाढ़नि अति रुचिसों चारु मंगलरा गावै हो । लाल जन्म सुनी नाचत आई झाँझ मृदंग बजावै हो ॥१॥ उघटत मुख संगीत ललित गति देसी करी दिखरावै हो । चिरंजीयौ जसोदा तेरौ सुत यों कहि मोद बढ़ावै हो ॥२॥ सुनि सुनि रीझि रीझि व्रजपति अति आनंद उर न समावै हो । अपने लाल पर करि न्योंछावर ढाढ़निकों पहरावै हो ॥३॥ देत असीस चली मंदिर व्रजरानी नेग चुकावै हो । बारंबार विलोकी ललन मुख नंददास मन भावै हो॥४॥

★ राग जेतश्री ★ वृषभान पुरतें ढाढ़नि आई भानकी । देत असीस बलैया लेत है कान्हकी ॥१॥ या मेरी वहोत वड़ाई तिहारी भाग है । लीजै दान सोइ माँगी तिहारौ लाग है ॥२॥ मेरी महरी सुभामिनि कन्या जो जनें । तेरे पुत्र संजोग सगाई कौ बनें ॥३॥ बोलै बोलै कुँवर कर राखी बाँधीकें । चली सकल

सुख पाय सगाइ नाँधिकें ॥४॥ दानमान लै बहुरी बहोत उलासमें । करि हौं वहोत बड़ाई बारिन वासमें ॥५॥ तेरौ रसिक मनी लाल होय चिरंजीवनौ । किशोरीदासकौ सेवक अपनौ करि गिनौ ॥६॥

★ राग जेतश्री ★ आज नंदगृह कौतिक सुनिकें जाचक व्है हो आये जू ॥ वसुधा लैकरि कृष्ण अवतरे यह सुनिकें उटि धाये जू ॥१॥ चातक प्यास जैये कहुँ कैसे स्वाति बूंद नहिं पावैजू । नंद नंदन छबि निरखि निरखिकें प्रेम अनंद बढ़ावेजू ॥२॥ शिव समाधिके ध्यान न आवे जसुमति गोद खिलावैजू । स्याम सुंदर पै वारि फेरिकें देत कनक नग दावेजू ॥३॥ कृष्ण जनम सुनी अपने पतिसों हँसि ढाढ़िनियों बोलीजू । चलौ कंत नंद बाबाके दान कोटरी खोलीजू ॥४॥ तुम अपने पिय अंगकौ बागौ और मोतिन भरि झोलीजू । हमहूँ कों नखशिखलो गहनौ चीर सहित और चोलीजू ॥५॥ रतन जटित बहु कुंडल लीजो गैयां धूमरि धोरिजू । बिविध प्रकार पांबरि सुंदर वहुत अमोलीजू ॥६॥ सोंज सहित एक पलका लीजो और पांननकी ढोलीजू । बीरी करिके तुम्हें खवैहों लीजो अब तंबोलीजू ॥७॥ आछे और कहारन लीजो और चढ़नको डोलीजू । सोंहनीसी एक सुंदरि लीजो टहल करनकों गोलीजू ॥८॥ जन्म जन्म जाचों नहिं काहू बहु निरकाहू बोलीजू । जगगोविंद श्री कृष्ण जाँचिकें भई अजाचिक रोलीजू ॥९॥

★ राग जेतश्री ★ चलौरी ब्रजराजके द्वार बाजत बधाईयाँ ॥१॥ पहरे बसन विबिध आभूखन मंगल साज बनाईयाँ । श्रीफल दूब दहीं घृत अक्षत सोवन सींक सजाईयाँ ॥२॥ दूहूँ द्वार दै साथिये सुंदरि बंदनवार बँधाईयाँ । नाँचत फिरत सबै नरनारी हरद दही लपटाईयाँ ॥३॥ देत दान सुखमानि नंदजु ब्रज सुंदरि पहराईयाँ । जनगोविंद जानि जिय अपने मनोरंक निधिपाईयाँ ॥४॥

★ राग सारंग ★ ढाढ़िन नाचै रंग भरी । ब्रजरानीकी कूखिसिरानी सब सुख फलन फरी ॥१॥ गृहगृहतें गोपी जुरि आईं देखनकों कौतिक री । होत बधाई मंगल गावति देत दान सगरी ॥२॥ तब जसुमति सुंदरि पहराई हरखित मोद

भरी। हँसि बोली यों कहत महरिसों देखन लाल अरी ॥३॥ तब जसुमति लै लाल दिखायौ शोभा सिंधु भरी। पद्मनाभ सहचरी छवि निरखत वारति सर्बसुरी ॥४॥

★ राग सारंग ★ डाढि कहत सकल व्रजनारि। तुम्हारौ सुत चिरंजीव हो रानी बाँधी सुखकी पारी ॥१॥ जादिनते तुमरे यह प्रगट भये सबन मन चाय। फूले गोप ग्वाल अति डोलत फिरी फिरी रस गुन गाय ॥२॥ नैंकहु रह्यौ न जात भवन में और कछु न सोय। श्रीविठ्ठल प्रानन के प्यारे गिरिधर राखे उर लपटाय ॥३॥

★ राग काफी ★ हों व्रजराजकी ढाढ़िन व्रजमें आईहो। रानी यशोमति जायौ पूत सुधामतें धाई हो ॥१॥ सुंदर रूप अनूप सबै मन भाई हो। मानों उर्वशी इन्द्र अखाड़े तें आप पटाई हो ॥२॥ मंदिरमें लई बोल जहाँ नंदरानी हो। शीश नवाय अशीष दै वंश बखानी हो ॥३॥ बाजत ताल मृदंग उपंग सु बाँसरी। अंबुज नैन विशाल सु गावें गाँसुरी ॥४॥ निर्तत ताथेई ताथेई लीयें गति गोंहनी। नंदके मंदिरतें निकसी मानों मोहनी ॥५॥ रीझ जसोमति रानी सबै व्रज सुंदरी। दीये कनक कुंडल हार दई कर सुंदरी ॥६॥ दीनी नई नकबेसर बेंदी जरायकी। दीनी है कंचन जेहार पायल पाँयकी ॥७॥ दई सोंधे भीनी सारी कंचुकी नेहकी। कीनी है माल निहाल सो मालन गेहकी ॥८॥ ढाढ़ी चल्यौ लदि लाद सबै चित चाड़िलो। चिरजीयौ चतुर्भुजदासकौ गिरिधर लाड़िलौ ॥९॥

★ राग मारू ★ कृष्ण जन्म सुनि अपने पतिसों हँसि ढाढ़िन यों बोलीजू। जाउ जाउ तुम नंद नृपतिकें दान कोटरी खोलीजू ॥१॥ तुमकों मिलेगौ वागौ बीड़ा और दक्षिणा भरि झोरा। हमकों लैयो नखशिख गहनों जेहरि सहित एक जोरी ॥२॥ लैयो कंत जुगतिसों लैयो हम चढ़िवेकों डोली। छोटीसी भेंसि सुवन सींगन की टहल करनकों गोली ॥३॥ साज सहित एक घुड़िला लैयो गैया दूध अतोली। सुंदरसौ एक हस्ती लैयो हस्तिन संग अमोली ॥४॥ सिज्या

सहित एक ढलीया लैयो ओर पाननकी ढोली। वीरी करि करि मोहि खवावै लैयो संग तँमोली ॥५॥ जन्म जन्म काहु नहीं जाचों फिरि नहीं मांडों झोली। नंददास नंदरायकौ ढाढ़ी भयौ अजाचिक ढोली ॥६॥

★ राग मारू ★ आज बड़ौ दरबार देख्यो नंदराय तेरौ। भयौ सुख सबै भाँति दुख गयौ मेरै ॥१॥ बजत निशान ढोल ढाढ़िन यश गायौ ॥ सोवैहै कहा उठि जसुमति सुत जायौ ॥२॥ केई देखि लिये जात कीरति तिहारी। गायनके ठाट बाट भीर भई भारी ॥३॥ सुफल फूलन फूली जसुमति रानी। जाके सर्वस दीगे वसुधा अघानी ॥४॥ माँगन जो लिये जात भीख जो तिहारी। तिहूँ लोक सुन्यों जस भयौ अतिभारी ॥५॥ अब लगु नेंम लियें रह्यो बरसानें। लैहों भीख जब पूत व्हैहै महरानें ॥६॥ अबकें महरि मोहि माँगनौ न कीजै लछी दास कहै मोहि दास पदवी दीजै ॥७॥

★ राग मारू ★ नंद वृषभानके हम भाट। उदै भयौ व्रज वल्लभ कुलकौ मेंटि हमारी नाट ॥१॥ इंद्र कुबेर हमारें भाये व्रजके गूजर जाट। इतनो देहु जो मोल लैहुँ हों मथुराकी सब हाट ॥२॥ भूषन बसन अनेक लुटाये और गायनके ठाट। बढ़ौ वंश हरिबंश व्यासको बास चीर के घाट ॥३॥

★ राग मारू ★ श्रीव्रजराजके हम ढाढ़ी। बारेंहीतें गोविंद गुन गावत सेत भई मेरी ढाढ़ी ॥१॥ हम हरिके हरिहें जू हमारें सौने लीक जो काढ़ी। दास गुपाल ही माँगत हैं भक्ति प्रेम सों गाढ़ी ॥२॥

★ राग मारू ★ ढाढ़ि प्रेम मगन व्है नाँचै। ढाढ़िन संग व्रजराज नंद घर अति अद्‌भुत सुख साँचै ॥१॥ पुत्र जन्म मैं सुन्यौ तिहारें सबहिनके सुखदानी। बहुत दिनन की हुती लालसा सुफल आज मैं जानी ॥२॥ धनि धनि घरी मुहूरत पल छिन धन्य दिवस निस मानी। अबहों आयौ देंन असीसा जसुमति कूखि सिरानी ॥३॥ मच्छ कच्छ बारह नृसिंघ परसराम वपु धारचौ। श्रीरघुवीर धी प्रगट व्है बहु बिधि जस विस्तारचौ ॥४॥ अब श्रीकृष्ण प्रगट भये तुम्हारें सब जगके उजियारे। लीला चरित्र विनोद बढ़ावत यह जस सरस तुम्हारे ॥५॥

अब तुम सुनौ पढ़ूँ विरदावलि श्रीवल्लभ कुल जस गाऊँ। परम उदार दयानिधि दाता तिनकौ सुजस सुनाऊँ ॥६॥ गाय बच्छ सब नरनारि के आनंद प्रेम बढाऊँ। तिनकी कृपा अनुग्रह मोपै वारवार शिरनाऊँ ॥७॥ महा वाहु भये कंजनाभजू तिनकौ जस सुनि लीजै। भुज बल चित्रसेन अज मींढ़हू परनाली मन दीजै ॥८॥ तिनके पुत्रन वहू सुखदाई रहत प्रेममें भीजै। महानंद सूर सुरानंदसो नंदनंद सुख कीजै ॥९॥ धरानंद ध्रुवनंद और उपनंद परम उपकारी। अभिनंदन श्रीनंदरायजू वर ऐसी महतारी ॥१०॥ जसुमतिकें श्रीकृष्ण प्रगट भये तिनकी हों वलिहारी। असुर संघारन दुष्टन मारन संतन के सुखकारी ॥११॥ जसुमति कुल्या तुल्या तुंग और पियारी रानी। पाँच गोप की विदित भामती सो मैं प्रगट बखानी ॥१२॥ अविचल यह परिवार तिहारौ भूर भाग्य रजधानी। यह असीस ढाढ़ी ढाढ़िन की वेदन हू में गानी ॥१३॥ सात साखिकौ ढाढ़ी तिहारौ तुम विन ओर न जाँचू। सत संपति तिहारे प्रताप सों गोपन के गुन बाँचूँ ॥१४॥ जव लों वह उच्छाह तिहारे ढाढ़िन संग लै नाँचूँ। अव चाहत गोपाललालकी चरन कमल रज राँचूँ ॥१५॥ रतन जटित हेम टोडर मुदरी पाटंवर पहराये। मणि तुरंग भूषन गज महिषी गायन खरिक वताये ॥१६॥ अन्न धन दीनों व्रजजन जो सबन भयौ मन भायौ। सूरदास व्रजरानी रीझि हँसि अपनी बाँह बसायौ ॥१७॥

★ राग मारू ★ नंद बड़ौ जिजमान हमारौ। तीनलोक में भ्रमि भ्रमि आयौ राखि हमारौ मान ॥१॥ या व्रजमंडल गोप जिते हैं मेरें एक समान। तिनमें अव हौं द्वै घर जाँचों नंदराय वृषभान ॥२॥ काहूकों कुंजर काहूकों मंदिर काहू हेम वहु दान। जव जानूँ तव मोहि देहुगे तबही तो परमान ॥३॥ ढाढ़िनकों मैं संग लै आयौ कुटुंब सहित संतान। तुमारे द्वार पर्‌यौ जस गाऊँ कृष्ण कृष्ण गुन गान ॥४॥ तुमारे बाल गोपालें दरसों और न मनमें आन। रामकृष्ण ढाढ़ी तब उठि करि शोभा कहत बखान ॥५॥

★ राग मारू ★ मैं तेरे घर कौ ढाढ़ी मो सर करे को आनजु। सोई लैहों जो मन

भावै नंदरायपै दानजू ॥१॥ धन्य नंदजूधन्य जसोदा धन्य धन्य जायौ पुतजू । धन्य भूमि व्रजवासी धन्य धन्य आनंद करत अकूत जू ॥२॥ घर घर होत आनंद बधाई जहाँ जहाँ मागध सुतजू । मनिमानिक पाटंबर लै लै देत बने न कुहूतजू ॥३॥ हय गय भवन भंडार दिये सब फेरी भरेसे भातिजू । तबै देत तब ही फिरि देखत संपति घर न समाति जू ॥४॥ ते मोहि मिले जात घर अपने मैं बूझी तब बात जू । हँसि हँसि दौरि मिले अंकनभर हम तुम एकै जात जू ॥५॥ संपति लेहु रत्न ही एकौ अन्न वस्त्र किहि काज जू । जो मैं तुमपै माँगन आयौ सोई देहु नंदराय जू ॥६॥ अपने सुतकौ बदन दिखावहु बड़े महा शिरताज जू । तुम साहिब मैं ढाढी तुम्हारौ प्रभु मेरे व्रजराज जू ॥७॥ कृष्ण बदन दरसन संपति दै सो लै मैं घर जाउँ जू । जो सनकादिक दुर्लभ सो सब तुम्हरे ठाउँ जू ॥८॥ जाकों नेति नेति श्रुति गावें तेई कमल पद ध्याउँ जू । हों तौ तेरो जन्म कौ ढाढ़ी सूरदास मेरौ नाम जू ॥९॥

★ राग मारू ★ याचक जन गोवर्धनधर को वल्लभद्वार वर भावे । रंगभूमि यदुकुलदीपक्को दे असीस पहुँचावे ॥१॥ जमुनापुलिन सुभग वृन्दावन व्रज गोकुल सुधि पाई । गिरि चरनाट सुरसुरिकेतट वल्लभगृहजु बधाई ॥२॥ पुरुषोत्तम जाके गृह प्रगटे ढाढी तासुं कहाऊँ । जो कछु चरित्र किये अरु करिहैं साख वेद मत गाऊँ ॥३॥ मच्छ कच्छ वाराह नृसिंह वामन भृगु रघुराई । हलधर बुद्ध कलंकी रूप धर प्रकटे कृष्ण सुखदाई ॥४॥ नंदरायके भवन प्रकट भये बालकरूप मुरारी । बकी आदि दुष्ट सब मारे पंच अविद्या टारी ॥५॥ महामेघ बरखत गोकुलमें लीला गिरि कर लीने । सुरपति मान उतारी रसिकवर गोप अभयपद दीने ॥६॥ बंसीवट-तट रसिकसिरोमनि मुरली मधुर बजाई । प्रेम पुंज गोकुलकी नारी स्रवन सुनत उठ धाई ॥७॥ जुवति-जुवति प्रति रूप-रूप धर रासरमन रति टानी । मंडल मध्य प्रगटे पुरुषोत्तम संग श्रीराधारानी ॥८॥ वृन्दावन रससुखकी परमित शेष रुद्र नहि जाने । बानी ब्रह्मा पार नहीं पावे कविकुल कहा बखाने ॥९॥ बोल अक्रूर कंसयों भाष्यो काज हमारो कीजे । रामकृष्ण

पोहोंचाय मधुपुरी बोल यहाँ लों लीजे ॥१०॥ सुफलकसुत सुन हरख भयो अति प्रेमसहित व्रज आयो । हरि हलधर ठाडे गोकुल में दरस परस सुख पायो ॥११॥ ज्यों दीपकसों दीपक जोरे भक्ति हेतु विचास्यौ । संकर्षणसंग आय मधुपुरी प्रथम रजक सठ मास्यौ ॥१२॥ तोस्यौ धनुष कुवलिया मास्यौ रंगभूमि चल आये । दसविध रूप धस्यौ पुरुषोत्तम नाना भाँत दिखाये ॥१३॥ मारे मल्ल भोजवंस मर्‌घ्यौ कंस केस गहि मास्यौ । मात पिताको आनन्द दीनो सब विधि ताप निवस्यौ ॥१४॥ चरन परस वसुदेव देवकी उग्रसेन नृप कीनो । यादव वंस उद्योत कियो है पांडव सुध जु लीनो ॥१५॥ दुर्योधन की सभा द्रौपदी अंबर हरत उबारी । असरन सरन दिखाय बिरुद जग करुनासिंधु मुरारी ॥१६॥ जरासंधकी सेना वध कर पुरी द्वारिका वासी । सोरह सहस्र एक सौ आठें रानी भोग विलासी ॥१७॥ पवनजतें मागध मरवायो नृप बंधनतें छोरे । राजा सकल बंदतें छूटे चरन परस कर जोरे ॥१८॥ राजसूय जग्न कराय चैद्य हत्यो जोतिथान पोहोंचायो । अवभृथस्नान कराय युधिष्ठिर कीर्ति बहु जग छायो ॥१९॥ बिनु स्रम कौरवसेन संहारी अर्जुनको यस दीनो । ब्रह्मअस्त्रतें जरत परीक्षित राख दयानिधि लीनो ॥२०॥ सतयुग त्रेता द्वापर सुरहित वसुधा भार उतास्यौ । कलियुग जीव अनाथ जानके गिरिधर द्विजवपु धास्यौ ॥२१॥ श्रीविट्ठलनाथ प्रकट पुरुषोत्तम भक्तनकों सुखदायक । कर्मधर्म थापेंगे भुव पर व्रजपति गोकुलनायक ॥२२॥ श्रुतिपथ् प्रकट करेंगे श्रीमुख मायामत सब खंडे । निज स्वरूपकी सेवा करके अर्थ भागवत मंडे ॥२३॥ प्रेमलक्षणा दे दासन को भजनानंद बतावे । नाम देय सिर परस कमलकर अनेक जीव सुख पावे ॥२४॥ सात पुत्र व्हैहैं हरि समसर सकल ब्रह्म यदुराई । वल्लभनाथ तिहारे सुतकी कीर्ति बहु जग छाई ॥२५॥ सुन सुतको लछमननंदन ढाढी निकट बुलायो ॥ कंचनथार भरे मुक्ताफल भक्ति वसन पहरायो ॥२९॥ मनवांछित फल बहुविध दीनो कियो अजाची ढाढी । मानिकचंद बलि बलि उदारता प्रीति निरंतर बाढी ॥२७॥

★ राग मारू ★ चलरे जोगी नंद भवनमें जसोमति तोय बुलावे। लटकत लटकत शंकर आये मनमें मोद बढावे ॥१॥ नंद भवनमें आयो जोगी राइ लोन कर लीनो ॥ वार फेर लालाके उपर हाथ सीसपें दीनों ॥२॥ व्यथा भई सब दूर वदनकी किलकि उठे नंदलाला ॥ खुसी भई नंदजीकी रानी दीनी मोतियन माला ॥३॥ रहुरे जोगी नंदभवनमें व्रजमें बासो कीजे ॥ जबजब मेरो लाला रोवे तबतब दरसन दीजे ॥४॥ तुम तो जोगी परम मनोहर तुमको वेद बखाने॥ वूढो बाबु नाम हमारो सूर श्याम मोय जाने ॥५॥

★ राग विलावल ★ जायौ जसुमति लाल अब मन भामतौ भयौ ॥धृ.॥ करि सिंगार ढाढ़ी और ढाढ़ीन श्रीव्रजपति गृह आये। वरनों कहा सदन की शोभा देखत नैन सिराये ॥१॥ रतन जटित बनी कनक अटारी तिन पर कलस बिराजे। फरहरात ध्वजा सुरंग सोहने अद्भुत शोभा साजे ॥२॥ बंदनवार फवी मोतिनकी पचरंग चित्र बनाये। जित देखियत तितही छबि बरखत आनंद हियें हुलसाये ॥३॥ गोप वधू गावत मंगल गृह मोद भरी एक गाये। मोद भरे अरु तरुन बिरध सब गाम गामतें आये ॥४॥ भीर भई न समात गलिन में जात न निकसन पावै। नवल लालपै करि नोंछावरि देखत नैन सिरावै ॥५॥ बैठे नंद सभा शोभा भरि तहाँ ढाढ़ी मन भायौ। गोप वंश भूपति भये जितने तिनकौ सुजस सुनायौ ॥६॥ कनिक वसन कंचन के भूषन श्रीव्रजपति पहराये। गैया दई गिनती नहीं जिनकी ठाठ चहूँ दिश छाये ॥७॥ दशहजार मन गेहुँन के उत्तम सो ढेखता बताये। श्रीउपनंद दिये कुंडल बरतेहू रतन जटित सुहाये ॥८॥ श्री अभिनंद दई मोतिन की माला अति छबिवारी। धरानंद दयौ सरस दुसाला सुरभी सहस दुधारी ॥९॥ श्रीध्रूनंदकी धुधुकी दीनी लग्यौ अमौलिक हीरा। महानंद दियौ रथ सुवरनो और सुहायौ चीरा ॥१०॥ दीने सुनंदन सहस्र वृषभ द्वै और बागौ पहरायौ। दई सुनंद रतन की कंठी सुजस चहुँ दिसि छायौ ॥११॥ नँदनँद दई अमोलिक माला मोल कह्यौ नहीं जाई। श्रीवृषभान ठाट गोधन के सहसक दिये वताई ॥१२॥ मनमुख नाम नाना

मोहन कौ आध लाख धन दीनौ । मामा जसवंत यशोधर यशधर धन दै पूरौ कीनो ॥१३॥ श्रीजसुमति ढाढ़िन पहराई सारी सरस सुहाई । नखशिखलों भूषन कंचनके मोतिन माँग भराई ॥१४॥ पटला नाम लालकी नानी तिनसारी जरतारी । दीनी सरस पचलरी माला मोतिनकी छवि भारी ॥१५॥ नेमा और सुरेमा लालकी मामी अति सुखदाई । तिन दीयौ हार सरस मोतिनकौ पहरत अति छबि छाई ॥१६॥ सानंदा आनंदा फूली तिन सब भूषन दीने । बड़ी माय रोहिनी सलोनी वेश दई रँग भीने ॥१७॥ जसदेवी जसरूपा दोऊ मौसी परम सुहाई । तिन दीनी अति सुरँग चूनरी अँगिया अति मन भाई ॥१८॥ कीरति दये रतन भूषण मनि गज मोतिन की माला । और कहाँ लगि बरनि सकै को देत भई ब्रजबाला ॥१९॥ फूली अँग न समाति है ढाढ़िन अरु ढाढ़ी मन फूल्यौ। लटकि लटकि दोऊ नाचन लागे आनँद तन मन भूल्यौ ॥२०॥ गोपी गोप भये प्रमुदित चित घर घर बजत बधाई । कृष्णदास गिरिधरन जन्म यह प्रेम मगन मन गाई ॥२१॥

★ राग बिलावल ★ कीरतीजुकी ढाढ़िनि जसुमति जूपै आई । सुनी द्वार ठाड़ी तब भीतर भवन बुलाई ॥१॥ ढाढ़िन दई असीस चिरजीयौ कुँवर कन्हाई । सादर ते नँदरानी कीनी बहुत बड़ाई ॥२॥ दिये बसन मनि माणिक मुक्ता दाम सुहाई । रतन जटित की पहोंची बाँधी निज कर सौं जाई ॥३॥ दुलरी तिलरी चौकी सरस ढाढ़नि पहिराई । किये मनोरथ पूरन जो मन चिंतत आई ॥४॥ हँसि बोली तब ढाढ़नि दान मान बहु पाई । जसुमति तुम बहु दान करतहौ रंक न राई ॥५॥ सुनहु महरि एक बात कहतहों सुखद सुहाई। मेरी महरिकें कन्या ह्वैहै जो सुंदर सुखदाई ॥६॥ तेरे पूतके संजोग सगाई हों करोंगी बनाई । चली मुदित मन ढाढ़नि किशोरीदास शिर नाई ॥७॥

★ राग बिलावल ★ श्रीव्रजराजकें हो आनंद मंगल भीर । देस देसके जाचक आये पढ़त बिरद आभीर ॥ध्रु.॥ एक ढाढ़ी सारो पाली । बोलन सीखई मानो आली । खेचरी चरुवा जस गायौ । उन लियौ है आपन मन भायौ ॥१॥

एक मैना मोद बढ़ावै । जसुमति की कूख मल्हावै । वे नंदराय भवन भावें । वे दान बोहोत विधि पावैं ॥२॥ एक सूवा हाथ पढ़ायौ । जसुमति हों सुजस सुनायौ । वह नंदराय मन भायौ । सुक कंचन चोंचु मढ़ायौ ॥३॥ एक मोर नचावत आये । उन कुहुकि कुहुकि जस गाये । वे व्रजपति निकट बुलाये । वे दान बोहोत बिधि पाये ॥४॥ एक तुरंग नचावत आये । गोपनकों सुजस सुनाये । वे नंद गोप मन भाये । मणिमाला तिनहिं दिवाये । एक गज चढ़ि ढाढ़ि आये । वे नाचत अति मनभाये । वे वेस अनुपमा पाये । नख शिखलों पहिराये ॥६॥ एक मृगछौना गृही आन्यौ । नखशिखलों छविसों बान्यौ । वह नंद चरन पर लोटें । सबगोपनके मनमोटें ॥७॥ एक कटिजरकसी पट बांधे । बनचर धरि लायौ काँधे । वह लै बलाय तृन तोरें । सब गोपनके मन मोरें ॥८॥ एक हंस नचावत आये । वे ढाढ़ी परम सुहाये । वे हँसिकैं निकट बुलाये । गजमोति तिनहिं चुगाये ॥९॥ एक नाचत तंबक तंबे । डग धाई धरत पग लंबे । वे नंदराय मन भाये । करटोडर तिनहिं दिवाये ॥१०॥ एक नट विद्या बहु खेलें । गरें डारि भुजा भुज मेलें । वे नंदराय मन भाये । गजहस्ती तिनहिं दिवाये ॥११॥ एक बरसानेतें आये । वे ढाढ़ी परम सुहाये । चिरजीबहु लालकी मौसी वे देत दान बहु होंसी ॥१२॥ जिन यह जसगाय सुनायौ । जाके मनमें यह आयौ । यह किसोरीदास मन भायौ । वृंदावन वास बसायौ ॥१३॥

★ राग देश ★ बेटी भई भान कें अरु नंद के फरजंद । हाँजी वाहवा हाँजी वाहवा । किरतकों कन्या भई जसोदाकें कान्ह ।हाँजी.॥१॥ मिटे दुखद्वंद्व भयौ व्रजकें आनंद ।हाँजी.। हरद दही दूध घृत रंगे सब ग्वाल ।हाँजी.॥२॥ हमतौ ढाढ़ी व्रजके तुम व्रजके सिरदार ।हाँजी.। आये नंदराय दान देत लाय लाय ।हाँजी.॥३॥ नंदराय भानराय जीयौ महाराज ।हाँजी ढाढ़ी! मांझ जनम जनमजाचुँ व्रजराज ।हाँजी.॥४॥

★ राग देश ★ ढाढ़नियाँ मचल रही रे मोय नंद घर लै चलरी । पुत्र भयौ सब

जगनें जान्यौ तेंने मोसों क्यों न कहीरे । मोय मिलै नख सिखलों गहनौ लाऊँ तो बात सहीरे । जरदौजीके वस्त्र मिलेंगे फरिया चोली एइरे । कृष्ण कृपा बिन को या जगमें जिन् मेरी बाँह गहीरे ॥५॥

★ राग ईमन ★ ढाढ़नि नाचे अरु गावै लै लै नाम गोप सबनके हरखि असीस सुनावै ॥१॥ आनँद मगनभई संग ढाढ़नि झाँझनि झमका मचावै । लियें समाज रंग उपजावै ढाढ़ी हुरक बजावै ॥२॥ ये दोऊ गावें अतिमन भावें आनँद उर न समाई । बड़े गोप उपनंद नंदजू दीनी रहस बधाई ॥३॥ कंचन मनी पाटंबर अंबर ढाढ़ी कों पहिरावै । अगनित गोधन ठाट द्विजनकों घर घर बाँटि लुटावै ॥४॥ मनिमाला पौहोंची बाजूबंध हरखि हरखि पहिरावै । श्रीनँदरानी सब सुख सानी ढाढ़नीकों पहिरावै ॥५॥ आवौ मंगल गावौ बधाई कहत जसोदा रानी । ढाढ़ी ढाढ़नी दोऊ गुन आगर गोप बंसकी मानी ॥६॥ नंदराय विनति सुनौ मेरी मोहि अपनौ करि लीजै । अपने लालकी रहसि बधाई बलीदास कों दीजै ॥७॥

★ राग विहाग ★ बेटी भई भान हांजी नंदके फरजंद ॥ हांजी वाहवा जी वाहवा । किरतको कन्या भई जसोदाके कान्ह हांजी ॥१॥ मिटे दुःख द्वंद्व भयो व्रजके आनंद हांजी । हरद दही दूध घृत रंगे सब ग्वाल हांजी ॥२॥ हम तो ढाढ़ी व्रजके तुम व्रजके सिरदार हांजी । आये नंदराय दान देत लाय लाय हांजी ॥३॥ नंदराय भानराय जीयो महाराज हांजी । ढांढ़िमांझ जनम जनम जाचुं व्रजराज हांजी ॥४॥

दसोंधी के पद

★ राग सारंग ★ चौकतें उठिकें नँदरानीनें ढोटा पलना माँझ सुवायौ । पहलें डोरि लई जसुमति कर थोरे थोरे बैठि झूलायौ ॥१॥ झगुली पीत कुलह पहराई तासों लटकन गूँथि बनायौ । नैन आँजिकें दियो दिठौना अरु पाँयन नूपुर पहरायौ ॥२॥ फिरि फिरि निरखि निरखि सुंदर मुख डारनि राईलोंन उतारी । श्रीविट्ठल गिरिधरनलालके मंगल गावति सब व्रजनारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ यमुना पूजन आज चली नँदरानी जू रुचिर सिंगार कराये । सब कोऊ लेति बलाय महरि की बाहर निकसी ढोटा जाये ॥१॥ बाजन बजत संग मिलि गावति झुंडन सब बनि ठनि व्रजनारी । हँसिहँसि कहत सुनो रानी जसुमति नित आनँद किये गिरिधारी ॥२॥ पूजा करि यशोमति यमुनाकी पकवानन के डला लुटाये । पाँइन लागि उलटि घर आई गोद उठाय लिये सुत प्याये ॥३॥ आछी हरद सुरँग कुँकुम कोरेन साथिये फेरि धराये । श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल की तिल चामरी बाँटि सुख पाये ॥४॥

★ राग सारंग ★ दोऊ ढोटा और नंदरानी बड़े चौक बैठे व्रजराज । बाजे बजत सिंघ द्वारे पै मंगल होत चौगुनौ आज ॥१॥ छिरकत खरिक भरे गायन के सौने रूपे सींग मढ़ाय । पढ़ि पढ़ि वेद असीस देत द्विज सुत चिरजीवौ जसुमति माय ॥२॥ फिरि फिरि ग्वाल गोप पहराये अरु पहराई सब व्रजनारी । आरती करि हुलसी जसुमति मन आभूषण सब दये उतारी ॥३॥ सर्वसु वारि देत नौछावरि दश दिनके मेरे लाल कहाये श्रीविट्ठलगिरिधरनरायनें अति सुंदर दोऊ नाम धराये ॥४॥

★ राग सारंग ★ मांडे द्वार हरद रोरीसों लागत परम सुहाये । वंदनवार साथिये कोरेन आछे चित्र बनाये ॥१॥ गलिन गलिनमें यह कौतूहल कहत कहा निधिपाये । निधरक भये सकल व्रजवासी अब निज गोप कहाये ॥२॥ अतिरस उमगि भरे नरनारी नंद भवन फिरि आये । श्रीविट्ठलगिरिधरन सबन मिलि लै लै गोद खिलाये ॥३॥

मासदिनके चौक के पद

★ राग सारंग ★ मासदिनाकौ चौक आज नँदरानी बैठी ढोटा लियें । हाथ पाँइ माँडे रोरीसों पीरे अक्षत माथें दियें ॥१॥ नँदराय और मात यशोदा रहसि कहत येही दिन आयौ । इन आँखिनसौं हमें विधाता लालकौ तीसरौ चौक दिखायौ ॥२॥ फूलि फूलिकें सब व्रजनारिन आछे मंगल गाये । अपने अपने घरके

द्वारें सब मिलि बाजे फेरि बजाये ॥३॥ रहसि कहत सबै दुहु वन बहु विधि हमरे अभिलाष पूजाये । श्रीविट्ठलगिरिधर दोऊके तुम मैया ये बाप कहाये ॥४॥

★ राग सारंग ★ आनंदराय गृह गावति खेलति आवति हैं व्रजनारी । नये नये आभूषन अंग पहरे अरु तन उत्तम सारी ॥१॥ बैठी जुरी नंदगृह देत परस्पर गारी । मेवा बाँटि करत नौछावर गोपवधू निज भारी ॥२॥ तुमरे ढोटा पर नँदरानी हम सगरी बलिहारी । सब सुख दीने प्रगट श्रीविट्ठल नंद कुँवर गिरिधारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ सुवरन कलश ध्वजा पौरिनपै आछी भाँति सँभारे । हरद दही रोरीतें छिरके सब गोपिनके द्वारे ॥१॥ भीर रहत नरनारिन की गृह गावत गीत बधाये । काहू नहीं सुहात कछू अब ललन भामते पाये ॥२॥ आनंदमें बीतत सगरौ दिन इन ढोटाके जाये । श्रीविट्ठलगिरिधरन प्रगटिके बोहोत बड़ाई गाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ तेल भरे भरे केश सोंधें अंग भरे स्वच्छ सारी । ऊर्मित कुंभ भरे उर दोउ तँबोल भरे मुख चुचकारी ॥१॥ जसुमतिके अंक त्रिभुवन मंडन गोद लियें चुखावति भारी । हिरदें नैन दोउ वाद लग्यौहे दूरी न करै दोऊन अंचल बिडारी । पीढ़ा बैठि पाऊँ धरि नीचें तहाँ टाड़ी सनमुख सुकुमारी । देखत सूर भयौ अति शीतल गति न करै अंतर मति हारी ॥३॥

करवट के पद

★ राग रामकली ★ करवट लई प्रथम नँदनंदन । ताकों महरि महोत्सव मानत भवन लिपायौ चंदन ॥१॥ बोलीं सकल घोषकी नारी तिनकौ कियौ बंदन । मंगल गीत गवावत हरखत हँसत कछू मुख मंदन ॥२॥ यह विधि भई घड़ी द्वै चारिक तब कुँवर उठि जागे । भूलि गई संभ्रममें सुतकों कछु एक रोंमन लागे ॥३॥ दई लात गिरि गयौ शकट धँसि तब ही सबै उठि दौरे । विस्मय भये विलोकत नैनन भले से कछु बौरे ॥४॥ लिये उठाय कुँवर व्रजरानी रहसि

कंठ लपटाई । प्रेम बिबस सब आपुन सँभारत परमानंद बलि जाई ॥५॥

नामकरन के पद

★ राग रामकली ★ जहाँ गगन गति गर्ग कह्यो । यह बालिक अवतार पुरुष है कृष्ण नाम आनंद लह्यौ ॥१॥ द्रोण धरा वसु परम तपोधन पुत्र नाम निरभय करी । ते तुम नंद यशोदा दोउ वर माँग्यौ सुत देहु हरी ॥२॥ कहै नँदराय सबनके आगें सकल मनोरथ पूरन करे । परमानंददासकौ ठाकुर गोकुल की आपदा हरे ॥३॥

★ राग रामकली ★ नंदगृह आयो गर्ग विधि जानी । रामकृष्णके नाम करन हित यदुकुल के सनमानी ॥१॥ गजमोतिनके चौक पुराये नामकरन विधि ठानी । मंगल गीत गावत यशोमति बोलत अमृत बानी ॥२॥ प्रथमही सुनों बड़े छोटा के नाम राम बलदेव । हलधर और नाम संकर्षण कोऊ न जाने भेव ॥३॥ अब यह नाम तुम्हारे सुतके सुनो चित्त दै नंद । कृष्ण नाम नारायण केशव है हरि परमानंद ॥४॥ पद्मनाभ माधो मधुसूदन वासुदेव भगवान । और अनंत नाम इनके हैं कहों कहाँ लों आन ॥५॥ नंदसुवन त्रिभुवन के ठाकुर तिनके नाम धराये । परमानँद प्रभु अखिल लोकपति गोप वेष धरि आये ॥६॥

★ राग रामकली ★ देत गज बाजि व्रजराज बिराजत गोपनके सिरताज । देश देशते खट दरसन आवत मन इच्छित फल पावत कीरति अपंरपार पहुँचे चढ़ि दान जहाज ॥१॥ सुरभि तिल पर्वत अर्ब खर्च कंचन मनि देत सहज सुत हितके काज ॥ नारायनरहि स्यामदासकें प्रभुकौ नामकरन करवावत नँद मुदित मन बँधी [illegible] ॥२॥

★ राग रामकली ★ सुनौ हो जसोदा आज कहूँ ते गोकुल में एक पंडित आयौ। अपने सुतकौ हाथ दिखावौ सो वह कहै जो विधि निरमायौ ॥१॥ तुरत ही जन पठयौ देखनकों आनि बुलाय दियौ अरघासन । पाँय पखारि पूँजि अँजुली लै

तब द्विजपै माँग्यौ अनुशासन ॥२॥ मुख पखारि काजर टिकुली दै कंठन सों हरि कंठ लगायौ । सुंदर तात मात कनियाँ लै विप्र चरन बंदन करवायौ ॥३॥ दै असीस कर धरि कर देख्यौ सुनि बिशालनैनी सुतके गुन । लोचन चिह्न होइ ये श्रीपति उदर दाम पावन शुभ बंदन ॥४॥ हस्त सूत पग दूत बहुत गुन भुव मंडल या सम नहीं कोऊ । परमानंद करी नौछावरि हरखे नँद जसोदा दोऊ॥५॥

★ राग रामकली ★ अब डरकौनको रे भैया । गर्ग बचन गोकुलमें पैठे हमारे मीत कन्हैया ॥१॥ कहत ग्वाल जसुमतिके आगें है त्रिभुवन कौ रैया । तोर्‍यौ शकट पूतना मारी को कहि सकै बगैया ॥२॥ नाचौ गावौ कारे बधाई सुखन चरावौ गैया । परमानंददासको ठाकुर सब प्रकार सुख दैया ॥३॥

★ राग टोडी ★ देत गजदान आज व्रजराज बिराजत गोपनके सिरताज ॥ देशदेश तें खट दरशन आवत मन ईच्छा फल पावत किरत समुद्रपार पहोंची चढ दान जहाज ॥१॥ सुरभी तील पर्वत अर्व खर्व दीने सो सब सुतहित काज ॥ हरिनारायन स्यामदासके प्रभुको नाम करन करवावत महर मुदित मन बंधीहें धर्मकी पाज ॥२॥

कान छेदन के पद

★ राग सारंग ★ आयौ कर्णविध दिन नीकौ । गुरकी भेली हाथ निवाई कियौ रोचन कौ टीकौ ॥१॥ गुरु शशि नक्षत्र बार बल पहुँच्यौ दिन मनि अति सुखदाई । सौने कंठ भूषन पहराये हाथ सुहारी पाई ॥१॥ विप्रन दान मान बहु दीनौ पूजा करी गुरुदेवा । कृष्णदासकों यह वर दीजे पद पंकजकी सेवा ॥३॥

★ राग सारंग ★ गोपालके वेध कर्णकौ कीजै । गुरुवल तिथि बल नक्षत्र बार बल शुभ घरी बिचार लीजै ॥१॥ गणिक निपुण द्वै चारि बैठिकें मतौ बिचार्‍यौ नीकौ । मुहूरत जामें दोष रहित सुखसागर है जीकौ ॥२॥ दियौ मनोरथ सब सुखदाता चीते मनोरथ पाये । नारी सीमंतनी गीत गवाये दिये भूषण मन माये ॥३॥ जसुमति माय गोद लै बैठी लाल देखि मन हरखे । शुची माता

के गोद बैठिकें मूँदि श्रवन मन करखे ॥४॥ कनिक सूची लै श्रवन कों दीनी बेधत बार न लागी । बाल रुदन जब करन लग्यौ रोहिनी मात लै भागी ॥५॥ चुचकारत चुंबत चाँपत हिय लेहुँ बलैयाँ तेरी । देत दान नँदराय विप्रनकों कहे परमानँद हेरी ॥

★ राग सारंग ★ सूची पढ़ि दीनी द्विज वर देवा । जाते पीर न होई कर्णकों हम करिहें तव सेवा ॥१॥ कहत यशोदा द्विज वर देवा तुव मन भायौ कहिये । गोकुल के प्रतिपालन लाइक नंद गोपकें रहियै ॥२॥ एसौ सुख अपने दृग देखों सकल संपदा बाढ़ी । यातें कहा अधिक चहियत है अष्ट महासिधि ठाड़ी ॥३॥ चिरजीयौ यह नँदलाल तेरौ द्विज वर बोलें बानी । नंदराय यश जुग जुग बाढ़ौ परमानंद बखानी ॥४॥

★ राग सारंग ★ सुतके कान छेदत नँदरानी । सूची देखत भाजि चले हरि बहोरि पकरिकें आनी ॥१॥ छेद कर्ण सबहिन पहरायौ मनमें अति हरखानी । हँसि दीनौ तब व्रजपति प्रभुकी सुनि सुनि तोतरि बानी ॥२॥

★ राग सारंग ★ कुँवरकौ वर्णबेध करि लीनौ । जाति कुटुंब पाटंबर पहरौ जिन जो माँग्यौ सो दीनौ ॥१॥ अन्नदान गो दान कर इमि धन जो जाकौ अधिकारी। देत आनँद हरख अपने कों हरुवौ को भारी ॥२॥ गोकुलवासी सब सुख रासी पायौ चीत्यौ मनकौ । कृष्णदास पायौ मन भायौ गुन गोपाल के धनकौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ कान्हकौ कर्ण छेदन हाथ सुहारी भेली गुरकी । विधि बिहँसत हँसत हेरि हेरि जसुमतिकें धकधकी उरकी ॥१॥ रोचन भरि लै देत सूची श्रवन निकट अति ही चातुरकी । कंचनके द्वै दुर मँगाय लिये कहा कहों छेदन आतुरकी ॥२॥ लोचन भरि भरि दोऊ माताके कान छेदन देखत जिय मुरकी। रोवत देख जननी अकुलानी लियौ तुरत नउवाँकौ भुरकी ॥३॥ हँसत नँद युवती सब विहँसीं झुमक चलीं सब भीतर ढुरकी । सूरदास नंद करत बधाई अति आनंद बाला व्रजपुरकी ॥४॥

अन्न प्राशन के पद

★ राग सारंग ★ आज कान्ह करि है अन्न प्रासन । मनि कंचनके थार भराये भाँति भाँतिके बासन ॥१॥ नंदघरनी व्रज बधू बुलाई जे सब अपनी पाँतिन। कोऊ जौनार कोऊ करै घृत पके खटरस के वहु भाँतिन ॥२॥ बोहोत प्रकार किये वहु बिंजन अनेक बरन मिष्टान । अति उज्ज्वल कोमल अति सुंदर अति अद्‌भुत पकवान ॥३॥ जसुमति नंदहि बोलि कह्यौ तब महर बुलावौ जाति। आपु गये सब गोपनके घर लै आये सब ज्ञाति ॥४॥ आदर करि बैठाय सबनकों भीतर गये नँदराय । जसुमति उबटि न्हवाय कान्हकों पट भूषन पहराय ॥५॥ बारबार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत बलाई । तनकसी झगुली माला मोतिन कर चूरा दुहुँ पाई ॥६॥ और जात सुत मुख जुठरायौ नंद बैठाये गोद । महरि बुलाई बैठारी मंडली आनँद करत विनोद ॥७॥ कनिक थार भरि खीर धरी लै तापर मधु घृत नाई । नंद लै लै हरि मुख जुठरावत नारि उठीं सब गाई ॥८॥ खटरस के परकार जहाँ लगि लै लै अधर छुवावत । विश्वभर जगदीश जगत गुरु परसन मुख करवावत ॥९॥ तनक तनक जल अधर पौंछिकें जसुमतिपै पहोंचाये। हरखित युवति सब लै लै मुख चूमि चूमि उर लाये ॥१०॥ महरि गोप सबही मिलि बैठे पनवारे परसाये । भोजन करत अधिक रुचि उपजावै जो जिहिं जिहिं मन भाये ॥११॥ यह विधि सुख बिलसत व्रजबासी धनि गोकुल नरनारी । नंदकुँवरकी या छबि ऊपर सूरदास बलिहारी ॥१२॥

★ राग सारंग ★ अन्नप्रासन दिन नंदलालकौ करत यशोदा माय । ब्राह्मण देव पूजि कुलदेवी बोहोत दक्षना पाय ॥१॥ कुटुंब जिमाय पाटंबर दीने भवन आपुने आय । मागध भाट सूत समभाने सबहिन हरख बढ़ाय ॥२॥ जो जिहिं जाँच्यौ सो तिन पायौ नंदराय बड़ दानी । भक्त हेत प्रगटे जग जीवन परमानंद गुन गानी ॥३॥

★ राग सारंग ★ यह मेरे लालकौ अन्नप्रासन । भोजन दक्षना बोहोत द्विजनकों देहू मणि मय आसन ॥१॥ पायस भरि हर पल्लव लै हो सब गुरजन अनुशासन।

परमानंद अभिलाख यशोदा बेगि बढ़े खटमासन ॥२॥

★ राग सारंग ★ सुदिन सवारौ शोधिकें लालजू भोजन कीजै। कुलदेवता मनाई हरखसों यह मानि मन लीजे ॥१॥ ब्राह्मण भोजन और दक्षना अति आदरसों दीजै। आशीर्वाद देत सबै मिल मन इच्छित फल लीजै ॥२॥ यह बाढ़ौ बेलि लाल कड़ेंते लोचन पुट अमृत रस पीजे। परमानंद कहत नँदरानी देखि देखि मुख जीजै ॥३॥

मृतिका भक्षण के पद

★ राग रामकली ★ मोहन तें माटी क्यों खाई। ठाड़े ग्वाल कहत सब बालिक जे तेरे समुदाई ॥१॥ मुकरि गये मैं सुनी न देखी झूठेंई आनि बनाई। दै प्रतीति पसारि वदन तब सब बसुधा दरसाई ॥२॥ मगन भई जसुमति मुख चितवत ऐसी बात उपजाई। सूरदास उर लाय लालकों लोंन उतारत राई ॥३॥

★ राग रामकली ★ उगलौ प्यारे बाल गोपाल माँटी। बार बार अनरुचि उपजावत जसुमति हाथ लिये साँटी ॥१॥ महतारीकौ कह्यौ न मानत कपट चतुरई ठाटी। बदन उघारी दिखायौ अपनौ नाटककी परपाटी ॥२॥ बड़ी बार भई लोचन मूँदे भरम जवनिका फाटी। सूरदास नँदरानी थकित भई कहत न मीठी खाटी ॥३॥

★ राग रामकली ★ देखौ गोपालजूकी लीला ठाटी। सूर ब्रह्मादिक अचरज है हे जसुमति हाथ लिये रजु साँटी ॥१॥ ये सब ग्वाल प्रगट कहत हैं श्याम मनोहर खाई माँटी। बदन उघार भीतर देख्यों त्रिभुवन रूप वैराटी ॥२॥ केशवके गुन वेद बखाने शेष सहस मुख साटी लाटी। लख्यौ न जाय अंत अंतरगति बुधि न प्रवेश कठिन यह घाटी ॥३॥ जन्म कर्म गुन श्यामके बखानत समुझ न परै गूढ़ परपाटी। जाके शरन गये भय नाँहीं सो सिंधु परमानंद दाटी ॥४॥

★ राग रामकली ★ तें माटी क्यों खाई मेरे मोंहन। ठाड़े कहत गोप बालिक सब जैहें तेरे गोंहन ॥१॥ मुकरि गये मैं कछु न देखी झूठेंई आनि लगाई।

दै प्रतीति पसार बदन तब सब बसुधा दरसाई ॥२॥ चक्रत भई जसुमति जिय डरपी मन माया उपजाई । सूरदास प्रभु बाल केलि रस म्हों आई पीराई ॥३॥

ऊखल के पद

★ राग बिलावल ★ निगम साखि देखौ गोकुल हरि । जाकों दूरि दरस योग यज्ञ कियें बाँध्यौ जसोदा ऊखल सों धरि ॥१॥ चुटकी दै दै ग्वालि नचावत नाचत कृष्ण बाललीला करि । जाके भय भ्रमत पवन रवि शशि जल करें टहल लटुकी डर ॥२॥ क्षीर समुद्र शयन संतत जाकों माँगत रोय पतुखियादै भरि । सूरदास प्रभु गुन के गाहक यह रस गाय गये अनेक तरि ॥३॥

★ राग बिलावल ★ जसोदा तेरौ कठिन हियौरी माई । तनक दधि के कारनें तू बाँधे ऊखल ॥१॥ जे मूरति जल थल में व्यापक सुपनें न देत दिखाई । ते मूरति तें अपने अँगना चुटकी दै दै नचाई ॥२॥ जे मूरति देवन मुनि दुर्लभ निगम नेति करि गाई । ताहीते तू गर्व भुलानी घर बैठें निधि पाई ॥३॥ बारंबार सजल दल लोचन चितये कुंवर कन्हाई । कहा कहूँ जो छुड़ावत ही हों तें मोहि सोंह दिवाई ॥४॥ सूर पालक असुरन उर सालक त्रिभुवन देत भुलाई। सूरदास प्रभु सब बिधि लायक हितसों कछु न बस्याई ॥५॥

★ राग बिलावल ★ गोविंद बारबार मुख जोवै । कमलनैंन हरि हिलकिन रोवत बंधन छोड़ि यह सोवै ॥१॥ जो तेरौ सुत खरौई अचगरौ अपनी कूखि कौ जायौ । कहा भयौ जो घरकौ लरिका चोरी माखन खायौ ॥२॥ नई मटुकिया दह्यौ जमायौ देव न पूजन पायौ । तिहिं घर देव पितर काहेके जिहि घर कान्हर आयौ ॥३॥ जाकौ नाम कुठार धारहे यमकी फाँसी काटै । सो हरि बाँधे प्रेम जेबरी जननी साँट लै डाटै ॥४॥ परमानंददासकौ ठाकुर करत भक्त मन भाये। देखि दुखि ये सुत कुबेरके लालजू आप बँधाये ॥५॥

★ राग बिलावल ★ कबके बाँधे ऊखल श्याम । कमल नैन बाहिर ही राखे तू बैठी सुखधाम ॥१॥ है निर्दय दया तोहि नाँही लागि रही गृह काम । देखि

क्षुधाते मुख कुम्हलानों अति कोमल तन श्याम ॥२॥ छाँड़ौ बेगि बड़ी बिरियाँ भई बीति गये युग याम। तेरे भयसों निकट न आवें बोलि सकै नहीं राम ॥३॥ जन कारन भुज आप बंधाये बचन किये हँसि ताम। ताही दिनतें प्रगट सूर प्रभु दामोदरसौ नाम ॥४॥

★ राग बिलावल ★ चित दै चितै तनुज मुख ओर। सकुचत शीत भयौ जलरुह तुव कर लकुट निरखि शशि भोर ॥१॥ सुंदर ललित श्रवत अँसुवन अति अरुन चपल लोचन की कोर। डारत मानों गंडु सुधा भर विधु मंडलतें उभय चकोर ॥२॥ अब्जनाल सम मृदुल युगल भुज ऊखल बाँधे दाम कठोर। मानों भुजंग भीत बँबीसों अरुझि रहे कंचुकी गर जोर ॥३॥ अनेक रत्न मनि मुक्ता हीरा वारों सुत पर प्रान अकोर। सूरदास प्रभु सुखद बचन सुनि लजित कहे तब माखन चोर ॥४॥

★ राग बिलावल ★ कहो तौ माखन लाऊँ घरते। जाके काज लकुटिया लीनी डारत नाँहिन करते ॥१॥ देखि यशोदा बदन कमल की शोभा बाढ़ी डरते। ज्यों जलसुत शशि समै सँकुच निश प्रफुलित नाँहिन सरते ॥२॥ कोमल गात उलूखल उकसित निकसत गिरा नगरते। सूरदास धीरज धरि गोविंद उठउ न धरनी परते ॥३॥

★ राग बिलावल ★ यशोदा माई यह न बूझिये काम। कमलनैन की भुजा दूखि हैं बाँधे ऊखल दाम ॥१॥ पुत्रहू ते प्रीतम नहीं कोऊ कुल दीपक मनि धाम ॥ देखियत कमल बदन कुम्हलानौ तू निर्मोही बाम ॥२॥ हरि पर वारि डारि सब तन मन गोरस अरु सब दाम। तू अपने मंदिरमें बैठी हरि आँगनमें घाम ॥३॥ येही है सब व्रजकी जीवनि सुख पावत लिये नाम। सूरदास प्रभु भक्तन के वश हैं जगके विश्राम ॥४॥

★ राग बिलावल ★ यशोदा तोहि बाँधत क्यों आयौ। कसक्यौ नहीं नेंक मन तेरौ याही कोहू जायौ ॥१॥ शिव विरंचि महिमा नहीं जानत सो तो गाय संग धायौ। तातें तू पहचानत नाँही कौन पुन्य तें पायौ ॥२॥ इतनी कहि उसकारत

वाहिं गोरस हित बल छायौ । कहा भयौ जो घरके लरिका चोरी माखन खायौ ॥३॥ अपने कर करि बंधन छोड़े प्रेम सहित उर लायौ । सूर सुवचन मनोहर कहि कहि अनुज सूल बिसरायौ ॥४॥

★ राग बिलावल ★ काहेकों कलह बाध्यौ दारुन दामरि बाँध्यौ कठिन लकुट करि त्रास्यौ मेरौ भैया । नाँहिं कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधिके कारनें भूलीरी तू मैया ॥१॥ हों न रह्यौरी घर देख तो तेरौ यों अरि फोरतो भाजन सब सुजानत बलैया । सूरदास हित हरि लोचन आये हैं भरि बलिहूकौ बल जाकौ सोहै सुकन्हैया ॥२॥

★ राग विलावल ★ जसुमति रीस करी करी रजु करखे । सुतहि क्रोध देखि माताकौ मनही मन हरखे ॥१॥ उफनत खीर जननी कर व्याकुल इहि विधि भुजा छुड़ायौ । भाजन फोरी दह्यौ सब डास्यौ माखन मुँहि लपटायौ ॥२॥ लै आई जेवरी अब बाँधों गरब जानी न बँधाये । आँगुर द्वै घटि होत सबनिसों पुनि पुनि और मँगाये ॥३॥ नारद श्राप भये यमलार्जुन इनकौ अव जो उधारै । सूरदास प्रभु कहत भक्त हित जन्म जन्म तर धारै ॥४॥

बाललीला के पद

★ राग सूहा ★ आँगन स्याम नचावहीं जसुमति नंदरानी ॥ तारी दै दै गावहीं मधुरे सुरबानी ॥१॥ पाँयन नूपुर बाजहीं कटि किंकिनी कूंजे । नेन्ही नेन्ही एड़ियन अरुनता फली बंब न पूजें ॥२॥ जसुमति गान सुनें श्रवनन तव आपुही गावें । तारी बाजत देखही पुनि तार बजावै ॥३॥ केहरि नख उर पर रूरै सुठि शोभाकारी । मनहूँ श्याम घन मधि में नव शशी उजियारी ॥४॥ गभवारे सीर केसहें बने घूँघरवारे लटकन लटकें भाल पर विधु मधि गनतारें ॥५॥ कठुला कंट चिबुक तरें मुख दसन बिराजें ॥ खंजन बीच शुक आनिकै मनु पस्यौ दुराजें ॥६॥ जसुमति सुत हिं नचावही छबि देखत जियतें ॥ सूरदास प्रभु श्याम कौ सुख टरत न हियतें ॥६॥

★ राग रामकली ★ यशोमति मन अभिलाष करै । कब मेरौ मोहन घटुरुवन रैंगै कब द्वैक पग धरनी धरै ॥१॥ कब दतियाँ द्वै दूधकी देखों कब तोतरे मुख वचन उचरै । कब अरु नंदबबा कहि टेरे कब मैया कहि मोहि ररै ॥२॥ कब मेरौ अंचर गहि मोहन दै दै कहि मोसों झगरै । कबधों तनक तनक कछु खेहै अपने कर लै मुखहि भरै ॥३॥ कब हँसि बात कहैगो मोसों यह सुख सब दुख दूरि करै । श्याम अकेलौ अँगना छाँडिकै आप गई कछु काम घरै ॥४॥ आयौ तृणा अघवाय उड्यौ तब गरजत गगन सहित गहरै । सूरदास सब लोक सुनत ध्वनि जो जहाँ सो तहाँ अति भय भरै ॥५॥

★ राग रामकली ★ रानी तेरे लालसों कहा कहों । जे जे कर्म नैनभरि देखति हों अचंभे रहों ॥१॥ तोर्‍यौ शकट पूतना मारी तृणावर्त बध कीनौ । सात दिवस तेरेई ढोटा एक हाथ गिरि लीनौ ॥२॥ जबते दाम उलूखल बाँधे तरवर तोरि गिराये । कालिंदी जल निर्विष कीनौ गो सुत मृतक जिवाये ॥३॥ है कोऊ यह बड़ो देवता कै ब्रह्मा कै शंभु । परमानंददासकौ ठाकुर तिहुँ लोककौ खंभु ॥४॥

★ राग रामकली ★ बलिबलि चरित्र गोकुल राय । दावानल को पान कीयौ पीबत दूध सिराय ॥१॥ पूतना के प्रान शोषे रहे उर लपटाय । कहत जननी दूध डारत खीजत कछुव न खाय ॥२॥ धर्‍यौ गिरिवर दाहिने कर धरत बाँह पिराय । शकट भंजन धरत कुच युग कठिन लागत पाय ॥३॥ तृणावर्त आकाशतें पटक्यौ हन्यौ मुष्ट फिराय । डरत ललना झूलत पलना खरे देत झुलाय ॥४॥ बकासुर की चोंच फारी सुदिस दृष्टि दिखाय । कीर पिंजरा देत अँगुरी श्याम लेत भजाय ॥५॥ बिना दीपक भवन द्वारें श्याम धरत न पाय। अघासुर मुख पैठि निकस्यो वच्छ बाल छुड़ाय ॥६॥ लिख्यौ द्वारें नागकारौ स्याम देखि डराय । सहस फन पर निर्त कीनों सप्त ताल बजाय ॥७॥ घोषनारी संग मोहन रच्यौ रास बनाय । कहत जननी ब्याह की तब हँसत बदन दुराय॥८॥ यमलार्जुन तोरि तारे हदै प्रेम बढ़ाय । कहत तात प्रकास पल्लव देह देत

दिखाय ॥९॥ वृषभ भंजन हनत केशी हन्यौ पुच्छ फिराय । डरत सखान समेत मोहन देखि ब्याई गाय ॥१०॥ हरे ब्रह्मा बाल बच्छ कृत हेत दोरी माय। बच्छ ग्वाल समूह सब मिलि फिरि व्रज रच्यौ है आय ॥११॥ कहा कहूँ जो एक रसना बुद्धि और उपाय । सूर प्रभु हरि रसिक नागर अंगअंग नित भाय ॥१२॥

★ राग रामकली ★ रुन झुन बजत पग पेंजनी । हरि के तन जगमगत बिच बिच जटित कोटि कमनी ॥१॥ उठत तान तरंग बिच बिच जमी राग रगनी। धरत पग डगमगत आँगन चलत त्रिभुवन धनी ॥२॥ तिलक चारु लिलाट शोभा जात कापै गनी । अमी काज मयंक ऊपर मानों बालक फनी ॥३॥ निरखि बाल विनोद जसुमति होत आनंद घनी । सूर प्रभु पर वारि डारों कोटि मनमथ अनी ॥४॥

★ राग रामकली ★ हों वारी तेरे मुख पर । मेरी दृष्टि जिन लागों माई मसि ब्रिंदु को देहुँ भ्रूषर ॥१॥ सर्वसु मैं पहलें ही दीनौ दतियाँ नान्हीं नान्हीं दू पर। अब कहा नौछावरि करों सूर सुनि ललित त्रिभंगी ऊपर ॥२॥

★ राग रामकली ★ गोपी नाचति गोद लै गोविंद । देखि देखि जसुमति सुख पावत प्रफुलित मुखअरविंद ॥१॥ श्याम गात सरोज आनन शोभित दधि के विंद । कुटिल केश सुदेश मधुकर पीवत मुख मकरंद ॥२॥ चलत घुटुरुवन चपल मोहन हँसत कछु एक मंद । दास गोविंद प्रभु विलोकति होत जिय आनंद ॥३॥

★ राग रामकली ★ सिखवत चलन यशोदा मैया । अरबराय कर पान गहावत डगमगात धरनी परें पैया ॥१॥ कबहुँक बलिकूँ टेरि बुलावत यह आँगन खेलौ दोऊ भैया । कवहुँक कुलदेवता मनावत चिरजीवौ मेरो कुँवर कन्हैया ॥२॥ कवहुँक ठाड़ी बदन निहारत मनमोहन की लेत बलैया ॥ सूरदास प्रभु सब सुखदाता अति आनँद बिलसत नँदरैया ॥३॥

★ राग रामकली ★ हरि अपने आगे कछु गावत । तनक तनक चरनसों नाचत

मनही मनही रिझावति ॥१॥ बांह उठाय काजरी धौरी गैअनि टेर बुलावत । कबहुँक बाबा नंद पुकारत कबहुँक घर ही आवत ॥२॥ माखन तनक लेत कर अपने तनक बदन में नावत । कबहुँ प्रतिबिंब खंभ को लों नीले दिखरावत ॥३॥ देखदेख जसुमति यह लीला हरख आनंद बढ़ावत । सूरश्याम के बालचरित नितही नित देखत भावत ॥४॥

★ राग रामकली ★ खेलत श्याम ग्वालन संग ॥ सुबल हलधर अरु श्रीदामा करत नाना रंग ॥१॥ हाथ तारी देत भाजत सबैं करि करि होड़ ॥ बरजें हलधर श्याम तुम जिनि चोट लागै गोड़ ॥२॥ तब कह्यौ मैं दौरि जानत बहुत बल मो गात । मेरी जोरी है श्रीदामा हाथ मारें जात ॥३॥ जानिकै मैं रह्यो ठाड़ौ कहा छुवत तू मोहि ॥ सूरश्याम खीजत सखा संग मनहि कीनौ कोहि ॥४॥

★ राग रामकली ★ देखौ माई या बालक की बात । बन उपवन सरिता सब मोहे देखत साँवल गात ॥१॥ मारग चलत अनीत करत हरि हटके माखन खात ॥ पीतांबर वह सिरतें ओढ़त अंचर दै मुसकात ॥३॥ तेरीसों कहा कहूँ यशोदा उराहनौ देत लजात ॥ जब हरि आवत तेरे आगें सकुचि तनक व्है जात ॥३॥ कौन कौन गुन कहूँ श्याम के नेंक न कहूँ डरात ॥ सूरदास मुख निरखि यशोदा कहत कहा यह बात ॥४॥

★ राग बिलावल ★ मोहन व्रजकेरौ रतन । एक चरित्र आज मे देख्यौ पूतना पतन ॥१॥ तृणावर्त लै गयौ अकाशें ताही कों धतन । जेजे दुष्ट उपद्रव ठाने तिनहीं कों हतन ॥२॥ सुनिरी यशोदा या मोहनको करि जतन । परमानंददासको जीवन श्याम है सुतन ॥३॥

★ राग बिलावल ★ मनिमय आँगन नंद के खेलत दोऊ भैया । गौर श्याम जोरी बनी बलि कुँवर कन्हैया ॥१॥ नूपुर कंकन किंकनी रुनु झुनु बाजें । मोहि रही व्रज सुंदरी मनसा सुत लाजें ॥२॥ संग जसुमति रोहिनी हित कारन मैया । चुटकी दै दे नचावहीं सुत जानि नन्हैया ॥३॥ नील पीत पट ओढ़नी

देखत मोहि भावै । बाल विनोद आनँदसूँ परमानंद गावै ॥४॥

★ राग बिलावल ★ खेलत मदन सुंदर अंग । युवती जन मन निरखि उपजत विविध भाँति अनंग ॥१॥ पकरि बछरा पूँछ ऐंचत अपनी दिश कर जोर । कबहुँ बच्छ लै भजत हरि कों युवती जनकी ओर ॥२॥ देखि परबस भये प्रीतम भयौ मन आनंद । मनही आकुल भई व्याकुल गई लाज अमंद ॥३॥ कोऊ देखत गहत कोऊ हसत छाँडत गेह । करत भायौ अपने मनकौ प्रगट करि निज नेह ॥४॥ अति अलौकिक बाल लीला क्यौं हूँ जानी न जाई । मुग्धतासौं महारस सुख देत रसिक मिलाई ॥५॥

★ राग बिलावल ★ बाल विनोद आँगनमेंकी डोलनि । मनिमय भूमि सुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥ कठुला कंठ रुचिर केहरि नख व्रजमाल बहु मोलनि । बदन सरोज तिलक गौरोचन लट लटकन मधुप गन टोलनि ॥२॥ लोंनी कर पसरत आननपर कछुक खात कछु लग्यौ कपोलनि। कहिधों सूर कहाँ लगि बरनों धन्य नंदजीवन जग तोलनि ॥३॥

★ राग बिलावल ★ अलबल बोलत बानी तोत री । सुनि सुनि व्रज ललना कहें बलिबलि हिये लाय आनंद होत री ॥१॥ बालिक वचन परत समुझे नहीं हँसि हँसि गाल रसाल छोत री । चतुर नारि चुचकारि चूमि मुख होति अपरिमित रति उदोत री ॥२॥ मनमोहन पल तजें न भावत नहीं चितै सुत सदन कोत री । गोकुल ज्यों खेलत सुख हरिको गोपिनमें रति ओत पोत री ॥३॥

★ राग बिलावल ★ देखत दरपन कहत गोपाल । अरी मैया यह कौन दूसरौ मोहीसौ तेरौ लाल ॥१॥ याहि गोद लै बैठि जिमावे हों न जेंऊँगो आज । हों बाबाकी गोद बैठिहों लै अपनों सब साज ॥२॥ जाय बसूँगो गोपिनके घर खेलूँगो व्रज माँही । चोखूँगो गैया अपनीकों छूवों न तेरी छाँही ॥३॥ जो तू मेरी कही न मानें दरपन हृदें लगाय । मेरें ओर कौन दूसरौ तूही पुत हों माय॥४॥ बालचरित्र रस महामुग्ध सो बरनन करि मन मूढ़ । रसिक प्रीतम सुमिरत निशिवासर अंतर भावनिगूढ़ ॥५॥

★ राग बिलावल ★ देखि प्रतिबिंब गोपाल खिजावै । लै लडुवा मेलत बाके मुख खेलन संग बुलावै ॥१॥ बोलि बोलि उठि चलैरे भैया हट करि करि पकरावै। अपने कंठकौ हार उतारि लै बाके कंठ पहिरावै ॥२॥ मधुर बचन कहि हित करि नीके तोतरे बोल सिखावै । आभूषन सब अपने अँगके लै करि बाहि दिखावै ॥३॥ अरी मैया हो कहा करूँ यह खेलन संग न आवै । मेरी कही न मानें बातें योंही मोहि बिरावै ॥४॥ तू करगहि हठकरि किन याकों मेरे संग पठावै । सुतके बचन सुनत नँदरानी आनँद हिये बढ़ावै ॥५॥ बालकेलि रस महा मुग्धके सबहिनके मन भावै । रसिक प्रीतम सुमिरत निशिवासर गावत अति सुख पावै ॥६॥

★ राग बिलावल ★ दोऊ भैया घुटुरुवन चलत । हरत दुख व्रज भूमि कौ दे मोद दैत्यन दलत ॥१॥ अलक बिथुरे बदन मृगमद तिलक सोहै भाल । दृगन अंजन भौंह बिंदुका अधर रसत रसाल ॥२॥ कंठ बंघना चरन नूपुर किंकनी कलनाद । करन पोहोंची उरसि माला शब्द सुनि अहलाद ॥३॥ देखि जसुमति जन्म अपनों सुफल करि माने । बाललीला भाव हरिके रसिक को जाने ॥४॥

★ राग बिलावल ★ यह तन कमल नैन पर वारों सामलिया मोहि भावैरी । चरन कमलकी रेंनु यशोदा लै लै शीश चढ़ावैरी ॥१॥ लै उछंग मुख निरखन लागी राई लौन उतारै । कौन निरासी दृष्टि लगाई लै लै अंचल झारै ॥२॥ तू मेरो बालक यदुनंदन तोहि विश्वंभर राखै । परमानंददास चिरजीवौ बारबार यों भाखै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ बालदशा गोपालकी सब काहू भावै । जाके भवनमें जात है सो लै गोद खिलावै ॥१॥ श्यामसुंदर मुख निरखिकें अबला सचुपावै । लाल लाल कहि ग्वालिनी हँसि कंठ लगावै ॥२॥ चुटकी दै दै मुदित व्है करताल बजावै । परमानंद प्रभु नाचहीं शिशुताई जनावै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ बाल विनोद गोपाल के देखत मोहि भावें । प्रेम पुलकि आनंदभरी जसुमति गुन गावें ॥१॥ बलि समेत घन सामरो आँगनमें धावै ।

बदन चूमि गोद लियौ सुत जानि खिलावै ॥२॥ शिव विरंचि मुनि देवता जाकौ पार न पावै । सो परमानंद ग्वालकौ हँसि भलौ मनावै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ हरि लीला गावत गोपीजन आनंदमें निशि दिन जाई। बालचरित विचित्र मनोहर कमल नैन व्रज जन सुखदाई ॥१॥ दोहन मथन खंडन गृह लेपन मंडन सुत पति सेवा । चारि याम अवकाश नहीं पल सुमिरत कृष्ण देवदेवा ॥२॥ भवनभवन प्रति दीप बिराजत कर कंकन नूपुर बाजें । परमानंद घोष कौतूहल निरखि भाँति सुरपति जिय लाजें ॥३॥

★ राग बिलावल ★ हौं भोरी मेरौ कान्ह सयानौ । याहीते लाल खीजत ही तुमसों दूधकों गई तोलों माट ढुरानौ ॥१॥ कौन उपाय करौं सुनि सजनी मंदिर में सब दधि बिखरानौ । बोलि लिये सब सखा संगके पीवौरे बाल नंदलाल कमानों ॥२॥ दौरि उठाय लिये आँकों भरि निरखि नैन मोहन मुसिकानौ । कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु माई व्रजजुवतिन के हियौ सिरानों ॥३॥

★ राग बिलावल ★ नाँहिन गोकुल बास हमारौ । बैरी कंस बसत शिर ऊपर नित उठि करै खगारौ ॥१॥ गाम गाम प्रति देश देश प्रति लोक लोक प्रति जानी । यह गोपाल कहाँ लै राखों कहत नंदजू की रानी ॥२॥ शकट पूतना तृणावर्त ते याहि विधाता राख्यौ । कैसें मिटै कह्यौ संतनकौ गर्ग बचन यों भाख्यौ ॥३॥ यद्यपि परब्रह्म अविनाशी महतारी डर मानै । परमानंद प्रीति ऐसी पुनि शुक मुनि व्यास बखानै ॥४॥

★राग बिलावल ★ भावत हरिके बाल विनोद । केशव राम निरखि अति बिहँसत मुदित रोहिनी मात यशोद ॥१॥ आँगन पंक राग तन सोहत चल नूपुर धुनि सुनि मन मोद ॥ परम सनेह बढ़ावत भायन रवकि रवकि बैठत चढ़ि गोद ॥२॥ अतिहि चपल सुखदायक निशदिन रहत केलि रस ओद । परमानंद अंबुज लोचन फिरि फिरि चितवत निजजन कोद ॥३॥

★ राग बिलावल ★ बाल विनोद खरे जिय भावत । मुख प्रतिबिंब पकरिबे कों हरि हुलसि घुटुरुवन धावत ॥१॥ कमलनैन माखनके कारन करि करि सैन

बतावत । शब्द जोरि बोल्यौ चाहत मुख प्रगट बचन नहीं आवत ॥२॥ कोटि ब्रह्मांड खंडकी महिमा शिशुता माँहि दुरावत । परमानंद स्वामी मनमोहन जसुमति प्रीति बढ़ावत ॥३॥

★ राग बिलावल ★ शोभित कर नवनीत लियें । घुटुरुवन चलत रेंनु तन मंडित मुख दधि लेप कियें ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छबि गोरोचनकौ तिलक दियें । लर लटकन मानों मत्त मधुप गन मादिक मधुहि पियें ॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत है सखी रुचिर हियें । धन्य सूर एकौ पल यहि सुख कहा भयौ शत कल्प जियें ॥३॥

★ राग बिलावल ★ दूरि खेलन जिन जाऊ लला मेरे आयो है हाऊ ॥धृ.॥ कुंजन कुंजन गौ चराईं निशदिन यमुना जाऊँ । बैठि पाताल कालीनाग नाथ्यौ तहाँ न देखे हाऊ । मैया कैसे है हाऊ ॥१॥ वामनरूप छल्यौ बलि राजा तीन पेंड वसुधाऊ । बाँधि समुद्र सबै दल लूटे तहाँ न देख्यौ हाऊ ॥२॥ राम रूप व्है रावण मार्यौ दश मस्तक बीस भुजाऊ । सुवरन लंका विघन करी है तहाँ न देखे हाऊ ॥३॥ बालकपन में माटी खाई तीन लोक दिखराई । सूरदास प्रभु अद्‌भुत लीला मोपे बरनी न जाई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ करबलतें हरि हारि परे । नौतन संग नवीन जलद चढ़ि मानों द्वै शशि आनि अरे ॥१॥ तव गिरि कमठ सुरासुर सर्पहिं धरत न मनमें नेंक डरे । तिन भुज भूषण भार परत कर गोपिनके आधार धरे ॥२॥ इंदु बदन मानों मथि काढ़्यो विहँसत मानों प्रकाश करे । सूरदास गोविंद उदधि में निरखत मुख हूतें न टरे ॥३॥

★ राग बिलावल ★ नंदजूके लालन की छबि आछी । पाय पेंजनी रुनुझुनु बाजत चलन पूँछ गहि बाछी ॥१॥ अरुन अधर दधि मुख लपटानौ तन राजत छींट छाछी । परमानंद प्रभु बालिक लीला हँसि चितबत फिरि पाछी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ एक समें सुतकों हुलरावति जसुमति मुदित करत मृदुगानें। बिधुसौ बदन कमलदल लोचन सुंदर श्याम तबै जृंभानें ॥१॥ तव विलोकी

व्याकुल भई जननी तीनहुँ लोक बदन दरसानें । सूरदास प्रभु मंद मंद हँसि तबही महरि माया अरु झाने ॥२॥

★ राग बिलावल ★ बलि बलि जाँऊँ लला इन बोलन की । घूँघरवारी लट लटकें छबि कुंडल लोल कपोलन की ॥१॥ दंत की पंगति कुंदकली अधरामृत बोलन खोलन की । चपला चमकै तन बीजु छटै उर मोतिन माल अमोलनकी ॥२॥ रुनक झुनक पाँय पेंजनी बाजैं चलन चटक इन डोलन की । सूरदास प्रभु करि नौछावरि लटकें द्विभुजा गल मेलन की ॥३॥

★ राग बिलावल ★ सोहत जरूली घूँघरवारी । लट लटकत लिलाट बिंदुली अति सोहै पोहोंची देत करतारी ॥१॥ सोहत कंठ कनक केहरि नख मंद हँसन मोहत खगवारी । राजत कटि किंकिनी और घुंघरू चलत घुटुरुवन ऐसे कान्ह की रामदास बलिहारी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ बलि गई बालचरित्र मुरारि । पाँय पैजनियाँ बजत रुनझुन नचवति नंदकी नारि ॥१॥ कबहुं हरिकों लाय अँगुरियन चलन सिखावत ग्वारि ॥२॥ कबहुँक हृदय लगाय चूँमति मुख बैठी अंचल डारि । कबहुँक हरि तन कोपि चितवत कबहुं दिवावत गारि ॥३॥ कबहुँक अंग भूषण बनावति राईलौन उतारि । सूरदास सुरनर सब मोहे देखि यह अनुहारि ॥४॥

★ राग बिलावल ★ गिरिधर डोलत पाँइन पाँइन । अँगुरी गहें नंदबाबा की घुटुरूवन के चाइन ॥१॥ लटपटाइ पग धरत अटपटे जसुमति लेत बलाइन । कठुला कंठ बाघनख राजत अंग अंग सुखदाइन ॥२॥ यह सुख ब्रह्मादिक कों दुर्लभ जो जीवत संत आइन । सो सुख सूरश्याम कहाँ पैयत जो सुख व्रज की गाइन ॥३॥

★ राग बिलावल ★ मेरो साँवरो कन्हाई माई एको द्वै न जानें । दूध और दावानल दोऊ एकही करिकें मानें ॥१॥ कमल और गोवर्धन लाला दोऊ एक करि लेखे । सूर लीला केती करि गावै देव सपनेहुं नहीं देखे ॥२॥

★ राग बिलावल ★ माधौ जू तनकसौ बदन तनकसे चरन तनक करन पर

तनकसौ माखन । तनकसे अधर तनकसी दतियाँ तनक हँसन हरि लेत सबन मन ॥१॥ तनकसे कपोल तनकसी भृकुटी तनकसे बसन तनकसे आभरन। तनकही तनक सूर प्रभु रिंगत तनक कृपा कीजै राखौ शरन ॥२॥

★ राग बिलावल ★ माधौजू तनकसो बदन सदन शोभाकौ तनक भृकुटी पर तनक दिठौना । तनक लटूरी सोहें मुनिन के मन मोहे मानों कमल ढिंग बैठे अलि छौना ॥१॥ तनकसी रज लागी निरखत बड़भागी कंठ कठुला सोहै नख बघना। नंददास प्रभु यशोदा के आँगन खेलै जाको जस गाय गाय मुनि भये मगना ॥२॥

★ राग बिलावल ★ आनंद प्रेम उमगि जसोदा हरखि गोपाल खिलावै । शिव सनकादिशुकादि ब्रह्मादिक खोजत अंत न पावै ॥१॥ ताहि गोदलै जननी दुलरावति तोतरे बोल बुलावै । कबहूँ कर पल्लव टेकि उठावै फूली अँग न समावै ॥२॥ मोहे सुरनर किन्नर मुनिवर रवि रथ हू न चलावै । मोहिं सब व्रजनारी मनहीमन सूरदास यश गावै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ नंदधाम खेलत हरि डोलत । यशोमति करति रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत ॥१॥ टेरि उठी जसुमति मोहन कहि आवौ चरन चलाई ॥१॥ बैन सुनत माता पहचानी चले घुटुरुवन धाई ॥२॥ लै उठाय अंचल गहि पोंछत सबै धूरि भरी देह । सूरदास जसुमति रज झारत कहाँ भरी यह खेह ॥३॥

★ राग बिलावल ★ खेलत नंद आँगन गोविंद । निरख निरख जसुमति सुख पावत बदन मनोहर चंद ॥१॥ कटि किंकिनी चंद्रमनि की आभा मुक्तावलि बनी माल । परम सुदेश कंठ केहरिनख बिच बिच बज्र प्रबाल ॥२॥ कर पहुँची पायन पनसूरा तनु रंजित रज सीत । घुटुरुवन चलत अजर में बिहरत मुख मंडित नवनीत ॥३॥ सूर विचित्र कान्ह की बानिक बानी कहत न आवै । बालदशा अवलोकि सनक मुनि योग बिरति बिसरावै ॥४॥

★ राग बिलावल ★ धनि जसुमति बडभागिनी लियें कान्ह खिलावै । तनतनक भुज पकरिकें ठाड़े हौन सिखावै ॥१॥ लरखरात गिर परत है चलि घुटुरुवन

धावै । पुनि क्रम क्रम भुज टेक कें पग द्वैक चलावै ॥२॥ अपने पाँयन कवहिं चलै मो देखन धावै । सूरदास जसुमति यह विधिसों देव मनावै ॥३॥

★ राग बिलावल ★ बलिबलि जाँऊँ मधुर सुर गावहु । अबकी बार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाच दिखावहु ॥१॥ तारी देहु आपने करकी परम प्रीति उपजावहु । आन अंत धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावहु ॥२॥ जनि शंका जिय करौ लाल मेरे काहेकों सरमावहु । बाँह उठाय काल्हिकी नाँई धौरी धेंनु बुलावहु ॥३॥ नाचहु नेंकु जाँऊँ बल तेरी मेरी साध पुरावहु । रतनजटित किंकिनी पग नूपुर अपने रंग बजावहु ॥४॥ कनक खंभ प्रतिबिंबत शिशु इक लोंनी ताहि खबावहु । सूरश्याम मेरे उरतें कवहुँक टारें नेंक न भावहु ॥६॥

★ राग बिलावल ★ लेउ लाल मेरे लाल खिलौना । दुरि जिन जाउ बाहिर हाऊ है खेलौ बलि मोहन यह भौना ॥१॥ डरपि आय जननी उर लागे जटित नीलमणि ज्यों मधि सोंना । फेरत हाथ शीश मुख चुंबत हाऊ भाजि गयौ मेरे छौना ॥२॥ अति डर डरे रोम उठि आये काँपत अंग गह्यौ अति मौना । तब जसुमति खिजि नंद अंक भरि परचावत मुख देखि सलौना ॥३॥ पूतना शकट तृणावर्त मारे अद्भुत लीला नंद डिठौना । कृष्णदास इहि विधि व्रज खेलत नित प्रति सुंदर श्याम सलोना ॥४॥

★ राग बिलावल ★ किलकत कान्ह घुटुरुवन आवत । मनिमय कनिक नंदके आँगन मुख प्रतिबिंब पकरवे धावत ॥१॥ कवहूँ निरख हरि आप छाँहकों करसों पकरन चाहत । किलकत हँसत राजत द्वै दँतुली पुनि पुनि तिहिं अवगाहत ॥२॥ कनक भूमि पर कर छाया यह उपमा इक राजत । कर कर प्रति पद प्रति मन बसुधा कमल बैठकी साजत ॥३॥ बाल दशा मुख देख जसोदा पुनि पुनि नंद बुलावत । अँचरातर लै ढाँकि सूरके प्रभुकों दूध पिवावत ॥४॥

★ राग बिलावल ★ आज प्रातहि तुतरात बात कहत बलि कन्हैया । जैसे शुक

पीक बोलतहैं अरसपरस सुनसुन सुखपावत लावत नंद यशोदा मैया ॥१॥ बचन रचन कहत समझ परत नहीं कछु विच विच दाव जीभ कहत मेरी मैया। रीझ रीझ पुलकि पुलकि उर लागत चुंबत मुख बारबार कहत यह लेत पुनि वलैया ॥१॥ बहु विध पकवान पय खीर नीर माखन मधुमेवा मिश्री लै प्यावत मथ घैया। बलबल ब्रजवनिता जहाँ दामोदर हित चित नित हरत लरत भूखन पट नटवर दोऊ भैया ॥३॥

★ राग विलावल ★ जसोमति अपनौ लाल खिलावै प्रेम की कलोलनते लाड़ लड़ावै। उवटि मजन कर सिंगार भृकुटि मसि विंदुका लाय जाहि गावत बेद ताहि चलनौ सिखावै ॥१॥ विश्वभरन शिवकौ शरन जाहि थाँमे गहे हाथ ठुमक ठुमक चलत श्याम नूपुर वजावै। मणिमय आँगन जगमगाय कदली खंभ रहे छाय साँवरी माधुरी मुरतिकी छबि कहत न आवै ॥२॥ बीजना करत गोपीजन पीत झगुली फरहरात मानों निपट नील घनमें दामिनी दुरावै। तैसेंई सोहत सखा संग खेलबेको आनँद रंग कवहुँ हंस चकोर परेवा पकरनको धावै ॥३॥ कबहुँक उछंग लेत कनिया कर राखे कंठ मनिया पुनि उतार मुख निहार भूषण पट बनावै ॥४॥ बाललीलाकौ महासुख ब्रह्मादिक दुर्लभ भूरि भाग्य नंदघरनि विना कौन पावै। रामराय प्रभु गिरिधरन कहा न करत हेत ऐसे गोकुलचंदकों भगवानदास गावै ॥५॥

★ राग विलावल ★ नित प्रति मानति सो दिन देखों। घुटुरुवन चलत पैजनी बाजें जीवन जनम सुफल करि लेखों ॥१॥ रबकि उठाय लई कनियाँ पै बारबार लाल मुख पेखों। द्वारकेस प्रभु नीके लागत पलक ओट जिनि अर्ध निमेखों॥२॥

★ राग विलावल ★ ब्रजकीरीति अनोखीरी माई॥ जो कोऊ नंदभवनमें आवत ताको मनहरलेत कन्हाई ॥१॥ उरबघनां मुख मांखन सोहे तनकी कहाकहूं जो निकाई ॥ घुटुरुवन चलतछांह कोप करत किलकत हँसत खेलत अंगनाई ॥२॥ मातयशोदा लेतबलैया मनमें मोदबढ्यो न समाई ॥ कल्याणके प्रभु यह छबि निरखत पलककी ओटसही नहिं जाई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आजमैं देख्यौ बालविनोद ॥ अपनेसुतही खिलावत रानी मनमें मानत मोद ॥१॥ मनमोहन मांखनमिश्रीदे लै बैठारत गोद ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर मुखचुंबत धन्य धन्य मातयशोदा ॥२॥२॥

★ राग बिलावल ★ ए बसुदेव के दोऊ ढोटा। गौर स्याम तन नील पीत पट कल हंसनि के जोटा ॥ कुंडल एक वाम स्रुति जाकें सो रोहिनी कौ अंसु। उर बनमाल देवकी-नंदन जाहि डरत है कंसु ॥ लै राखे व्रज-सखा नंद गृह बालक-त्रास दुराई। द्वै समान विराट के से लोचन उदित भए हैं आई ॥ काली-दवन पूतना-सोषन लीला-गुननि अगाध। 'परमानँद' प्रभु प्रगट दमन-खलु अभय-करन सुर साधु ॥

★ राग आसावरी ★ हे धन धन जसोदा कौन पुन्य तप किनो ॥ जाके आंगन मध्य रेगन करत गोविन्द गौरज भीने ॥१॥ गोद लिये हुलरावत गावतः सबहीन हीत चीत दिन ॥ नंददास प्रभु निपट निरंजन सोतें अंजनसें कर लीने ॥२॥

★ राग आसावरी ★ आजु गई हों नंदभवनमें कहा कहूँ गृह चैनरी। चहूँ ओर चतुरंग लक्ष्मी कोटिक दुहिये धैनुरी ॥१॥ घूमि रहे जित तित दधि मथना सुनत मेघ धुनि लाजे। बरनों कहा सदनकी शोभा बैकुंठ हूते राजे ॥२॥ बोलि लई नव बधू जानिकें जहाँ खेलत कुँवर कन्हाई ॥ मुख देखत मोहनी गत रूप न बरन्यों जाई ॥३॥ लटकन लटकि रह्यौ भुवि ऊपर रंग रंग मनि गन पोहे। मानों शुक्र शनि भौम एक व्है लाल भाल पर सोहे ॥४॥ गोरोचनकौ तिलक भृकुटी विच काजर बिंदुका लाग्यौ। मानों कमल कौ पिय पराग लै अलिसुत सोयन जाग्यौ ॥५॥ विधु आनन पर दीरघ लोचन नासा लटके मोती। मानों सोम संग करि लीनों जानि आपनौ गोती ॥६॥ सीपजमाल श्याम सुंदरके बघना छवि पावै। मानोहुँ बाल शशि जु नक्षत्र गन उपमा कहत न आवै ॥७॥ शोभा सिंधु अगाधि अंबुनिधि बरनत नाँहि न ओर। जित देखों मन तहीं तहींको भयौ भरेको चोर ॥८॥ केतिक कहों कहा मति मेरी क्यों घेरो जलरास। मोहनलाल गोपालहि बरनत कवि कुल करौ जिन हास ॥९॥ जो मेरी अँखियन

रसना होतीं तो कहतीं रूप बनाय । चिरजीयौ जसुदाकौ नंदन मानदास बलि जाय ॥१०॥

★ राग आसावरी ★ धौरीकौ पय पीजे हो गोपाल जासौं तेरी बैनी बढ़े । सब लरिकनमें सुनि सुंदर सुत तुव शिर अधिक चढ़े ॥१॥ देखि देखि और व्रजबालिक बलि और बच्छ बढ़े ॥ कंस केशी सब बैरिनके उर अनुदिन अनल दढ़े ॥२॥ छिनु अँचवत छिनुहीं छिनु टटोवत ऐसेही जनन रढ़े । सूरदास मुसिकाय यशोदा शिरतें काढ़ी न कढ़े ॥३॥

★ राग आसावरी ★ घुटुरुवन चलत श्याम मनि आँगन मात पिता दोऊ देखत री । कबहुँक किलकिलात मुख हेरत कबहूँ जननी मुख पेख तरी ॥१॥ लटकत लटकत ललित भाल पर काजर बिंदु भ्रुव ऊपर । यह शोभा नयनन देखै जे बढ़हि उपमा तिहुँ भूपर ॥२॥ कबहुँक दौर घुटुरूवनि टेकत गिरत उठत फिरि धावत। इतते नंद बुलाय लेत हैं उतते जननी बुलावत ॥३॥ दंपति हाउ करत आपुस में श्याम खिलौना कीन्हौ । सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोऊ लीन्हौ ॥४॥

★ राग आसावरी ★ अदभुत एक चितै धौं सजनी नंदमहरके आंगन री ॥ सोमैं निरख अपनपो खोयोगई मथनियां माँगन री ॥१॥ बालदशा मुखकमल अवलोकत कछु जननीसों बोलें री ॥ प्रकटत हँसत द्वै दतियां मानो सीपजदुरतदलओलें री ॥२॥ सुंदर भाल तिलक गोरोचनमिल मशिबिंदुका लाग्यो री ॥ मानोमकरंद अचेरुचिसों अलिशावकसोयन जाग्यो री ॥३॥ कुंडललोल कपोलन झलकत मानो दरपनमें झांई री ॥ रही अवलोक विचार चारु छबि पर मित किनहुँन पाई री ॥४॥ मंजुल तारनकी चपलाई चित चतुरानन करखे री ॥ मानों शरासनसमरधरेंकर भ्रोंह चढायशरवरखें री ॥५॥ जलधि थकित जनुकागपोत ज्यों कूलन कबहूँ आयो री ॥ ना जानों किहि अंग मगन मन चाहि रही नहिं पायो री ॥६॥ कहांलों कहों बनायबनाय सखी छबि निरखतहौं वारी री ॥ सूरस्यामके एकरोमपर प्राणकरूँ बलहारी री ॥७॥

★ राग आसावरी ★ जादिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलेगो। तादिन अति आनंद गीनोरी (माइ) रूनक झुनक ब्रज गलिन में डोलेगो ॥१॥ प्रातही खिरक जाय दुहवे को धाय बंधन बछरुवा के चटकदे खोलेगो। परमानंद प्रभु नवल कुंवर मेरो ग्वालन के संग वन में कीलोलेगो ॥२॥

★ राग जेतश्री ★ चलन चाहत पायन गोपाल। लये लगाय अँगुरी नँदरानी सुंदर मूरति श्याम तमाल ॥१॥ डगमगात गिरि परत पोहोमिपर भुज भ्राजत नँदलाल। जनु शिर पर शशि पर शशि जनु आधौमुख झुकत नलिन नमिताल ॥२॥ धूरि धूसर तन नैनन अंजन चलत अटपटी चाल। जन पगधरि उपजत सगरी गति विहरत बाल मराल ॥३॥ लट लटकत अरु चारु चखोड़ा सुठि शोभित भ्रूभाल ॥ सूरदास ऐसौ सुख देख्यौ नहीं कहा जियौ बहु काल ॥४॥

★ राग जेतश्री ★ देखौ दधिसुतमें दधिजात। एक अचंभौ सुनिए सजनी रिपुमें रिपुजु समात ॥१॥ तापर कीर कीर पर पंकज पंकज के द्वै पात। सुंदर बदन बिलोक श्यामकौ चितै नंद मुसिकात ॥२॥ अति अचरज भयौ पशुपालैं फूले अंग न मात। ऐसौ ध्यान धरै जो हरिकौ तिनहिं सूर बलिजात ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ आज गोपाल हमहींकों दैरी। देखों बदन कमल नैनन भरि पुनि तू लाल आपनौ लैरी ॥१॥ अति कोमल कर चारु सरोजें अधर दशन नासा सोहैरी। लटकन शीश कंठ मणि भ्राजत मनमथ कोटि वारनै कैरी ॥२॥ दिवसही निशा बिचारत हों सखी यह सुख कबहुँ न पायौ मैंरी। निगम निधान सनातन बालक भागि बड़े पायौ है तैंरी ॥३॥ ताकौ रूप जगतके लोचन कोटि चंद रवि आलय हैरी। सूरदास बलि जाय ग्वालिनी गोकुलनाथ पूतना बैरी ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ पैंजनी पग मनोहर। चलत श्याम बाजत राजत निरखि विनोद मगन मोहे सुर ॥१॥ अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछें फिरत गहाय अँगुरी कर। मानों धेनु तृणचारि वच्छहित्त प्रेम पुलकि पय श्रवत पयोधर ॥२॥ कुंडल लोल कपोल बिराजत लर लटकन लटुरिया भ्रूपर। सूरदास अवलोकनकौ सुख झलकत बल गोपाल जाके घर ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ माई लैंन देहु जो मेरे लालहि भावे । दधि माखन चौगुनो देहुँगी सुतके लेखें जाकौ जितनौ आवे ॥१॥ पालनें झूलै कुलदेव अराधे जतन जतन करि घुटुरुवन धावे । सरबस ताहि देहुँगी जो मेरे न्हेनरे गोपालें चलन सिखावे ॥२॥ यह अभिप्राय होत दिन दिन प्रति कब मेरौ मोहन धेंनु चरावै। चतुर्भुजदास गिरिधर पिय यह रस निरखि निरखि उर नैन सिरावै ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ अँगुरिया छाँडि अरग थरग । नूपुर बाजत त्यौं त्यौं धरनि धरत पग ॥१॥ कबहुंक यशोदामाई भुजा पसारत हँसि डगमगाइकें उलटि भरत डग । जननी मुदित मन चिते शिशुतन कंठ लगाइ सुंदर श्याम सुभग॥२॥ मृदुवानी तुतरात मांगि नवनीत खात भुजन भाव जैसें जनावत बाल खग । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरके बाल विनोद नंद आनंद मुख देखें ठाड़े डगमग ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ लाल तेरे मुख ऊपर वारी । बलि केशव मेरे नयनन लागे रोग बलाय तुम्हारी ॥१॥ सुंदरता कौ पार न पावत रूप देखि महतारी । उर अंतर आनंद बढावत हँसत देत किलकारी ॥२॥ अल्प दशन तुतरात बोल बिंब तहाँ न जात बिचारी । सूर सिंधुमें बूंद भई मिलि मनसा मगन हमारी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ लाल मैं या छबि ऊपर वारी । बलि गोपाल लगै इन नयनन रोग बलाय तुम्हारी ॥१॥ कुटिल अलक मोहन मुख बिहँसन भ्रकुटी बिकट लिलारी । मनहुँ कमल अलि शावक पंगति उड़त मधुर छवि भारी ॥२॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छबि उपजत अधिकारी । सुखमें सुख औरौ रुचि बाढ़त हँसत देत किलकारी ॥३॥ अल्प दशन कलबल करि बोलत बुध नहीं परत बिचारी । निकसत जोत अधरनके बीच मानों विधिमें बिज्जु उजारी ॥४॥ सुंदरताकौ पार न पावत रूप देख महतारी । सूर सिंधुकी बूंद भई मिलि मति गति दृष्टि हमारी ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ ललना हों वारी तेरे मुख पर । माई मेरे हृदै बिच बिलगे तातें मसि बिंदा धौभूपर ॥१॥ दमकत हैं दूध दतुलियाँ बिहसत मनौ सीपज घर कियौ कमल पर । लघु लघु लट शिर घूँघरवारे लटकन लटकि रह्यौ लिलाट

पर ॥२॥ यह उपमा कापै कहि आवै कछु कहों सकुचत हों जिय डर। नवतन चंद्ररेख मधि राजत सूर गुरु शुक्र उद्योत परस्पर ॥३॥ मैया छबि पर तन मन देवता बारे तनक घुटुरुवहु होत है भूपर। सूर कहा मैं करौं न्यौछावरि अपने लाल ललित लरकन पर ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ आँगन खेलैं नंदके नंदा। यदुकुलकुमुद सुखद चारु चंदा ॥१॥ संग संग बलमोहन सोहै। शशिभूषण सबकौ मनमोहै ॥२॥ तन दुति मोर चंद जिमि झलकै। उमगि उमगि अँगअँग छबि छलकै ॥३॥ कटि किंकिनि पग पेंजनि बाजें। पंकज पाणि पहुँचिया राजें ॥४॥ कठुला कंठ बघनखानिके। नैन सरोज मैन सरसीके ॥५॥ लटकन ललित ललाट लटूरी। दमकत द्वै द्वै दतुलियाँ नूरी ॥६॥ मन हरत मंजु मसिबिंदा। ललित बदन बलि बाल गोविंदा ॥७॥ कुलही चित्र विचित्र झगूली। निरख जसोदा रोहिनी फूली ॥८॥ गहि मन खंभ बिंब ढिंग डोले। कलबल बचन तोतरे बोले ॥९॥ निरखत झुकि झाँकत प्रति बिंबहिं। देत परम सुख पितु अरु अंबहिं ॥१०॥ ब्रजजन निरखत हिय हुलसाने। सूरश्याम महिमा को जाने॥

★ राग धनाश्री ★ हँसत गोपाल नंद के आगें नंद स्वरूप न जानें। निर्गुन ब्रह्म सगुन जे लीला ताहिऽब सुत करि मानें॥ एक समै पूजा के औसर नंद समाधि लगाई। सालिग्राम मेलि मुख महियाँ बैठि रहे अरगाई॥ जब नँद ध्यान बिसर्जन कीनों मूरति आगें नाहीं। कहौ मेरे कान्ह ! देवता कहा भये है विस्मय चितमाँहीं॥ मुख तें काढि लिए जग-जीवन दिये नंद जू के हाथ। 'परमानँद' स्वामी मनमोहन खेल रच्यो ब्रजनाथ॥

★ राग टोडी ★ बालगोपाल शोभित अति खेलत मनिमय अँगना। रुनक झुनक पग नूपुर बाजें मुखरित रव कटि किंकिनी राजें। पोहोंची कर हीरा बिच सोहै फुदना बिराजत घना ॥१॥ लटकन खुनखुना सोहै अलक जरूली लटकन मोहै बालक वृंद सँगना। आसकरन प्रभु मोहन नागर देखि विमोहीं ब्रजकी बाल चितवत चित चोरि लियो मोहन छगन मगना ॥२॥

★ राग टोडी ★ निरंजन अंजन दियें सोहें नंदके आंगन माई । सबके नैन प्रान प्रकासिक ताके ढिंग रच्यौ चखोड़ा छाजे छबि न कही जाई ॥१॥ निगम अगम जाकौं बोलें सो अलबल कल कछू कहत बनाई । नंददास जाकी माया जगत भूल्यौ सो भूल्यौ अपनी परछाँई ॥२॥

★ राग टोडी ★ मो भोरी को मन भोस्यौ है । मन भावन बिन ही गुन मन दोस्यौ है । जुरि जुरि आई ब्रजकी अथाई चितवत ही चीत चोस्यौ है ॥१॥ आये चतुर मोही भौंराबन और न देख अकोस्यौ है । नंददास प्रभु की चतुराई इत जोस्यौ इत तोस्यौ है ॥२॥

★ राग टोडी ★ छोटो सो कन्हैया मुरली मधुर छोटी छोटे छोटे ग्वाल बाल छोटी पाग सिरकी । छोटे छोटे कुंडल कान मुनिन हूके छूटे ध्यान छोटे पट छोटी लट छूटी अलकन की ॥१॥ छोटी सी लकुट हाथ छोटे छोटे बछवा साथ छोटे से कान्हैं देखनि गोपी आई घरनकी । 'नंददास' प्रभु छोटे भेदभाव मोटे मोटे खायो है माखन सो शोभा देखि बदन की ॥२॥

★ राग सारंग ★ सखीरी नँदनँदन देखि । धूरि धूसर जटा जरूली हरि कियौ हर भेख ॥१॥ केहरी के नखन देखत रही सोच बिचारि । बाल शशि मानों भालतें लै उर धस्यौ त्रिपुरारि ॥२॥ नील पाट परोहि मणिगण फनिग धोखेंजाय। खुनखुनाकर लियौ मोहन नाचत डौरु बजाय ॥३॥ जलज माल गोपालके उर कहा कहूँ बनाय । गंग मानों गौरी के डर लई कंठ लगाय ॥४॥ देखि अंग अनंग लज्जित निरखि भयौ भय मान । सूर हिरदें सदा बसियै श्याम शिवकी बान ॥५॥

★ राग सारंग ★ आँगन खेलियै झनक मनक । लरिका यूथ संग मन मोहन बालक ननक ननक ॥१॥ पैयाँ लागों पर घर जावौ छाँडौ खनक खनक । परमानंद कहत नँदरानी बानिक तनक तनक ॥२॥

★ राग सारंग ★ रहीरी ग्वालि जोबन मदमाती । मेरे छगन मगन से लालहिं कित लै उछंग लगावति छाती ॥१॥ खीजततें अबही राखे हैं शोभित न्हानी

न्हानी दूधकी दाँती । खेलनदै जाहु घर पर अपुने काहेकों एतौ इतराती ॥२॥ उठि चली ग्वालि लाल लागे रौंवन तब जसुमति फेरी बहु भाँती । परमानंद प्रीति अंतर गति फिरि आई नैनन मुसिकाती ॥३॥

★ राग सारंग ★ अद्‌भुत तेरी बात कन्हैया । तुम जो तनक गोवर्धन धार्‍यौ एकही हाथ लियौ कैसे भैया ॥१॥ यमुना पैठि गह्यौ पुनि काली रहे सब लोक दिखैया । केशि तृणावर्त तैं मारे और पूतना हनी यदुरैया ॥२॥ बच्छ बाल अघासुर लीला तुमही भये ता ठौर नन्हैया । परमानंद प्रभु बहुतक ऐसी अपनौ मरम कहौ नंद दुहैया ॥३॥

★ राग सारंग ★ जब मेरौ मोहन चलैगो घुटुरुवन तब हौं री करौंगी बधाई । सर्वसु बारी दैहुँगी तिहिं छिनु मैया कहि तुतराई ॥१॥ यशोदाके बचन सुनत केशौ प्रभु जननी प्रीति जानी अधिकाई । नंदसुवन सुख दियौ मातकों अति कृपाल मेरौ नंदललाई ॥२॥

★ राग सारंग ★ ठाड़ी लियें खिलावत कनियाँ । प्रमुदित मन गावत जसोदा हरि लीला मोहनियाँ ॥१॥ काजर तिलक पीत तन झगुली क्वणित पाँइ पैंजनियाँ। हँसुली हेम हमेल बिराजत झर लटकन मनि मनियाँ ॥२॥ हुलरावति हँसि कंठ लगावत प्रीति रीति अति धनियाँ । चुंबत मुख रघुनाथदास बलि बड़भागिन नँदरनियाँ ॥३॥

★ राग सारंग ★ आवौ मेरे छगन मगन । बालगोपाल लेहु बलैयाँ दधि माखन चलेहु आँगन ॥१॥ सिखवत चलन जसोदा मैया अँगुरी लगन । कोमल चरन कहौ कैसें कीनौ शकटभंजन ॥२॥ अरी लै लौनी मैयापै माखन करि गति कान्ह । बालचरित्र रघुनाथदास बलि मुनिमन अटकान ॥

★ राग सारंग ★ हरिहिं जो बालकलीला भावै । माखन दूध दही की चोरी सोई यसोदा गावै ॥१॥ शकटभंजन पूतना सोषी तृणावर्त दलन कीनौ । केशी हतन यमुना उद्धारन भक्तनकों सुख दीनौ ॥२॥ बछरा चरावन मुरली बजावन जमुनाकाछ बिहारी । परमानंद दासकी जीवनि वृंदावन संचारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ ज्यों ज्यों नूपुर बाजें त्यों त्यों धरनी धरें पाँय । बिच बिच मनिमय जरायकें राखे पाट पुहाय ॥१॥ दुलरी कंठ दुकानन दुर हीरा ढिंग बनाई । पीतांबरकौ झगा बनायौ चौकी पीठि रुराई ॥२॥ किलकि किलकि हँसि कंठ कबहूँ डर लागत लपटाय । सुरनर मुनिजन कौतिक भूले हृदै आनंद न समाय ॥३॥ पाछे लागे फिरत मुदित है नंद यशोदा माय । रामदास यह चरन हृदै धरि विमल विमल यश गाय ॥४॥

★ राग सारंग ★ तुमारे लाल रूप पर वारी । मृगमद तिलक कंठ कठुला वलि मुख मुसिकान पियारी ॥१॥ घूँघरवारे वार श्यामके लर लटकत्त गजमोती । देखि स्वरूप नँदनँदनकौ प्रान वारति सब जोती ॥२॥ कर पोंहोंची हँसुली प्यारे मोहन पीत झगुलिया सोहै । परमानंददासकौ ठाकुर देखि ब्रह्म हर मोहै ॥३॥

★ राग सारंग ★ खेलन जान न दैहौं लाल । काल्हि जो दृष्टि लगी मन मोहन दीयौ चखोड़ा गाल ॥१॥ ताही तें नहीं पट पहिरावत नहीं मेलत गलमाल । आसकरन प्रभु जतन करत हूँ मोहन मदन गोपाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ माई मेरौ गोपाल लड़ैतौ । अपनौ काहू छुवन न दैहौं याहीते लोग बड़ैतौ ॥१॥ मेरेंई धन गोरस बहुतेरौ लैन उधार न जाइवौ । राखोंगी कंठ लगाई लालकों पलना माँझ झूलाइवौ ॥२॥ परम विचित्र पाँय पेंजनियाँ चलन घुटुरुवन धाइवौ । परमानंद नंदके आँगन लै लै नाम बुलाइवौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ एकसमें जसुमति सखियनसों बात कहत मुसिकाय । मो देखत कबधों मेरौ लालन भूमि धरेगौ पाँय ॥१॥ पुनि मैया मोसों कब कहि है कुँवर कछू हँसि आय । अरि है दूध दही के कारन तन गोरज लपटाय ॥२॥ खरिक दुहावन मोय जात ही आय मिलेंगे धाय । वह धौं द्यौस होइगौ कबहूँ ललन दुहेंगे गाय ॥३॥ सोंपिहें सुत चरावन गैया सुनि सजनी नँदराय । यह अभिलाष करति जसुमति जिय परमानँद बलि जाय ॥४॥

★ राग सारंग ★ मैयारी तू मोहि बड़ौ कर लैरी । दूध दही घृत माखन मेवा जो माँगों सो देरी ॥१॥ कछु दुराव राखै जिन मोसों जोइ जोइ मोइ रुचैरी ।

रंगभूमि में कंस पछारों कहौ कथा सुखसोंरी ॥२॥ सूरदास स्वामीकी लीला मथुरावास करोंरी । सुंदर श्याम हँसत जननीसों नँदबाबाकी सोंरी ॥३॥

★ राग सारंग ★ तेरौ गोपाल रन-सूरौ । जहि जहि फिरत पचारि सांवरो तहीं परत है पूरौ ॥ वृषभ रूप इक दानव आयो सो छिनु में लै मार्‌यौ । दोऊ हाथ विषान गाढ धरि धरनी माँझ पछार्‌यौ ॥ कहत ग्वाल जसोदा के आगे भलो पूतु तैं जायो ॥ है कोऊ इह बड़ो देवता लहनें गोकुल आयो । चरन कमल-रज बंदत रहिये निसदिन सेवा कीजै ॥ बारंबार दास 'परमानँद' हरि की वलईया लीजै॥

★ राग सारंग ★ कोलाहल जमुना के तीर । कालीनाग कहत हैं नाथ्यो संकरषन के बीर ॥ लागी पुकार सकल व्रजबासी नंद जसोमति संग । उछटत परत सीस कच छूटत रुदे बिरह के दुँद ॥ संकट जाइ भयो इक ठौरे हा हा सबद उचार । 'परमानंददास' कौ ठाकुर जीत्यो नंदकुमार ॥

★ राग सारंग ★ हमारें गोकुल आनँद चानु । दुहियत गांई दूध परिपूरन कीनों कछू पसानु ॥ कहै ग्वाल सब आनंद माते आंनि बन्यो है दानु । कहा करैगो कंस हमारौ जो मथुरा कौ रानु ॥ केसी आदि सकल रिपु मारे मेट्यो तृन कौ घानु । आनंद भयो दास 'परमानंद' गोपी मंगल गानु ॥

★ राग नट ★ कहन लागे मोहन मैया मैया । बाबा बाबा नंदरायसों अरु हलधरसों भैया भैया ॥१॥ छगन मगन मधुसूदन माधौ सब व्रज लेत बलैया। नाचत मोर रहत संग उनके तोतरे बोल बुलैया ॥२॥ दूरि खेलन जिन जाउ मनोहर मारैगी काहूकी गैया । मात यशोदा ठाड़ी टेरै लै लै नाम कन्हैया ॥३॥ सब गोकुलमें आनँद उपज्यौ घरघर होत बधैया । नंदनंदन की या छबि ऊपर परमानंद बलि जैया ॥४॥

★ राग नट ★ शोभित श्याम तन पीत झगुलिया । कुल ही लाल लटकन छबि बघना चलन सिखावत मैया ॥१॥ डगमगात पग धरत मनोहर अति राजत पेंजनिया । जसुमति मन प्रफुलित मन आनंद पुनिपुनि लेत बलैया ॥२॥ किलकि किलकि कर लेत खिलौना प्रेम मगन हुलसैया । अरबराय देखत फिर

पाछें घुटुरुवन चलत हैं धैया ॥३॥ गोपबधू मुख कमल निहारत ललनसबहिं सुख दैया । व्रजलीला ब्रह्मादिक दुर्लभ गावत दास सदैया ॥४॥

★ राग नट ★ दुहूँ कर फोंदना मुख मेलत । रामकृष्ण बैठे गोद जननी की कबहूँक उतरि घुटुरुवन खेलत ॥१॥ चाहि रहत खुनखुना सुनिसुनि हँसि बसुधा पगसों पग टेलत । रामदास प्रभु शिशुताके वश अरबराय खिलौना सँकेलत ॥२॥

★ राग नट ★ दोऊ कर चोंखनी मुख चोंखत । नितप्रति मुदित जसोदा रानी बल मोहन तन पोषत ॥ नंदराइ बड भाग तुम्हारौ बाबा कहि मुख घोषत । 'परमानंददास' कौ ठाकुर प्रान पूतना पल में सोषत ॥

★ राग पूर्वी ★ छोटौसौ कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी छोटे छोटे ग्वालबाल छोटी पाग शिरकी । छोटेसे कुंडल कान मुनिनके छूटे ध्यान छूटे पट छूटी लट छूटी अलकन की ॥१॥ छोटीसी लकुट हाथ छोटे बच्छ लीयें साथ छोटे से बनेरी कान्ह गोपी देखन आईं घर घरकी । नंददास प्रभु छोटे भेदभाव मोटे मोटे खायौ है माखन शोभा देखौ ये बदनकी ॥२॥

★ राग गोरी ★ देखौरी रुनुक झुनुक पेंजनी पग डगमगी चाल लालके त्रिभुवनकी शोभासिंधु लागी डोलै अंगन । पचरंग पीरी पाटकी कोंधनी कटि पट बाँधे कंचन मनी नूपुर धुरि धूसर रत्ननगन ॥१॥ आगें चले जात तब जननी डर पावत हैं डरपि डरपि किलकि किलकि जसुमति उर लागत तन । सूरदास मदनमोहन लीलासागर गुनआगर व्रजनारी सुरनर मुनि मगन ॥२॥

★ राग गोरी ★ क्रीड़त कान्ह कनक आँगन । निज प्रतिबिंब बिलोकी किलकिकें धावत पकरन की परछाँइन ॥१॥ पकरन धावत श्रमित होत तब आवत उलटि लाल तिहिं ठाँइन । सूरदासप्रभु की यह लीला निरखत जसुमति हँसि मुसिकाइन ॥२॥

★ राग गोरी ★ बिमल जस ब्रंदावन के चंदकौ । कहा प्रकाश सौम सूरजकौ सो मेरे गोविंदकौ ॥१॥ कहत यशोदा सखियन आगें वैभव आनँदकंदकौ । खेलत

फिरत गोप बालिक सँग ठाकुर परमानंदकौ ॥२॥

★ राग गोरी ★ अथैयाँ बैठे हैं ब्रजराज। मागध सूत पुरोहित और बड़े सब गोप समाज ॥१॥ रामकृष्ण निकसे मंदिरतें पाछें लागी माज। हँसि मुसक्याय उछंग लिये गोविंद पूरन भये काज ॥२॥

★ राग सारंग ★ तेरी लाल मोहि लागौ बलाय। बालगोपाल छगनुवा मेरे चलो अँगना धाय ॥१॥ लालजू के लटकन मटकन कर पोहोंची नूपुर बाजें पाँय। चुटकी दै दै ग्वाल नचावत मुदित यशोदामाय ॥२॥ आनँदभरी नंदजूकी रानी अँगअँग निरखत भाय। परमानंद नंदनंदनकों राखों उर लपटाय ॥३॥

★ राग सारंग ★ मेरौ माई श्याम मनोहर जीवन। निरख नयन भूलत बदन छबि मधुर हँसन पय पीवन ॥१॥ कुंतल कुटिल मकर कुंडल भुव नयन बिलोकनि बंका। सिंधु सुधातें निकसि नयौ शशि राजित मानों मृगंका ॥२॥ शोभित सुमन मयूर चंद्रिका नील नलिन तनु श्याम। मानहुँ छत्र समेत इन्द्र धनु सुभग मेघ अभिराम ॥३॥ परम कुशल कोविद लीला लखि मुसकनि मन हर लेत। कृपा कटाक्ष कमलकर फेरत सूर जननी सुख देत ॥४॥

★ राग ईमन ★ सोहत पाय पेंजनियाँ नूपुर धुनि बाजत कटि किंकिनी बनी अति सुरंग तनियाँ ॥१॥ कर पोंहोंची भुज बीच बाजूबंद उर बघनां कंठ कौस्तुभ मनियाँ। लर लटकन शिर बेंनी गूँथी कर लकुट रसिक प्रीतमकों लेत धाय कनियाँ ॥२॥

★ राग ईमन ★ चलौ मेरे लाडिले हो पाँयन पग धरौ मनमोहन लैहुँ वलाय ॥१॥ आजकौ दिन सुहावनों बलिजाऊँ लालरे आँगन खेलियै धाय। बारूँगी सर्वसु नारायन विप्रन दैऊँगी गाय ॥२॥

★ राग ईमन ★ छगनमगन वारे कन्हैया नेंकु उर धों आउरे लाल। बनमें खेलन जात लाल ह्वै रहे सब मलिन गात अपने लालकी लैहुँ बलायरे लाल ॥१॥ संगके लरिका सब वनि ठनि आये यों कहेंगे कैसी है तेरी मायरे लाल। यशोदा गहत धाय बैयाँ मोहन करत न्हैयाँ न्हैयाँ नंददास बलिजायरे लाल ॥२॥

★ राग ईमन ★ मेरे छगनमगन खेलौ आँगन जसुमतिके बारे। लटकन लटकत लिलाट धूरि धूसर भरे गात कहत मीठी तोतरी बात कुंतल घूँघरवारे ॥१॥ कंठ कठुला बिराजै केहरिनख हीरा छाजै पाँइन पैंजनी सोहै नंदके दुलारे। धोंधीके प्रभुकी बाललीला अवगति अविनाश क्रीड़ा कहत निगम नेति नेति ब्रह्म वेद हारे ॥२॥

★ राग ईमन ★ बलिबलि जाऊँ छबीले लालकी। धूसर धूरि घुटुरुवन टेकत बोलत बचन रसालकी ॥१॥ कछुक हाथ कछू मुख माखन चितवनि नैनविशालकी। मोतन हँसत नासिका नथुनी कंठबघन बनमालकी ॥२॥ छिटकि रहीं चहूँ दिशा लटुरियाँ लर लटकन सोहै भालकी। सूरदास स्वामी सुखसागर निमिष न तजें व्रज बालकी ॥३॥

★ राग ईमन ★ झनक मनक तनकसे छगनाँ। न्हानी न्हानी सोहै दूधकी दतियाँ किलकि किलकि लागत छतियाँ रज झारत री झपगनाँ ॥१॥ गोद लियें हुलरावै खिलावै कंठ सोहै कनक बघनाँ। सूरदास मदनमोहन संग लागी लागी डोलैलाल घुटुरुवन चलत री अँगनाँ ॥२॥

★ राग ईमन ★ तिहारी बात मोहि भावत लाल। बारबार जसुमतिके भवन में यह सुनत हों आवत लाल ॥१॥ पारपरौसिन अनख करति हैं औरें कछू लगावत लाल। ताकी साखि विधाता जानै जिहिं लालच उठि धावत लाल ॥२॥ दधिकौ मथन और गृह कारज तुम्हारो प्रेम विसरावत लाल। परमानंद प्रभु कुँवर लाड़िले निरखि बदन सचुपावन लाल ॥३॥

★ राग ईमन ★ अब हठ छाँडि देहु रे मेरे बारे कन्हैया। जो माँगौ सो देहों लला रे! माखन दूध मलैया॥ चकई भौंरा पाट के लटकन और मँगाई दैहों फेर कन्हैया। सब लरिकनि के सँग मिलि खेलौ अरु बलदाऊ भैया॥ दोऊ मैया निरखि निरखि कै फुनि फुनि लेति बलैंया। 'परमानँद' प्रभु बालरूप धरि क्रीडत नँद-अँगनैया ॥

★ राग कान्हरो ★ एक रीति प्रीति वश कीने मोहन याही तें व्रजरीति न्यारी।

जाकी माया सब जगत नचावत ताहि नचावत घोषकी नारी ॥१॥ जाकी चरन रज ब्रह्मादिक दुर्लभ सो रज ब्रजवधू बन बगर बुहारी डारी । सूरदास मदनमोहन जिनके हरि नैन प्रान कहा कहूँ बुद्धि अनुसारी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ बल बल जाउं मधुर सुर गावो ॥ अबकी वेर मेरे कुंवर कन्हैया नंद ही नाच दिखावो ॥१॥ हेरी दे बाबा के आगे परम प्रीत उपजावो॥ रतन जटित किंकिणि पग नूपुर अपुने रंग बजायो ॥२॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो ले नवनीत खवायो ॥ परम दयाल सूर के उरतें हरि चरे नहि भावो॥३॥

★ राग कान्हरो ★ आछो नीकी सोहत हसन द्वै द्वै दुधकी दतियां । घुटुरुवन आंगन रिंगन मोहन खेलत आनआन भतियां ॥१॥ लरलटकन मटकन करपोहोंची बोलत तोतरी बतियां । मुख चुंबत रघुनाथदास बलि हसि लगावत छतियां ॥२॥

★ राग केदारो सुमिरौ नंदराज कुमार । नंदआँगन करत रिंगन बदन बिधुरे बार ॥१॥ चरन नूपुर किंकिनी कटि कठुला हार । करन पोंहोंची उरसि बघनाँ तिलक सोहै लिलाट ॥२॥ सुनत फिरके चकृत चित निज किंकिनी झनकार। ठठकि टेरत करत निश्चै हँसत परम उदार ॥३॥ पंक लेपन अंग कीने नचत नैन सुढार । करि बड़ाई गोद जननी लेत मोद अपार ॥४॥ गहत बछरा पूँछ ऐंचत रूप जीत्यौ मार । देखि परवश हँसत गोपी मुग्ध तजत अपार ॥५॥ क्रूरके ढिंग जात खेलन फिरत जननी लार । काज विसरत सबै गृहके विग्रता के भार ॥६॥ बालक संग रासलीला करत ब्रजगृहद्वार । देत आनंद युवतीजनकों पठई गृहगृहचार ॥७॥ करत चोरी भवन प्रति धँसि लेत गोरस सार । बैठि जेंमत निडर पतिलों परोसि राखे थार ॥८॥ देत माखन बनचरनको बाँटि बाँटि अपार । खनत चोंहोटी निपट बालक भजत दै करतार ॥९॥ मायके ढिंग लसत सूधे साधु मनखरारि । गोपी दैन उराहनों सब जुरि आवैं द्वै दस चारि ॥१०॥ सुमिरि कृत संकेत गोपी हँसत झूँठी रार । बारि डारों निरखि शोभा रसिक बारंबार ॥११॥

★ राग बिहाग ★ आँगनमें हरि सोय गयेरी ॥ हरे हरे दोऊ जननी मिलिके सेज सहित तब भवन लहेरी ॥१॥ कहत रोहिणी इन्हें न जगावौ खेलत डोलत हार गयेरी । बारंबार जृंभात साँवरौ बदन देख विस्मित जु भयेरी ॥२॥ कहत नंद ये कछून जानें गायन के सँग श्रमित भयेरी । सूरदास बलराम श्याम तब व्रजरानी सँग पौढ़ रहेरी ॥३॥

शकटासुर वध लीला के पद

★ राग बिलावल ★ नृपति बचन यह सबनि सुनायौ । मुहाँ चही सेनापति कीनौ शकटासुर सुनि गर्व बढ़ायौ ॥१॥ दोऊ करजोरी भयौ तब ठाड़ौ प्रभु आइसु में पाँऊँ । ह्याँते जाय तुरतही मारों कहौ कहौ तौ जीवत लाँऊँ ॥२॥ यह सुन नृपति हरख मन कीनौ तुरतही बीरा दीनौ । बारंबार सूर कहै ताकों आप प्रशंसा कीनौ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ पान लै चल्यौ नृप आनंद किनौ । गयौ शिरनाइकें गर्व बढ़ायकें शकटकौ रूप धरि असुर लीनौ ॥१॥ सुनत घहरानि व्रजलोग चकृत भये कहा आघात धुनि करत आयौ । देखि आकास चहुं पास दसहूं दिशा डर नरनारी तन सुध भूलायौ ॥२॥ आपु गयौ तहिं जहीं प्रभु रहे पालनें करगही अंगुष्ठ चरन चचोरहीं । किलकि किलकि हँसत बाल शोभा लसत जानि तिहिं कसत रिपु आयौ भोरहीं ॥३॥ नेंक पटक्यौ लात शब्द भयौ आघात गिर्‍यौ भहरात शकटा संघार्‍यौ । सूर प्रभु नंदलाल दनुज मार्‍यौ ख्याल मेंटि जंजाल व्रजजन उबार्‍यौ ॥४॥

तृणावर्त लीला के पद

★ राग बिलावल ★ शोभित सुभग नंदजूकी रानी । अति आनंद आंगनमें बैठी गोद खिलावत साँरँगपानी ॥१॥ तृणावर्तकी करी सुरति जिय पठयौ कंस असुर अभिमानी । गरुवे भये वहीं बैठारे सहि न परे जननी अकुलानी ॥२॥ आपुन गई सदन में दौरी कछू एक काज तहाँ लपटानी । भयौ उर महाभयानक गोकुल

सकल प्रलयकौ उदयौ गोपाले जानी ॥३॥ महा दुष्ट लै चल्यौ अकासें बालकृष्ण यहे जिय ठानी । चाँपी ग्रीव हरि प्राण हरे दृगन रंगत चल्यौ अधिकानी ॥४॥ पायल सिला निरखि हरि पर्‍यौ उपर खेलत श्याम सुखानी । व्रज वनिता उपवनमें पाये लये उठाय कंठ लपटानी ॥५॥ लाई गही चूँमत चाहति घर घर सबन बधाई मानी । देत आभूषन वारि वारि सूर सब नारी वारि पीवत पानी ॥६॥

★ राग बिलावल ★ जसुमति मन अभिलाख करै । कब मेरौ लाल घुटरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै ॥१॥ कब द्वै दाँत दूधके देखों कब तुतरे मुख बेन झरै । कब नंद हि बाबा कहि बोलहि कब जननी कहि मोही रैरै ॥२॥ कब मेरौ अँचरा गहि मोहन जोइ सोइ मोसों कही झगरै । कबहुँ तनक तनक कर खैहे अपने करलै मुखहिं भरै ॥३॥ कब हँसि बात कहेंगे मोसों वा छबि देख दुख दूरि हरै । श्याम अकेले आँगन छाँड़े आपु गई कछु काज घरै ॥४॥ या अंतर अँधवाई उठी एक गरजत गगनि सहित घहरै । सूरदास व्रज लोग सुनत धुनि जो जहाँ तहाँ सब अतिहिं डरै ॥५॥

★ राग सुहो ★ अति विपरीत तृणावर्त आयौ । बात चक्र मिस व्रज उपर द्वै नँदपौरीके भीतर धायौ ॥१॥ पौढ़े श्याम अकेले आँगन लेत उड्यौ आकास चढ़ायौ । अँधाधुँध भयो सब गोकुल जो रह्यौ सो तहाँ छिपायौ ॥२॥ जसुमति आई धाई जो देखे श्याम श्याम कही शोर लगायौ । धावहु नँद गुहार लगौ किन तेरौ सुत अँधबाइ उड़ायौ ॥३॥ इहि अंतर आकासतें आवत परवत सम कही सबही बतायौ । मार्‍यौ असुर शिलासों पटक्यौ आपु चढ़े ता उपर भायौ ॥४॥ दौरे नंद जसोदा दौरी तुरतहिं लेतही कंठ लगायौ । सूरदास यह कही जसोदा ना जाँनों बिधिनहिं कहा भायौ ॥५॥

दावानल लीला के पद

★ राग केदारो ★ अबकें राखि लेहु गोपाल । दस दिशतें प्रगट्यौ दावानल उपज्यौ है तिहिंकाल ॥१॥ पटकत वंश कंस तृण चटकत झपट लपट कर

नाल। उड़त अँगार फूल फल पटकत झपटत लपट कराल ॥२॥ धूम धुँध बाढ़ी घर अंबर चमकत उर मुख जाल। हरिन बराह करि पीक सारस जरत जीव बेहाल ॥३॥ तुम जिन डरौ नैन सब मूँदौ हँसि बोले नंदलाल। सूर अनल सब बदन समानौ निरभै किये व्रजलाल ॥४॥

कालीयदमन लीला के पद

★ राग बिलावल ★ अति कोमल तनु धर्‍यौ कन्हाई। गये तहाँ जहाँ काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई ॥१॥ कह्यौ कौनकौ बालक है तू बार बार कहि भाग न जाई। छिनकहिं में जरि भस्म होयगौ जब देखै उठि जागि जृंभाई ॥२॥ उरग नारी की वाणी सुनकें आप हँसे मनमें मुसिकाई। मोकों कंस पठायौ देखन तू याकों अब देहि जगाई ॥३॥ कहा कंस दिखरावत इनकी एक फूँक ही में जरि जाई। पुनि पुनि कहत सूरके प्रभुसों तू अब काहे न जाई पलाई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ उरग लियौ हरिकों लपटाई। गर्व बचन कहि कहि मुख भाखत मोकों नहिं जानत अहिराई ॥१॥ लिये लपेटि चरण तें शिखलों अति यह मोकों करि ढिठाई। चाँपी पूँछ लुकावत अपनी युवतिनको नहिं सकत दिखाई ॥२॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब डारों यह सकुच मिटाई। सूरदास प्रभु तनु विस्तार्‍यौ काली बिकल भयौ तब जाई ॥३॥

★ राग नट ★ आवत उरग नाथ्ये श्याम। नंद यशोदा गोपी गोपनि कहत हैं बलराम ॥१॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवन कुंडल लोल। कटि पीतांबर भेख नटवर निर्त फन प्रति डोल ॥२॥ देव दिव्य दुंदुभी बजावत सुमन ये बरखाई। सूरश्याम बिलोकी व्रज जन मात पिता सुख पाई ॥३॥

चंद्रावलीजी की वधाई के पद

★ राग सारंग ★ चंद्रभानके नव निधि आई। सुखमा कूखि अवतरी कन्या घरघर बजत बधाई ॥१॥ नाम धर्‍यौ चंद्रावलि सुखनिधि कोटिक चंद्र लजाने।

भादों सुदि पाँचें शुभवासर अरुन हृदय रस माने ॥२॥ सुनि वृषभान नंद मन हरखे देखि अनूपम शोभा । कृष्णदास गिरिधर की जोरी देखत रति पति लोभा ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज सखी सुखमा कन्या जाई । भादों सुदि पाँचे शुभ लग्न चंद्रभान गृह आई ॥१॥ नामकरनकों गर्ग पराशर नारदादि सब आये । चंद्रावली नाम सुखसागर कोटिक चंद्र लजाये ॥२॥ सुनि वृषभान नंद मिलि आये कीरति जसोदा आई । मंगल कलश सुवासिन शिरधरि मोतिन चौक पुराई ॥३॥ देत दान और धरत साथिये गोपी सब हरखानी । निगम सार जोरी गिरिधरकी व्रजपतिके मनमानी ॥४॥

★ राग सारंग ★ भादो सुदी पंचमी प्रगट भई सबहिनकी सुखदाई जु । श्री चन्द्रभान गोप गृह निधि सुखमा कूख सुहाई जु ॥१॥ गाम दिठोरा घरन घरन प्रति मोतिन चौक पुराई जु । गोप गोवर्धन भये जु परमसुख सबहिन देत बधाई जु ॥२॥ देत दान विप्र भाटनको माला मुंदरी चीरा जु । 'चत्रभुज' प्रभु भूतल पर गोपराज बल बीरा जु ॥३॥

श्री ललिताजी की बधाई

★ राग सारंग ★ आज सखी सारदा कन्या जाई । भादों सुदि षष्टि है शुभदिन शुभनक्षत्र वर आई ॥१॥ भेरि मृदंग दुंदुभी बाजत नँदकुँवर सुखदाई । गोपीजन प्रफुलित भईं गावत मंगल गीत बधाई ॥२॥ नामकरनकों गर्ग पराशर गौतम वेद पढ़ाई । दीने दान पिता विशोकजू नारद बीन बजाई ॥३॥ आभूषण पाटंबर बहु विध गो भू दान कराई । नंदराय वृषभानराय मिलि विशोकहिं देत बधाई ॥४॥ सकल सुवासिनि धरत साथिये कीरति पँजीरी द्याई । व्रजपतिकी स्वामिनी यह प्रगटी ललिता नाम धराई ॥५॥

श्री बलदाऊजीकी बधाई

(भाद्रपद सुद छठ)

★ राग सारंग ★ बरस गांठ आज फुलत लाल ओर ब्रजराज ॥ बेठी गोद लियें दोऊ ढोटा जसोमति ओर रोहनी माय ॥१॥ बंदनवार और चौक मोतिनके नंदने बाजे हुलस बजाय ॥ पहेले भये सुलछन बल तब अपनी पीठ पर लालन लाय ॥२॥ आगे व्हे आनंद बेठकर ए दोऊ सुत हम पुन्यन पाय ॥३॥ सोने रूपे व्होत बसनले विप्रनकों गो दान दिवाय ॥ लै लै नाम बाबा ढोटनको गाय गाय कें सबन म्हलाय ॥४॥ तिलक करन लाये सब पुरी ओर आरती विविध संवारी ॥ इनको सोहलो इनके वीरको दुनी सुख मानत ब्रजनारी ॥५॥ पहेलेही पहेराये भान सब फिरकर बाल गोपाल पहेराये ॥ अरु पहेराईं सबे ब्रज सुंदरि जेसोही जाही मन भाय ॥६॥ आदर दे नंदरानी कहेत सबनसों ऐसेही मेरें दिनदिन आय ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन लाल पर वाहीके सदा सोहाय ॥७॥

★ राग सारंग ★ अतुलित प्रताप परिपूरन रोहिनीनंदन बिराजे माई सूरना । अति विसाल अरु करन अरुन ऐती नेन कमल मधु घूरना ॥१॥ नील वसन परिधान मत्तगजचाल कंपत तालकुल झूरना । गोविन्द प्रभु ब्रजराज वच्छ मुरझनो गिरिधरनलाल तब धेनुकसुर लायो चूरना ॥२॥

★ राग सारंग ★ मांदल बाज्यौ री ! ब्रजजन कें, प्रगटे श्रीबलराम । रोहिनी-कूंखि प्रगट पुरुषोत्तम ब्रजजन-मन अभिराम ॥ जो जन विनय करत, दुख तिनके काटत हैं तिहि जाम । टेरत कोउ जात तहाँ भाजे, और कछू नहिं काम ॥ स्याम राम को भेद न जानत, करत जुदाई मन में । 'छीत स्वामी' मुख सों कहा वरनों ! आगि लगौ ता तन में ॥

विशाखाजी की बधाई

★ राग सारंग ★ गोदलाल लै मंगल गावति हमरे आँगन आई ॥१॥ भाव भरी पौढ़ी रानीजू नंदराय जगाई । चोंकि परी यह बात श्रवण सुनि गहि भुज राय

उठाई ॥२॥ हम तुम देखें इनकों यह सुख कहा कुलाहल लाई। बहुरि उछंग दिये जसुमतिकी चंद्रावलि सुखदाई ॥३॥ आपुसमें पहिरावत रतनन भूषण चीर सुहाई। श्रीविट्ठलगिरिधरन खिलावत बारत कछु न अघाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ रावल रसिक बेलि नवफूली देखि कहत नहिं आवै। देवभानकें श्रीचंद्रावलि प्रगट भागिन भावै ॥१॥ व्रजकौ भाग्य सुहाग येते सींच सींच विरधावै। आनँदराय घर सुखनिधि सबहिन हुलसि हुलसि बिहँसावै ॥२॥ गिरिधरलाल लिये सँग खेले गिरिधरके मन भावै। रूप अनूप स्वरूप अवधि नितहि व्रजसुंदरि गावै ॥३॥

श्री राधाजी की बधाई के पद

(भाद्रपद सुद ८ आठम)

★ राग देवगंधार ★ जनम बधाई कुँवरि ललीकी। प्रगटी प्रभा अद्भुत सुगंधनी हरि अलि कंजकलीकी ॥१॥ सुमुख समूह सिहात सुनतही यह बिधि बात भलीकी। कीरति रानीकी कल कीरति गावत सुफल फलीकी ॥२॥ बिनु बछरन गैया खेलत शुभ सगुन दशा कुशलीकी। बलिकौ चार सार सोई सजनी दानव दलन दलीकी ॥३॥ रोपत बंदनवार द्वार वर रूपी अवल कदलीकी। रोपति सींक सुवासिन साथिये सिखवनहीं सुनत अलीकी ॥४॥ अगनित सुत अवतार निवारौ को भयौ प्रणत पलीकी। महामोद मूरतिकौ उद्भव लाल अनुज मुशलीकी ॥५॥ भायौ भयौ नँदयशोदाकौ प्रथमही बात चलीकी। भायो भयौ वृषभानगोपको बचन सहित दृढ़ लीकी ॥६॥ कनक थार भरि रतनबारनें आवनि गलीगलीकी। रावल रावरि कुसुमन झरझरें अरु भरि डलाडलीकी ॥७॥ नाचत गोपी गोप ओपसों और निशान धुलीकी। यह भयौ दान अमान मानदै और मर्याद मलीकी ॥८॥ राधानाम कहत ऋषिवर पढ़ि यह थिर निगम थलीकीं। दधिकादौ भादों झर लायौ आटें पंथ पथलीकी ॥९॥ बेगि बधैया गयौ महावन बिदा भई महलीकी। हरि देत अघैहें नाँही अब चढ़ि बनी वलीकी ॥१०॥

★ राग देवगंधार ★ आज रावल में बजत बधाई । ढोल भेरि सहनाई शंख ध्वनि बाजत देत सुहाई ॥१॥ यह देखो वृषभान भवनमें विमल ध्वजा फहराई । दूब लै द्विज आये तुरतही कीरत कन्या जाई ॥२॥ नंद यशोदा तन मन फूले आनँद उर न समाई । मंगल साज लिये व्रज बनिता गावत गीत सुहाई ॥३॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा भादों कीच मचाई । व्यासदास कुँवरि मुख निरखत कुसुमावलि बरखाई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ सुनियत रावल होति बधाई । प्रगट भयी वृषभान नंदनी रसिक जनन सुखदाई ॥१॥ देत दान वृषभान भवन में याचक नवनिधि पाई। पाटंबर मुक्तामणि हीरा नग निरमोल मँगाई ॥२॥ गोपीजन सब मंगल गावत अधिक अधिक बनि आई । कौन पुन्य सुफल तुम कीनों कुँवरि मनोहर जाई ॥३॥ सुरनर मुनिजन प्रेम मुदित भये नंद सुवन मन माई । गोविंददास कहाँलों बरनों श्रुतिसों अधिक सिराई ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ प्रगटी नागरि रूप निधान । देखि देखि बूझत जो परस्पर नहीं त्रिभुवनमें आन ॥१॥ उपमाको जे जे कहियत है ते जु भये निरमान । कुंभनदास लालगिरिधरकी जोरी सहज समान ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ आज बरसानें बजत बधाई । श्रीवृषभानरायजूकी रानी कुँवरी अनूपम जाई ॥१॥ घर घरते सब चलीं बेग दै नाचत गावत धाईं । गोपीन सहित चली नँदरानी नंदीसुरतें आईं ॥२॥ ताल पखावज ढोल दमामा बिच बिच भेरि सुहाई । यह विधिसों नँदरानी पोहोंची मुख निरखत सुख पाई ॥३॥ हरद और दधि छिरकी परस्पर धरनी कीच मचाई । युवती चहूँ दिश करत कुलाहल तनकी सुधि बिसराई ॥४॥ भीर भई जित तिततें रावल अति व्रज शोभा छाई । श्यामदास यह लीला लखिकें गोकुल आनि सुनाई ॥

★ राग देवगंधार ★ आज बरसानें बजत बधाई । प्रकट भई वृषभानगोपकें सबहिंन की सुखदाई ॥१॥ आनँद मगन कहत युवतीजन महरि बधावन आई। बंदीजन मागध याचक गुनी गावत गीत सुहाई ॥२॥ जयजयकार भयौ त्रिभुवनमें

प्रेम बेलि प्रगटाई । सूरदासप्रभुकी यह जीवन जोरी सुभग बनाई ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ श्रीराधाजु कौ जन्म सुन्यौ मेरी माई । साजसिंगार चलीं व्रज सुंदरि घर घर बजत बधाई ॥१॥ अति सुकुमार सखी सुभ लच्छिन कीरति कन्या जाई । परमानंद करी नौछावर घर घर बात लुठाई ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ यह सुख देखो री तुम माई । बरसगांठ वृषभान ललीकी बहोरि कुसलसों आई ॥१॥ आगमके दिन नीके लागत सबहिन मन सचुपाई। धन बडभागी रानी कीरतिके पुण्यपुंज निधि पाई ॥२॥ प्रगटी लीला सकल या व्रजमें आनंद वेली बढाई । 'कुंभनदास' की जीवन राधे जसोमति सुत सुखदाई ॥३॥

★ राग खट ★ श्रीराधिका चरणरज वंदे । पुरुषोत्तम निज हेत प्रगट भई भक्तजनन मन आनंद कंदे ॥१॥ श्री वृषभान सदन बरसाने भ्रमत भंवर पीवत मकरंदे । गौर स्याम तन जोरी प्रगटी व्रजाधीश गावत श्रुति छंदे ॥२॥

★ राग भैरव ★ सखी बरसानो लागत नीको । कहां लौं कहौं या व्रजकी सोभा सब व्रज लागत फीको ॥१॥ कीरति कूख प्रगट भई कन्या भयो भावतो जीको । मंगल गावत सब व्रजनारी करत ललीको टीको ॥२॥ पीत पाटकी चोली पहरे सारी सुरंग रंग ही को । 'व्यास' स्यामकी स्वामिनी प्रगटी बाढ्यो प्रेम मन ही को ॥३॥

★ राग भैरव ★ अति आनंदरस सिंधु अगाधा । भक्ति मारग उद्योत करनको या कारन प्रगटी श्री राधा ॥१॥ राधा नाम सुक हि नहीं पायो नाम लेत मेटी जग बाधा । 'रामदास' प्रभु स्यामसुंदरको रासादिक लीला श्रुति साधा ॥२॥

★ राग रामकली ★ आज जनम दिन राधेकौ है ॥ दूध न्हवाय फुलेल उबटनौ केसर न्हवाय सोहै ॥१॥ केसरी सारी लाल अंतरी अभ्यंतरी राजौ है ॥ आभूषन बहु बिधिके पैहरे काजर नैंन रच्यौ है ॥२॥ सब मिल गोपी मंगल गावत बाजत घोष गज्यौ है । गाम गामतें जाति बुलाई मोतिन चौक पूर्यौ है ॥३॥ जसोमति उठ न्हवाई लालन उत्सवकौ बागौ पहर्यौ है ॥ बल

रोहिनी जसोमति नँद कान्हर आये बलि मोह्यौ है ॥४॥ जाति पाँत सब जेंवन बैठी लाल लाड़िली संग। माथें तिलक कस्यौ कुमकुमकौ अच्छत पीरे रंग ॥५॥ करत आरती ध्यान धस्यौ मन यह जोरी करि देहु। द्वारकेस प्रभु दूल्हा दुलहिनि राधे बड़ो सनेहु ॥६॥

★ राग बिलावल ★ श्रीवृषभानरायजूके आँगन बाजत आज बधाई। भादों सुदी आठें उजियारी आनँद की निधि आई ॥१॥ रसकी रासि रूपकी सीमा अँगअँग सुंदरताई। कोटि मदन वारों मुसिकनपर मुखछबि बरनी न जाई ॥२॥ पूरन सुख पायौ व्रजवासी नैनन निरखि सिराई। कृष्णदास स्वामिनि व्रज प्रगटी श्रीगिरिधर सुखदाई ॥३॥

★ राग विलावल ★ जबतें राधिका भूतल प्रगटी तबतें विधिकौ मान हन्यौ। मेरी तौ यह सृष्टि न होई अब कछु अद्भुत बान बन्यौ ॥१॥ एकरूप एकवैस एकगुन बरन विलक्ष ठन्यौ। कृष्णदास प्रभु श्रीगिरिधरतें केलि कलारस सन्यौ ॥२॥

★ राग बिलावल ★ प्रगटभई वृषभानकें आज। सकल तिमिर त्रिभुवनकौ नास्यौ भवन भानके संतत राज ॥१॥ बंदनवार द्वार पर राजे गान करत मंगल व्रजबाल। चित्रित चौक बने जित तितही नवबिधि रंग सुगंध सुमाल ॥२॥ नाचति गावति वर युवतीजन हरखि हरखि उर बहु किलकात। नवनव यूथ बनी बनिता वर महाप्रेम बोलत मृदुबात ॥३॥ कंचनकुंभ बने शिर ऊपर बीच रुचिर नूतन की डार। दधि मथि हरद तेल घृत छिरकत अवनी पर गोरसके खार ॥४॥ टूटे हार नवल बहु भूषन देत परस्पर प्रमुदित गारि। ताल मृदंग रंग उपजावत मोद विनोद करत सिंगार ॥५॥ महा भीर बनिता सब फूली निरखत मुख वारत तन प्रान। उड़त गुलाल बजावत दुंदुभी धुनि कोलाहल सुनियत नहीं कान ॥६॥ अंस बाहु धरि मुदित गहत पद सुख बरखत अति आनंद तन मन। कबहुँक चरन कमल छबि पेखत कबहुँक करकंज छुअत तन ॥७॥ सहज सदा बपु रहत निरंतर कारन प्रगट रसिक जन हेत। श्रीदामोदर हित नित्य किशोरी युगल बसत वृंदावन खेत ॥८॥

★ राग बिलावल ★ धनिधनि व्रज बरसानों गाम । प्रगटभई जहाँ श्रीराधाजू नाम ॥१॥ जहाँ बसे राजा वृषभान । नंदरायके जीवन प्रान ॥२॥ जाके घर कीरत सी रानी । व्रजवनिताके अति मनमानी ॥३॥ तिनके उदर भई सुकुमारी । सकलकला गुणगण अति भारी ॥४॥ अति आनंद भयौ तिहिं काल । आईं जुरि सब व्रजकी बाल ॥५॥ मंगल कलश विराजत द्वार । गावत कर लै आईं थार ॥६॥ घरघर बंदनवार बंधाई । सब मिलि आनँद करत बधाई ॥७॥ पंच शब्द बाजत हैं आँगन । विप्र आदि आये सब माँगन ॥८॥ देत दान वृषभान उदार । भूषण बसन अनुपम हार ॥९॥ छिरकत दूध दही घृत रोरी । एकते एक महारस बोरी ॥१०॥ जानत नाँहिन भई मन मगन । भूषण बसन सँभार नहीं तन ॥११॥ चिरजीयौ राधा सुकुमारी । जाके दूल्हे श्रीगिरिधारी ॥१२॥ सबै असीस देत मुख देखत । फिरि फिरिकें राधा तन पेखत ॥१३॥ नंद गोप हैं अति बड़भाग । दुलहनि राधासी अनुराग ॥१४॥ यहि बिधि आनँद सरिता बही । कुँवरी कृपाते निजजन लही ॥१५॥ बोहोतभाँति ये लीला गाई । गोविंद तहाँ नौछावरि पाई ॥१६॥

★ राग बिलावल ★ आज बधाई माई वृषभान के दरबार । व्रजजन मिलि मंगल गावें सजि चलीं कंचनथार ॥१॥ ध्वजा पताका कदली रोप्यौ द्वारन बंदनवार। सबही सयानी धरौ साथिये कीरति परम उदार ॥२॥ कंचन रसिक रूप अति राजत मोति लगे सुढार । कमलमुखी प्रफुलित भये मानों दिनकर किरन पसार ॥३॥ कुँवरिहिं देखत अति सुख उपजत बारति मुक्ताहार । गरीबदासकों दई पंजीरी बोलि कुटुंब परिवार ॥४॥

★ राग बिलावल ★ आठें भादों की उजियारी ॥ रावलमें वृषभान गोपकें प्रगटी राधा प्यारी ॥१॥ श्रुति स्वरूप सब संग कर लीने व्रजपति हेत विचारी । दासगोपाल बल्लभजू की स्वामिनी बस कीने गिरिधारी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ प्रगट भई रावल श्री राधा । सुनि धाई व्रजपुरकी वनिता

निरखत सुंदर रूप अगाधा ॥१॥ तब वृषभान दान बहु दीने जाचककी सब पूजी साधा । 'द्वारिकेस' स्वामिनी महिमा मुनिमन ध्यान लगाय समाधा ॥२॥

★ राग आसावरी ★ बरसानेतें दौरि नारि एक नंदभवनमें आईजू । आज सखी मंगलमें मंगल कीरति कन्या जाई ॥१॥ सुनि जसुमति मन हरख भयौ अति बोलिलई व्रजवाला । मुक्ता मणिमाला भूषण वर पठई साज रसाला ॥२॥ चलीं गज गामिनि साधन हाथन कंचन थार सुहाये । कमलनके ऊपर खेलत मानों अगनित चंदजु धाये ॥३॥ डहडहे मुख छबि छाजत राजत लाजित कोटिक मैना । कंजन पर खेलत मानौ खंजन अंजन रंजित नैना ॥४॥ कुंडल मंडित बने अति राजत उपमा अधिक बिराजे । हार सुढार उरनपर सोहत निरखि शची छबि लाजे ॥५॥ गावत गीत करत जगपावन भामिनि मंदिर आई । नंदरायजू के आँगनमें आनँद बजत बधाई ॥६॥ देखि मुदित वृषभान भये अति भेट रुची सों लीनी । गद्गद् कंठ सबन सों बोलत वीथनि पावन कीनी ॥७॥ कीरति ढिंग निरखी सुठि कन्या धन्या अधिक अपारा । कौतिकमें कौतिक रस भीने बरखत शीशन धारा ॥८॥ सब जगधाम धाम पुनि जाकौ शेष धाम जिहि मानें । नंददास सुखकौ सुखसागर प्रगटी है बरसानें ॥९॥

★ राग आसावरी ★ श्रीवृषभान नृपति के आँगन बाजत आज बधाई । कीरति दै रानी सुखसानी सुता सुलच्छिन जाई ॥१॥ शक्ति सबै दासी हैं जाकी सी याहूतें अधिक सुहाई । निरविध नेह अवधि मूरति प्रगटी सब सुखदाई ॥२॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद आनँद उर न समाई । नंददास प्रभु पलना पौढ़े किलकत कुँवर कन्हाई ॥३॥

★ राग आसावरी ★ जन्म लियौ वृषभान गोपकें बैठे सब सिंघद्वाररी । लग्न घरी वलि नक्षत्र साधिकें गुरुजन कियौ विचाररी ॥१॥ कंचन मनि आँगन आगें रहि बोलत द्विजवर बैन । कबहुँक सुधि पावत सुभवनमें पुत्र जनमके चैन ॥२॥ इतने एक सखी आई धायकें जहाँ बैठे वलि ग्वाल । बेगि पुकारि कह्यौ मुख आली प्रगटी सुता लघु बाल ॥३॥ तब हँसि तारीदै गुरुजनकों देख्यौ

जन्म विधान । हमारें कोटि पुत्रकी आशा पूरन करी वृषभान ॥४॥ करभाजन शृंगी गर्गमुनि लग्न नक्षत्र बलि सोध । भये अचरज ग्रह देखि परस्पर कहत सबन प्रति बोध ॥५॥ सुदि भादों शुभ मास अष्टमी अनुराधाके सोध । प्रीति योग बल बालव करण लग्न धनुष वर बोध ॥६॥ प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजाति । नामकरन राधारति रंजन रमारसिक बहु भाँति ॥७॥ सुनि वृषभान सुता जिन मानों ऐसी रमा रति लोल । नाँहिन और सुंदर त्रिभुवनमें श्रीराधा समतोल ॥८॥ नाँहिन सची रमा गिरजा रति रोंम रोंम प्रति ठानें । नौनिधि चारि पदारथकौ फल आयौ सकल ग्रह तानें ॥९॥ जब ब्याहन शुभ योग होयगी शोभा कहत न आवै । दश और चारि लोककौ नायक यह सुता बर पावै ॥१०॥ तब हँसि कह्यौ दुर्वासा बेंनन सुनों श्रुति सकल गुवाल । मेरेही चित आयौ निश्चय नंदमहर घर बाल ॥११॥ वृंदावन रस रास रसिक मणि दंपति संपति माने । संकेत स्थल बिहरत दोऊ सोई सकल यह जाने ॥१२॥ युवती यूथ मधि सुभग शिरोमणि वल्लभ कुल नँदलाल । यह जोरी जग जुगति होइगी राधारमण गोपाल ॥१३॥ शिव विरंची जाकी जूठनि पावें सो ग्रास परस्पर देत । कुंज निकुंज क्रीड़त अद्‌भुत दोऊ निगम अगम रस लेत ॥१४॥ यहि विधि कह्यौ द्विजराज जुगतिसों ग्वाल मंडली जानै । जयजयकार करत सुर लोकन बाजत तूर निसानै ॥१५॥ घर घरतें गोपी सब निकसीं गावत मंगल बाल । पिक बैनी मृगनैनी सुंदरि चलत सुचाल मराल ॥१६॥ जो रस नंदभवन में उमग्यौ तातें दूनौ होत । हय गज धेनु कनक मणि दीनें बंदीजन द्विज बोहोत ॥१७॥ बसन बिचित्र बोहोत पहराये सब शिशु देखन जाँय । मुख अबलोकि कहत चिरजीयौ पुलकि पुलकि सचुपाय ॥१८॥ सुरमुनि नाग धरनि जंगमकों आनँद अति सुख देत । शशि खंजन विद्रुम शुक केहरि तिनकौ छीनि बल लेत ॥१९॥ सूरदास उर बसौ निरंतर राधामाधौ जोरि । यह छबि निरखि निरखि सचुपावै पुनि डारै तृनतोरि ॥२०॥

★ राग आसावरी ★ जुरि चलीं सोहिले भानराय घर नवल प्रेमभर बाला । कंचन

बरन बसन पहिरें तन गावत गीत रसाला ॥१॥ कबरी गुही जुही फुलनसों सेंनी चढ़ी हजारा । चिकुर चंद्रकी राजत गाजत छबिकौ राज दुवारा ॥२॥ गौर छटा दामिनी ज्यों राजत नीलांबर के माँझ । मानों इंदु किरन चहुँ दिसतें उदित भई है साँझ ॥३॥ दुलरी हार हमेल बिजौठा बाजूबँद अति राजे । पोंहोंची गजरा रतन चौकी कर मुँदरी नग छबि छाजे ॥४॥ रतन जटित कंचन के नूपुर सुंदर मृदु पग सोहें । मानों नखचंद्र किरन परकासी त्रिभुवनकौ मन मोहें ॥५॥ गज गामिनी कंचनी अवनी पर चलत छबीली चाल । कंचन थार लसत कर कमलन बारों इंदु रसाल ॥६॥ पोंहोंची श्रीवृषभान भुवनमें आनँद उमग्यौ भारी । नाचत गावत करत कुलाहल प्रेम छके नरनारी ॥७॥ गुननिधि छबिनिधि सुखनिधि राधे कीरत कीरत छाई । हरखत बरखत सुमन देव मुनि देत असीस सोहाई ॥८॥ यहि विधि छबिकी छटा छबीली कापै बरनी जाई । जैसो रूप लाल हित हिय मैं राखी नैनन मांझ समाई ॥९॥

★ राग आसावरी ★ नंदी सुरतें बरसानेमें दूनी बंटत बधाई जू । भये मनोरथ सबके मनके कीरत कन्या जाई जू ॥१॥ परम उदार नंदजूकी रानी हंसुली झगुली लाई जू । बाढ्यो है मोद गोद मैयाकी किलकत कुंवर कन्हाई जू ॥२॥ कीरतिरानी और नंदरानी दोऊ समधन बतराई जू । यह सगाईकी बात चलाई हित अनूप बलि जाई जू ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ बधाई वृषभानकें प्रगटी राधे कुमारी । भादों सुदी अष्टमी रसभरी आई वेगि बिचारी ॥१॥ गृहगृहते बनिता आईं सब भूषन अंग सिंगारी। फूली ललितादिक गावत सब सौभग बदन निहारी ॥२॥ रावलि रँगरे लिसों भींजी भींजे सब नरनारी । भींजे नंद यशोदा दोऊ और सुत गिरिवरधारी ॥३॥ काहू सुधि न परै काहूकी घर वर रहे बिसारी । श्रीविठ्ठलगिरिधर को वैभव देखत बल बलिहारी ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ ये वधाई मन पूजी आस । श्रीवृषभान गोपगृह राधा कीयौ नेह प्रकाश ॥१॥ फूले नरनारी मिलि गावत सबव्रज भयौ हुलास । रावलि

कीरति कूखि सुहाई प्रगट्यौ परम विलास ॥२॥ रूप रंग गुण रसिक छबीली सब सुख निधी निवास । कीनी सुफल अष्टमी दोऊ बरखा भादों मास ॥३॥ चंद्रावलि व्रजमंगल सुंदरि बदन निहारत हास । श्रीविट्ठलगिरिधर की जोरी गोकुल रावल पास ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ भादों सुदी आठें उजियारी । श्रीवृषभानगोपके मंदिर प्रगटी राधा प्यारी ॥१॥ नाचत नारि नवेली छबिसों पैंहरे रँग रँग सारी । घर घर मंगल देखि बरसानें कहत रमा हों वारी ॥२॥ एक आई एक आवति गावति एक साजत सुनि नारी । चंचल कुंडल ललके झलके करन बिराजत थारी ॥३॥ भई बधाई कही न जाई छवि छाई अति भारी । रसभरि खोरि पौरि भई दधि घृत बहि चली उमगि पनारी ॥४॥ कीरति की कुल कीरति जगमें भाग सुहाग दुलारी । दामोदर हित वृंदावनमें बिहरत लाल बिहारी ॥५॥

★ राग धनाश्री ★ बरसानें वृषभान गोपकें आनँद की निधि आईजू । धन्य धन्य कूखि रानी कीरतिकी जिन यह कन्या जाई ॥१॥ इंद्रलोक भुवलोक रसातल देखी सुनी न गाई । सिंधु सुता गिरिसुता सची रति इन समान कोऊ नाँई ॥२॥ आनँद मुदित जसोदा रानी लालकी करों सगाई । प्रभु कल्यान गिरिधर की जोरी बिधिना भली बनाई ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ बरसानें वर सरोवर प्रगट्यौ अद्‌भुत कमल । वृषभान किरन प्रकाश पोष्यौ रहत प्रफुलित सदाई यह सरस सुंदर अमल ॥१॥ सखी चहूँ दिश केसरदल कर्णिका आकार राजत राधिका यश धवल । सूरदास मदनमोहन पिय नव मकरंद हित सेवित सदा अति नलिन अलि ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ घर वृषभानकें हो राजत रंग बधाई । नंदभवन गोपिनके गृह व्रजलोक सकल सुखदाई ॥१॥ कुँवरि प्रगट भई अति सुँदरि रूपरसिक मृगनैंनी। तरुणी तिलक त्रिभुवन की शोभा चंदमुखी पिकबैनी ॥२॥ घरघरते सुनि सुनि सब गोपी ग्वाल मुदित मन आवें । बालक बिरध अरु तरुन घोषजन हँसि हँसि मंगल गावें ॥३॥ एक नाचत एक करत कुतूहल अरस परस मिलि खेलें ।

मुखजु कहत चिरजीयौ लड़ैती पुलकि प्रेम रस झेलें ॥४॥ बंदीजन मागध सूत आँगन जाचक बहु यश भाखें । परमउदार भये कीरतिपति देत कोटी अरु लाखें ॥५॥ सुरभि हेम रतन पट भूषण द्विज जनकों बहुदीनें । जयजयकार भयौ त्रिभुवनमें सबै फिरत रंगभींने ॥६॥ ढोल दमामा भेरि सहनाई ताल पखावज बाजे । आनँद बढ़्यौ अनूपम व्रज में नादहीते भरगाजे ॥७॥ जोरी बनी लालगिरिधर हित यह मन सबै विचारी । श्रीराधा पदपंकज पर जन गोकुल के बलिहारी ॥८॥

★ राग धनाश्री ★ गोकुलराज सदनकी दाई श्री व्रजरानी जू पठाई हो । ए हो कुँवरी मुख देखन आई ॥ बजे इन्द्रगज धुनि सुनि उपजी मनमें आतुरताई जू । तन पाछे मन आगे ऐसे आनंद मांझ बधाई जू ॥१॥ बोली लई वृषभान घरणि आदर दे निकट बिठाई जू । 'जगन्नाथ' स्वामिनी प्रगटी है पाई मैं बहोत बधाई जू ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ आज अति आनंद है बरसाने । वृषभान कुँवरीकी बरसगांठ सुठि सब व्रजजन सरसाने ॥१॥ गांव गांवतें हितु कुटुंबी जे जियमें तरसाने । सुनि आई लाई नौछावर निरख निरख हरसाने ॥२॥ बंदी मागध विप्र गुनिजन गावत मंगल गाने । 'कृष्णदास' इच्छा मन पूजी लेत देत अरसाने ॥३॥

★ राग जेतश्री ★ अरी माई प्रगटी है आनंदकंद ललीजूकौ सोहिलौ ॥धृ.॥ धन्य कूखि कीरतिदे रानी कीनौ कुल परकास । कौतिक अवधि कुमरि यह जाई सुफल कियौ व्रजवास ॥१॥ जग उद्योत मुदित मुख सुंदरि है शोभाकौ धाम। देखी सुनी न ऐसी कन्या अंगअंग अति अभिराम ॥२॥ आज उदय वृषभान भवनकौ निजसुख देखों नैंन । सब सुकृतकी संपत पाई कहत बनैं नहिं बेंन॥३॥ होत कुलाहल गावत मंगल घोष बधायौ आयौ । पुन्य पुंज वृषभान नृपतिकौ देखौ मनकौ भायौ ॥४॥ मुक्तन चौक माल मणिवंदन गली सुगंध संभारी । रावल रमत रमासी रानी जन्मीहै सुकुमारी ॥५॥ रतन कलश बहु भांति पताका मारग छाये फूल । मानिक खचित पदिक द्वारनमें सब रतननके मूल ॥६॥ महामहोच्छव गोपराय घर दूध दहीकौ कांदौ कुंकुम चोवा चंदन छिरकत झरलायौ

भरि भादों ॥७॥ गोरस माँट ढुराये आंगन नाचत मगन भये । बल्लभराजके हित चिरजीयौ उपजत मोद नये ॥८॥ घृत मधु माखन गली गिरारेन अजर मुदित व्रजबाला । नरनारी हँसि परत परस्पर मानौ मत्त मराला ॥९॥ गोपी ग्वाल मिले मद निर्तत लटकत रंगभरे । भूषण बसन गिरत नहीं जानत कबरिन कुसुम झरे ॥१०॥ गद्गद् सब तन पुलकि हरखि भरी झूमत ग्रीवा बाँह । अति आवेश सुदेश सोहियत उपज्यौ प्रेम प्रवाह ॥११॥ तबही हरखि रावल रानीजू हाटक हीर मंगाये । चीर अमोल विविध रंग रंगनी वधू वधू पहिराये ॥१२॥ तब मागध वंदीजन वसुधा जाचक धनिक करे । भवन भंडार खोलि सोंज सब बकसत शकट भरे ॥१३॥ आयुस भयौ खरिक लक्ष द्वै को ग्वाल हुँकार लये । महाराज राजनके राजा लेंहडे विडरि दये ॥१४॥ पूरन करी कामना सब विधि रसिक सरस आनंदे । कुंभनदास बास बरसानें गौर चरनरज वंदे ॥१५॥

★ राग सारंग ★ आज वृषभानकें आनंद । वृंदाविपिन विहारिनि प्रगटी श्रीराधाजू आनँदकंद ॥१॥ गोपी ग्वाल गाय गो सुत लै चले यशोदा नंद । नंदीसुर तें नाचत गावत आनँद करत सुछंद ॥२॥ लेत विमल यश देत बसन पशु धरत दूब शिर वृंद । लोचन कुमुद प्रफुल्लित देखियत ज्यों गोरी मुखचंद ॥३॥ जाचक भये परम धन कहियत गोधन सुधा अमंद । भये मनोरथ व्यासदासके दूरि गये दुख द्वंद ॥४॥

★ राग सारंग ★ हेरी हे आज वृषभानके आनंद भयौ । नाचत गोपी ग्वाल परस्पर छिरकत हरद दह्यौ ॥१॥ श्रवन सुनत गृह गृहतें निकसीं सुंदरी साज सिंगार । हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम चली कंचन भरि थारी ॥२॥ बीना बेंनु बखान महुवरी बाजे पखावज ताल । हँसत परस्पर प्रेममुदित मन गावत गीत रसाल ॥३॥ धन्य वृषभान गोप धन्य कीरती धन्य बरसानौ गाम । धन्य धन्य प्रकट भये आनँद निधि धन्य श्रीराधा नाम ॥४॥ सिंधुसुता गिरिसुता सची रति कोऊ नाँहि समान । धन्य धन्य गोविंददासकी स्वामीनी व्रजकी जीवन प्रान ॥५॥

★ राग सारंग ★ आज वृषभानकें आनंद। बदन प्रभासी लागत मानौ प्रगट्यौ पूरनचंद ॥१॥ एक जो दूब बँधावत गावत एक सुनावत टेर। सुनि सब नारि बधावन आईं अपने अपने मेर ॥२॥ जो आवत सो करत नौछावर तृन तोरत बलि जात। परम भाग्य दंपति के यह कहि फूली अंग न मात ॥३॥ अपने अपने मनकौ भायौ करत सकल व्रज लोग। सूरदास प्रगटीं भुवि ऊपर भक्तन के हित जोग ॥४॥

★ राग सारंग ★ चलौ वृषभान गोपके द्वार। जन्म लियौ मोहन हित कारन आनँद निधि सुकुमार ॥१॥ गावत युवती मुदित मिलि मंगल ऊँचे मधुर ध्वनि धार। विविध कुसुम कोमल किसलय युत तोरन बंदनवार ॥२॥ मागध सुत बंदी चारन यश कहत कछु अनुसार। हाटक हार चीर पाटंबर देत सँभार सँभार ॥३॥ धेनु सकल सिंगार बच्छ चित्र लै चले ग्वाल सिंगार। हितहरिवंश दूध दधि छिरकत माँझ हरिद्रा डार ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज बधाई बाजत रावल। श्रीवृषभानराय घर प्रगटी श्यामा श्याम सुखावल ॥१॥ गृहगृहतें गोपी वनि आईं आनंदित नंदावलि। मानों कनिक कंज मकरंदहिं पीवत जीवत मधुपावलि ॥२॥ नाचत गावत बेंनु बजावत हेरी देत गोपावलि। दधिकादों भादों झर लायौ प्रेम मुदित ब्यासावलि ॥३॥

★ राग सारंग ★ बाजत रावल माँझ बधाई। श्रीवृषभान गोपकें प्रगटी श्रीराधा आनँददाई ॥१॥ घरघरतें नर नारि मुदित मन सुनत चले उठि धाई। ललित वचन लोचन भरि निरखत मानों रंक निधि पाई ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल घर घर बात लुटाई। फूले गात न मात कंजलों मानों तमरिपु दरसाई ॥३॥ कुलमंडन दुखखंडन सुंदरि श्याम शरीर सुहाई। निरवधि नित्य स्नेह परायण प्रिय दयाल बलि जाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज रावलमें जयजयकार। प्रगट भई वृषभान गोपकें श्रीराधा अवतार ॥१॥ भूषण वसन शोभित अँग अंगन कंठ मनोहर हार। हाटक तन बदनारविंद छबि दुहुँ दिशि भयौ उजियार ॥२॥ सब सखियन मिलि द्वारें

आईं गावत मंगलचार । निर्मित जोरी कुँवर मोहनकी रामदास बलिहार ॥३॥

★ राग सारंग ★ श्रीराधाजूकौ जन्म सुन्यौ मेरी माई । सकल सिंगार चलीं व्रज गोपी घरघर बजत बधाई ॥१॥ अति सुकुमारि घरी शुभ लच्छिन कीरतनें यह जाई । परमानंद करी नौछावरि घर घर जात लुटाई ॥२॥

★ राग सारंग ★ महारस पूरन प्रगट्यौ आनि । अति फूलीं घरघर व्रजनारी श्रीराधा प्रगटी जानि ॥१॥ धाईं मंगल साज सबै लै महा महोच्छव मान । आईं घर वृषभान गोपके श्रीफल सोहत पान ॥२॥ कीरति बदन सुधानिधि देख्यौ सुंदर रूप बखान । नाचत गावत दै कर तारी होत न हरख अघान ॥३॥ देत असीस शीश चरनन धरि सदा रहौ सुखदानि । रसकी निधि व्रजरसिक रायसों करो सकल दुखहानि ॥४॥

★ राग सारंग ★ राधा रावल प्रगट भई । विधिना यह भागि निज जनकौ रसकी सिंधु दई ॥१॥ कीरति श्रीवृषभान मान दै सब जाति बुलाय लई । अति आनंद सबनके मनकी आरति निबरि गई ॥२॥ देखन नंद चले लै सुतकों तबहीं बात जतई । भूषण बसन जन्मदिनके सजि सब बिधि बहे छई ॥३॥ कह्यौ नंद जसुमति कीरतिसों देहु बधाई नई । सुता तिहारी पूत हमारौ जोरी सरस ठई ॥४॥ भीतर बोलि पटा बैठाये दोऊ सहज एकही । पगिया बाँधि उतारि आरती सब बितई ॥५॥ ता दिनतें सगरे या व्रजमें सुखकी बात भई । लीला सुमिरत भई रसिकनकी मति आनंद मई ॥६॥

★ राग सारंग ★ आज वृषभानके घर फूल । प्रगटी कुँवरि राधिका जातें मिटे सबनके शूल ॥१॥ लोक लोकते टीकौ आयौ बिबिध रतन पटकूल । सूरदास समता को पावै जाके भाग्य अतूल ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज रावल में बजत बधाई । धन्य कुखि ताहि की जिन यह कुँवरि सुलच्छिन जाई ॥१॥ निरखि निरखि फूलत गोपीजन भई हमारी भाई। पूरब सुकृत बिचारत अपनों अनायास निधि पाई ॥२॥ बोले पग शुभघरी बिचारत सोचि रहे अरगाई । अति लहनौं वृषभान गोपकौ भाग्य दशा चलि

आई ॥३॥ जासौं प्रेम सुलच्छिन कहियत सो यह वेद न गाई । सूरदास स्वामीते अधिक है चली तिहुँ लोक बड़ाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ प्रगट भई शोभा त्रिभुवनकी श्रीवृषभान गोपकें आई । अद्भुत रूप देखि व्रजवनिता रीझि रीझिकें लेत बलाई ॥१॥ नहिं कमला नहिं सची रति रंभा उपमा उर न समाई । जातें प्रगट भये व्रजभूषण धन्य पिता धनि माई ॥२॥ युगयुग राजकरौ दोऊ जन इत तुम उत नँदराई । उनके मदनमोहन इत राधा सूरदास बलिजाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ भई वृषभानकें सुता । रूपरासि अंग अंग माधुरी मानों कनक लता ॥१॥ सब अंग निपुन बनी अति मृदु छवि कंचनहूते गोरी । आसकरन व्रजराज नंदसुत वनी अनूपम जोरी ॥२॥

★ राग सारंग ★ राधाजू शोभा प्रगट भई । वृंदावन गोकुल गलियनमें सुखकी लता छई ॥१॥ प्रति प्रति पद गोपुर कुंजनमें उपजी उपमा नई । कुंभनदास गिरिधर आवेंगे आगें पठै दई ॥२॥

★ राग सारंग ★ बजत वृषभानकें वधाई । सबन भावती कुँवरि राधिका कीरतिनें यह जाई ॥१॥ नंदराय और बड़े गोप सब गृह गृह न्यौति बुलाये । सुनतई आनंद भयौ सबनकें हुलसि हुलसिकें आये ॥२॥ तिलक करत नाचत और गावत घोष सकल व्रजनारी । श्रीविट्ठलगिरिधरन संग लै कुँवरि चौक बैठारी॥३॥

★ राग सारंग ★ आज बोहोत वृषभान गोपकें भीर भई अति भारी । बाजन बजत होत कुलाहल प्रगटी है प्रान पियारी ॥१॥ सुंदर शील सुलच्छिन पूरन बिधि रचिपचि ही संभारी । आनंदभरी सबै मिलि गावत नौछावर करि डारी॥२॥ देखि देखि मुख कुँवर कुँवरीको सबहीन सर्वसु बारी । सुखदायक प्रगटीं श्रीविट्ठल इनकें ये उनकें गिरिधारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ कीरति आज प्रफुल्लित माई । सौभग भागि मनावति अपने कुँवरि राधिका जाई ॥१॥ है रह्यौ गहगह वृषभान घोष में मंगल गावति धाई। ग्वालिनि गावति चौक पुरावति बदन निहारन आईं ॥२॥ धनि धनि तुमरी

कूख की रतिजू जामें तें ऐसी जाई। श्रीविट्ठलगिरिधरन कुँवरिसों रहे दोऊ गोद भराई ॥३॥

★ राग सारंग ★ कीरति और वृषभान कुँवरि लै बैठ चौक सुहाये। सोने रूपे वसन समेत दिवावत विप्रन गाये ॥१॥ दोहरी देत सवन पहरामनि मन आनंद बढ़ाये। गोपी ग्वाल सुरंग कुंकुमके माथें तिलक कराये ॥२॥ अपने कुँवर और इनकी कुँवरि तन देखि रहत व्रजरानी। फिरि मुसिक्याय कहति कीरति सों मेरी तेरी तपति बुझानी ॥३॥ सब सबसौं गोकुल और रावल और सकल व्रजवासी। श्रीविट्ठलगिरिधरन राधिका प्रगटीं है सुखरासी ॥४॥

★ राग सारंग ★ माई प्रगटी कुँवरि वृषभानतें। सब मिलि कहत ग्वालि कीरतिसों आनँदनिधि जाई आजतें ॥१॥ बाजत तूर करत कुलाहल रावल शोभा बरनी न जाई। गाम गामतें टीकौ आयौ अरु सँग बजत बधाई ॥२॥ नंदलाल कुँवरि राधिका जानि कंचन बेलि किशोरी। फिरि फिरि रहत निहारी श्रीविट्ठलगिरिधर सदा रहौ यह जोरी ॥३॥

★ राग सारंग ★ फूलि फूलि वृषभान गोपनें आछे वसन मँगाये। बरन बरनकें चीर बीनिकें अपने पास धराये ॥१॥ दोऊ सुतन समेत राय हँसि पहलेही पहराये। फिरि फिरि गोप ग्वाल सबहिंनकों आगें ह्वै जु दिवाये ॥२॥ फिरि हँसि बोलि लईं व्रजसुंदरि ठाड़ी करि पहराई। श्री विट्ठल गिरिधरन कुँवरिकें तिलक करन सब आईं ॥३॥

★ राग सारंग ★ आदर दै वृषभान सबनकौ करि सनमान बैठाये। हँसि हँसि पाँय गहत गोपनके तुम भागिन मेरे आये ॥१॥ तब हँसि कहत वे अति आनंद सों हमन बोहोत सुखपाये। उत उनकें और इतै तुमारें गृह हैवौ करौ बधाये॥२॥ तब निकसीं गावति व्रज सुंदरि पहरि जरकसी सारी। श्रीविट्ठलगिरिधरन कुँवरिकों असीस देत व्रजनारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ रावल आज कुलाहल माई। बाजे बाजत भवनन गाजत प्रगटी सबन सुखदाई ॥१॥ धरत साथिये बंदनवारें रोपी द्वार सुहाई। गावति गीत

गली गोकुल की जे जुरि न्यौतें आईं ॥२॥ वृषभानके आँगन रानीजु बैठी देति बधाई । श्रीविट्ठलगिरिधरन कुँवरिकी बरसगाँठि मनभाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज वृषभानकें परम बधाई । प्रगटी कुँवरि राधिका सुखनिधि कीरति कूँखि सुहाई ॥१॥ आये हुलसि रायजु राजत गिरिधारी बलिभाई । गोपग्वाल और सब व्रजवासिन रावल बहोत भराई ॥२॥ देवभान वृषभान भान सब आदर देत अघाई । फिरि फिरि कहत यही विधि कीनी रानी गोद सुत लाई ॥३॥ धावति गावति गीत सबै वृषभानके आँगन आई । धरि धरि साथिये हरद रोरिन के बंदनवार रुपाई ॥४॥ कीरतिनें हँसि अपनी कुँवरि जसुमतिकी गोद बैठाई । फिरि फिरि कहत तुमारे भागिन ऐसी कुँवरि हम पाई ॥५॥ सबहिन बदन निहारी बारि नौछावरि दीनी मन भाई । श्रीविट्ठलगिरिधरन कुँवरिकी सब कोऊ बलिजाई ॥६॥

★ राग सारंग ★ भई वृषभानकें कुमारी । अति उद्योग चहुँ दिश देखियत प्रगटी व्रज उजियारी ॥१॥ भले नक्षत्र भई यह नागरि शील रूप गुण माई । ऐसी और नाँहि त्रिभुवनमें भागि बड़ेई पाई ॥२॥ दिनदिन लगति सुहाई भामिनि सबहिन लगत पियारी । देखि आनंद श्रीविट्ठलगिरिधर अरु वृषभान दुलारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज वहोत वृषभान घोषमें मंगलचार बधाये । प्रकटीं आय कूखि कीरतिकी भये सबन मन भाये ॥१॥ आनँदराय जसोदारानी सुनत सबन लै धाये । गोप ग्वाल और सब व्रजसुंदरि यूथन जूरि जूरि आये ॥२॥ बाजे बजत गावत मंगल सबहिन हुलसि बढ़ाये । देवभान वृषभान सबन मिलि हँसिहँसि भवन बुलाये ॥३॥ देखि देखि सौभग मुख सुंदर अपने भाग्य मनाये । श्रीविट्ठलगिरिधरन राधिका अलभ लाभ सो पाये ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज बधाई की बिधि नीकी । प्रगटी सुता वृषभान गोपकें परम भावती जीकी ॥१॥ जिन देखत त्रिभुवन की शोभा लागत है अति फीकी । परमानंद बलि बलि जोरी यह सुंदर साँवरे पीकी ॥२॥

★ राग सारंग ★ प्रगट्यौ सब व्रजकौ शृंगार । कीरति कूँखि औतरी कन्या सुंदरताकौ सार ॥१॥ नखशिख रूप कहाँलौं बरनौं कोटि मदन बलिहार । परमानंद वृषभान नंदिनी जोरि नंद दुलार ॥२॥

★ राग सारंग ★ रावल राधा प्रगट भई । अब व्रजबसि सुख लेहु सखीरी प्रगटी कुँवरि रसमई ॥१॥ या निधिकों सब विधि चाहत हैं सो कीरति तुमही दई । रामदास सुनि गोकुल आयौ जसुमतिपै बधाई लई ॥२॥

★ राग सारंग ★ गोकुलतें गाजत बाजत युवतिनके यूथ लियें नँदरानी फूलि फूलि रावलमें आईं । सुनि सुनि चहुँदिशितें नारी दौरीं देखनकों सबै एकसार पाँय परसनकों धाईं ॥१॥ पाछे वृषभान द्वार पौरी आय ठाड़े भये और बोलि जो बड़ेडी सनमुख पठाई । देखत नंदरानी मनहीं मन मुसिक्यानी आदर दै पान गहे भवन माँझ लाई ॥२॥ निकट जाई लली देखि सबहिन मनमें अबरेखि अब भई साँची बात सुख समूह व्रजमें । यह सुनि जन मोहन अंग-अंग आनंद भस्यौ गयौ जाय वृषभानजूपै लोटत पद रजमें ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज बधाई है बरसानें । पंच शब्द बाजे सुनि सुरमुनि देखन मन तरसानें ॥१॥ कीरति कूखि चंद्रमा प्रगटी श्रीराधाजू पग दरसानें । ललित निकुंज विहारिनके उर रहे रूप सरसानें ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज बधाई है बरसानें । कुँवरि किशोरी जन्म लियौ है सब लोकन बजे निसानें ॥१॥ कहत नंद वृषभानरायसों बहोत बात को जानें । आज भैया हम सब व्रजवासी तेरे हाथ विकानें ॥२॥ या कन्या के आगें कोटिक बेटनकों को माने । तेरे भलें भलौ सबहिनकौ आनँद कौन बखानें ॥३॥ छैल छबीले गोप रंगीले हरद दही लपटानें । पहरे बसन बिबिध अंग भूषण गिनत न राजारानें ॥४॥ नाचत गावत प्रेम मुदित नरनारीको पहचानें । व्यास रसिक तनमन फूले अति निरख सबै खिसियानें ॥५॥

★ राग सारंग ★ आज बधाई है बरसानें । प्रगट भई वृषभान नंदिनी तीनलोक सरसानें ॥१॥ गोपी नाचत गावति आईं राजत सब हरखानें । छिरकें ग्वाल रँगीले राजत हरद दही लपटानें ॥२॥ छिरकत दूध माखन मुख माँखत बदत

न काहू आनें । नंदीसुरते नंदरायजू गाय गोप सब आनें ॥३॥ देत दान वृषभान भवनमें याचक बहु सनमानें । मणि कंचन मुक्ता पटभूषन जो जाके मन मानें ॥४॥ कीरति सुनीं न देखीं कबहुँ जे श्रीवृषभानें । कुंज बिहारि बिहारिन ऊपर शंकर बारत प्रानें ॥५॥

★ राग सारंग ★ श्रीवृषभानकें आज बधाई । आनँदनिधि शोभानिधि सुखनिधि कीरति कन्या जाई ॥१॥ फूले नरनारी बरसानें घर घर मंगल माई । फूले नंद यशोदा मनमें फूले कुँवर कन्हाई ॥२॥ फूलीं आँगन नाचत युवती अंगअंग छबि छाई । फूले रसिक श्रीदामोदर हित आनँद उर न समाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज बरसानें बजत बधाई । श्रीवृषभानरायकी रानी कुँवरि मनोहर जाई ॥१॥ गोपीजन सब मंगल गावति महरि यशोदा आई । नंदीसुरते आवतही नंद घर घर बात लुटाई ॥२॥ छैल छबीले ग्वाल रँगीले दधिकी कीच मचाई । लटकत फिरत गोप श्रीदामा दीनी नंद दुहाई ॥३॥ सुरनर मुनिजन प्रेम मुदित भये कुसुमावलि बरखाई । भयौ मनोरथ व्यासदासकौ फूलभई अधिकाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ बधाई दीजे हो वृषभान । प्रगट भई त्रिभुवनकी शोभा रसिक जनन सुखदान ॥१॥ गोपी नाचति गावति आईं तिनको दीजे मान । जाके हित प्रकटे नँदनंदन सुंदर सुघर सुजान ॥२॥ गावत गुण गंधर्व अरु किन्नर तिनकौ सुनिये गान । बंदीजन भूपति सब कीने विप्रन दीने दान ॥३॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठलनंदन जाके लागे कान । कुंज बिहारि बिहारिन दोऊ वृंदावनके प्रान ॥४॥

★ राग सारंग ★ रावल आज बधाई बाजै । भूपति मणि वृषभान भवनमें सुता सुलभ भ्राजै ॥१॥ जाके रूप कटाक्षकी शोभा सब लोकन में छाजै । जाके प्रेम बँधे मनमोहन वृंदाविपिन बिराजै ॥२॥ जाकी भृकुटी की छबि निरखत कोटि काम रति लाजै । जाके बल आनंद मगन मन रसिक सभा सब गाजै॥३॥ सुंदर रसकी रासि विलासिन प्रगटी बल्लभ काजै । गावत हैं यश दामोदर हित मंगल मोद सदा जै ॥४॥

★ राग सारंग ★ जन्मी श्रीवृषभान दुलारी। भादों मास सुखद शुभ मंगल आठैं सुदि उजियारी ॥१॥ प्रीति रीति जननी तनयाकी सुधानिधि बदन निहारी। रूप अवधि सुंदरता सीमा मानों साँचे ढारी ॥२॥ बरनि न सकै सकल अंग शोभा निरखि शारदा हारी। तीन लोक छबि या तन ऊपर बारि फेरि सब डारी ॥३॥ प्रेंम मुदित अति अति आतुर ह्वै धाईं सब व्रजनारी। आँगन भवन भीर कामिनिकी गावत सब सुकुमारी ॥४॥ जसुमति सुनि अवतार कुँवरिकौ मन आनंद बढ्यौ अति भारी। पट नौछावरि बहु विधि कीनी मोती रतन भरि थारी ॥५॥ विधि अति निपुण सुकृत माखनसी अपने हाथ सँभारी। गोकुल प्रभु गोपाललालकी ह्वै हैं प्राणन प्यारी ॥६॥

★ राग सारंग ★ सकल लोककी सुंदरता वृषभान गोपकें आई। जाकौ यश सुरमुनि जो कहत हैं भुवन चतुर्दशगाई ॥१॥ नवल किशोरी रूप गुण श्यामा कमलासी ललचाई। प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराधा द्वै विधि रूप बनाई ॥२॥ उड़ेलें दान देत विप्रनकों जस जो रह्यौ जग छाई। छीतस्वामी गिरिधरकौ चेरौ जुग जुग यह सुखपाई ॥३॥

★ राग सारंग ★ तू देखि सुता वृषभानकी। मृगनैंनी सुंदर शोभानिधि अंगअंग अद्भुत ठानकी ॥१॥ गौर बरन बहु कांति बदन की शरद चंद उनमानकी। विश्व मोंहनी बालदशामें कटि केहरि सुबँधानकी ॥२॥ बिधिकी सृष्टि न होई मानों यह बानिक औरे बानकी। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर लायक व्रज प्रगटी जोट समानकी ॥३॥

★ राग सारंग ★ आनंद भवन वृषभानकें। जाई सुता माय कीरति वर ऐसी कुंवरि नहीं आनकें ॥१॥ नहिं कमला नहिं शची नहिं रति सुंदररूप समानकें। चतुर्भुज प्रभु हुलसी व्रजवनिता राधामोहन जानिकें ॥२॥

★ राग सारंग ★ आजकी बधाई मन भाई आई पीय सुख प्रगटी कुँवरि शोभा व्रजमें सुंदरि। उदैभानकी कुमारि सब रस निधि भारी ऐसी नारि पाई काहु सुकृत करि ॥१॥ रसिक सुदेश माई जिन ऐसी धी जाई सकल सुखदाई आनंद

लहरि। धनि धनि धन्य यह महतारी ऐसी प्यारी दुलराई उछंग भरि ॥२॥ रूप नेह उजियारी सबहिंन गुणकारी सहज सुभाव शील धीरज धरि। जोई मनमें बिचारी सोई छबि जात बारी कहा कहौं धीरज धरि गिरिधर ॥३॥

★ राग सारंग ★ मैं देखी सुता वृषभानकी। जननी संग आई व्रज रावरि शोभा रूप निधानकी ॥१॥ नेंक सुभायते भृकुटी टेढ़ी बैनी सरस कमानकी। नैंन कटाक्ष रहत चितवतही चितवनि निपट अयानकी ॥२॥ पग जेहरि कंचन रोचनसी तनकसी पोहोंची पानकी। खगवारी गलें द्वै लर मोती तनक तरुवनी कानकी ॥३॥ लै बैटी हँसि गोद जसोदा मनमें ऐसी बानकी। सूरदास प्रभु मदनमोहन हित जोरी सहज समानकी ॥४॥

★ राग सारंग ★ भादों सुदी अष्टमी प्रगट भई आनँदकी निधि राधा। व्रजजन मन आनंद प्रगट भयौ मिटी विरह की बाधा ॥१॥ अब प्रगटैंगे प्रानजीवन धन अति आतुर अकुलाई। बड़भागिनि रानी जसुमति गृह सब व्रजके सुखदाई ॥२॥ कदलीखंभ कुंभ मंगलके बंदनवार बिराजे। द्वारद्वार कुंकुमके थापे बाजे बहुविधि बाजे ॥३॥ चलौ वेगि मिलि मंगल गावत कीरतिजूके द्वार। मंगलथार लिये हाथनमें साजे सकल सिंगार ॥४॥ भूषन भूषित अंग सबै जन सुरपुर छयौ विमान। अति महारस पूरि वृष्टिसों बरसानों बरसान ॥५॥ निरखौ बदनचंद प्यारीकौ प्रीतमको सुखसार। हम सखियनकौ परम भाग्य फल नैननकौ आधार ॥६॥ पोहोंची जाय सबै प्रफुल्लित लईं भीतर भवन बुलाय। तादिनकौ सुख नैंनन निरखत दास परम निधि पाय ॥७॥

★ राग सारंग ★ श्रीवृषभानराय गृह प्रगटी राधा नखसिख रूपनिधान। कहा बरनों नखशिखकी शोभा त्रिभुवन नाँहि न और समान ॥१॥ व्रजसुंदरी निरखि हुलसत मन भई आनंद मगन गुन गान। जसुमति कूँखि विरह आतुर अब प्रगटैंगे व्रजजीवन प्रान ॥२॥ रसिकराय रसरासविहारी सकल कला पूरन सब जान। विरह ताप हरिहैं गोपिनके करि मुख कमल सुधारस दान ॥३॥ बाजत ताल पखावज दुंदुभी सुनत न जाय परी कछु कान। वृंदावन मंगल यश गावै दास करत सबकौ सनमान ॥४॥

★ राग सारंग ★ सुंदरि सुभग कुँवरि एक जाई । कहा कहौं यह गुन रूप प्रेंम पोट भरि लाई ॥१॥ फूलि गये जित तित सब व्रजमें सुखकी लहरि जु बढ़ाई। धनि लहनों वृषभान गोपकौ भागि दशा चलि आई ॥२॥ धनि आनंद जसोदारानी अपने भवन खिलाई । वृंदावनमें सखी यह प्यारी भागि अधिक सुखपाई ॥३॥ यह गिरिधर कहत फिरि फिरि कें हमारे भागिन माई । उदैभान नंदनी प्रगटी परमानँद बलिजाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ आज रावलमें जयजयकार । प्रगट भई वृषभान गोपकें श्री राधा अवतार ॥१॥ गृहगृहतें सब चली वेग दै गावत मंगलचार । प्रगट भई त्रिभुवनकी शोभा रूप राशि सुखसार ॥२॥ निर्तत गावत करत बधाई भीर भई अति द्वार । परमानंद वृषभानुनंदिनी जोरी नंददुलार ॥३॥

★ राग सारंग ★ रावल राधा प्रगट भई । श्रीवृषभान गोप गुरु वे कुल प्रगटी अति आनंद भई ॥१॥ रूपरासि रसरास रसिकनी नव अंकुर अनुराग नई । चिरजीवौ चतुर चिंतामणि प्रगटी जोरी पुन्यमई ॥२॥ गुण निधान अति रूप रसिकनी करत ध्यान गिरिधरन सई । चतुर्भुजप्रभु गिरिधर यह जोरी त्रिभुवन शोभा तोलि लई ॥३॥

★ राग सारंग ★ आनंद की निधि प्रगटी राधा । भादोंसुदि आठें शुभवेला निरखत मिटत सकल तन बाधा ॥१॥ सिंधुसुता गिरिसुता शची रति उनहूँ ते अधिक रूप अगाधा । व्रजपति देखि तनमन धन बारत नँदनंदन मन पूँजी साधा ॥२॥

★ राग सारंग ★ राधाजूकौ जन्म भयौ सुनि माई । शुक्लपक्ष भादों निश आठैं घर घर होत बधाई ॥१॥ अति सकुमारि घरी शुभ लक्षन कीरति कन्या जाई। परमानंद नँदके आँगन जसुमति देति बधाई ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज बरसानें बजति बधाई । भागि वड़े रानी कीरतिके जिन यह कन्या जाई ॥१॥ दुंदुभी ढोल भेरी सहनाई बाजे वाजत द्वारैं । श्रीवृषभानरायजूकी पौरी धूम मची अति भारैं ॥२॥ दान देत वृषभान भावते जिन जाँचौ तिहिं काल । कृष्णदास सब देत असीसन चिरजीवौ यह बाल ॥३॥

★ राग सारंग ★ रावलमें बाजत कहाँ बधाई। प्रगटभई वृषभान गोपकें नंदसुवन सुखदाई ॥१॥ घरघरतें आवत ब्रजनारी आनंद मंगल गावैं। एक एक कुंकुम रोरी लै मोतिन चौक पुरावैं ॥२॥ हरखत लोगनगरके बासी भेट बहोत बिधि लावैं। परमानंददासको ठाकुर बानी शुभ गुण गावें ॥३॥

★ राग सारंग ★ प्रगटी श्रीवृषभान दुलारी। जयजयकार होत त्रिभुवनमें अब ऐहैं गिरिधारी ॥१॥ नाचौ गावौ करौ कुलाहल आनँद उपज्यौ भारी। रसिक सिरोमनि रसिकराय प्रभु लीजै भेट हमारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ श्रीवृषभानरायकें प्रगटी अति सुकुमारी श्रीराधा नाम। प्रमुदित मन गावत ब्रजबनिता बजत बधाई रावल गाम ॥१॥ ऐसौ प्रभु हम कबहुँ न देख्यौ जैसो प्रभु ऐसौ ही नाम। नाचत गावत करत कुतूहल दै असीस पूजे हैं काम ॥२॥ इत्तने ही में निरखिकें आईं सजनी हियरे महा अवाऊँ। श्रीविट्ठलगिरिधारी कृपानिधि नितही इनकी बलि बलि जाऊँ ॥३॥

★ राग सारंग ★ फूले डोलत हैं वृषभान। प्रगटी सुता वंश उजियारी जन शुभ करत हैं गान ॥१॥ ताल मृदंग रंगसों बाजत साजत नवल सिंगार। होत बधाई सब मन भाई शोभा अति ही द्वार ॥२॥ धनि वृषभान भागि निधि आई धन्य धन्य यह मास। कृष्णदास अब आस सुफल भई प्रगटी सुख ब्रजवास ॥३॥

★ राग सारंग ★ नाचत रंग भरे रावल आये। यशोदा नंद सहित गोकुलसों सब जन शकट भराये ॥१॥ तोरन कलश जलज मति झालरि ध्वजा पताका द्वार बनाये। चंदन गली नगरकी छिरकत अजरन वर वितान तनाये ॥२॥ जित तित श्रवन सुयश धुनि सुनियत जन्म नक्षत्र विमल यश गाये। शुभ सुकुमारि प्यारी ब्रज प्रगटी धनि ही ते जन सहज चिताये ॥३॥ श्रीवृषभान नृपतिजूके घर पूरन मंगल विविध बधाये। यह सुख सपनेहू न भयौ है कहा भयौ जो बेटा जाये ॥४॥ धन्य कूँखि कीरति रानी की वल्लभ कुलके तिमिर नसाये। सुंदर सकल घोष प्रकाशिक अतुलित आनंद नैंन सिराये ॥५॥ शोभानिधि शिरोमणि

व्रज वन दिन दिन कौतिक छाये । रूप अवधि यह सुता छवीली सुखके पुंज बड़भागिन पाये ॥६॥ पग पटकत लटकत रंगभींने कोलाहल वर भवन वधाये। प्रेम मगन पट भूषन छूटे ओक ओघ गोरसन बहाये ॥७॥ व्योंमविमान अमरगण देखत सकल समूह कुसुम बरखाये । जयध्वनि कहि धन्य मानि अपनपौ हरखि हरखि निसान बजाये ॥८॥ महाराज राजनके राजा कामना सब पुरवाये । निपट निशंक दान नहीं बिसरत हाटक हार चीर मँगवाये ॥९॥ भानुनरेन्द्र कुमुदकौ मंडन सुंदर निपट भूषन पहराये । नागरीदास धनद भये याचक गोधन भवन लुटाये ॥१०॥

★ राग गौड़ सारंग ★ व्रजमें रतन राधिका गोरी । हर लीनी वृषभान भवनतें नंद सुवनकी जोरी ॥१॥ ग्रथित कुसुम अलकावलि की छबि अरु सुदेश कचडोरी । पिय भुज कंध धरें यों राजत ज्यों दामिनी घनसोंरी ॥२॥ कालिंदी तट केलि कोलाहल सघन कुंजवन खोरी । कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर नागरी नवलकिशोरी ॥३॥

★ राग गौड सारंग ★ कामकेल कनकबेली रंगरेल रसिक कुँवरि अति बिचित्र गुन निधान सुभग नागरी । प्रगटी प्रियके हेत प्रथम मन कर संकेत रूपकेत सुखद हेत निपुन आगरी ॥१॥ रीझे वृषभान दान देत वसन भूषन धाम धरनी धन धेंनु धान अटल त्यागरी । रामदास पूरी आस हास रास होयगो तब खेलेंगी गिरिधरन संग बड़े भागरी ॥३॥

★ राग गौड़ सारंग ★ कुँवरि राधिका तू सकल सौभाग्य सीमा या बदन पर कोटिशत चंद बारौं । खंजन कुरंग शतकोटि नैंनन पर वारनें करत जीयमें न विचारौं ॥१॥ कदली शतकोटि जंघन ऊपर सिंध कोटि कटि पर न्यौछावर उतारौं । मत्त गज कोटिशत चाल पर कुंभ शतकोटि इन कुचन पर वारडारों ॥२॥ कीर शतकोटि नासा ऊपर कुंद शतकोटि दसनन ऊपर कहि न पारों । पक्व कंदूर बंधूक शतकोटि अधरन ऊपर बारि रुचि गर्व टारों ॥३॥ नाग शतकोटि वेंनी ऊपर कपोत शतकोटि ग्रीवा पर बारि दूर सारों । कमल शतकोटि कर जुगल पर

बारनें नाहिन कोऊ लोक उपमा जो धारौ ॥४॥ दास कुंभन स्वामिनी सुन नख सिख अंग अद्भूत सुठान सुं कहाँ लगि सँम्हारों ॥ लालगिरिधरन कहत मोहि तोहिलों सुख जोलों वह रूप छिन छिन निहारों ॥५॥

★ राग गौड़ सारंग ★ भई कन्याजु व्रज नृपति वृषभानके सुनत सब लोक तजि सदन सुध ना रही भरे काँवरि हरद दूध दधि आनके ॥१॥ करत सब केलि बहु भाँति नाना रंग देत किलकारि आनँद रस मानके । भेरि दुंदुभी ढोल झाँझ झालरी चंग करत रस गान सुरतान बंधानके ॥२॥ आये जाचक भाट विप्र जनके ठाट देत सब दान सन्मान कर जानके । कहत हरिवंश वृंदाविपिन रसिकनी नंदसुत हार हिये राधिका प्रानके ॥३॥

★ राग गौड़ सारंग ★ परमधन राधा नाम आधार । जाहि पिया मुरली में टेरत सुमरत बारंबार ॥१॥ वेद मंत्र अरु जंत्र तंत्र में ये ही कियौ निरधार । श्रीशुक प्रगट कियौ नहीं तातें जान सारको सार ॥२॥ कोटिन रूप धरे नंदनंदन तोऊ न पायौ पार । व्यासदास अब प्रगट बखानत डार भारमें भार ॥३॥

★ राग गौड़ सारंग ★ आज रावलमें भीर भई । अब व्रज बसि सुख लेऊ सखिरी प्रगटी कुंवरी रसमई ॥१॥ जा निधिको शिव विधि चाहत है सो कीरति तुम ही को दई । 'रामदास' प्रभु सुनि गोकुल आयो जसुमति पहेरावनी दई ॥२॥

★ राग गौड़ सारंग ★ राधिका जयति वृषभानुभवने । विविध मंगल घोष नृत्य गीतादियुत सूत मागध बदी विप्र गायकजने ॥१॥ विविध गृह गोपिकाजन समानीत दधि कुंकुमाक्षत रचितभितहस्ते । रेणु दूरिकरण गधजलसेककृत तोरण ध्वज पताका दिशस्ते ॥२॥ निकट संबंधि निज नंद परिचित सकल गोकुलागत मनुज विहितमाने । पुत्रिका जनन संतोष जन निज जनक विहित भूषण रत्न वस्त्र दाने ॥३॥ रतिपथ प्रकटनोपाय संभव जनित हर्षयुत दासिका फलित भाले। निजनाथ लीलया लीन सकलेंद्रिय प्रिय गीत गोपिका दत्त ताले ॥४॥ उद्घटित वदन जलजात संजात परमानंद दृष्ट राधैक वदने । गोकुलधीश जननोत्सव प्रतिपद स्मरण चिंतिंत रुचिर नंदसदने ॥५॥ सतत मिह बिलसतु प्राणपति नेति चिर

माशिषामधिकतम मधुवचन भाषिते। हृदयकमले वसतु भाव परिपोषित स्वामिनी संग निद्धरिण विकाशिते ॥६॥ अस्मदभिमत मखिलमत्र खलु सिद्धमिति तोषभर भरित निजदास चित्ते। अतिशयित दुर्लभाभरण भूषित लव्ध जन्म समयोचित प्रेष्ट वित्ते ॥७॥ भवतु वल्लभ विभो रतिशयित करुणया सपदिवासोपि तव चरणरेणौ। दासदासस्य हरिदासकस्याधुना देहि भाव भवति विधृतवेणौ ॥८॥

★ राग मालव ★ बरसगांठि वृषभानकुँवरिकी कीरति गीत गवायेजु। चंदन अगर लिपाइ अरगजा मोतिन चौक पुराये जू ॥१॥ नंदीसुरतें नंद जसोदा ससुत न्योंति बुलाये। गोपी गोप गाय गोसुत लै चलि बरसाने आये ॥२॥ तब वृषभान बड़े आदरसों निज मंदिर पधराये। भीतर भवन जसोदा कीरति मिलत परम सुख पाये ॥३॥ जसुमतिकी कनियाँतें लालन लै कीरति गोद खिलाये। व्रजरानी लई कुँवरि गोद व्रजनारिन मंगल गाये ॥४॥ विविध सुगंध फुलेल उबटनों कुँवरि कुँवर उबटाये। तातें नीर न्हवाय पोंछि पट भूषण तन पहराये ॥५॥ तब वृषभान बोलि लये भीतर कीरति मंत्र सुनाये। निश्चय करि यह निजव्रत लीजे कान्ह कुँवरि वर पाये ॥६॥ तब वृषभान बाहिर आये नंदराय पहराये। कुल प्रोहित मुनि गर्ग बोलि कह्यौ परम पदारथ पाये ॥७॥ नंदराय वृषभान परस्पर अद्भुत नाच नचाये। जसुमतिजूसों कर्यौ समधौरो ब्याह के गीत गवाये ॥८॥ तब व्रजराज मुदित मन मुनि ऋषिकुल प्रोहित पहराये। अगनित गाय दईं विधि करके पटह निसान बजाये ॥९॥ प्रमुदित बोहोरि चली नंदरानी गावत सरस बधाये। नंदगोप बलि मोहन लैके नंदगाम फिरि आये ॥१०॥ बंदी मागध सूत बोहोत करि दे सनमान पठाये। रहसे फूले व्रजजन डोलें मानों रंक निधि पाये ॥११॥

★ राग मालव ★ सब मिलि मंगल गावो। श्री वृषभान उदार विदित जग जानो। वंदो चरण महर कीरतिके संपति बहोत लुटावो। 'चत्रभुज' प्रभु हित रूप स्वामिनी निरखत नेन सिरावो ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ आज बधावो माई भानराय दरबार। व्रजनारी मिलि मंगल गावे

सज लिये कंचन थार ॥१॥ धुजा पताका कदली रोप्यो द्वारे वंदनवार । सबै सुवासिन धरो साथिये कीरति परम उदार ॥२॥ कंचन रसिक रूप अति राजत मोतिन सजे सुढार । कमल मुख प्रमुदित भरे मानो दिनकर किरन प्रकास ॥३॥ कुंवरि हि देखत अति सुख उपजत वारत मुक्ता हार । 'गरीबदास' को दई है पंजरी बोल कुटुंब परिवार ॥४॥

★ राग पूर्वी ★ सखी तेरे तनकी सुंदरता ॥ नखशिख अंगअंग अवलोकत चकृतभयो करता ॥१॥ अति अनुप कृस कटि अनुप उर अनुपम सुंदरता ॥ छवि अनुप उपजत छिन छिन अनुपम उज्वलता ॥२॥ परमत करत बिचार विविध चित नांहिन रह्यो समता ॥ कुंभनदास स्वामिनी तोहि बस गोवरधन धरता ॥३॥

★ राग गोरी ★ मुदित निसान बजावही वृषभान नृपति दरबार हो । भादों सुदी आठे उजियारी सुभ नछत्र गुन सार हो । प्रगटी कूखि महर कीरति के श्रीराधा अवतार हो ॥१॥ गृह-गृह ते गोपी बनि निकसीं गावत मङ्गलचार हो । हरखत चली बधाये कुंवरि कर लिये कंचन थारहो ॥२॥ धन्य कूखि रानी की यों कहि हँसि-हँसि लागत पाय हो । वदन विलोकि कुंवरि राधा को पुनि-पुनि लेत बलाय हो ॥३॥ यह जोरी गिरिधर सम प्रगटी उपमा को नहिं आन हो । 'रामदास' विप्र भाटन कों देत राय बहु दान हो ॥४॥

★ राग गोरी ★ बजत बधाई वृषभान रायघर ॥ वर बरसाने सुख सरसाने नाचत महेर मिले नारी नर ॥१॥ दुब हरद रोरी मुख मांडत हँसहँस धरत फूल परस्पर ॥ गोपीग्वाल महारसमाते गाय जनम मंगल गदगदसुर ॥२॥ गरेबाहुधर लटकत डोलत महामुदित अतिराजत रंगभर ॥ भुखन बसन गिनत नहीं जानें सुरदास लाग्यो आनंद उर ॥३॥

★ राग खमाज ★ आज फिरत दुहाई नंदकी । यह श्रीदामा कहत सबनसो बात परम आनंदकी ॥१॥ कुंवरी भई वृषभान नृपतिगृह जीवनी गोकुलचन्दकी । नागरी चिरजीयो यह जोरी राधा 'परमानंद' की ॥२॥

★ राग खमाज ★ प्रगटी अद्‍भुत कुंवरी चलो बरसाने जैये । मंगल भुव रूपकी रानी कीरति कंठ लगैये ॥१॥ भयो महा आनंद नंदके जसोमति भले नचैये। फुली अंगनमें ऐसे ये ताल मृदंग बजैये ॥२॥ सब सुख मनभावन आवनको सुन सुन अति सचुपैये । भादो भाग सबै व्रज खेती 'नंददास' बरसैये ॥३॥

★ राग काफी ★ एरी सखी प्रगटी परमकृपाल सदन सुता वृषभानके । व्रजवासी सबै आनंद भयो एरी सखी सुन सुन सब व्रजबाल श्रीमुख निरखत आनके ॥१॥ चहुं दिश घुरे हैं निशान झांझ पखावज बाजही । एरी सखी मेरी मुरज शहनाई मानों ज्यों घन गाजही ॥२॥ एरी सखी व्रजजन सजे हैं शृंगार बरन बरन बहु भांतिके। एरी सखी शोभा बरनी न जाय मानो उदयो रवि कांतिके ॥३॥ एरी सखी अंगिया पीत सुदेश सारी सुरंग सुहावनी । एरी सखी लहेंगा ललित सुदेश कटि फोंदी मनभावनी ॥४॥ एरी सखी रही अलक लर छूट कटि किंकिनी लटकावही । एरी सखी बरा बिजोठा बीच बाजूबंध बिराज ही ॥५॥ एरी सखी पहुँची पान पछेल चूरी चारु सुहागकी । एरी सखी कुमकुम बेंदी बीच मृगमद आड ललाटकी ॥६॥ एरी सखी लर लटकन लटकाये टेढी सोहत कानमें । एरी सखी अंगुरिन बिछुवां बीच लाग रहे पन पानमें ॥७॥ एरी सखी जेहरी जात जराय पायल पायन बाजही । एरी सखी करनीके जूथ अति आतुर व्है लाजही ॥८॥ एरी सखी नथमणि जटित जडाय ज्यों मुक्ता जल स्वातिको । एरी सखी त्रिवली तिमनियां हार गजमोतिन बहु भांतिको ॥९॥ एरी सखी कलश लिये गोपी हाथ कनकथार सब साजही । एरी सखी अंग सुधि गई भूल तज्यो सबै घरकाजही ॥१०॥ एरी सखी गावत गीत रसाल मंगलचार बधाईयाँ। एरी सखी सुनत सब कान भानुराय मनभाइया ॥११॥ एरी सखी कावर ले सब ग्वाल दधि घृत दूध भरावही एरी सखी नाचत दे किलकार भानजू सीस नवावही ॥१२॥ एरी सखी गलिन बीच भई भीर कोऊ डगर नहीं पावही । एरी सखी मंदिर सोहत वृषभान हाथ पकर नचावही॥१३॥ एरी सखी ले नवनीत उडाय हरद कपोल लगावही । एरी सखी हँसत सबै व्रजलोग भलो बन्यो ये पाव

ही ॥१४॥ एरी सखी गई सखी एक भाजी ले मुख ललीको दिखावही। एरी सखी वाटत मुक्तामाल सबै नोछावर पावही ॥१५॥ एरी सखी जाचक हित हरिवेश' विमल विमल गुज गावही। एरी सखी राधे चरन प्रताप अठसिधि नवनिधि पावही ॥१६॥

★ राग काफी ★ श्री वृषभान प्रभावती जाई है। निरख नृपति वृषभान सु देत बधाई है ॥१॥ खटदस साज सिंगार चली व्रजनागरी। पहोंची भानभवन मथी रूप ऊप ऊजागरी ॥२॥ कुंवरी निरखि मन हरखि सबै तन फूल ही। नाचत कर उत्साह गई उर सुल ही ॥३॥ घर घर तोरनमाल बधाई सजाई। हेम कलस नग जटित धुजा फहराई ॥४॥ बंदी मागध सुत सबै सुन धाये। वंस प्रसंस असीस देत मन भाये ॥५॥ श्री वृषभानराय मन हरखाय के। देत्त बहु दान सबै सनमानके ॥६॥ देव विमान आय कुसुम वरखावही। 'जगन्नाथ' मन मुदित विमल जस गावही ॥७॥

★ राग कल्याण ★ प्रगट भई वृषभान नंदिनी चलो बधाई बाजे री। भादो मास उजियारी आठे मंद मंद घन गाजे री ॥१॥ व्रजवनिता धावति कल गावति गांव गांव ते आई री। विगलित वसन लटकत लट ही नाचत पै नहीं लाजे री ॥२॥ आनंद भरी नंदजूकी रानी देत वसन पसु भ्राजे री। उदय भयो व्रज वल्लभ कुलको 'व्यास' वचन पर छाजे री ॥३॥

★ राग कल्याण ★ त्रिलोककी निधि निर्मित विधना रचि पचि कीनी प्यारी। मुख ससी षोडसकला संपूरन देखत छीन होत तुव वचनामृत सुन कोकिला कुहुकत भई कारी ॥१॥ दारयों हु दरकी दसन ज्योति देखत पेखत धसि पाताल व्याल बेनीको जंघ खंभ देख कदली कही होत नारी। केहरी कंचन कपोत खंजन मृग मीन हीन 'विचित्र' बखाने सोई श्री वृषभानदुलारी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ आठैं भादौंकी उजियारी। रावलमें वृषभान गोपके प्रगटी श्रीराधा प्यारी ॥१॥ श्रुति स्वरूप सब संग करि लीने व्रजपति हेत बिचारी। दास गोपाल बल्लभजूकी स्वामिनी वश कीने गिरिधारी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ महारस पूरन प्रगट्यौ आनि ॥ अति फूलीं घर घर व्रजनारी श्रीराधा प्रगटी जानि ॥१॥ धाई मंगल सजि सबै लै महामहोत्सव मानि ॥ आईं घर बृषभान गोपकें श्रीफल सोहत पान ॥२॥ कीरति बदन सुधानिधि देख्यौ सुंदर रूप बखान ॥ नाचत गावत दै करतारी होत न हरख अघान ॥३॥ देत असीस सीस चरनन धर सदा रहो सुखदानि ॥ रसकी निधि व्रज रसिक रायसों करो सकल दुख हानि ॥४॥

★ राग कान्हरो ★ रावल आज कुलाहल माई । बाजन बाजत भवनन गाजत प्रगटी सैवन सुखदाई ॥१॥ धरत साथिये बंदनवारे रोपी द्वार सुहाई । गावत गीत अली गोकुलकीं जे जुरि न्यौंते आई ॥२॥ वृषभानके आँगन रानीजू बैटी देति बधाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन कुंवरिकी वरसगांठि मन भाई ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ श्री वृषभानरायके प्रगटी राधा नखशिख रूपनिधान । कहा बरनों नखसिखकी सोभा त्रिभुवन नाहिन और समान ॥१॥ व्रजसुंदरि निरखि हुलसत मन भई आनंद मगन गुणगान । जसुमति कूख विरह आतुर अब प्रगटेंगे व्रज जीवन प्रान ॥२॥ रसिकराय रासबिहारी सकल कला पूरन सब जान । विरह ताप हरि है गोपिनके करि मुख कमल सुधारस दान ॥३॥ बाजत ताल पखावज दुंदुभी सुनत न जाय परी कछु कान । वृंदावन मंगल जस गावै दास करत सबको सनमान ॥४॥

★ राग कान्हरो ★ श्री वृषभानके बेटी भई । भादों सुदी अष्टमी शुभ दिन धन्य कुखि कीरतिजू माई ॥१॥ श्रवन सुनत सहचरी मिलि आई अति प्रफुलित सब देत बधाई । ध्वजा पताका तोरनमाला आंगन मोतिन चौक पुराई ॥२॥ पंच शब्द बाजे बाजत है प्रमुदित व्रजजन मंगल गाई । विप्र वेद उचारन लागे जाचकजन बहु करत बडाई ॥३॥ त्रिभुवनकी शोभाजू प्रगट भई श्री गिरिवरधरको सुखदाई । जैजैकार भयो वसुधामें हरखि इन्द्र पुष्प बरखाई ॥४॥ यह जोरी रहो व्रज अविचल राज करो राधा व्रजराई । श्री वल्लभ सुत चरनकमल रज 'हरिदास' नौछावर पाई ॥५॥

★ राग कान्हरो ★ माई बरसानो वर सुवस बसो । राधा कान्ह कुँवर चिरजियो न्हात हूँ जिनि बार खसो ॥१॥ गोवर्धन गोकुल वृन्दावन नवनिकुंज प्रति नित विलसो । रास विलास रहसि कर छायो आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥२॥ अविचल राज करो यह भूतल गोपीजन देत असीस । परमानंददास को ठाकुर जियो कोटि वरीस ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ आज छटी की रात द्योस अति ही मङ्गलकारी । सुजस सुन्यो वृखभानराय को भादों पक्ष अति उजियारी॥१॥ दूर देस के जुरे न्योतकी सब मन यह ही विचारी । लगन एक साध्यो सुभ तबही यह न होय विधि की ओलारी ॥२॥ नाग लोक सुरलोक सुभूतल नाहिन यह सोभा अति सारी । अर्धाङ्गी मोहन की जाई श्री वृषभान सुता री ॥३॥ कवि को विधि ये कहत न आवे सेस सारदा त्रिपुरारी । कुंवरि सो मङ्गलमय अति कीरति 'अग्रदास' यह सुता उर धारी ॥४॥

★ राग केदारो ★ वृषभान कुंवरी राधा नामिनी । प्रगटी है मंगल मनी व्रज जीवनकी प्राण संजीवनी अद्‌भुत अभिरामिनी ॥१॥ व्रजदेवी सुरनर मुनि सेवी परम प्रेमनीकी स्वामिनी । 'नंददास' रस रास रसीली वृन्दावन धामिनी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ वृषभान नृपति दरवारा बाजेवाजे मँदिलरा । प्रगटी है शुभ घरी नक्षत्र व्रज रोप्यो है बंदनवारा ॥१॥ सखी सहेली मंगल गावें नाचें साँचे तारा । गरीबदास की स्वामिनि प्रगटी बाढ्यौ रंग अपारा ॥२॥

★ राग बिहाग ★ श्रवण सुनि सजनी री बाजे बाजे मंदिलरा । आज निसि लागत परम सुहाई अति आवेस होत तन मनमें रावल बजत बधाई ॥१॥ दै दै कान सुनै और फूले रावलकी नर नारी । कीरति रानी कन्या जाई होत कुलाहल भारी ॥२॥ आनंद भरि अकुलाय चली सखी सहज सुंदरी गोपी । प्रादुर्भाव कीरति सुताको जासो तन मन ओपी ॥३॥ अति ऊंचे चढ-चढके टेरत पसर उठे सब ग्वाल । गैया बगदावो रे मैया भई वृषभानके बाल ॥४॥ आय जुरे सब गोप आपसे भयो सबन मन भायो । पंचामृत ढारत सीसनतें नाचत वृषभान

नचायो ॥५॥ मंगल साज शृंगार मंगल मुखी चंचल कुंडल हार । हाथन कंचन थार रहे लसी पग नुपूर झनकार ॥६॥ धन दिन धन यह प्रात आजकी सखी धन धन ये गोपी । कुंवरी किसोरी चंदा निरखत अंखियां तृषित चकोरी ॥७॥ नाचत सिव सनकादि नारद हरद दही भर राजे। इत निसान उत भेरी दुंदुभी हरखि परस्पर बाजे ॥८॥ जा सुखको सनकादिक इच्छत सो विलसत व्रज गेही । कहे 'भगवान हित रामराय' प्रभु प्रगटे प्राण सनेही ॥९॥

★ राग बिहाग ★ धनि-धनि प्रभावती जिन जाइ ऐसी बेटी धनि-धनि हो वृषभान पिता । गिरिधर नीकी मानी सो तो तीन लोक जानी उरझ परी मानों कनक लता ॥१॥ चरन पर गंगा ढारों मुख पर ससि वारों ऐसी त्रिभुवन में नाहिन वनिता ॥ 'नन्ददास' प्रभु स्याम बस करन कों स्यामाजू के तोलों नावे सिन्धु सुता ॥२॥

★ जैजैवंती ★ माई आज तो रावल गाम कैसो रह्यो फूलके । फूली गोपी सब व्रजपति आनंदन कुलके कुंजनके कुंज फूले विटपन झूलके ॥१॥ फूली फूली व्रजनारी हंसकर देत तारी । भादो सुद उजियारी आठे अनुकूल के ॥२॥ फूले वृषभान चंद्रभान हि मान देहे । द्विज जनन दान कोटि रासि खोलके ॥३॥ फूले है जाचक सब भये हैं अचानक अब । माँगत माँगत आये लेत तोल तोलके ॥४॥ 'नंददास' देखत फूले ग्रहपद पाये झूले । देखि द्वन्द्व भूले जनम अमोके ॥५॥

श्री राधा जी के पलना के पद

★ राग रामकली ★ लाड़िली सुरँग पालने झूले । कीरति बैठि झुलावति हरखत अति आनँद मन फूले ॥१॥ सुरँग खिलौना भाँति भाँतिके प्रमुदित गोद खिलावै । देखि देखि मुसिक्यात सलोनी द्वै दँतियाँ दरसावै ॥२॥ प्रमुदित गावै अति हरखावै उपमा को नहीं आन । रूप अंग सब विधि व्रजपतिकी जोरी परम सुजान ॥३॥

★ राग बिलावल ★ अहो मेरी लाड़िली कुंवरि कंचन पालने झूलै। मृदु मुसिकानि निरखि नैन सुख कीरतिजू मनही मन फूलै ॥१॥ कबहुँक चटकोरी चटकावति कबहुँक बोलन बोलै । सूरदास मदनमोहन पियकी आनँदकी रसखान खोलै ॥२॥

★ राग बिलावल ★ लड़ैती पालनें झूलै । रंगमहल रुचि रच्यौ विधाता निरखि निरखि मन फूलै ॥१॥ नवनिधि सिद्धि जाकी आज्ञाकारी सो जाई कीरति बाल । सरस सरोवर भान भवनमें प्रगटी है कुलपाल ॥२॥ आज उदय सब व्रजमंडलको गोरी रसिकगोपाल । कृष्णदास प्रभु अति आनंदे जोरी परम रसाल ॥३॥

★ राग आसावरी ★ कीरति रानी पालने झुलावै। रतन जटित को पलना बन्यौ है मोतिन जाल गुथावै ॥१॥ बिबिध भांति पाटकी डोरी हीरा बहुत जरावै । गजमोतिनके वने झूमका पचरँग चीर बिछावै ॥२॥ नंदीसुरते जसुमति रानी मंगल गावत आवै ॥ सब सखियन मिलि पलना झुलावै गरीबदास गुन गावै ॥३॥

★ राग आसावरी ★ अपनी कुँवरि किशोरीकुँ कीरति पालने झुलावै ॥ निरखि निरखि छबि अपनी ललीकी पुलकि पुलकि हुलरावै ॥१॥ रतन जटित को पलना रच्यौ है रेशम डोरि बुनावै ॥ मोतिन झालरि झूमरि चहुँदिश हीरालाल लगावै ॥२॥ नंदीसुरतें रानी जसुमति मंगल गावति आवै ॥ कुँवरि किशोरीको पलना झुलावै दास गोपाल गुन गावै ॥३॥

★ राग आसावरी ★ रसिकनी राधा पलना झूले ॥ देखि देखि गोपीजन फूलै ॥१॥ रतनजटितको पलना सोहे ॥ निरखि निरखि जननी मन मोहै ॥२॥ शोभा की सागर सुकुमारी ॥ उमा रमा रति वारि डारी ॥३॥ डोरी ऐंचत भोंह मरोरे ॥ बारबार कीरति तृण तोरे ॥४॥ तिहिं छिनुकी शोभा कछु न्यारी ॥ अखिल भुवन पति हाथ सँवारी ॥५॥ मुख पर अंवर वारति मैया॥ आनंद भयौ परमानंद भैया ॥६॥

★ राग धनाश्री ★ झूली झूली राजकुमारी छबीली प्यारी। श्रीकीरति प्रान आधार छवीली हो प्यारी ॥ सब सुंदरताकी सार छबीली हो प्यारी ॥टेक॥ नवल कनकको पालनो प्यारी रतन जटित जराई ॥ गजमोतिनके झूमका प्यारी लटकत परम सुहाई ॥१॥ आसपास झालर बनी प्यारी पीत जरीकी कोर । पचरँग फोंदा पाटके प्यारी सोभित है चहुँ और ॥२॥ ऐसौ पलना लाड़िली प्यारी तोकों बनायौ सँवारि । तुम झूलो हौं झूलाऊँ हो प्यारी अब किन छांडो ओर ॥३॥ कबहुँ किलक हँस हँस उठे प्यारी चितवत नैन बिसाल । जननी डीठ डर जानके प्यारी देत चखोड़ा भाल ॥४॥ जरतारी टोपी लसै प्यारी झगुली पीत सुदेस॥ कंठ बघना कर पोहोंचियाँ प्यारी सोभित सुंदर वेस ॥५॥ माँखनमिश्री देऊँगी प्यारी घुटुरुवन चलौ सुहाई ॥ तेरे चरन रुनझुन करै प्यारी खटपद सुनत लजाई ॥६॥ वह दिन केसौ होयगो प्यारी तुतरे बैन बुलाई । मैया कही टेरै तबै प्यारी सर्वस देहुँ लुटाई ॥७॥ मैया मनोरथ यों करै प्यारी जाकौ श्री कीरति नाँऊ । दीजै यह फल रसिककों प्यारी श्रीवल्लभ गुन गाउँ ॥८॥

श्री राधाजीके ढाढ़ी के पद

★ राग रामकली ★ नंदरायको ढाढ़ी आयौ । भानुराय घर सुता जनम सुनि कुँवरिको मंगल गायो ॥१॥ महाराज वृषभानु जानि यों बड़घरनी बहुविधि पहरायौ । हेम रत्न मुक्ता मणि भूषण पट दै याचकको मान वढ़ायौ ॥२॥ बड़े सिंघासन बैठे भानजू विप्रन दान दीयौ मन भायौ ॥ मागध चारन बंदीजनको मान राखि कंचन झरलायौ ॥३॥

★ राग जेतश्री ★ नाचत गावत ढाढ़िनके संग ढाढ़ी हुरक बजावै हो । सात साखि वृषभानजूकी नंदराय माथो नावै हो ॥१॥ गोपिन लै संग मेहेरि यशोदा आपुन मंगल गावै । व्रजवासी उपनंद मिले सब घर घर बात लुटावै ॥२॥ वरसाने में घर घर कौतिक मोतिन चौक पुरावै । ह्वै है सब मेरे मन भायौ कुलदेवता मनावै ॥३॥ मनि मुक्ता रतनन भरि थारन ढाढ़ी गोद भरावै ॥ झगा पगा उपरना टोडर ढाढीकूँ पहिरावै ॥४॥ देत असीस हाथ ऊँचे करि ज्यों सबहिन

मन भावै । सुता तिहारी पूत नंदको विधिना बात बनावै ॥५॥ ऐसी सुनियत सब काहूकें जाये याचक आवै । यह कन्या कुल मंडन व्यास वचन मोहि भावै ॥६॥

★ राग मारू ★ हौं ढाढ़िन व्रजरानीजूकी कीरति जाँचन आईजू । भवन प्रकास करन कुल कन्या वृषभान नृपतिकें जाईजू ॥१॥ मम पति हरखे और देव सब उर आनँद न समाई ॥ उमड़े सब जाचक त्रिभुवनके सुनि यह सुजस बधाई ॥२॥ कीजै मोहि अजाचक रानी जाँचन अनत न जाई । दीजै रतन मणि मानिक मुक्ता नग निरमोल मँगाई ॥३॥ जो दीजै तो सात साखिको दोऊ वंश बखानों ॥ नंदराय वृषभान नृपतिकी कुल परपाटी जानों ॥४॥ वंश अहीर महा बहु नृप भये कंजभानको गाऊँ । भुजबल चित्रसेन अजमीढ़े यश पर्यंत सुनाऊँ ॥५॥ बड़े भाग्य कुल तिलक नंदजू जा कुल कीरति भाई । तिहिं फल सुभग श्याम घन सुंदर मंगल मोद निकाई ॥६॥ अब सुनि गोपवंश कुल रानी सर्वोपरि रजधानी । अष्टसिद्धि नवनिधि जोरिकर कमलासी ललचानी ॥७॥ भये रति भान सकल भान नृप चित्रभान सुखदाई । भान अष्टमें जोतभान बड़े कंजभान बड़राई ॥८॥ बड़ो वंश बरनन को लघुमति कीरति जाति न जानी । ता कुल श्रीवृषभाननृपतिकी कन्या व्यास बखानी ॥९॥

★ राग मारू ★ यदुवंशी जिजमान तिहारो ढाढ़ी आयो हो । कुँवरि जन्म सुनिकें हों आयौ राखि हमारो मान ॥१॥ एकबार हों पहलें आयौ देन बधाई ताकी। नंदीसुर व्रजराज घरनि घर कूँखि सिरानी जाकी ॥२॥ अबतो मेरे मनको भायौ दोऊ नेग चुकावौ । नँदरानी कीरतिदे रानी ढाढ़िनकों पहिरावौ ॥३॥ बोहोत भाँति ढाढ़िन पहराई गोपराय बड़ दानीं । किशोरीदासको निरभय करिकें व्रज राख्यौ व्रजरानी ॥४॥

★ राग मारू ★ ढाढी भानद्वार है आयौ । सूरज वंश राजनके राजा ताको यश मैं गायौ ॥१॥ वृषभान नृपतिके सुन्यों वधावो अति आतुर व्है धायौ । प्रगटी है श्रीकुँवरि लाड़िली भयौ मैया मन भायौ ॥२॥ लोक चतुर्दश दुंदुभी वाजे

गगन विमानन छायौ । वृंदावन की राधारानी नारद भेद बतायौ ॥३॥ जाको ध्यान धरतहैं मुनिजन अंत न काहू पायौ । जाके हित प्रगटे त्रिभुवन पति निगमन सुजस सुनायौ ॥४॥ ऐसे बचन सुनत ढाढ़ी के आगे टेरि बुलायौ । व्यास वंश की जानि आनि ये गरीबदास पहरायौ ॥५॥

★ राग मारू ★ ढाढ़िन नंदीसुरते आईं । अपने पतिको संग लिये हैं अति आतुर उठि धाईं ॥१॥ उदै देखि व्रज वल्लभकुल को फूली अँग न समाईं । नाचत गावति प्रमुदित ह्वै कें टेरि असीस सुनाई ॥२॥ महाभाग्य कीरति आदर दै भीतर भवन बुलाई । कंचन बहु भूषन पाटंवर नखशिखते पहिराई ॥३॥ रतनभान रतननकी पोहोंची ढाढ़िन हाथ गहाई । उदैभान सोनेंके टोडर देत वहुत सुख पाई ॥४॥ दिये खता अगनित धानन के ललित भान लुटाई । अष्टभान और कुंतभानजू गोधन ठाठ बताई ॥५॥ महाराज वृषभान बहुत करि मनकी आस पुजाई । किशोरीदासकों बाँह पकरिकें वरसाने जो बसाई ॥६॥

★ राग मारू ★ बधाई दीजे हो वृषभान दीजे दीजे दीजे । जाचकजनकी बिदा भइ है एक ठाडो ढाढ़ी छीजे ॥१॥ कुंवरि जनम तिहारे सुनके हौं उठि धायो वेगि । कोटि कलप लौं को छल छूट्यो गयो आज उद्वेगी ॥२॥ वेरी विरह बहुत दुख दीनो कीनो छाती छेग । ताते मदमात्यो न रहायो परे ते रीते तेग ॥३॥ यह अब शिव विरंचि नहीं जानत मानत अमर अघाई । चंद सुर नटवायां नाचे पंचम दरकी माई ॥४॥ उपमा नाही करी करता कोऊ कहासों कहों समताई । कौन पुण्य गिरिधर ताके वस तिहारे सुता कहाई ॥५॥ धेनु धान धन अवतरी दाता गोपनमें बडभागी । मासन बंध रच्यो मन हि मन अपनो सो अनुरागी ॥६॥ दे न सकोगे ढरि कछु नाही बात बनाऊ ताग । रच्यो नहीं कनक मुक्ता लेहु कछु मोहि लाग ॥७॥ हरखि कहत महर मुसक्यानि जो चाहो सो लीजे । असीस दई धन्य चिरजीयो देकर प्रान पतीजे ॥८॥ दुलहनि दुल्हे नंदघर ढोटा ब्याह वडे कर लीजे । मंगल चोरी मंगल गावत दास 'चत्रभुज' जीजे ॥९॥

★ राग गोरी ★ मेरे मन आनंद भयौ हों तो फूली अंग न माऊँ ॥ध्रु.॥ सात साखिको मेरो राजा जा घर बजत बधाई। देव कुसुम बरषत हैं नीके रानी कीरति कन्या जाई ॥१॥ हय गज हीर चीर मणि माणिक भादों झरी लगाई। कुँवरि भई वृषभान नृपति घर अष्ट महासिद्धि आई ॥२॥ बाजे बाजत सुचिसों नीके रानी जसुमति भली नचाई। भाभीजूसों झगरौ कीजे आज भली बनि आई ॥३॥ चलौ सुवासिन सब मिलि साथिये कंचन थार सजाई। गरीबदासकों सुबुद्धि दीजे बहोत पँजीरी पाई ॥४॥

★ राग मारू ★ ढाढ़िन हों जसुमति की कीरति जाचन आई। परम सुजान दान मान वृषभान निरखि सचुपाई ॥१॥ पैठि पौरि दौरि गई भीतर बरनत कुँवरि बधाई। सुनि रानी सनमानी जानी अपने निकट बुलाई ॥२॥ नाँचति गावति झाँझ बजावति अति प्रफुलित मन धाई। नमन करति कीरति मुख निरखत दुहुँ कर लेति बलाई ॥३॥ बूझी सब कुशलात बात बलि बदति विरद सुखदाई। भई है और होनी है जो कछु सो सब जानत माई ॥४॥ अब हों आदि अनादि बखानों वेद पुरातन गाई। पूरन रस प्रगट्यौ अब व्रजमें जव तुम कन्या जाई ॥५॥ यह गोलोक सकल व्रजमंडल जो श्रुति दीयौ बताई। पुरुषोत्तम निज अंशन प्रगटे व्रजवासी समुदाई ॥६॥ श्रीवृषभान प्रकाश तिमिर हर किरति सब जग छाई। करि यह थान रमा क्रीड़नकों सदेही चलि आई ॥७॥ रसनिधि रसपोषनके कारन कमला दई है दिखाई। जसुमति सुत श्रीकृष्ण आदि हरि जोरी सहज सुहाई ॥८॥ वेई नंद शुक व्यास बखानें जिनके घर दोऊ भाई। वासुदेव संकर्षण जे हरि कहे ते बलभद्र कन्हाई ॥९॥ अब है हैं उनके घर तुमसों हित संबंध सगाई। राधामोहनजू मिलि खेलें तुमरे भवन सदाई ॥१०॥ लीलारस बरननकों मो मति तुम आगें सकुचाई। कीरति कुँवरिकों गोद लै आई उर आनँद न समाई ॥११॥ ढाढ़िन निरखि कुँवरिकों फूली देत असीस सुहाई। नंदलाल वृषभान ललीकीं अविचल जोरी सदाई ॥१२॥ कंचन मनि भूषन बसन कीरति बरखा वरखाई। अगनित गाय भैंसि रथ दैकें जसुमति भवन पठाई ॥१३॥

खेलत बैठि गोद मनमोहन देखे नंद अथाँई । पायौ सो सरवसु वारें और घर घर बात लुटाई ॥१४॥ ब्रजरानी तब बोलि लई अपनो उतर्‍यौ पहिराई । शीश हाथ धरि करि गृहदासी निज ब्रजवास बसाई ॥१५॥

★ राग गौरी ★ मेहेरि जू याचन तुमपैं आयौ । देहु बधाई मनकी भाई तिहूँ लोक यश छायौ ॥१॥ कीरति कूखि प्रगटी श्रीराधा सुनि सुनि मंगल गायौ । कृष्णदास ढाढ़ी अपनेकों बहुत भाँति पहिरायौ ॥२॥

★ राग गौरी ★ कीरतिजू दीजे मोहि बधाई । कीरति कूँखि शिरोमनि प्रगटी कीरति सब जग छाई ॥१॥ नँदनंदनकी जोरी प्रगटी श्रीराधा सुखदाई । अब तो मनको भायो भयौ है विधिना भली बनाई ॥२॥ हौं ढाढ़ी नृपनंदमहेरको आयौ तुमपैं धाई । कृष्णदास पहरायौ विधि करि फूल्यौ अंग न माई ॥३॥

★ राग गौरी ★ ढाढ़िन नृत्यत सुलप सुदेस भवन वृषभान के । बरनत बंस निकट कीरति के पहरे अद्‌भुत वेस । लटकि चलत गति ललित भाल पर श्रमजल सिथिल सुकेस ॥१॥ जो पायो सो सबहि लुटायो भूखन वसन अपार । 'हित अनूप' बैटारी नियरे राखी अपने द्वार ॥२॥

★ राग देश ★ बेटी भई भान के अरू नंद के फरजंद ॥ हाँजी वाहवा हाँजी वाहवा ॥ कीरत को कन्याभई जसोदा के कान्ह ॥हाँजी.॥१॥ मिटे दुखद्वंद्व भयो व्रज के आनँद ॥हाँजी.॥ हरद दही दूध घृत रंगे सब ग्वाल ॥ हाँजी.॥२॥ हम तो ढाढी व्रजके तुम व्रज के सिरदार ॥हाँजी.॥ आये नंदराय दान देत लाय लाय ॥हाँजी.॥३॥ नंदराय भानुराय जीयो महाराज ॥हाँजी.॥ ढाढी माँझ जनम जनम जाँचू व्रजराज ॥हाँजी.॥४॥

श्री राधाजी के बाललीला के पद

★ राग भैरव ★ आंगन खेलिये झनक भनक । कीरति कुँवरीको देत खिलौना झुनझुना खनक खनक ॥१॥ रानीजू हरखी मन ही मन मुख निरखत छिनक छिनक । 'कुंभनदास' स्वामिनी पद बाजे झांझरी झनक झनक ॥२॥

★ राग बिलावल ★ खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदभुवन में आइ हो। सकुचत हँसत मधुर स्वर बोली घर हैं कुँवर कन्हाई ॥१॥ सूनत श्याम कोकिल धुन बानी निकसे अति अतुराई। मातासुँ कछु क्लेश करत है रीस डारी बिसराई॥२॥ मैयारी तू इनकुँ चीनत बारंबार बताई। यमुनातीर काल हौं भूल्यौ बाँह पकरि लै आई ॥३॥ आवत यहाँ तोसों सकुचत है मैं दै सौंह बुलाई। सूरश्याम ऐसे गुन आगरि नागरि बहौत रिझाई ॥४॥

★ राग बिलावल ★ यह पीतपट कहाँ ते पायौ। इतनी प्रीत गुप्त मोहन की तैं राधे त्रैलोक सुनायौ ॥१॥ ना याको मूल ना याको ग्राहक ना लीयौ मोल ना घर उपजायौ। एक बेर खेलत वृंदावन बोहोरि जान कर मोहि उढ़ायौ ॥२॥ सुमिरत भजत ब... उर अंतर एही मिस करि लाल न समुझायौ। प्रीतकी रीत चतुर सोइ जानें परमानंद प्रभु मो बोहोरायौ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ श्री यमुना तट खेलत देखि वृषभान गोपकी कन्या। चलो स्याम अब तुम्हें बताऊं व्रजमें प्रकटी कोऊ अनन्या ॥१॥ यह सुन रतिगढ जीतन कारन मानो चढी मदनकी सेना। 'नंददास' ललिता मन प्रफुलित भलिभाव रससिंधु सुधन्या ॥१॥

★ राग बिलावल ★ भान आंगन खेलत जू लडैती। चकई बंगी फिरकी डोरी खेलत स्याम संग राधे हरख बढावती ॥१॥ ले लेहंटू कर गेंद उछारत सब बालकनमें गुनन सरसेंती। 'लालदास' गुन राग नित कहिये चन्द्रकला मुखचन्द्र लडैती ॥२॥

★ राग आसावरी ★ आज छठी वृषभान कुंवरीकी कीरत करत बधाई हो। प्रात समे उठि करि जू उबटनो ताते नीर न्हवाई हो ॥१॥ विविध वसन पट जटित आभूषण अमोलक पहिराये हो। गर्ग पराशर सनक देव गुरु विप्रन सबै बुलाये हो ॥२॥ द्वार द्वार प्रति धरत साथिये चंदन भवन लिपाये हो। गजमोतिनके चौक पुराये तोरन द्वार बंधाई हो ॥३॥ विप्र वेद धुनि हरख पढत हैं विधि सों छठी पूजाई हो। भाल कस्यौ कुमकुमको टीको कुंवरी गोद बिठाई

हो ॥४॥ आरती करत देत नौछावरि मंगल गीत गवाई हो । अगनित गाय सिंगारी अलंकृत दान देत मन भायो हो ॥५॥ बहो विधि पाटंबर पहिराये दिये भंडार लुटाई हो । मागध सुत विदित गुनि गंधर्व मंगल सुजस सुनाई हो ॥६॥ देत असीस लली चिरजीयो जहं तक यमुना बहाई हो । स्यामा स्याम देखी यह जोरी 'दास' बल बल जाई हो ॥७॥

★ राग विलावल ★ कहेत न आवे घरी ठटोरी ॥ बहिस किशोर सुताकाहुकी खेलत महेर तिहारी पौरी ॥१॥ अतिसुंदर देखियत सुतलायक कहेत जसोदा लावो घेसे ॥ नाम कहा तिहारे बावाको पूछत चाव उठि वकतोरी ॥२॥ आदर सहित बुलाय भवनमें प्रेमसहित गुंथी सिरमोरी ॥ तंदुल मिष्टजु मेरे सुरप्रभु आवत जात सदा यह टोरी ॥३॥

★ राग गौड सारंग ★ परमधन राधा नाम अधार । जाहि पिया मुरली में टेरत सुमरत बारंबार ॥१॥ वेद मंत्र अरु जंत्र तंत्र में ये ही कियौ निरधार । श्रीशुक प्रगट कियौ नहीं तातें जान सारको सार ॥२॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तोऊ न पायौ पार । व्यासदास अब प्रगट बखानत डार भारमें भार ॥३॥

★ राग सारंग ★ कामकेल कनकबेली रंगरेल रसिक कुँवरि अति बिचित्र गुन निधान सुभग नागरी । प्रगटी प्रियके हेत प्रथम मन कर संकेत रूपकेत सुखद हेत निपुन आगरी ॥१॥ रीझे वृषभान दान देत बसन भूषन धाम धरनी धन धेंनु धान अटल त्यागरी । रामदास पूरी आस हास रास होयगौ तब खेलेंगी गिरिधरन संग बड़े भागरी ॥३॥

★ राग विहाग ★ धन धन लाडिलीके चरन ॥ अतहि मृदुल सुगंध सीतल कमलके से बरन ॥१॥ नखचंद चारु अनुप राजत जोत जगमग करन ॥ नूपुर कंज बिहरत परम कोतिक करन ॥२॥ नंदसुत मनमोदकारी सुरत सागर तरन ॥ दास परमानंद छिनछिन स्यामताकी सरन ॥३॥

श्री नवनागरी के पद

★ राग बिलावल ★ श्री नवनागरी प्यारी तू वृन्दावनकी रानी। बिहारिन लाड़िली प्यारी तेरी कीरति जगत बखानी ॥चाल.॥ जगत में जगमग रह्यौ यश बिन कृपा क्यों बूझही। अभिमान अंधा लोग करमठ ताहि कछुवन सूझहीं। करौ कृपा परम उदार ये मोहि बारबार सुहावहीं। बलिजाउँ श्रीवृषभान नंदिनी सुजस तिहारौ गावही ॥१॥ श्री नवनागरी प्यारी तेरी मोतिन माँग सँवारी। बिहारन लाड़ली तैसी पहिरै झूमकसारी ॥चा.॥ सारी जो भीजि फुलेल में रही प्रगट बेनी देखियै॥ धसी सीस सुमेरतें मानों भ्रमर पाँति विसेखियै॥ ललित कटि पर लाल लहेंगा नीलकंचुकी कसितनी। प्रथम जोबन जोत तनकी क्यों बनै कवि पै भनी ॥२॥ श्रीनवनागरी प्यारी तू चंद वदन मृगनयनी। बिहारन लाड़िली तैसी हे चंपक तन पिकबैनी ॥चा.॥ बेनीजु पिक शुक नासिका सम अधरबिंब विलासनी। कनक कुंडल अलक झलकें कपोलमें मृदुहासिनी। ललित मुखमें पान सोहे नासिका मुक्ता धरें। चिबुक साँवल बिंदुकी छबि कौन त्रिय सरवर करें॥३॥ श्रीनवनागरी प्यारी तेरी बेंदी जगमगताई। बिहारन लाडिली यह छबि कबि पै वरनी न जाई ॥चा.॥ वरनी न यह छबि जाय कविपै निरखि श्याम सिहाइयौ। दसन दामिनी अधर राते लाल अति सुखपाइयौ। गौर भाल बिशाल लोचन वक्र अति छबि राजहीं। भ्रोंह काम कमान मानों बाण मनमथ साजहीं ॥४॥ श्रीनवनागरी प्यारी तेरी छोटी लर गज मोती। बिहारन लाड़िली तैसी बीच जंगाली पोती ॥चा.॥ पोति जो पुंज जड़ाव चौकी रही उरपर जगमगै। अंस पर मखतूल फोंदा दृष्टि जिन गुरुजन लगै। बरा कंकन बाजू पोहोंची चूरी चारु बिराजहीं। रतनजटित अमोल सुंदरि अंगुरिन छबि छाजहीं ॥५॥ श्रीनवनागरि प्यारी तेरे पग नूपुर झनकार। बिहारन लाड़िली तैसी है मंथर चरन बिहार ॥चा.॥ मंथर चरन बिहार यह गति राज हंसन अर्पही। जघन सघन उरोज भारी देखि सिंध कटि डरपही। पृथु नितंवनि किंकिनी सम निपटही नीवी वनी। झबा झलकें देख दोऊ रीझि रहे साँवल धनी ॥६॥ श्रीनवनागरि प्यारी

तू पिय तन मुरि मुसिकानी ॥ विहारनलाड़िली तब उन वंसी गिरत न जानी ॥चा.॥ जानी न बंसी गिरत करतें पीत पट खस भू पस्यौ ॥ रहे इकटक चित्र जैसे पग न भूमीतें टस्यौ ॥ झुकि जात कछुवन गातकी सुधि अंगअंग शिथिल भये । परत जात सुजान सुंदर भुजा भरि भामिनि लये ॥७॥श्रीनवनागरी प्यारी तेरे रस बसहैं जु कन्हाई । बिहारनलाड़िली लालन रहे अँगअंग लुभाई ॥चा.॥ अंगअंग लाल लुभाय राखे रसिक शिर मुकुट मनी । गुन रूपशील सुहाग सुंदरि अरु त्रियान कवन गिनी ॥ व्रजराज नवलकिशोर के कोऊ और चित्त न आवहीं । बलजाऊँ श्रीवृषभान नंदिनी तो हित वेणु बजावही ॥८॥ श्रीनवनागरी प्यारी तू श्याममनोहर बोली ॥ बिहारन लाड़िली प्यारी तू उठि चल नवल किशोरी ॥चा.॥ उठि चलि नवल किशोरी राधे नवललाल बुलावहीं ॥ सुंदर श्याम सुजान सखीरी बारबार कहावहीं ॥ छाँड़ि मान सँभारी प्यारी कहाँलों तोहि बुलावहीं । बलिजाउँ श्रीवृषभान नंदिनी तो हित मोहि पठावहीं ॥९॥ श्रीनवनागरीप्यारी यश तुह्मारो मोहि भावै । विहारन लाड़िली यह यश आपही श्रीमुख गावै ॥चा.॥ गावैजु श्रीमुख सुयश तुह्मरो तुही तनमन रमरही । तुही धन तुहि प्रान जीवन सपथ दै मोसों कही । करौ विविध विहार भामिनि एतो गहरु न कीजियै । बलि विष्णुदास विचित्र जोरी लोचनन सुख दीजियै ॥१०॥

★ राग धनाश्री ★ नवलनागरी सुव गुन आगरी ॥सौभगसींवा॥ हरिभुजग्रीवा॥ गौरश्याम छबि पावती । श्याम छबीले मन भावती ॥ध्रु.॥ शिशुतामें हे सखीरी जोबन कियौ प्रवेश । कहा कहूँ छबिरूपकी नखशिख परमसुदेश ॥१॥ व्रजपति केलि सरोवरी शैशव जल भरपूर । प्रकटित कुच उरस्थली शोभित जोवन सूर ॥२॥ छूटे केश मज्जन समें देखि विरुद्धें अहि भोर । मोर कुहु निस मेरुतें उतरि चले उहिं ओर ॥३॥ कंचन तन मज्जन कियौ केसर हेमु कलाय । मानहु चंदन तरोवरी नाग रहे लपटाय ॥४॥ त्रिवेणी नख खोलही छबि बनी यह भाँत । मानों कमल मुकुलित किये वाल भृंगनकी पाँत ॥५॥ सीस सचिक्कन श्याम कच दियौ श्रीमंत समार । पसरी किरन पतंगतें भई है द्विधा

तमहार ॥६॥ खितुला सुभग जड़ावके मणिमुक्ता छवि देत । उदय भयौ घन मध्य तें शशी मानों नक्षत्र समेत ॥७॥ केसर आड़ लिलाट है बिच सिंदुरकौ बिंदु । चक्र तरौना नयन मृग रथ बैठ्यौ मानो इंदु ॥८॥ नयनन ऊपर हे सखीरी यों राजत भ्रूभृंग । जूआ बनावत चंद्रमा चपल होत सारंग ॥९॥ चंचल नयन विशालहै मधि झलकें घनश्याम। अंबुज दल मुखमानों दिये लघुलघु शालिग्राम ॥१०॥ चंपकलीसी नासिका राजत अमल उद्योस । ऊपर मुक्ता ज्यों लसै पर्यौ भोर कण ओस ॥११॥ बेसर में मुक्तामनि दै नासा व्रजनारि । गुरु भृगु शनि विच भौम है शशि समेत ग्रह चारि ॥१२॥ मुक्ता आप बिकायकें उर बिच छिद्र कराय । अधरामृत हित तप करे अधोमुख ऊर्ध्व पाय ॥१३॥ गुंजा जैसी छवि बनी मुक्ता अति बड़ भाग। नयननकी लियें श्यामता अधरनकौ अनुराग ॥१४॥ सुंदर सुभग कपोल हैं मुख तमोल भरपूर । कंचन संपुट द्वै-पला मध्य भर्यौ सिंदूर ॥१५॥ स्वेत कांति दशनावली रही तंबोल रँग भींजि। बदन शशिमें बोये हैं मधि अनारके बीज ॥१६॥ अधरनकी छवि कहा कहूँ सदा श्याम अनुकूल । विंव प्रवाली राजहीं मुसकनि वरषत फूल ॥१७॥ चिबुक दिठौना जव दियौ मो मन धोखें जात। निकसत अलि सुत कंजतें मनों भयें परभात ॥१८॥ देख बदनकौ रूप सखीरी मोहन रहे लुभाय । इकटक रहे चकोर ज्यों दृष्टि न इत उत जाय ॥१९॥ यह मारग बन वाटिका निकसत सहज सुभाय । मधुप कमल बन छाँडिकें संग रहे लपटाय ॥२०॥ तोहे श्याम सोहें सखीरी बढ़ी निरंतर प्रीति। आप रहे आधीन ह्वै पाये हैं हरि जीति ॥२१॥ जहीं जहीं तू पाय धरै तहीं तहीं मन साथ। तू हीं तन मन श्याम के चितवत्त तेरे हाथ ॥२२॥ धन्य धन्य मात प्रभावती धन्य पिता वृषभान । जहँ कुल जन्मी राधिका सुंदर चतुर सुजान ॥२३॥ मदनमोहन मोहे सखीरी अति प्रवीन नँदलाल। सूरदास गावै सदा हो कीरत्त विषद विशाल ॥२४॥

श्री वामन जयंती के पद

★ राग धनाश्री ★ हरिको वामन रूप बनायौ ॥ नंदराय यह रूप बनायौ ॥

नंदराय यह मानी जयंति उबटि सुगंध न्हवायौ ॥१॥ शिर किरीट पीतांबर काछनी आभूषन बहु भाँति ॥ जन्म समै सुनि सुनि गृह गृहतें आई जुरि जुरि पांति ॥२॥ कहत सवै सिंगार सलोंनों नितप्रति दूनौ नेह ॥ द्वारिकेश प्रभु याचक ह्वै कै कह्यौं बलि दीनौ तो देह ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ वामन आये बलिपैं माँगन ॥ अति अनूप रूप कहा कहिये ठाढ़े पौरके आँगन ॥१॥ पढ़त वेद धुनि कहत सुकंठन गावत मधुरे रागन ॥ सुनत राग मन लागत नीकौ बालक गनियत जागन ॥२॥ सुन बलि राजा मगन भये अति कहाँते आये भागन ॥ विद्या अधिक अगाध अंबुनिधि कोऊ पावत थागन ॥३॥ लीये बोल होत यज्ञ जहाँ लिये कमंडल हाथन ॥ परमानंद चक्रत बलि राजा कोउ नहीं संग साथन ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ राजा मैं दानी सुनिकें आयौ ॥ मन इच्छा करि चल्यौ दूरितें षटदरसन मैं पायौ ॥१॥ भली भई विप्र तुम आये आवतही सुख छायौ ॥ जो माँगौ सो देहुं तुरतही कहिये मनकौ भायौ ॥२॥ रिद्धि सिद्धि सकल गृह मेरे भूमिके कारन धायौ ॥ अपनौ सूर सर्वसु लै दीनौ तब पाताल पठायौ ॥

★ राग सारंग ★ प्रगटे श्रीवामन अवतार ॥ निरख अदिति मुख करत प्रशंसा जगजीवन आधार ॥१॥ तन घनश्याम पीतपट राजत शोभित हैं भुज चार ॥ कुंडल मुकुट कंठ कौस्तुभमणि उर भृगुरेखा सार ॥३॥ देखि बदन आनंदित सुरमुनि जयजय करैं निगम उच्चार ॥ गोविंदप्रभु बलि वामन व्हैकैं ठाढ़े बलि के द्वार ॥३॥

★ राग सारंग ★ राजा एक पंडित पौरि तिहारी ॥ चार्यौ वेद पढ़त मुखपाटी है वामन वपुधारी ॥१॥ अपद द्विपद पशु भाषा जानत सूरज कोटि उजारी॥ नगरनमें नरनारी मोहे अवगति अलप अहारी ॥२॥ सुन धुनि बलिराजा उठिधाये आहुती यज्ञ बिसारी ॥ दिव्य रूप देख्यौ जु विप्रकौ कीयौ दंडौत जुहारी ॥३॥ चलिये विप्र जहाँ यज्ञवेदी बहुत करी मनुहारी ॥ जो माँगौ सो दैहुँ तुरत ही हीरा रतन भंडारी ॥४॥ रहो रहो राजा अधिक न कहीये दोष लगत है भारी ॥

तीन पेंड़ बसुधा मोहि दीजे जहाँ रचों धर्मसारी ॥५॥ शुक्र कहै सुनियै वलि राजा भूमिकौ दान निवारी ॥ यह तौ विप्र न होय आपुही आये छलन मुरारी ॥६॥ कीजे कहा जगतगुरु याचैं आपुन भये भिखारी ॥ लै उदक संकल्प जो कीनौ वामन देह पसारी ॥७॥ जयजयकार भयौ भूमापत द्वय पेंड भई सारी ॥ एक पेंड़ तुम देहु तुरत ही के बचनन सतहारी ॥८॥ सत नहीं छांडौ सतगुरु मेरे नापौ पीठ हमारी ॥ सूरदास प्रभु सर्वस्व दीनौ पायौ राज पतारी ॥९॥

★ राग सारंग ★ अहो बलि द्वारैं ठाढ़े वामन ॥ चार्‍यौं वेद पढ़त मुखपाठी अति सुमंद स्वर गावन ॥१॥ बानी सुनि बलि बूझन आये अहो देव कह्यौ आवन ॥ तीन पेंड़ वसुधा हम माँगें परनकुटी एक छावन ॥२॥ अहो अहो विप्र कहा तुम मांग्यौ अनेक रतन दैहुं गामन ॥ परमानंद प्रभु चरन बढायो लाग्यौ पींठ नपावन ॥३॥

★ राग सारंग ★ बलिराजा कौ समर्पन साँचो ॥ बहुत कह्यौ गुरु शुक्र देवता मनदृढ आप नहिं काँचो ॥१॥ यज्ञ करत है जाकै कारन सो प्रभु आपुहि जाँच्यौ ॥ परमानंद प्रभु प्रसन्न भये हरि जो जनकों जानत हैं साँच्यौ ॥२॥

★ राग सारंग ★ द्वारें ठाढ़े हैं द्विज वामन ॥ सुनत वचन हिरदें सुख उपज्यौ भयौ कहाँ ते आवन ॥१॥ चरण धोय चरणोदक लीनौ कह्यौ विप्र मन भावन॥ तीन पैंड धरती हौं मागौं परनकुटी एक छावन ॥२॥ अहो विप्र कहा तुम माँग्यौ बहुत रत्न दैहूँ गामन ॥ सूर सुबल हरि सर्वसु लीनों दीयौ पीठ पग पावन ॥३॥

★ राग सारंग ★ बलिपै जाँचत वामन वाल ॥ तीन पैंड़ भूमि मोहि दीजे अधिक कहा कहौं भूपाल ॥१॥ तीन पैंड मोपै कहा माँगत बहोत देहु लेहु इहि काल॥ शुक्राचारज कह्यौ राजसों छल करि आये श्रीगोपाल ॥२॥ मोय छलन श्रीपति आये हैं यातैं पदवी कहा विशाल ॥ यौं कहि दीनौ वामन लीनौ दोय पेंड़में किये बेहाल ॥३॥ एक चरन वलि सिर पर धरिकैं ततक्षन राख्यौ सुतल रसाल ॥

यदुपति द्वारपाल ह्वै रहिहैं द्वारिकेश प्रभु बड़े दयाल ॥४॥

★ राग सारंग ★ कश्यप पिता अदिति माता प्रकटे वामन रूप ॥ भादौं मास सुभग सुदि द्वादशी लीनौ रूप अनूप ॥१॥ सुर तेतीसों हरखन लागे होहिं हमारे काम ॥ बटु स्वरूप धर दरशन दीयौ आये वलिके धाम ॥२॥ तब हँसि राजा कह्यौ विप्रसों कहो कहा है काम ॥ सुन राजा हों अधिक न माँगू रहिवे कों इक ठाम ॥३॥ तब तुलसीदल लीनों करमें शुक्र करी है घात ॥ परमानंद दासकौ ठाकुर जानत हैं सब बात ॥४॥

★ राग सारंग ★ वलि वामन हो जग पावनकरण ॥ कहि न परत सोभा नीलमणिनकी सी गोभा गगन गयौ जब सुंदर चरण ॥१॥ वन्याहे भेद अति उततें गंगाकी धार धँसी है धरनि उज्वल बरण ॥ इततें पदकी जोति मानों कालिंदीकी धार चढ़ी है अमरपुर पापहरण ॥२॥ रहे हैं चकृत चाहि सुर नर मुनिवर दुहुँ दिसि नेह आन कीये बरण ॥ नंददासप्रभु जाके चरित्र दुरित दवन रंचक श्रवण मिटै जन्ममरण ॥३॥

★ राग सारंग ★ मेरे क्यों आये विप्र वामन । सुनिके वेद हृदै रुचि वाढी कह्यो जु भीतर आवन ॥१॥ चरन धोय चरनोदक लीनो मांग विप्र मनभावन । तीन पेंड धरती हों मांगो द्वार कुटी एक छावन ॥२॥ वाको विप्र कहा तुम माँग्यो हीरा रतन देहुं गामन । 'सूरदास' प्रभु इतनो मांग्यो लाग्यो पीठ मपांवन ॥३॥

★ राग सारंग ★ बलि राजा कों पताल पठायो देव अभै-पद पायो । वामन-रूप धर्यो जग-जीवन कस्यप-सुत होइ आयो ॥ अति सुंदर वालक बलि-द्वारें लघु तन देखियत नीकौ । दृष्टि परी बलि राजा महावलि सबै देवनि कौ टीको ॥ कहाँ सों आए भाग सों पाए कछु सेवा हमें दीजे । जो आग्या दीजे कछु हम कों चाहौ सो तुम लीजै ॥ पद-त्रय भूमि दीजे महाराजा ! कुटी एक पढिबे कों पइये। और नहीं कछु तुम सों माँगों इतनौ हमकों चहिये ॥ बलि राजा हरष्यो अति मन में रूप-छक्यौ अति भारी । जो भावै सो लीजै महाप्रभु ! 'परमानँद' बलिहारी ॥

★ राग सारंग ★ बलि राजा है मन कौ मोटौ। शुक्र-गुरु की बात न मानी हरि सों पर्‍यो न खोटौ ॥ जो बोल्यो सो प्रतिपालन कीनों। मति कहूँ न इति-उति डोलै। ताकौ प्रण राख्यो हरि-नागर जो बोलै सो बोलै ॥ देखौ बलि राजा के कारन वामन-नतु वर लीनो। पद-त्रय-मिस छल पहुँच्यो पातालै मापि पीठ दृढ कीनों ॥ बलि राजा बड़भागी कहियतु जाके हेत अवतरन कीनों। 'परमानंद' देव-दुख निबर्‍यो भक्तनि कों सुख दीनों ॥

★ राग सारंग ★ जयति वामनाकार विस्तार सकुमार तन त्रिविक्रमा क्रांति त्रिभुवन उदारी ॥ प्रसर पदन स्वर निरभेद ब्रह्मांड वर विवर गति जनित सुर सुरि त्रिधारी ॥१॥ जयति अभ्र वपु स्याम अति सोभे उपवीत वर चिर कृष्ना अजिन जटा धरि दंड धारी ॥ मेखला भुज कोपीन कर कुस पानी जप माल सर्व व्रत ब्रह्मचारी ॥२॥ जयति सक्र सुर राज दायक दया सिंधु वलि द्वार पालक गदाधर मुरारी ॥ दास 'माधो' सोई भक्त हित वपु धरे श्री जगन्नाथ नील गिरि बिहारी ॥३॥

दान के पद

★ राग देवगंधार ★ हमारौ दान दै हो गुजरैटी। वहुत दिनन चोरी दधि बेच्यौ आज अचानक भेटी ॥१॥ अति सतरात कहाधों करैगी बड़े गोप की बेटी। कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर भुज ओढनी लपेटी ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ मथनियाँ आन उतार धरी। दान अटपटी माँगत ढोटा दुहुँ करजोर खरी ॥१॥ जब नँदलाल चीर गहि झटक्यौ मनमें बहुत डरी। कुंभनदास प्रभु दधि वेचनकी बिरियाँ जात टरी ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ पिछोड़ी वाँहन दै हो दान। सूधे मन तुम लेहु गुसाँई राखि हमारौ मान ॥१॥ मारग रोकि रहत मनमोहन सब गुन रूपनिधान। बदन मोरि मुसिकाय भामिनी नयन बान संधान ॥२॥ नंदरायके कुँवर लाड़िले सबके जीवनप्रान। परमानंद स्वामी नागर हो तुमतें कौन सुजान ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ मोहन तुम कैसे हो दानी। सुधे रहौ गहौ अपनी पति तुमारे जियकी जानी ॥१॥ हम गूजरि गमारि नारि हैं तुमहो सारँगपानी। मटुकी लई उतारि शीशतें सुंदरि अधिक लजानी ॥२॥ कर गहि चीर कहा ऐंचत हो बोलत चतुर सयानी। सूरदास प्रभु माखनके मिस प्रेम प्रीति चित ठानी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ सूधें दान काहे नहीं लेत। और अटपटी छाँड़ि नंदसुत कहा कँपावत बेत ॥१॥ वृंदावनमें बीथनि बीथनि फिरत हौ ग्वाल समेत। इन बातन कैसें मन मानें औरन करत अचेत ॥२॥ रव करबक मेरौ अँचरा पकरत मारग चलन न देत। अपने मनकी काहे न कहत हौ कहा तिहारो हेत ॥३॥ अब काहूकूं जान न दैहौं आन वन्यौ संकेत। सूरदास प्रभु रंग रहसि में देव चले नखरेत ॥४॥

★ राग देवगंधार ★ मटुकिया मोहन मेरी दीजे। जो कछु दधि चाखनकों चाहौं तौ रंचक पान कर लीजे ॥१॥ उनआये घन अटक भोरही वनितन नौतन सारी भीजे। रंग वहैगौ अवार मोहि ह्वै हे कहा कहों जो घर कोउ खीजे ॥२॥ चतुर्भुज प्रभु हौं काल्हि आइहौं साँचीबात पतीजे। गिरिधरलाल प्रगट भयौ तुमारो दान आज अति हठ नहिं कीजे ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ रंचक चाखन दैरी दह्यौ। अद्भुत स्वाद श्रवन सुनि मोपै नाहिन परत रह्यौ ॥१॥ ज्यों ज्यों कर अंबुज उर ढाँकत त्यों त्यों मरम लह्यौ। नंदकुमार छबीलौ ढोटा अँचरा धाय गह्यौ ॥२॥ हरि हठ करत दास परमानंद यह में बहुत सह्यौ। इन बातन खायौ चाँहत हौ सेंत न जात बह्यौ ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ कहौ किन दीनौ दान दहीकौ। सदा सर्वदा बेचत यह मग है मारग नितहीकौ ॥१॥ भाजनही समेत शीशतें लेत छीनि सबहीकौ। ऐसौ कबहूं सुन्यों न देख्यौ नयौ न्याय अबहीकौ ॥२॥ कमल नयन मुसिक्याय मंद हँसि अंचल पकरयौ जबहीकौ। दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मन चोर लियो तबहीको ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ मटुकिया लै जु उतार धरी। इन मोहन मेरौ अँचरा पकरयौ

तबमैं वहुत डरी ॥१॥ मोपै दान साँमरो माँगत लीनें हाथ छरी । मोहीकों तुम गहिजु रहे हौ सँगकी गई सगरी ॥२॥ पैयाँ लागि करत हों विनती दोऊ कर जोरि खरी । परमानंद प्रभु दधि बेचनकी बिरियाँ जात टरी ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ ग्वालिनि दान हमारौ दीजै । अति मन मुदित होय व्रजसुंदरि कहत लाल हँसि लीजै ॥१॥ दीजै मन मेरौ अब प्यारे निरखि निरखि मुख जीजै । अतिरस गलित होत वह भामिनि मनमानें सो कीजै ॥२॥ चल न सकत अति टटक रहत पग रूपरासि अब पीजै । श्रीविट्ठलगिरिधरनलालसों नवल नवल रस भींजै ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ प्यारौ कहत सखनसों टेरें । जान न पावें ये व्रजसुंदरि लावौ सबहिन नेरे ॥१॥ नितही यह मग जात दान लै ये सब निपट सबेरें । मुसकि मुसकि मृदु हँसत परस्पर चंचल दृग भर हेरें ॥२॥ अति सुंदर कर कमल परसि पिय दृष्टि न इत उत फेरें । श्रीविट्ठलगिरिधरन चलत जब अटकि रहत मन मेरें ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ मोहन माँगत गोरस दान । कनक लकुट कर लसत सुभग अति कही न जात पियवान ॥१॥ अति कमनीय कनक तन सुँदरि हँसि परसत पिय पान । श्री विट्ठलगिरिधरन रसिक वर माँगत मृदु मुसिकान ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ प्यारे काहेकौ अब दान । नित नित आवत जात यहै मग कबहुँ न सुनि यह कान ॥१॥ जैसें चलि आई अपने व्रज आज नई जिन ठान । बचन रचन मृदु कहत परस्पर हों वारी मुसिक्यान ॥२॥ जो चाहौं सों लीजै लालन तुमहौ जीवन प्रान । श्री विट्ठलगिरिधरन लालसों ग्वालिनि अति सुख मान ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ मदनगोपाल हठीलौ री माई ॥ कौन वेर भई हम ठाड़ी रोकी कुँवर कन्हाई ॥१॥ दान लिये विनु जान न दैहों तुम्हें वृखभान दुहाई॥ काहे कों रार बढ़ावत सुंदरि देहु हमारौ दान चुकाई ॥२॥ दानही दान कहा कहौ मोहन यह कैसी बनि आई । कुंभनदास प्रभु गोवरधनधर मुसकि ठगोरी लाई ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ गोरस बेचन गई बिकानी हों ही । छुटि गई लाज साज नंदलाल गहि ठाढ़ी चितवत सोंहि ॥१॥ सनमुखते ऊँचे सखी इत उत नेकु न नैना होंही । वर्यदास गिरिधर बस कीने वह छबि मुरि मुसक्योंही ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ लाल तुम पकरि कैसी वानि । जवहीं हम आवत वेचन तबहीं रोकत आनि ॥१॥ मन आनंद कहत मुँह कीसी नँदनंदनसौं बात । घूंघटके ओझल ह्वै देखति मन मोहन करि घात ॥२॥ हरिकरि लागी रह्यौ सब अँचरा तनक दहीजु चखाय । श्री विट्ठलगिरिधरनलालनें खायके दियौ उठाय ॥३॥

★ राग देवगंधार ★ कबहुँ न सुन्यो दान गोरसकौ । तुम तौ कुँवर बड़ेके ढोटा पार नहिं कहुँ जसकौ ॥१॥ रोकत हौ परनारि बिपिनमें नेंकु नहीं जिय कसकौ। परमानंद प्रभु मिसजु दानकौ है कछु और ही चसकौ ॥२॥

★ राग देवगंधार ★ भोर ही ठानत हो कित झगरौ ॥ आई गई सदा इहि मारग किनहुँ न रोक्यौ डगरौ ॥१॥ तब मुसिकाय कही मन मोहन नंदकौ लाल अचगरौ रहिरी ग्वालि जोबन मदमाती लेहुँ छीन दधि सगरौ ॥२॥ काहेकौ ढोटा नैन नचावत निकट है ब्रजराजकौ नगरौ । परमानंद प्रभु यही विधि विहरत रूप रासि गुण अगरौ ॥३॥

★ राग बिभास ★ भोरही दान माँगत मोसों गिरिधर । प्रातही उठि चली जो नगरकों बेचन दधि मटुकी धरि सिर पर ॥१॥ जो तुम हमसों आरि करौगे तौ हम उलटि जाँयगीं घर साँची कहोंधौं नातर व्रजपतिजु कौन टेव परी तिहारी मनहर ॥२॥

★ राग मालकोंस ★ मेरी भरी मटुकिया लै गयौ री ॥ आपुन खात ग्वाल ही खवावत रीती कर मोहि दै गयौ री ॥१॥ वृन्दावनकी सघन कुंजमें ऊँची नीची मोसों कहि गयौ री ॥ परमानंद व्रजवासी साँवरौ अँगुष्ठ दिखाय रस लै गयौ री ॥२॥

★ राग ललित ★ कहों जू दान केसों कित रोकत घनस्याम ॥ कुल किन प्रीति

रीति पहचानत किन सकुचत एसी बांन ॥१॥ जो तुम लूट्यों चाहत हों दधि तो हि बाबा की आंनि ॥ 'नँददास' प्रभु जो नही मांनत रहेंगी न कोऊं कुल कानि ॥२॥

★ राग ललित ★ चलेकिन जाओ अपनीगेल ॥ हमनित प्रति निकसत गिरिघटीयां गोवर्धनकी सेल ॥१॥ दूध दहींको दान अनोखो हम लाधें कछु वेल ॥ प्रभु मुकुंद माधो सुखदायक धर लरिका बनछेल ॥२॥

★ राग ललित ★ अहो कान्ह प्यारे गौ वन के रखवारे ॥ दान लेहु घर जान दे हु रे तिहारे जिय में कहा रे ॥१॥ मटुकी फोरी बैंया मरोरी लोग हँसावन हारे ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु रसिक मुकुट मनि तुम जीते हम हारे ॥२॥

★ दान लीला के पद ★

★ राग विलावल ★ तुम नंदमेहेरके लाल मोहन जान दै ॥ रानी जसुमति प्रान आधार ॥ मोहन जान दे ॥धृ.॥ श्रीगोवर्धनकी शिखरतें मोहन दीनी टेर॥ अंतरंगसों कहत हैं सब ग्वालिनि राखौ घेर ॥ नागरि दान दै ॥१॥ ग्वालिन रोकी ना रहें ग्वाल रहे पचहार ॥ अहो गिरिधारी दौरियो सो कह्यौ न मानत ग्वार ॥२॥ चली जात गोरस मदमाती मानों सुनत नहीं कान ॥ दौरि आये मनभामते सो रोकी अंचलतान ॥३॥ एक भुजा कंकन गहें एक भुजा गहि चीर ॥ दान लैन ठाढ़े भये गहवर कुंज कुटीर ॥४॥ बहुत दिना तुम बचि गई हो दान हमारौ मार ॥ आज हों लैहों आपनौ दिन दिनकौ दान सँभार॥५॥ रसनिधान नवनागरी निरख बचन मृदु बोल ॥ क्यों मुरि ठाढ़ी होत है घूँघटपट मुखखोल ॥६॥ हरख हियें हरि करखिकें मुखतें नील निचोल ॥ पूरन प्रगट्यौ देखियै मानो चंद घटाकी ओल ॥७॥ ललित बचन समुदित भये नेति नेति यह बैन ॥ उर आनंद अतिही बढ्यौ सो सुफल भये मिलि नैन ॥८॥ यह मारग हम नित गईं कबहूँ सुन्यौ नहीं कान ॥ आज नई यह होत है सो माँगत गोरसदान ॥ मोहनजानदे ॥९॥ तुम नवीन नवनागरी नूतन भूषण अंग॥

नयौ दान हम माँगनौ सो नयौ बन्यौ यह रंग ॥१०॥ चंचल नयन निहारियै अति चंचल मृदुबैन ॥ कर नहीं चंचल कीजियै तजि अंचल चंचल नैन ॥११॥ सुंदरता सब अंगकी बसनन राखी गोय ॥ निरखि निरखि छवि लाड़िली मेरौ मन आकर्षित होय ॥१२॥ लै लकुटी ठाढ़े रहे जानि साँकरीखोर ॥ मुसकि ठगौरी लायकें मोसौं सकत न लई रति जोर ॥१३॥ नेंक दूरि ठाढ़े रहौ कछू और सकुचाय ॥ कहा कियौ मन भांवते मेरे अंचल पीक लगाय ॥१४॥ कहा भयौ अंचल लगी पीक हमारी जाय ॥ याके बदलें ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय ॥१५॥ सूधे बचनन माँगिये लालन गोरस दान ॥ मोंहन भेद जनायकें सो कहत आनकी आन ॥१६॥ जैसें हम कछु कहत हैं ऐसी तुम कहि लेहु ॥ मनमाने सो कीजिये पर दान हमारो देहु ॥१७॥ कहा भरें हम जात हैं दान जो माँगत लाल ॥ भई अवार घर जानदे सो छाँड अटपटी चाल ॥१८॥ भरें जातहौ श्रीफल कंचन कमल बसनसों ढाँक ॥ दान जो लागत ताही कौ तुम देकर जाहु निशाँक ॥१९॥ इतनी विनती मानिये माँगत ओली ओड़ ॥ गोरसकौ रस चाखियै लालन अंचल छोड़ ॥२०॥ संग की सखी सब फिर गईं सुनिहै कीरति माय ॥ प्रीति हिये में राखिये सो प्रगट कियें रस जाय ॥२१॥ काल्ह बहोरि हम आइ हैं गोरस लै सब ग्वारि ॥ नीकी भाँति चखाइहों मेरे जीवन हों बलिहारि ॥२२॥ सुनि राधे नवनागरी हम न करें विश्वास ॥ करकौ अमृत छाँडिकें को करै काल्हि की आस ॥२३॥ तेरौ गोरस चाखिवे मेरौ मन ललचाय ॥ पूरन शशि कर पायकें चकोरन धीर धराय ॥२४॥ मोहन कंचन कलशिका लीनी शीश उतार ॥ श्रमकन बदन निहारिकें सो ग्वालिनी अति सुकुमार ॥२५॥ नव विंजन गहि लालजु श्रीकर देत ढुराय ॥ श्रमित भई चलौ कुंज में नेंक पलोटूँ पाय ॥२६॥ जानत हों यह कौन है ऐसी ढीठ्य देत ॥ श्रीवृषभान कुमारि हे अरी तोहि बीच को लेत ॥२७॥ गोरे श्रीनंदरायजू गोरी जसुमति माय । तुम याहीतें साँमरे ऐसे लच्छिन पाय ॥२८॥ मन मेरौ तारन बसै और अंजन की रेख ॥ चोखी

प्रीत हियें बसै याते साँवल भेख ॥२९॥ आप चालसो चालिये यहै बड़ेनकी रीत ॥ ऐसी कबहुँ न कीजिये हँसें लोग विपरीत ॥३०॥ टाले टूले फिरत हौ और कछू नहिं काम ॥ बाट घाट रोकत फिरौ आन न मानत श्याम ॥३१॥ यही हमारौ राज है व्रजमंडल सब ठौर ॥ तुम हमारी कुमुदिनी हम कमल बदन के भौंर ॥३२॥ ऐसे में कोऊ आइ है देखै अद्‌भुत रीति ॥ आज सबै नँदलालजू प्रगट होयगी प्रीति ॥३३॥ व्रज वृंदावन गिरि नदी पशु पंछी सब संग ॥ इनसों कहा दुराइयै प्यारी राधा मेरौ अंग ॥३४॥ अंसभुजा धरि लै चले प्यारी चरन निहोर ॥ निरखत लीला रसिकजू जहाँ दान मान की ठौर ॥३५॥

★ राग बिलावल ★ गढ़तें ग्वालिनि ऊतरी शीश महीकौ माँट ॥ आड़ौ कन्हैया ह्वै रह्यौ रोकी व्रजवधू बाट ॥ नागरि दान दै ॥१॥ कहाँकी हौ तुम ग्वालिनी कहा तिहारौ नाम ॥ बरसानेकी ग्वालिनी प्यारी राधा मेरौ नाम ॥ मोहन जान दै ॥२॥ वृंदावनकी कुँजमें अचरा पकरयौ दौर ॥ नाम दानकौ लेत हौ लाला चाहत हौ कछु और ॥३॥ तुम अकेले हम अकेली बात नहीं कछु जोग ॥ तुमतौ चतुर प्रवीन हौ कहा कहेंगे लोग ॥४॥ सँगकी सखी सब दूरि निकसि गईं हम रोकी बनमाँझ ॥ घरतौ दारुन सास है अब होन लगी है साँझ ॥५॥ तुम ओढ़ी है कामरी हम पेहेरयौ है चीर ॥ उमड़ि घुमड़ि आई बादरी अब कहा बरसावत नीर ॥६॥ प्रेम मगन ग्वालिन भईं हरिकौ दरशन पाय ॥ मुख तें वचन न आवही सो लगी ठगौरी जाय ॥७॥ लै मटुकी आगें धरी परी श्याम के पाँय ॥ मन भावै सो लीजियै बचै सो बेचन जाँय ॥८॥ सुख बाढ़्यौ आनँद भयौ रही श्याम गुन गाय ॥ सुंदर शोभा देखिकें सूरदास बलि जाय॥९॥

★ राग बिलावल ★ हमारें गोरस दान न होय ॥ मोहन लाडिले हो ॥ हमारें महामद फिरत गुवार ग्वार हठ छाँड दै ॥ कबके तुम दानी भये हो कब हम दीनौ दान ॥ गाय चरावौ नंदकी तुम सुने अनोखे कान ॥मोहन.॥१॥ हौं दानी तिहुँ लोककौ तुम चारयौ जुगकी ग्वार ॥ दान न छाँड़ौं आपनों तेरौ राखों गहनें

हार ॥ नारि हठ छाँड दै हो ॥ हमारे उन्मत्त फिरत ग्वाल ॥२॥ रतन जटितकी ईंडुरी मेरौ हीरा जरीयौ हार ॥ ताहि तुम राखन चहत हौ ॥ कमरी के ओढ़न हार ॥मोहन.॥३॥ ब्रह्मा तानों पूरियो बुनी बैठ महेश ॥ सो हम ओढ़ी कामरी ताको पार न पावत शेष ॥ नारि हठ.॥४॥ नैन नचावत चातुरी हो बोलत मधुरे बोल ॥ मेरौ हार किरोरकौ तेरी सब गैयनकौ मोल ॥मोहन.॥५॥ यह गैया तिहुँ लोक तारनी चास्यौ जुग परमान ॥ दूध देहिं तिहुँ लोक कों तेरौ हार लै हों दश दान ॥ नारि हठ.॥६॥ काहेकों बाद करत हौ लाला काहे करत अतिसोर ॥ जैसी बाजे तेरी बांसुरी मेरे नूपुरकी घनघोर ॥७॥ या बंसी की फूँकपै मैं गोध लियौ उठाय ॥ ढीठ बहुत यह ग्वालिनी याकी मटुकी लेहु छिड़ाय ॥८॥ जसोदा बाँधे दामरी लाल दामोदर गोपाल ॥ हा हा कर पाँयन परै तब हमहीं छुड़ाये लाल ॥ मोहन.॥९॥ रार करत कित ग्वालिनीहो जमुना तीर जुन्हात ॥ चीर हरे हम तीरपै तापै इती इतरात ॥ नारी हठ. ॥१०॥ मोर पखौवा शिर धरें बाँस फूँकनी फेंट ॥ गरे गुंजनके हार बिराजत या सिंगार पर ऐंठ ॥मोहन.॥११॥ ये सब पंछी मुनि है इन तप साध्यौ बिरवान ॥ ये मोय निमिष न बीसरें मेरे जीवन प्रान ॥ नारी हठ.॥१२॥ हम बेटी बृषभान की तुम नंद महर के कान ॥ प्रेम प्रीत रुचि मान लै ढोटा अब जिन करै गुमान ॥ मोहन.॥१३॥ वृंदावन क्रीड़ा करी हो रच्यौ रास विलास ॥ सुर नर मुनि जै जै करें जन गावै माधोदास ॥मोहन.॥१४॥

★ राग बिलावल ★ छबीली नागरी अहो रूप की आगरी मेरौ मन मोहि लीयौ॥ दधिकौ दान लैहौं प्यारी तब तोय जान दैहौं ॥ध्रु.॥ और सखिनकों जान दै तू सुनि न्यारी ह्वै बात ॥ रह रहि ढोटा नंदके कित एतौ इतरात ॥२॥ बरजि सखा तू आपने ये करत अति अनीत ॥ दधि भाजन पटकत हैं झटकत हैं नई रीत ॥३॥ घेरौ कर ठाढ़ी करीं उतरत ही यह घाट ॥ दानके मिस लूटत हौ नित अबलन की बाट ॥४॥ दान काल्हि लै आवहीं हम दान निवेरें काल ॥

बूझौ जाय नंदबाबा सौं कबते है यह चाल ॥५॥ दधि माखन सबहीनकों सबै डार तुम देहौ ॥ एकौ बूँद न देहौं जो नाम दानको लैहौ ॥६॥ मिसही मिस झगरतहौ लाला दिन गयौ बनमाँझ ॥ अदल बदल मन दै लियौ हो उलटि चली घर साँझ ॥७॥ परी प्रीति गाँठि हृदें छोड़ी नहीं अब जाय ॥ मुख रिस मन आनंद इत उत परत न पाय ॥८॥ दधि लीयौ सब नंदलाल दई सुख की रास ॥ मन हरिकौ तब हर लियौ परी प्रेम की पास ॥९॥ व्रजवधू मानों ध्वजा बसन हरि तन फहेरात ॥ सूरदास मदनमोहन पिय पाछें चले जात॥१०॥

★ राग बिलावल ★ तुम परम चतुर व्रजनारि ॥ नागरि दान दै ॥ तेरौ दानी श्री नंदकुमार ॥ नागरि दान दै ॥ध्रु.॥ गोरस बेचन लै चलीं गोकुल मथुरा बीच । मटुकी ढोरी शीशतें गोरस की मची कीच ॥१॥ पीठि मोरि आगें चली उत्तर नारि बनाय । सारी झलकें बदनपै शोभा बरनी न जाय ॥२॥ टेढ़ी पाग बनायकैं दान कहत हौ लैन । ललित त्रिभंगी ठाढ़े भये सो ग्वालन दै दै सैन ॥३॥ काजर दीयें रगमगौ बोलत उलटे बैन । कर पल्लव दीये बदनपै तातें लटकि नचावत नैन ॥४॥ झगा झलमले बंदसौं चितवनि नयन विशाल। चटक मटक लकुटी गहे हट रोकी है व्रजबाल ॥५॥ शिर श्रीमंत जड़ाव कौ बेंदी दियें लिलार । तिरछी घूँघट चितवनी नव मोहे नंदकुमार ॥६॥ सखी सहेली जो मिलें जो कहूँ प्रीतम होय । नवकिशोर और नवबधू तामें यह मिस मिलनौ होय ॥७॥ चमकि चली चंद्रावली पायल पाँय बजाय । बैनी लटकै पीठि पै देखि मोहन रहे ललचाय ॥८॥ सब सुख पायौ सुंदरी वृंदाविपिन विलास। प्रभु मुकुंद गिरिधर मिले बल बल माधोदास ॥९॥

★ राग बिलावल ★ गोकुल की व्रजनार दह्यौ नित बेचन आवै । भूषन विविध सिंगार बने अति परम सुहावै । एकतें एक बिराज ही शोभा बरनी न जाय । बन्यौ कुंज फूल्यौ सखी सो रँग रस धर्‌यौ बनाय । कहत नंद लाड़िलौ ॥१॥ प्रात उठे नँदलाल सखा सब सैन बुलाये । सुनी दानकी बात सबै आतुर उठि धाये । पेंड़ौ रोक्यौ जायकै कालिंदी के तीर । नवलकुंज सुखदायिका हो तहाँ ठाढ़े

बलवीर ॥कहत.॥२॥ बनमें देखे श्याम सकल मिल भई इक ठाँई ॥ लागी करन विचार अब कहा करिहैं माई ॥ यह मारग हम छाँड़िकै और ही मारग जाँय ॥ यहाँ तौ ढोटा नंदकौ सो छीन छीन दधि खाय ॥ कहत. ॥३॥ सुनिकें धाये ग्वाल रोककें ठाढ़ी कीनी ॥ कित जाओगी भाज दुहाइ नँद की दीनी ॥ दान कृपाकर दीजियै छाँडो अधिक सयान ॥ दान हमारौ लेहूँगो आली राखों तेरौ मान ॥कहत.॥४॥ कब दीनौ हम दान कबै तुम भये जु दानी॥ सुनी न कबहूँ बात जाय बूझो नँदरानी ॥ उदर बसे तुम देवकी आये गोकुल भाज ॥ जीये झूँठौ खायकें अब क्यों नहिं आवै लाज ॥कहत.॥५॥ जोबनकौ अति गर्व ग्वालि मुख बोल सँभारी । दूध दही के मद देत सुधेंई गारी । नंददुहाई देत हों लेहुँ सबनकों लूट । भूषन बसन छिनायकें सो हार सबनके टूट ॥कहत.॥६॥ लेत लूटकौ नाम कहा कोऊ तेरी चेरी । कब लीनौ तुम दान कबै दुहाई फेरी । शिर पर राजा कंस है बोलौ बचन विचार । जो अबकें सुन पावही तौ दुख पावै नँदनार ॥ कहत. ॥७॥ तू तो ग्वालि गमार कहा मोकूँ समझावै । शिव विरंचि सनकादि निगम मेरौ अंत न पावै ॥ भक्तनकी रक्षा करूँ दुष्टन करूँ संहार । कंस केश गहि मारिहों सो धरन उतारूँ भार ॥कहत.॥८॥ बंधन पाये मात तबै क्यों न ऐसी कीनी । मथुरा छाँडी रात सेंन गोकुलमें दीनी । बहुत बड़ाई करत हौ सोचौ मनहिं बिचार । खाये आधे बेर के सो बनमें होत कुमार ॥कहत.॥९॥ तप करती नँदनारि माँग मोपै वर लीनौ बचन वेद वपु धार आय गोकुल सुख दीनौ ॥ तू कहा जानें बावरी हम त्रिभुवन पति राय ॥ जीव जल थलमें वसुँ सो घट घट रह्यौ समाय ॥कहत.॥१०॥ जो तुम ऐसे ब्रह्म करत क्यों घरघर चोरी ॥ मैं पकरे जब आय लियौ पीतांबर छोरी ॥ तनक दहीके कारनें बाँधे यशोमति मात ॥ हम निज बंध छुड़ावहीं हो बोलत कहा इतरात ॥कहत.॥११॥ नल कूबरके हेत आपसुँ जाय बँधाये ॥ तोरे तरुवर जाय बचन मुनि सत्य कराये ॥ मनमें सोचौ राधिका चीर हरनकी बात ॥ नगन जमुनातें नीकसी हो आई हाहा खात

॥कहत.॥१२॥ ढीठ भये तुम कान्ह बचन बोलत जु कटोरे ॥ बनहि चरावौ गाय फिरौ ग्वालन संग दौरे ॥ वे दिन बिसरे साँवरे छाक छीन छीन खात ॥ ऐड़े ऐड़े जात हो सो बोलत कहा इतरात ॥ कहत.॥१३॥ अवनि असुर अति प्रबल मुनिजन कर्म छुड़ाये ॥ गौ संतनके हेत देह धरि गोकुल आये॥ जेते संग गुवाल हैं तेते हैं सब देव ॥ हमनें गर्व इंद्रको हास्यौ हो सो करत हमारी सेव ॥कहत.॥१४॥ बनमें बोलत बोल कहा अब मोहि सुनावै ॥ जानी तिहारी रीत कहा बलवंत कहावै ॥ जो ऐसे बलवंत हौ तो काटौ वसुदेव फंस॥ छै बालक जब मारीयौ तब क्यों न मास्यौ कंस ॥कहत.॥१५॥ कंस केश गहि मारि वसुदेव बंद छुड़ाऊँ ॥ उग्रसेनकों राज दऊँ शिर चँवर ढुराऊँ ॥ भवन चतुर्दश गावहीं यह मेरौ परताप ॥ मल्ल कुवलिया मारहूँ हों तोरूँगो गहि चाँप ॥१६॥ कहा अधिकाई देत कान्ह हों नीकें जानों ॥ जात पात कुल खोज कछु मोते नहिं छानों ॥ लरिकनके सँग खायकें नाम धस्यौ है ग्वाल ॥ अब कैसें दधि खाउगे सो हमतौ हैं व्रजबाल ॥कहत.॥१७॥ दधि भाजन लऊँ छीन कंठ मुक्ताफल मोरूँ ॥ धरूँ पाणि पर पाणि गहि तनमनिया तोरूँ ॥ तुम बेटी वृषभानकी हम हैं नंदकुमार ॥ जाके बल पै आई हौ तापै जाउ पुकार ॥कहत.॥१८॥ हम तौ जात अहीर दह्यौ नित वेचन आवें ॥ सुन्यौ न दधिको दान कहा अब नई चलावें ॥ तुम अनबीधे साँमरे रोकत हो बनमाँह ॥ या मुख ते दधि खाउगे सो बैठ कदँब की छाँह ॥कहत.॥१९॥ ग्वाल नचावत नैन बैन सुधे नहीं बोलौ ॥ हम अनबीधे नाहिं तुम अनबीधी डोलौ ॥ जबतें व्रजमें हों भयौ तब तें लीनौ दान ॥ जाय कहों व्रजराजसों तेरौ दूर करै अभिमान ॥कहत.॥२०॥ टेढ़ी बांधौ पाग कान्ह टेढ़े रहौ ठाढ़े ॥ रोकत हौ व्रजनार रावरे घरके बाढ़े ॥ जाकौ आसरौ पायकें भले बने हौ नाथ ॥ भाज सखा सब जाँयगे कोउ न आवे साथ ॥कहत.॥२१॥ ऐसौ भूपति कौन जो हम पै हाथ उठावै ॥ बंदीजन द्विज वेद पढ़ैं द्वारे नीत गावै ॥ ब्रह्मरूप उत्पन्न करूँ रुद्ररूप संहार ॥ विष्णुरूप रक्षा करूँ सो मैं हूँ नंदकुमार ॥कहत.॥२२॥

जो तुम ऐसे ब्रह्म हमारे छीकें ढूँढ़ौ ॥ घर घर माखन खाय कान तिरिया सँग सूँढ़ौ ॥ तुम्हें दोष नहीं सामरे जाये कारी रात ॥ बनमें ब्रह्म कहात हौ तौ क्यों तजे पिता और मात ॥कहत.॥२३॥हों वृंदावन चंद रह्यौ सब माँझ समाई॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सबै मेरी ठ्कुराई ॥ तू जो बदत है बावरी कहा है मेरौ नाम॥ गज पिपीलिका आदि दै है सब मेरौ धाम ॥कहत.॥२४॥ दधि खैवेकी बात माँग सूधें ही लीजै ॥ काहे कौ करत विवाद कान ऐसें नहीं कीजै ॥ जो एसे बलवंत हो तौ मथुरा काहे न जाऔ ॥ कंस मार घर आवही हो तब मेरौ दधि खाओ ॥कहत.॥२५॥ सुन राधे नव नार जबै हम मथुरा जैहें ॥ करने हैं बहु काज फेरि नहीं गोकुल ऐहें ॥ कौतुक देख्यौ जो चहें तौ अबहीं दिखाऊँ तोहि ॥ अब कौ गयौ न आवहूँ सो फिर देखौ नहीं मोहि ॥कहत.॥२६॥ काहेकों मथुरा जाऔ बचन ऐसे जिन बोलौ ॥ हम तुम रहें समीप सदा गोकुल में डोलौ ॥ दूध दही की को गिनें नित प्रति माँगो दान ॥ तुम्हें लाज या बातकी सो हमें होत अभिमान ॥कहत.॥२७॥ तुम अबला अज्ञान हमारे कृत्य न जानौ ॥ पठयौ काली देश कीयौ दावानल पानौ ॥ सुरपति ब्रज पर कोपियौ गिरिवर लियौ उठाय ॥ बनही बकासुर मारियौ हो बालक बच्छ छुड़ाय ॥कहत.॥२८॥ मुदित भईं ब्रजनार दह्यौ लै आगें राख्यौ ॥ ग्वालन दीनों बाँट कछुक लै आपुन चाख्यौ ॥ प्रीति पुरातन जानिकें मिली वृषभान कुमार ॥ तन मन अरप्यौ श्यामकौं बस कीने गिरिधार ॥कहत.॥२९॥ तुम त्रिभुवनके नाथ करौ सोई जिय भावै ॥ तिहारे गुन अरु कर्म कछू हम कहत न आवै ॥ शेष सहस मुख गावहीं ध्यान धरत त्रिपुरार ॥ हम अहीर ब्रजवासिनी क्यों कर पावें पार ॥कहत.॥३०॥ श्रीराधाकृष्ण विवाद परस्पर गाय सुनावै ॥ मनवांछित फल होय हृदैको ताप नसावै ॥ श्यामा श्याम बिराजहीं अवलोकन सुखरास ॥ यह बानिक मेरे बन वसो हो बलि बलि कुंभनदास ॥कहत.॥३१॥

★ राग बिलावल ★ ठाढ़े लाल साँकरीखोर ॥ निकसीं आय सकल ब्रजसुंदरी

आगे नवल वृषभानकिशोर ॥१॥ गहि गहि बाँह रोकि सब राखीं नागर नंद किशोर ॥ हँसि हँसि कहत दान अब लैहों मनही हरत नयनकी कोर ॥२॥ आवत जात सदा यह मारग अब लालन राखी तुम घेर ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर मुसिक्याने फिरि फिरि चंदबदन तन हेर ॥३॥

★ राग बिलावल ★ ठाढ़े लाल सखन मधि छबिसों दान केलि ब्रजबीथनि ठानी ॥ गोरस लै लै आवति सुंदरि बात करत सबहिन मनमानी ॥१॥ कोऊ तमक त्रिय कोऊ निरखत पिय कोऊ कहति अतिही मृदुबानी ॥ हँसि हँसि सुंदर मुख अवलोकत सुंदरलालके रूप लुभानी ॥२॥ हँसि हँसि बात करत जो परस्पर अँग अँग अति ही सिथलानी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन रसिकके छिनछिन वे सब हाथ बिकानी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ झगरौ भलौ बन्यौ बनमाँझ । ऐसें रही नंदनंदनसों नवल नवल जुस्यौ सब साज ॥१॥ इत इनकें उत नवललालकें उमगि उमगि रस बाहिर आयौ ॥ लई उठाय लाल भरिकोरी फिरिफिरिकें रस बहुत बढ़ायौ ॥२॥ कुसुम खसे बैनी शिर छूटी काहु न तनमन रही सँभार ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालनें अदलबदल पहिरे उपहार ॥३॥

★ राग बिलावल ★ दानही दान करी नकमानी कहा पस्यौ मेरे ख्याल लालरे । जो हम यह व्योहार छाँड़िदें दही महीकौ भये कहाँके दानी ॥१॥ कीजे नफा कों होत हानि सोई सोनों जाहु जर जाते टूटें कान । कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे तुम व्योसै जैसी हम व्यौसान ॥२॥

★ राग बिलावल ★ सुनो ब्रजनाथ छाँडौ लरिकाई ॥ बिन रस प्रीति कहाँ ते उपजे तुम ठाकुर कित करत बरियाई ॥१॥ कर गहि बाँह नाह अपने ज्यों इकटक करी मारगमें ठाढ़ी । कबहुँ छुवत उर कबहुँ तोरत लर कबहूँ गहत कंचुकी गाढ़ी ॥२॥ तेरे नयन रोसमें भामिनि जान देहु मोहि नंद दुहाई । परमानंदस्वामी रतिनायक प्रेंम बचन कहि भलौ मनाई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ ऐसौ को है जो छुवै मेरी मटुकी अछूती दहेंड़ी जमी । बिन

माँगें दीयौ न जाय माँगे ते गारी खाय केतेई करौ उपाय डराये नहिं मेरेतें गोरसकी कहाँ धौं कमी ॥१॥ औरकौ दह्यौ छिलछिलौ लागत में औंट जमायौ भरकें तमी । नंददास प्रभु वड़ेई खवैया मेरेतौ गोरसमें बहुत अमी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ अरी यह कोहैरी जाहि दान जो दैहै गोवर्धनके ग्वेड़े ॥ खेतन हार न गाम मढ़ैया कान्हर डोलत [illegible]ड़े ॥१॥ बाप देत कर कंसराजाकों पूत जगाती डोलत मेड़े ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर नीके जानति चले जाहु किन मेड़े ॥२॥

★ राग बिलावल ★ अरी हम दान जो लैहें रस गोरसकौ यही हमारौ काज ॥ हम दानी तिहुँलोकके चार्यौ युगमें राज ॥१॥ बोहोत दिनन तुम गई अछूती दान हमारौ भाज ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर वृंदावनमें गाज ॥२॥

★ राग बिलावल ★ अरी यह भये अनोंखे दानी ॥ सूधेसूधे किन जाहु चले मग यहै बात सब जानी ॥१॥ दिन दिन यह गति नाँहि भलीरी करत आप मनमानी ॥ हमहि न दोष आवै कछू यहरी जों सुनिहै व्रजरानी ॥२॥ वचन रचन अति कहत ग्वालिनी बिचबिच मृदु मुसिक्यानी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल तब करत कछू दृगसानी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ ग्वालिनि दान हमारौ दीजे चाल चलत अति जोबन माती॥ सुनिरी भटू दिन दिनकी यह गति किहि विधि अब जो भरै बहुभाँती ॥१॥ दानदान करिकें यह ढोटा चाल चलत औरन जो सुहाती ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालसों मुरमुर कहत सबै मुसिकाती ॥२॥

★ राग बिलावल ★ दान माँगतमें मेरौ मन हरि लियौ कन्हाई । मृदु मुसिकाय चपल दृगनतें अति बेधत हैं माई ॥१॥ अंग अंग आतुर अति सजनी रसना कहत न आई । हँसि पटपीत गह्यौ जब प्यारी सो रस सिंधु न समाई ॥२॥ अति रनधीर परस्पर दोऊ क्यौंहूँ मन न अघाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन रसिकवर किहि विधि कौन लखाई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ दानके मिस यह ढोटा करत अटपटी बात ॥ गहि पट

झकझोरत अति छविसों रूप भर्‍यौ इतरात ॥१॥ मानत नाँहि न डर काहूको परसत है त्रिय गात ॥ कहा कहियै इनतो यह माँड़ी कहेंगी जाय अब मात॥२॥ हँसि मुसिक्याय निहारत प्यारौ आनँद अँग न समात ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन भाम हँसि रसहि रस अरुझात ॥३॥

★ राग बिलावल ★ या ढोटातें हम हारी ॥ गोरस लै घर जाँय आपने बाट गहत अगवारी ॥१॥ कबहुँक आय अचानक शिर तैं मटुकी लेत उतारी ॥ कबहुँक ग्वाल बाल सबकों मिलि सिखै देत अति गारी ॥२॥ दानमान सबै हरि विधिकौ याकी गति सबतें अति न्यारी ॥ रूप भर्‍यौ इतरात चपल अति रोकत हैं व्रजनारी ॥३॥ यहि न दोष हियौ आपुनही तुम धर कोऊ न बिचारी॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन परस्पर भरत दृगन अँकवारी ॥४॥

★ राग बिलावल ★ हँसि मृदुलाल कहत ग्वालिनसों दान हमारौ दीजै ॥ अति नव नेहभरी वह भामिनी कहत नहिं नहिं लीजै ॥१॥ भरत परस्पर भाव दृगनसों सुधा समूहसों भींजे ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल अब मनमानै सो कीजै ॥२॥

★ राग बिलावल ★ लालन नईजु चाल चलाई ॥ या मारग हम नितप्रति आवत कबहुँ न दान दियौ मेरी माई ॥१॥ झुँठेई ठटकि रहत अपने मन कहत सकुच शिरनाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर दान लीजे दीजे दरश मुसिकाई ॥२॥

★ राग बिलावल ★ लैहोंरी अब लैहों गोरसकौ यह दान ॥ हँसि गहि हिय बनमाल मनोहर आनँद उर अति आन ॥१॥ हँसि मृदु बचन कहत व्रज सुंदरि ऐसें न कीजै कान्ह ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालसों हँसत लसत मनमान ॥२॥

★ राग बिलावल ★ लालन कहा ऐसें बहलावत ॥ जानत नांहि व्यथा काहूकी चतुरन माँझ कहावत ॥१॥ यह मन राच्यौ याही छविसों छिनु इत उत न डुलावत ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन रसिक ह्वै कहा मनुहार करावत ॥२॥

★ राग बिलावल ★ अहो तोसौं नंदलाड़िले झगरूंगी ॥ मेरे संगकी दूरि जाति हैं मटुकि पटक कें डगरूँगी ॥१॥ भोरहि ठाढ़ी कित करी मोकों तुमें जानि कछू काज न करूँगी ॥ तुमारे संग सखानके देखत अवही लाड़ उतारि

धरूँगी ॥२॥ सूधे दान लेहु किन मोपै और कहा कछू पाँय परूँगी ॥ नंददास प्रभु कछु न रहेगी जब बातन उघरूँगी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ मतिमति जसुमतिके लाल देखत सब ग्वाल बाल बिनती सुनि हा हा हरि छूवौ न देह मेरी ॥ रोकि रहत मारगमें इत उत नहीं जान देत ठाढ़े लियें लकुट हाथ राखी सब घेरी ॥१॥ एतौ कहा बल दिखावत दोऊ दृगन हों नचावत भावत नहीं हमें ढीठ लंगर गत तेरी ॥ रसिक प्रीतम छाँड़ि देहु चाहों सोई माँगि लेहु नाँहि न कछु है सँदेह हों तौ निजचेरी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ यह तौ एक गाम को बास ॥ कहौ कैसेंकै बसिये निशदिन निमिष न छाँड़त पास ॥१॥ यह घाटी पेंड़ौ सब ब्रजकौ और न कहूँ निकास॥ नंदनंदनकौ सहज थान यह बालक वृंद विलास ॥२॥ कबहुँक भोजन छीन लेत हठ कबहूँ करत दधि नास ॥ कबहुँक भुज गहि चलत कुंजमें यह गति कहियै कास ॥३॥ बोलि न सकों सकुच अति जियमें लोकलाज कौ त्रास॥ गिरिधरलाल जानि पाये हौ जानत कुंभनदास ॥४॥

★ राग बिलावल ★ मैं तोसों केतिक बार कह्यौ ॥ यह मारग इक सुंदर ढोटा वरबट लेत दह्यौ ॥१॥ इत उत सघन कुंज गहबर में तकि मारग रोकि रह्यौ॥ अति कमनीय अंग छबि निरखत नेंकुं न परत रह्यौ ॥२॥ लोचन सुफल होत पल निरखत बिरह न जात सह्यौ ॥ परमानंद प्रभु सहज माधुरी मनमथ मान ढह्यौ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ अब कछू नई चाल चलाई । तुमहौ नंदके लाड़िले मोहन छाँड़ो यह लरिकाई ॥१॥ घाट बाट गिरि गहवर कंदर सदा अटक तोहि भावै। गोकुल भये हठीले दानी मारग चलन न पावै ॥२॥ चोली चीर निहारत अंचल छाँड़ि लाल यह हाँसी । परमानंद प्रभु छाँड़ि अटपटी एकगामके वासी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ गोरस राधिका लै निकरी । नंदकौ लाल अमोलौ गाहक ब्रजतें निकसत पकरी ॥१॥ उचित मोल कहि या दधिकौ लेहुँ मटुकिया सगरी। कछुक दानकौ कछु एक लैहों कहाँ फिरैगी नगरी ॥२॥ नंदरायकौ कुँवर

लाड़िलौ दधिके दान मिस झगरी ॥ परमानंद स्वामीसों मिलिकें सर्वसु दै डगरी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ अरी यह ढोटा अति जु छबीलौ ॥ माँगत दान गहत अचरा मेरौ मानत नाँहि हठीलौ ॥१॥ अति सुकुमार हरत मन सबको अँग अँग अतिहि रसीलौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन रसिक अति रूप रास गरवीलौ ॥२॥

★ राग बिलावल ★ अरी यह को हैरी जात मेरे या गहवर बनमें बाँह बरा बाजूबंद वारी ॥ लर लटकन लटकत गजमोती चलत चाल जोबन मतवारी ॥१॥ दधिकौ दान देत नहीं सुंदरि कहेत कुँवर गिरिधारी ॥ रसिक शिरोमणि नंदलाड़िलौ दानलियौ और सुरत निवारी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ लाल तुम हमपै माँगत दान ॥ नितही रोकि रहत ठाढ़े ह्वै नितही आवन जान ॥१॥ सैंन मारिकैं सखा सिखाये सब मिलि राखीं घेर ॥ माथेतें छीनो दधि मटुकी हँसत बदन तन हेर ॥२॥ फिरि फिरि लाल कहत ग्वालिनसों मेरे नयनन प्रान ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल तुम ठान्यो हमसों ठान ॥३॥

★ राग बिलावल ★ लाल तुम पकरी कैसी बान ॥ जबहीं हम आवत दधि बेचन तबहीं रोकत आन ॥१॥ मन आनंद कहत मोंहो की सी नंदनँदनसों बात ॥ घूँघटको ओझिल ह्वै देखत मनमोहन करि घात ॥२॥ हँसि हँसि लाल गह्यौ तब अचरा तनक दही जो चखाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालनें खायौ दियौ लुटाई ॥३॥

★ राग बिलावल ★ भोरही कान्ह करत मोसों झगरौ ॥ सबन छाँड़ि करत हठ मोसों नित उठि रोकि रहत है डगरौ ॥१॥ गोरस दान सुन्यौ नहीं देख्यौ किन लिखि दियौ दिखाऔ कगरौ ॥ बिना बोंहनी छूवन नहीं दैहौं यह सब छीनि खाउ किन सगरौ ॥२॥ चुंबत मुख उर लावत पकरत टेव न गई झुकतही अगरौ॥ परमानंद सयानि ग्वालिनि छाँडि नहीं धरतहों पगरौ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ श्याम सब बतियाँ कहि दैहौं ॥ सूधे चलौ जसुमतिजूके

आगें कुटिल भौहें कीयें न डरैहौं ॥१॥ मैं जु कही बनबीथिन महियाँ तुम भुरवत पिय हौं न भुरैहौं ॥ हाहाकर कोटि पायन परि हौं अपनी रिस आज बुझैहौं ॥२॥ हौं मिलिहौं पिय निशदिन ऐसें बोहोरचौ श्याम तुमैं क्यों पैहौं॥ सूरदास गोपी उर लावत जिन डरपौ कछु हौं न चलैहौं ॥३॥

★ राग विलावल ★ ऐसे चतुर कहा तुम आये ॥ सब गुन भरे भये ताहीतें बोहोत जतन करि मैया जाये ॥१॥ काहेकों बात बनावत ठाढ़ी सोई दैहौं जो मेरो आवै ॥ आपुन कहत कहावत इनपै सुनि सुनि वचन लाल सुख पावै॥२॥ हँसि हँसि कहत लाल सवहिनतें अव मोपे झगरचौ नहीं जाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर व्रजसुंदरि भेट करी यों जाई ॥३॥

★ राग विलावल ★ जानत नहीं कहावत दानी ॥ छाँड़ि देहु घर जाय सवारी झूँठी लाल तुम अरवी ठानी ॥१॥ नितहीं नित आवत यह मारग वातन ही करि डारत घानी ॥ यह सुनि हँसि वोले नंदनंदन तू ग्वालिन अति खरी सयानी ॥२॥ ऐसें वचन कहत नवनागरि निरखि वदन तन मुरि मुसिक्यानी॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालनें सवके अंतरघटकी जानी ॥३॥

★ राग विलावल ★ काहेकौ माँगत तुम दान ॥ ऊधम करि रहे वात सब समुझी जाते तुम टानी यह टान ॥१॥ काहेकों करत अवार लाड़िले छाँड़ौ हमारौ आवन जान ॥ तब हँसि कहत रावरे मेरे भलौ बन्यौ लैवे कौ दान ॥२॥ पहेलें खेल कियौ मटुकीसों तब मिस सों गहि बाँह मरोरी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर प्रीतमनें कैसें उर मोतिन लर तोरी ॥३॥

★ राग विलावल ★ गिरि चढ़ि टेरत ग्वालनसों कौन वनतें गाय बिड़ारी ॥ पसु पंछी दिन करत कुलाहल सघन वन भई उजियारी ॥१॥ कर कंकन किंकिनी नुपुर धुनि तिनके सब अरु बरुहा गुंजारी ॥ कोटि प्रकास भयौ रवि ससिकौ बनमें आई गोप कुमारी ॥२॥ आई भलें जानि जिन पावै पूरण इच्छा भई हमारी ॥ सूरदास रस प्रगट ग्वालिनि लेहुँ दान तू ही अधिकारी ॥३॥

★ राग विलावल ★ मटुकी लई उतारि नंदलाल ॥ दान दान कहि लूटत हमकों

परै हमारे ख्याल ॥१॥ चलीरी सब मिलि जसोमती आगें कौन चलाई चाल॥ सूरदास प्रभु क्यों निबहैगी नित प्रति मदनगुपाल ॥२॥

★ राग विलावल ★ मो मन मोह्यौरी लालन कहि कहि थोरी थोरी बतियाँ ॥ माँगत दान दियौ सर्वसु रिस रोस गयौ जिय तें मैं न जान्यौ होंउगी कौन भतियाँ ॥१॥ अटपटी मुरझाय रही देखत किसोर मोकौं भूलीरी सब गतियां॥ रामदास प्रभु अंग अंग नागर तातें भुजनि चाव लै लगाई छतियाँ ॥२॥

★ राग विलावल ★ तुम सुनौ भैया वलवीरके ॥ जाति पाँति नीकें हम जानत वासी याही तीरके ॥१॥ जान देहु घर जाँहिं आपुने नहिं सहायक भीरके ॥ वात वातकौ मरम न जानत पावनहारे छीरके ॥२॥ घाट बाट रोकत जु रहत हौ मोल करत जनु चीरके ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल तुम दानी जमुना तीरके ॥३॥

★ राग विलावल ★ अबहो मेरे ललना श्री वृन्दाविपिन सुहावनो और बंसीवट की छाँय हो हिलमिल सव दधि लूटिये ॥१॥ प्रात उठे नंदलाल हो लीने सखा बुलाय हो हिलमिल. ॥२॥ सुवल सुबाहु अरु श्री दामा भेख विचित्र बनाय हो हिलमिल. ॥३॥ मोरमुकुट कटि काछनी अरु पीताम्वर वनमाल हो हिलमिल. ॥४॥ करमें लकुटी विराजही घेर लिये व्रजनार हो हिलमिल. ॥५॥ सखी मध्य उत राधिका अरु सखन मध्य नंदलाल हो हिलमिल. ॥६॥ दोऊ दल अति प्रबलही इत गोपी उत ग्वाल हो हिलमिल. ॥७॥ रोकी सब व्रजनागरी अरु घेर घेर लियो दान हो हिलमिल. ॥८॥ ग्वालिन रोकी ना रहे हो तुम सुनो नंदजूके कहान हो हिलमिल. ॥९॥ ऐक भुजा कंकन गह्यो भुजा सोहे हार हो हिलमिल. ॥१०॥ चितवन में न हर लियो अरु हाँती वृषभान कुमारी हो हिलमिल. ॥११॥ मिसहिं मिस झगरो भयो वृन्दाविपिन मंझार हो हिलमिल. ॥१२॥ मटुकी में लकुटी दई दई सब दधि गिराई हो हिलमिल. ॥१३॥ दधि चाख्यो नंदलाड़िलो और मुदित भई व्रजनार हो हिलमिल. ॥१४॥ पिय प्यारी रस विलसही विट्ठल बलि बलिहारी हो हिलमिल. ॥१५॥

★ राग विलावल ★ मोहनलाल मिले हो, तेरे उन्मद फिरत ग्वाल हठ छांड देहो।

कबके तुम दानी भये कब तुम लीनो दान। गैयां चरावो नंदकी, हम सुने अनोखे कान्ह ॥१॥ मोहन जानदे. ॥ यह गैयां त्रिलोकतारनी तुम चारो जुग की नार। दान हम छांडे नहीं, तेरो गहने राखो हार ॥२॥ नागरी दानदे. ॥ नैन नचाव हो चातुरी, तुम बड्डें बोलत बोल। मेरो हार करोरको तेरी सब गायन को मोल ॥३॥ मोहन जानदे. ॥ यह गैयां त्रैलोककी, सब बिध पूरे काम। दूध देहें त्रैलोकमें तेरो हार लहे दश दाम ॥४॥ नागरी दानदे. ॥ रतनजटितकी इढोनीयां मेरो हीरा जड़ियो हार। ताको तू राखन कहत है, कँमरीको ओढनहार ॥५॥ मोहन जान है. ॥ ब्रह्मा तानो पूरीओ बुनीओ बैठि महेश। सो हम ओढे कामरी जाको पार न पावे सेस ॥६॥ नागरी दानदे. ॥ लाल लकुटियां कर धरी बांस फूंकनी फेट। सीस मोरकी चंद्रिका अब एते साज पर एँट ॥७॥ मोहन जानदे. ॥ गर्व करत कित ग्वालनी जमुना तीरे न्हाई ॥ चीर हरे हम तीरतें अव एतो कहा इतराय ॥८॥ नागरी दानदे. ॥ जसोदा बांध्यो वामने, दामोदर सुकुमार। हाहा करी रोयो परे तब हमही छुड़ावनहार ॥९॥ मोहन जानदे. ॥ गर्व करत कित ग्वालनी जब आवेगी यह घाट। दान हम छोड़े नहीं तेरे बाबासों न डरात ॥१०॥ नागरी दानदे.॥ हम जु सुता वृषभानकी तुम नंद महरके लाल। प्रेम प्रीत रस मान लै ढोटा जिन करे ईतनो आल ॥११॥ मोहन जानदे. ॥ वृंदावन क्रीडा करीहो, रचियो रासबिलास। जे जे जे सुरनर करे गुन गावे माधोदास ॥१२॥

★ राग विलावल ★ ढोटा काहे कों बढावत रारि मोहि घर जांन दे ॥ ये नैना तें काहा पाये दधि की बेचन हार जोवन मद माती फिरे प्यारी गुजर गर्व गवार॥१॥ तुम गोकुल की ग्वालिन काहे करत अबेर ॥ दान हमारो दीजियें सो ग्वालिनी राखी घेर ॥२॥ तुम ढोटा ब्रजराज के कान्ह तुम्हारो नाम ॥ हठ जिन कीजे सावरे बसीयत इक ही गाम ॥३॥ दधि वेचन ग्वालिन चली मिले ओंचका कान ॥ रसिक रसीले साँवरे गही मटुकिया आन ॥४॥ दानी नंदकुमार नें तानी भोंह कमान ॥ जात कहा ब्रज सुंदरी गुजर दे हो हमारो दान ॥५॥ तुम दानी कब के भए कब हम दीनों दान ॥ गाई चरावत नंद की भए अनोंखे

कान ॥६॥ मोर मुकुट माथें धरों रिमझिम बरषे मेह ॥ मेरी मटुकिया छांडि दे लाला और सबन की लेह ॥७॥ मोर मुकुट माथे धरों जासों बढे सनेह ॥ कह्यो हमारो मानीये अचरा छांडि तुम देह ॥८॥ हों गुजरि राजा कंस की गहि पकराऊं तोहि ॥ आधी राति के भाजीयों काहे को परगट हो हि ॥९॥ भुजा ऊखारो तेरे कंस की करो मथुरां कों राज ॥ दान हमारो दीजिये गुजर काहे कों बढ़ावत रार ॥१०॥ तुम दानी कब के भए कब हम दीनो दान ॥ हमपि छाप दिखराव ही तुम कापें पहिराचो दान ॥११॥ लें आए तो लेंहिगे कबहु न करि हें कान ॥ मोहि दुहाई नंद की तुम देहो हमारो दान ॥१२॥ सखियन मधि राधिका ग्वालन मधि बलबीर ॥ झगरों ठानो दानकों कालिंदी के तीर ॥१३॥ बारबार हो बरजती कह्यों हमारो मान ॥ मारौंगी रे ग्वालिया मोहि दाऊ की आन ॥१४॥ मोर पखौआ सिर धरो बांस फुंकनी फेंट ॥ हाथ लकुटीया गहि लई यह सिंगार पर ऐंठ ॥१५॥ ब्रिन्दावन की कुंज में मोहन दीनी टेर ॥ नंद महरि के लाडिले ग्वालिन राखों घेर ॥१६॥ माय तुम्हारी जानिये बाप चराई गाय ॥ तुम चराये जेंगरा अब मांगत दधि का आय ॥१७॥ मोर चंद्रिका सिर धरो मुख मुरली घनघोर ॥ कुंज गलीन राधा रवन जै जै जुगल किसोर ॥१८॥ गुंजावली चंदन तिलक सुढ़ार ॥ पीतांबर छुद्र घंटिका अरु बैजंती माल ॥१९॥ मोर मुकुट माथें धरो धुंघर वारे केस ॥ यह बांनिक मेरे मन बसों प्यारो नागर नटवर भेष ॥२०॥ दान लीला श्रीकृष्ण की सुनें सुनावें सब कोय ॥ प्रेम भक्ति जिनके बढ़े हरि भजि निरमल होय ॥२१॥ दधि मटुकी आगें धरी ग्वालिन लागी पाय ॥ हिलि मिलि प्रीत बढ़ाई के 'माधोदास' बलि जाय ॥२२॥

★ राग बिलावल ★ मील पाच सात निकसी दधि बेचन बीच मीले नंद नंदनरी॥ मुखचार तंबोल बड़ी अँखियाँ अलके भँवरे मन फंदनरी ॥१॥ मृदु बोलत बेन गरुर भरे ऊर सुन्दर सोरज चंद नरी ॥ तब मांगत दान सबे ठठकी मुख बाद रच्यो दंदनरी ॥ चलकेन सके ईततें ऊतते अटक्यो मन नैनन बंदनरी ॥२॥ लख के ब्रजाधीश स्नेह बढ़्यौ अत गावत हें गुण छँदनरी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ कौन दान दानीको ॥ करन लागे नई रीत अनोखे दूध दहींको महीको अजहु हम जानीको ॥१॥ करतहो विचित्र चाल सुबल तोकपें चखाय काहुसों कहेत गाढो जमायो काहुसों कहेत पानीको ॥ नंददास आसपास लटक रही कनक बेलि भोंहनकी अमेटनमें सबही अरुझानीको ॥२॥

★ राग बिलावल ★ आज हम करीहे नंदजुकी कांन ॥ बरज जसोदा या ढोटाकों हम लुटी पहचान ॥१॥ बाटघाट सखा संग लै मारग रोकत आन ॥ सूरदास प्रभु झगरत ठाढ़े प्रीत पुरातन जान ॥२॥

★ राग आसावरी ★ गोवर्धन गिरिधारी ठाढ़े दान हमारौ दीजे भामिनि ॥ साँमल पीतपट ओढ़ें ज्यों घनमें चमकत दामिनि ॥१॥ बग पंगति मोतिन की माला इंद्र धनुष गुंजा सब कामिनि ॥१॥ द्वारिकेश प्रभु रीझ लई तब दीनौ दान सकल सब स्वामिनि ॥२॥

★ राग आसावरी ★ तेरौ कोऊ है रे कहैया सुनैया कन्हैया ॥ दधि मेरी खाय मटुकिया फोरी ओर प्राननके लिवैया ॥१॥ हार मेरौ तोस्यौ कमल कर मोस्यौ और फारी है उरकी कंचुकिया ॥ धोंधीके प्रभु हाथ दूर राखौ जानेंगी सास ननदिया ॥२॥

★ राग आसावरी ★ कैसी यह परी बान बाट चलत गहत पानि जानि जुवतीनकौ अचरा गहि तानौ ॥ अबलों लरिकाई मानि राखी मैं बहुत कानि गुनकी हौ खानि तुम नीके करि जानौ ॥१॥ छाँडौ कपड़ानि लाल देखत सब सखा आँन लोक लाज बड़ी हानि मानहु न मानौ ॥ रसिक प्रीतम रसके दानि इह धौं कहा अकुलानि समयौ पहिचानि लंगर नीकें बतरानो ॥२॥

दान के पद

★ राग आसावरी ★ या गोकुलके चोहटे रंग राची ग्वाल । मांडी कन्हैयाने रारि सुघर सलोनि हो रंग राची ग्वाल ॥१॥ दान दे दान दे ग्वालिनी ॥रंग॥ ठाडी रहो व्रजनारि ॥सुघर॥२॥ कबके तुम दानी भये ॥रंग॥ कहांके

हो बसनार ॥सुघर॥२॥ वृंदावन के दानी हे ॥रंग॥ गोकुलके बसनार ॥सुघर॥३॥ तुम कहांकी हो ग्वालिनी ॥रंग॥ दधि कहुं बेचन जाय ॥सुघर॥४॥ बरसानेकी ग्वालिनी ॥रंग॥ मथुरा बेचन जाय ॥सुघर॥५॥ गोरस दान न देहि हो ॥रंग॥ कैसे हो तुम ढीठ ॥सुघर॥६॥ दान हे लवंग सुपारियां ॥रंग॥ दान हे मीन मजीठ ॥सुघर॥७॥ गोरस दान नहीं छांड्हु ॥रंग॥ जित भावे तित जाय ॥सुघर॥८॥ जाय पुकारो कंसपे ॥रंग॥ पकरावो मोहि जाय ॥सुघर॥९॥ कंस पुकार हम मारीयो ॥रंग॥ मथुरां करीयो उजार ॥सुघर॥१०॥ उग्र छोडियो बंधते ॥रंग॥ सार्‍यौ उनको काज ॥सुघर॥११॥ दधि दान मोहन लियो ॥रंग॥ रस गोरस लियो जाय ॥सुघर॥१२॥ राधा रसिक गोपालकी ॥रंग॥ आसकरन बलि जाय ॥सुघर॥१३॥

★ राग सारंग ★ कृपा अवलोकनि दान दै री महादानी वृषभान कुमारी ॥ त्रिषित लोचन चकोर मेरे तुव बदन इंदु किरन पान दै री ॥१॥ सब बिधि सुघर सुजान सुंदरि सुनि बिनति तू कान दै री ॥ गोविंदप्रभु पिय चरण परस कह्यौ याचकको तूमान दै री ॥२॥

★ राग सारंग ★ गुजरिया बावरी भई कैई बेर गई दान मार ॥ आज गहन पाई नंदकी सों लैहों दिनदिनकौ निरवार ॥१॥ जो कबहूँ आइहै यहि मारग सपत लीजे हौ लालन नातर बूझिये जू मेरे सँगकी आगें जात गुवारि ॥ सब सखियनमें गहि राखी गोविंद प्रभु मन मनाय लीजै जान दीजै नारि पनार ॥२॥

★ राग सारंग ★ लालन छाँड़ौ हौ बरिआई ॥ दान आपनों लीजै लालन हो व्रजराई ॥ यह अब कहा कहावे अँचरा ऐंचत हो जु करत बोली ठोली भाँड़े सेती ऐती ठकुराई ॥१॥ जो कछु कहौगे सोई देहुँगी कान्ह गहि और लीजै अपनौ गाम कौन सहै तिहारी दिनदिनकी अधिकाई ॥ गोविंदप्रभुके नयननसों नयना मिले चितैय चली मुसिकाई लालनकौ मन लियौ है चुराई ॥२॥

★ राग सारंग ★ चलन न देतहौ यह बटियाँ ॥ रोकत आय श्याम घन सुंदर जब निकसत गिरि घटियाँ ॥१॥ तोरत हार कंचुकी फारत माँग सवाँरत पटियाँ ॥ पकरत बाँह मरोर नंदसुत गहि फोरत दधि चटियाँ ॥२॥ कुंभनदास प्रभु कब दान दीनौ नई बात सब ठटियाँ ॥ गिरधर पाँय पूजियें तिहारे जानत हों सब गटियाँ ॥३॥

★ राग सारंग ★ ए तुम पेंड़ौई रोकें रहत कैसें कै आवें जाँय व्रजबधू तुमही बिचारि देखौ परम सुजान ॥ खिरक दुहावन दिन दिन आयौ ऐसें कैसें बने गुसांई इत उत गहवर गैलौहू न आन ॥१॥ ऐसी अटपटी कित गहौजू लाड़िले कुँवर जो कबहुँ परिहै व्रजराज के कान ॥ गोविंद प्रभुसों कहत प्यारी की सखी तुम धौं नेंकु इत उतरौ हमहि देहु धौं जान ॥२॥

★ राग सारंग ★ कहि धों मोल या दधिकौरी ग्वालिन श्याम सुंदर हँसि हँसि बूझत हैं ॥ बेचैगी तौ ठाढ़ी रहि देखोंधों कैसो जमायौ काहेकों भागी जाति नयन विशालन ॥१॥ वृषभाननंदनीकौ निर्मोलक दह्यौ ताकौ मोल श्याम हीरा तुमपै न दीयौ जाय सुनि व्रजराज लाड़िले ललन हँसि हँसि कहत चलत गज चालन ॥ गोविंद प्रभु पिय प्यारी नेह जान्यों तब मुसिकाय ठाढ़ी भई सेंना बेनी कर सबै आलिन ॥२॥

★ राग सारंग ★ दान दै रसिकनी चली क्यों जात है ॥ सुनौ तुम ग्वालिनी आज मेरी बात पियें दधि दूध विन लालन अघात है ॥१॥ नैननकी सैनन सौं मीन लज्जित भये पहरि तन नीलपट कंचुकी गात है ॥ चरन नूपुर वजे माँग मोतिन सजे भरे जोबन जोर अंग न समात है ॥२॥ बैन मुखसों बोल नैंक घूँघट खोल सुनि ग्वालिनी मनहि मुसक्यात है ॥ कुचन अंचल ढाँक लगी मोतिन पाँति भरे रस कलश दोऊ मदन ललचात है ॥३॥ नेंक रस चाखिहों कुचनके कलशकौ कृपा करि नेंक अब कहा कछु बात है ॥ स्याम सुंदर कह्यो दास कुंभन लह्यो सोंह व्रजराजकी दान दधि खात है ॥४॥

★ राग सारंग ★ हँसत कहा कछु लीनी मोल ॥ तुम हमैं जानत हम तुमैं जानत

विन समुझे कित बोलत बोल ॥ समुझत हौ तब माँगत हैं ठाढ़े यहि ठौर दान लगत हमारौ ॥ लैहें दैहें ऐसी ये जानी तुमकूँ चमकत गोद पसारौ ॥२॥ दान लगत गोदही के ऊपरसों तुम कहे देत हौ नारी ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर तुम हमसों जीतिहौ नाहीं ऐसी बात हमारी ॥३॥

★ राग सारंग ★ अब हों या ढोटातें हारी ॥ गोरस लेत अटक जब कीनी हँसत देत फिर गारी ॥१॥ निशदिन घरघर फेरौ करत है बालक यूथ मँझारी ॥ गोविंद बलि इमि कहत ग्वालिनी ये बातें कैसे जात सहारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ कहि दधि मोल आज हों लैहों ॥ यह गजमोतिन हार कंठतें चंद्रावलि गुप्त तोहे दैहों ॥१॥ पान पान गहि ठाढ़ि कीनी बाट माँझ कियो झगरौ ॥ बाबाकी सों जान न देहौं गिरिधरलाल हठीलौ अचगरौ ॥२॥ लोभ दिखाय प्रीति जो कीनी नीकी ये बात और सब फीकी ॥ परमानंद प्रभु जान महातम जो हरि भजे चतुर सोई नीकी ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज दधि कंचनमोल भई ॥ जा दधिकों ब्रह्मादिक इच्छत सो ग्वालन बांटि दई ॥१॥ दधिके पलटें दुलरी दीनी जसुमति खबर भई ॥ परमानंददासकौ ठाकुर बरवट प्रीति नई ॥२॥

★ राग सारंग ★ ग्वालिनी मीठी तेरी छाछि ॥ कहा दूधमें मेलि जमायौ साँची कहै किन बाछि ॥१॥ औरे भाँति चितैवौ तेरौ भौंह चलत है आछि ॥ ऐसौ टकझक कबहुँ न देख्यौ तू जो रही कछि काछि ॥२॥ रहसि कान्ह कर कुचगति परसत तू जो परति है पाछ ॥ परमानंद गोपाल आलिंगी गोपबधू हरिनाछ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज दधि देखों तेरौ चाख ॥ कहिरी मोल किते बेचेगी सत्य बचन मुखभाख ॥१॥ जो माँगेगी सोई दैहों संग सखा सब साख ॥ जो न पत्याय ग्वालिनी हमकूँ कंठसरी लै राख ॥२॥ लै जु चले घर दाम देंनकों चितये नयन कटाक्ष ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर सर्वसु दीयौ तताक्ष ॥३॥

★ राग सारंग ★ सवारेंई हों आयहों ॥ बाबाकीसों अबही जाय घर दह्यौ भलौ जमायहौं ॥१॥ रुचिदायक गोपालही लायक आछी जुगति बनायहौं ॥

कनक मटुकिया शिर धर दधि भर श्याम सुंदरपैं लायहों ॥२॥ होत अवार चतुर्भुज प्रभु मोहि बोहोरि घोष कब जायहों ॥ गिरिधर नागर सकुचत अँचरा नाहिंन सकत छुडायहों ॥३॥

★ राग सारंग ★ मानों याके बाबाकी चेरी ॥ गारीदेत शंक नहिं मानत आवत मारग घेरी ॥१॥ कबलग लाज वासकी कीजे कौन गुँसाइन तेरी ॥ परमानंद प्रेम अंतर्गत परसनके मिस हेरी ॥२॥

★ राग सारंग ★ इंढुरिया डार दै रे लंगर ढीठ कन्हाई ॥ तेरौ कोऊ कहा करैगो हमें घर खीजेंगी माई ॥१॥ कौन हवाल कियौ हरि मेरौ भली करी मेरी दधि खाई ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन चाह तुम मेरौ मन लियौ है चुराई ॥२॥

★ राग सारंग ★ लालन ऐसी बात छाँड़ौ ॥ मदनगुपाल छबीलौ ढोटा नित उठि मारगआड़ौ ॥१॥ अनौखे दानी अबही भये हैं मारग रोकत आन ॥ प्रातही तें इहाँई होत ठाढ़े ऊगन न पावै भान ॥२॥ चंद्राबलि कहै सुनौ मनमोहन यह जो समै है और ॥ परमानंद प्रभु जान देहु नंदसुवन शिरमौर॥२॥

★ राग सारंग ★ मोहन तुम जो बड़ेके ढोटा ॥ कौन बूझिये रसिक शिरोमनि बनमें जो करत झँझोटा ॥१॥ आवन जान बहू बेटिनकौ औघट जमुना घाट॥ मटुकी फोरत बाँह मरोरत चलन न पावै बाट ॥२॥ जो यह बात यशोदा सुनिहैं बड़े गोप उपनंद ॥ एक पूत सो निपट लड़ैतौ करत अटपटे फंद ॥३॥ सुनत बात मनमें सुख उपज्यौ भावै हरिकी केलि ॥ परमानंददासकी जीवनि बढ़ौ नंदकीबेलि ॥४॥

★ राग सारंग ★ नेंकु मटुकिया धरें जो उतारि । बैठि प्रेमकी बातें कीजे सुनि चंद्रावलि नारि ॥१॥ फेरि कहाँ यह संग बनैगो ऐसे कानन माँझ ॥ लरिकाई कौ यह रस चलिहै दिवस अथाये साँझ ॥२॥ यह जोबन धन संग कौनकें लाड़ दिवस द्वै चार ॥ परमानंददास यह नागर खेल करै मनुहार ॥३॥

★ राग सारंग ★ कबतें सखि माँगत दान ॥ कब कब लीनों हो नँदनंदन नित्तही यह मग आवन जान ॥१॥ हम नईं आज इतै नहीं आईं ऐसे कहत

सकल व्रजनारि ॥ अव तुम करत अनीत लड़ैते दधि सब लेत डगरमें डारि॥२॥ मैं तौ लियौ सदा सबहीपै तुमही होतहौ निपट अयानी ॥ काहेकौं लाल झूँठ तुम बोलत समुझि समुझि ग्वालिनी मुसिक्यानी ॥३॥ झूठ नहीं मोय सोंह बाबाकी हँसि हँसि कहत लाल गिरिधारी ॥ श्रीविट्ठल वृषभानकुँवरिसों झगरतमें बाढ्यौ रसभारी ॥४॥

★ राग सारंग ★ छाँडौ लाल अटपटी बात ॥ कौनें अवदियौ कौनें अब मानीयो काहेकों रोकत मारग जात ॥१॥ वे न होंय हम झगरन हारी जिनकों कुँवर करत नितघात ॥ बारबार तुम दान माँगत हौ काहू गली गलिन बिकात ॥२॥ कैसोहो दान कहा मायाकौ कौन ठौर वह दान लगात ॥ लगत जिन गाँठि कस दीनी श्रीविट्ठलगिरिधर मुसिक्यात ॥३॥

★ राग सारंग ★ न जैहों माई बेचनही जु दह्यौ ॥ नंदगोपको कुँवर लाड़िलो वनमें डाटि रह्यौ ॥१॥ यह सब भेद सखी अपनीसों चंद्रावली कह्यौ ॥ माँगत दान अटपटी बातें अंचल रबकि गह्यौ ॥२॥ रावर जाय उराहनों देहौं अव लगि बहुत सह्यौ ॥ परमानंद कहे सुनि भामिनी बहुतै पुन्य लह्यौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ लालहो किन एसे ढंग लायौ ॥ डगर छाँड़ि उटि चतुर गुसाँई चाहत गारि दिवायौ ॥१॥ को तुमरे गृह भयौ अचगरौ गोरस दान निवेरौ ॥ यों किन चलै नंद भलौ मानें इक व्रजवास बसेरौ ॥२॥ दारुन कंस बसत है मथुरा ताहूकी शंक न मानै ॥ नंदगोपकौ कुँवरलड़ैतौ आप बहुत हितकरि जानै ॥३॥ बात करत प्रेमरस बाढ्यौ नयन रहे अरुझाई ॥ परमानंददास वह ग्वालिनि घरहि कौन विधि जाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ न गहौ कान्ह कोमल मेरी बहियाँ ॥ सुंदर श्याम छवीले ढोटा हों नही आऊँ या वनमहियाँ ॥१॥ हों बलिजाऊँ चरणकमलकी जात हुती अपने घर कहियाँ ॥ होत अबार बार मोहि लागै छाँड़हु कौन टेव तुम महियाँ ॥२॥ ये व्रजबास बड़ेके ढोटा कहि न सकत तुमसों कछु नहियां ॥ परमानंद प्रभु काल्हि निवेरौं बैठिहु नैकु कदमकी छहियाँ ॥३॥

★ राग सारंग ★ दान दै री नवल किसोरी ॥ माँगत लाल लाडिलौ नागर प्रगट भई दिनदिनकी चोरी ॥१॥ नवनागर हारावलि विद्रुम सरस जलज मन गौरी॥ पूरित रस पीयूष जुगल घट कमल कदली खंजन की जोरी ॥२॥ तापैं सकल सोंज दामनकी कित सतरात कुटिल दृग मोरी ॥ नूपुर रव किंकिनी पिय सुनियत हित हरिवंस कहत नहीं थोरी ॥३॥

★ राग सारंग ★ मुरि मुरि चितवत खिरक चली ॥ डग न परत व्रजनाथ साथ बिन बिरह बिथा सगली ॥१॥ कीर कुमुदिनी सारँग रिपुके केहरि कटि कदली ॥ चितवत दृष्टि दै पीठ बुलाई अंग अँनग अली ॥२॥ बारबार मोहन मुख चाहत निरखत नंदगली ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलनकों चली वृषभानु लली॥

★ राग सारंग ★ दान माँगत कुँवर कन्हाई ॥ बहुत बेरी चोरी दधि बेच्यो अब कैसे जान पाई ॥१॥ जासों रीती लरी मृगनैनी नहीं सयानी बात दिखाई ॥ लेहु निबेरि आजु सब दिनकी जानन देहु व्रजराज दुहाई ॥२॥ मोहनलाल गोवरधनधारी हरि नागर बातन अरुझाई ॥ परमानंद प्रभु बतरस अटकी दान लियो अरु डगर बताई ॥३॥

★ राग सारंग ★ दधि लै आउँगी उँठि भोर ॥ तुम तौ इहि बन बछरा चरावत नागर नंदकिशोर ॥१॥ जान देहु बड़ी बार भई है घन मिलि दामिनी घोर ॥ जो न पत्याओ तौ गहनें राखो उर मनि कंचन मोर ॥ तुम गोविंद सब गुनन कहावत मानों इतनौ निहोरि ॥ परमानंद स्वामि मनमोहन अटके नैनकी कोर ॥२॥

★ राग सारंग ★ देख्यौ री कहुँ नंदकिशोर ॥ स्याम बरन अरु पीत पिछौरा अंचल ढरके गौर ॥१॥ बरबट दान दहीकौ माँगत वृंदावनकी ठौर ॥ कहिहों जाय रायजूके आगें करिहै औरसों और ॥२॥ बरजि जसोदा अपुने ढोटाकों अँचराके किये कोर ॥ परमानंद प्रीतकौ ग्राहक त्रिभुवनकौ सिरमोर ॥३॥

★ राग सारंग ★ तुम कौन हो किन ठाढ़ी रहौ ॥ तुम्है ऐसो सो कहा काज है हम कोऊ हैं तुम डगर गहौ ॥१॥ काम नृपंत वृषभाननंदिनी दियौ दानको

बाधि कहौ ॥ ऐते राजकाज में दियौ दूध दहीकौ दान न हो ॥२॥ दान हमारो सब दिन लागत तुमहु जानि बूझि करहो ॥ परमानंद गोपाल हठीलौ दान लियौ अरु डगरौ गहो ॥३॥

★ राग सारंग ★ गोरस बेचिबे में भाँति ॥ नँदनंदन बिनु कोउ न लैहे काहेकों मथुरा जाति ॥१॥ दूध दहीके दाम न दैहों छुवत कहा सतराति ॥ परमानंद ग्वालिनी सयानी मोल करत मुसिक्याति ॥२॥

★ राग सारंग ★ दान देऊँ ठहेरौ इकठैयाँ ॥ श्रमजल बिंदु परत मुखपरतें बैठौ आय कदमकी छैयाँ ॥१॥ कुचकलशनकों ढाँक धरे क्यों चाखन देहु पलोटूँ पैयाँ ॥ यह रस तुमकों नाहिं मिलेगो छाँड़ो लाल हमारी बैयाँ ॥२॥ बहुत अबार भई घर जैहों मोकों आज लड़ेगी मैया ॥ माँड़ौ ओक प्याउँ दधि मीठौ बेग करौ आवत बलभैया ॥३॥ प्यारी दधि प्यावत करि हितसों श्याम सुंदर पीवत न अघैया ॥ यह सुस्वाद कछु कहत न आवत नंददास आनँद न समैया ॥४॥

★ राग सारंग ★ श्याम रोकत फिरौ आज व्रजकी गैल ॥ लैहों संग ग्वाल गाय बछरा चारौ जाय दान कहा लेउगे करौ बनकी सैल ॥१॥ किये बन धातुके चित्र सब अंगमें भये ठाढ़े आय करत मो सौं फैल अनखटोंटी बात करौ मनहि बिचार कोऊ ऐसो भयौ नाँहि व्रजमें छैल ॥२॥ जात हों निस दिना याही हम गैलमें दान कोऊ ना लियौ आज पाये पहेल ॥ मदन मोहन कहैं व्यास स्वामिनि सुनौ धरौ मटुकी धरनि चलौ अपने महल ॥३॥

★ राग सारंग ★ दूध दहीकौ दान आज तो सुन्यौ कान मेरे जान नंदके कान्ह अनौखे भये बैंड़े ॥ मल्लकाछ गुंजा गरैं मोर पंख शिर धरैं याही सिंगार पर डोलत ऐंड़े ॥१॥ अबल सों सबल भये सबल कंस लौं न गये नये ठठत ठाठ रोकत आय पैड़े ॥ गोपीजन सों इतरात मधुपुरी लगि क्यौं न जात कुंभनदास प्रभु गोवर्धनकी ग्वैंडे ॥२॥

★ राग सारंग ★ ग्वाल रे तू अनौखौ दानी ॥ चले जाउ ढोटा अपने मग हमसों कहा चतुराई ठानी ॥१॥ सैंननमें सब सखा बुलावत फिरि फिरि कहत अटपटी

वानी ॥ ते बातें रस बहोर कहूँगी जहाँ बैठी जसोदा रानी ॥२॥ अंतरंग हरिसों मिलि भावत यह नागर मुखही रिसानी ॥ प्रान बसतहैं कमलनैनमें जिय की तौ परमानँद जानी ॥३॥

★ राग नट ★ दान काहेकौ कहाँके तुम दानी ॥ हम जैहें नीके यह मारग तुह्मारी बात कुँवर किनमानी ॥१॥ काहेकौ माँगत दान लड़ैते यह तौ है ठौर हमारी ॥ इतने ऊपर कौन देयगौ ऐसी कौन लाल यह नारी ॥२॥ नीके समुझे हौ नँदनंदन औरनके धोखें जिन भूलहु ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल हम दान न दैहें काहे कौ तुम लेहु ॥३॥

★ राग नट ★ दिन सब जात होति है राति ॥ कहा बहुत डर होत रातिकौ तुम्हें तौ राति बहुत सुहाति ॥१॥ तुम हित बोलत अहो नँदनंदन तुमतौ है बैठे लियें दान ॥ जान न दैहों आजहौं क्यौंकर बहोरि बहुतेक आन ॥२॥ जान न देहौं तो लेहु कहाँते इहाँ तौ हमपै भूषणसारी ॥ मेरौ दान बहुत सारिनपै सो तुम दैहौ चंद्रावलि प्यारी ॥३॥ ह्याँ पै ही तुम रहौ सयानी दानदेहु हमें होत अबार ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर हम जानत हम हारे लैहौ कर हार ॥४॥

★ राग नट ★ मेरौ दान लागत इहि ठाम ॥ नीकें समुझेहौं ब्रजसुंदरि तुमही बतावत सो है नाम ॥१॥ भलें भलें तोहि बहुत देउँगी दानकी कहि पकरौ माल ॥ दान लगत मालनके नीचें सो तुम हमसों कहत हौ बाल ॥२॥ बोलौ सँभारि अहो नँदनंदन बोलत दान हमारौ देहु ॥ श्री विट्ठलगिरिधरनलाल हम दैहैं तुमकों जोई लेहु ॥३॥

★ राग सारंग ★ कान्ह ऐसो दान न माँगिए मोपें दीयो न जाय ॥ जो रस चाहो सो रस नाहीं गोरस पीओ अघाय ॥१॥ जाय कहो जसोदा जू के आगे रहोगे बदन छिपाय ॥ 'सूरदास' प्रभु छांडि अटपटी मटुकी व दे हो मंगाय॥२॥

★ राग सारंग ★ माधो जू जानि देऊ चली बाट ॥ कमल नैंन काहे को रोकत बर बट जमुना घाट ॥१॥ और सषा देखेंगे कोऊ गहत सीस तें माट ॥ तुम तों कान्ह ओर परत नही नीयरें गोधन ठाट ॥२॥ क्यों बिकायगों गोरस

मेरो करत भोर ही नाट ॥ 'परमानँद' चंद्रावली खीजति दिन प्रति यही हें डाँट ॥३॥

★ राग सारंग ★ कान्ह केसो माँगत दान दूध दही को यह न सुन्यो कबहु कांन॥ हम नित आवत यह मारग लिये दधि काऊ भूले रोकी आंन ॥१॥ कहेगी जाय ब्रज पति के आगें ढीठों देत न गिनत पहेचांन ॥ 'रसिक' प्रीतम सुन वचन त्रीया के अति उन्मद भए दो गल बैयां दीनी जांन ॥२॥

★ राग सारंग ★ दान दे हरि ग्वालन सों मानी ॥ भली भूख में छाक ले आई प्रिति जिय की तेरी न जानी ॥१॥ अब लेहो बोल ग्वाल बालन कों बल भैया हू कों टेर बुलाऊं ॥ आई है छाक भई गैया इक ठौरी मंडल जोरि बनाऊं ॥२॥ तिहिं छिनु हलधर सँग सब आए तत्क्षन भोजन कों वैठा रे ॥ 'दास चतुरभुज' प्रभु तरु कदंब के पनवारो लै गिरिधर डारे ॥३॥

★ राग सारंग ★ ग्वालिन गोरस नैकुं चरवाउ ॥ त्यौनारी तें ओटि जमायो ताको किजे भाउ ॥१॥ किते बकत बेकाम बिकाजे ओरन देत जनाउ ॥ मदन गुपाल मोल दे लेहें तू काहे कों रिसाउ ॥२॥ कहा करें संकित मुसिकानी रस लंपट बज राउ ॥ 'परमानँद' नंद नंदन सौं नयो नेह नयो चाउ ॥३॥

★ राग सारंग ★ लाज नहीं हैं माँगत दान ॥ अंत चीर के चोर लाल तुम पायों कहाँ सयाँन ॥१॥ यह तो राखो घर कों कर तब तुम क्यों करत गुमान ॥ लैं जु चलत हे महरि मुंड धरि दीने कंस दिवान ॥२॥ कब तें भए नंद राजा व्रज प्रजा भए वृषभान ॥ कब के तुम गोरस के दानी बाढ्यों अति अभिमान ॥३॥ राखत नाहि हाथ सूधे अब लागे हो करन लरिकान ॥ कहि हो जाय अब ही जसुदा सों जेहें निकसि गुमान ॥४॥ बार बार ताकत तरुनिन तन कसिकसि भ्रोंह कमान ॥ मेरी बीथा रसिक 'माधो' हँसि दे अधरामृत पान ॥५॥

★ राग सारंग ★ देरी दे हमारो सुधे दान ॥ कहांजात हेरी कतराए राख्यो मान ॥१॥ ढिंग आवे तो करों भलाई ऐतो बुलाय करी सयान ॥ रसिक

प्रीतम ग्वालन उर लाई कीयो महारस पान ॥२॥

★ राग सारंग ★ यहां अब काहेको दान देख्यो न सुन्यो कहुं कांन ॥ ऐसे ओटपाउठि आओ मोहनजु दूधदहीं लीयो चाहे मेरे जान ॥ खिरक दुहाय गोरस लिये जान अपने भवन तापर इन ऐसी ठानी आनकी आन ॥ गोविंदप्रभुसों कहेत व्रज सुंदरी चलो रानी जसोदा आगे नातर सुधे देहो जान ॥२॥

★ राग नट ★ कहौजू दान लैहौ कैसें ॥ दूध दहीकौ दान कबहु न सुन्यौ कान मानों लोंग लादी काहु जैसें ॥१॥ आपुहीते लेत किधौं काहु लिख दीनौ समुझावौ धों तैसें ॥ गोविंदप्रभु तुमें डर न काहूकौ व्रजराज कुँवरवर तातें गाल मारत घर वैसें ॥२॥

★ राग नट ★ दान माँगतही में आनि कछु कीयौ ॥ धाय लई मटुकिया आय कर सीसतें रसिकवर नंदसुत रंच दधि पीयौ ॥१॥ छूटि गयौ झगरौ हँसि मंद मुसिक्यानमें तबही कर कमलसों परसि मेरौ हीयौ ॥ चत्रभुजदास नयननसों नयन मिले तबही गिरिराजधर चोरि चित लीयौ ॥२॥

★ राग नट ★ आज मेरी वृंदावन दधि लूटी ॥ कहाँ मेरौ हार कहाँ नकबेसर कहाँ मोतियन लर टूटी ॥१॥ बरज यशोदा अपने मोहनकों झकझोरत मटुकी फूटी ॥ सूरदासप्रभुके जु मिलनकों सर्वसु दै ग्वालिन छूटी ॥२॥

★ राग नट ★ बलिहारी छाँड़ौ मेरौ अंचल ॥ नंदरायकौ कुँवर लाड़िलौ श्याम कमलदल चंचल ॥१॥ गिरिधर छैल अबही आउँगी जब लगि सुरभी जाहिं घर ही चल ॥ कृष्णदास प्रभु तब रस अटकी पद परागतें मन न हलचल ॥४॥

★ राग नट ★ जाओ गुजरीया झुटी ॥ लरिका मेरो घर खेलत हे कौन चोर वन लुटी ॥१॥ माखन खायो मही ढरकायो मोतिन की लर टुटी ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सरबसु दे ग्वालन छुटी ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ ए कौन प्रकृति तिहारीहो ललना माई जो देखै सौ कहा कहै यहाँ ठाढ़ौ इत उतकौ ॥ सकल व्रजके बगरमें गायनके डगरमें घेरि घेरि राखी हम कहा धराबत तुमारौ यह न्याव कितकौ ॥१॥ दानदान करि राख्यौ झूठेई गाल मारत

ऐसें कैसें भरिबो री माई इनसों नित नितकौ ॥ चलौ री उलटि भवन जाँय दानके मिस लूटत हम कहैंगी जाय नंदजूसौं पायौ मतौ गोविंदप्रभुके चितकौ ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ ए तुम चले जाऊ ढोटा अपने मग कित रोकत व्रजबधून बाट॥ कहत कहा सोई कहौ जू दूर भये जिन परसो गोरसके माँट ॥१॥ दिन दिनकौ पेंड़ौरी माई हम कैसेंकै आवैं जाय इनसों परी है आँट ॥ गोविंद प्रभु तुमें डर न काहूकौ व्रजराज कुँवर वर जाय चरावो गोधनके ठाँट ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ तुमरौ है तौ तुम सुमिरियै ॥ मानों मानों कह्यौ हमारौ बेकाज कित झगरियै ॥१॥ सोई काम करौ किन राधे काहेकों मोहि बहुत रिसायौ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर हारे चंद्रावलि किन बोल बढ़ायौ ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ जाय सकै को इतके घाट ॥ हम जैहैं वृषभान कुमारि जानत नितकी है ये बाट ॥१॥ भली भई जानी आँट तिहारी दान तौ कछू नाँहि तिहारौ ॥ बाट हमारी तौ दान काहे कौ इन बातन कुँवर तुम हारौ ॥२॥ दान दहीकौ दान दूध कौ दान तुमारौ सगरे अंग ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर अनबोले जाऊ चले इन गायन संग ॥३॥

★ राग पूर्वी ★ मोसों न बोलैरे नंदके लाल तेरौ कहा लीयें जात ॥ छाँड़ि दै अंचल होत गहेरु जानत हौ और सी बाल ॥१॥ बैन बजावत मोहि रिझावत तापर गावत गीत रसाल ॥ धोंधीके प्रभु हाथ दूरि राखौ टूटैगी मोतिन माल ॥२॥

★ राग गौरी ★ चले किन जाउ लला तुम सुधे अपनी गेल ॥ हम नित प्रति आवत गिरघटीया गोवर्धन की सेल ॥१॥ दूध दही को दान अनोखो भलो चलायो खेल ॥ 'परमानंददास' को ठाकुर घर लरिका बन छेल ॥२॥

★ राग गौरी ★ अहोअहो श्रीवृंदाविपुन सुहावनौ और बंसीवटकी छाँय हो ॥ प्यारी राधा दधि लै निकसी कन्हैया रोकी आय हो ॥ वृषभान लड़ैती दान दै ॥१॥ अहो प्यारे सबै सयाने साथके और तुमहू सयाने लाल हो ॥ लिख्यौ दिखावौ रावरे कब दान लीयौ पशुपाल हो ॥ नँदरायलला घर जान दै ॥२॥

अहो प्यारी लै आये तौ लैईगे और नई न करिहैं आज हो ॥ मोहि नित पेहेराय पटावही और बीरा दै व्रजराज हो ॥ वृषभान. ॥३॥ अहो प्यारे देश हमारे बापकौ जाकी बाँह बसे नँदराय हो ॥ घास रखाई साँवरे तेरी सुखी चरैं जहाँ गाय हो ॥नंद.॥४॥ अहो प्यारी देश तिहारे बापकौ सो तौ सो मैं दीनौ साथ हो ॥ सब संकलप्यौ ता दिना जादिन पियरे कीये हाथ हो ॥ वृषभान. ॥५॥ अहो प्यारे यहाँ हम लाद्यौ है कहा और कहा भरे हम बैल हो ॥ आड़े ह्वै ठाढ़े भये मेरी रोकी महीकी गैल हो ॥ नँदराय.॥६॥ प्यारी अँग अँग रूप सोहावनी और भरे हैं रत्तन बहु भाय हो ॥ जावक लेख्यौ पारख्यौ तुम निकसी गरियारे आय हो ॥वृषभान.॥७॥ अहो प्यारे कहाँ दुँदुभी घंटा बजें और को नायक यहाँ आय हो ॥ कहाँ लौं उत्तर देउगे तुम मुख ललिताके चाय हो ॥नँदराय. ॥८॥ अहो प्यारी नूपुर किंकिनी बीछिया और घंटा धुनि नाना भाय हो ॥ नायक रूप लदेनियाँ सो जोबन लादैं जाय हो ॥वृषभान.॥९॥ प्यारे इहाँ हैं हाँकन कौं कहा तुम कहत बनाय बनाय हो ॥ यह उत्तर कहाँ लौं देउगे तुम हौ दानीनके राय हो ॥नंदराय.॥१०॥ अहो प्यारी हम हैं हाकिम गायके तुम छलवल निकसी आय हो ॥ भैया सुवल सयानो साथको या बनको बटतौ खाय हो ॥वृषभान. ॥११॥ अहो प्यारे गुजराती डाँकोतीया सो लेत ग्रहन में दान हो ॥ जो उनमेंके हौ साँवरे वृषभान बाबा राखें मान हो ॥नँदराय.॥१२॥ अहो प्यारी जनम जनमकी हौं कहा कहूँ तुम सुनौ सुबल सब साथ हो ॥ अशुभ लछिन ते शुभ करों तुम नेंकु दिखावौ हाथ हो ॥ वृषभान. ॥१३॥ अहो प्यारे नव ग्रह कहीये दानके जाकी विधि जानें प्यौसार हो ॥ एक सोनों संक्रांतको और ऊँट भरे ननसार हो ॥नँदराय.॥१४॥ प्यारी हों दानी बहु भाँतिको और जो कोई दानजु देय हो ॥ जोई जोई विधि करि देउँगी सोई सोई विधि करि लेय हो ॥ वृषभान. ॥१५॥ प्यारे तोई तनकारे भये और लै लै ऐसौ दान हो ॥ क्यों छूटौगे भारतें काहू तीरथहू नहीं न्हात हो ॥नँदराय.॥१६॥ प्यारी गौरज गंगा न्हात हों और जपत गायन कौ नाँऊ

हो ॥ परम पुनीत सदा रहों कछु लेत नहीं सकुचाँउ हो ॥वृषभान.॥१७॥ अहो प्यारे दानलै दानलै लाड़िले कछु गाय बजाय रिझाय हो ॥ जैसी विधि हम देखिहैं और तैसौई देहिं मँगाय हो ॥नँदराय.॥१८॥ प्यारी नट ह्वै नाच्यौ साँवरौ और विरद पढ़े जैसें भाट हो ॥ महूवरि में हेरी दई अरु मेंटि कुँवर मेरी नाँटहो ॥वृषभान.॥१९॥ प्यारे एक सखी दृग चोरिकें और जोरि दइ दृढ़ गाँठि हो ॥ दंपति रति पेहेचाँनिकै और गये मनमथ दल नाँटि हो ॥ नँदराय.॥२०॥ प्यारी वे सखीयनमेंकौं चलीं वे तौ चले हैं सखनकी ओर हो॥ पट दोउ छबिके छटा तन रहे हैं छबीले छोर हो ॥ वृषभान.॥२१॥ प्यारे घूँघट में अति झलमले और अति आवेसी नैन हो ॥ मुरि चिताए त्योंही रहे थकि रहे रसीले बैन हो ॥नँदराय.॥२२॥ प्यारी को लकुटी आड़ी करै और कौन कहि सकै बात हो ॥ रसही रस बस ह्वै गये और सुफल भये सब गात हो ॥ वृषभान.॥२३॥ प्यारे युवती अनेक सुहावनी और अति रस बढ्यौ विहार हो ॥ चतुरन मन दोऊ मिले और दास बली बलिहार हो ॥नँदराय.॥२४॥

★ राग गौरी ★ अहो विधिना तोपै अँचरा पसारि माँगों जन्म जन्म दीजै याही व्रज बसिवौ ॥ अहीरकी जाति समीप नंदघर घरी घरी घनश्याम हेर हेर हँसिवो ॥१॥ दधि के दानमिस व्रजकी बीथिनमें झकझोरन अँगअँगकौ परसिवो ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल शरदरैन रसरासकौ बिलसिवौ ॥२॥

★ राग गौरी ★ गोरस बेचतही जु ठगी ॥ कहा करै आपन बस नाँही मनसा अनत लगी ॥१॥ खेलत बीच मिले नँदनंदन कालिंदी के तीर ॥ चितयौ नेंक कमलदल लोचन मनमोहन बलवीर ॥२॥ और सखी बूझन लगी करत कौनकौ मोल ॥ परमानंद दासको ठाकुर मीठे तेरे बोल ॥३॥

★ राग पीलु ★ दान मांगे री हो कान्ह बांसुरीवाला आई व्रजबाला हो ॥१॥ हाथ लकुटिया कांधे कामरिया हो गौधनके रखवारा ॥आई.॥२॥ मोर मुकुट सिर तिलक बिराजे री हो पीतांबर वनमाला ॥कान्ह.॥३॥ 'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे जीवनप्राण हमारा ॥४॥

★ राग जैजेवंती ★ सांवरेकी दृष्टि मानों प्रेमकी कटारी ॥ लगत बिहालभई गोरसकी सुधन रही तनहीमें व्याप्यो काम मनमथ वारीये ॥१॥ मिल सखी द्वै चार बावरीभई व्रजनार मेंनें याकों जान्यो नहीं कुंजको बिहारी है ॥ कुंडल मुकुट सोहे पीतांबर धारीये सांवरी सुरतपर सूर बलिहारीये ॥२॥

★ राग श्यामकल्याण ★ अबही दान लेहूँ रस गोरसकौ देखियत है मुख लैनकौ ॥ जानतहों जू ऐसें और ठौर गीद रहे सूधे है रहौ जू कापर करत रोस नैनकौ ॥१॥ छाँड़िदै पट नातर कहूँगी जाय नंदजू सों कथनियाँ कथत तू जो ग्वाल धेनकौ ॥ कल्याणके प्रभु यशोदा आगें जाय कहौं बहोरि उत्तर न आवे त्रिय बेनकौ ॥२॥

★ राग श्यामकल्याण ★ गारि देहौं गारि हँसत गमारि रसगोरस दीयौ ढार ए हो ये मुरार ॥ वृंदावन मँझार उन मोसों कीनी रार एक एककी देहौं चारचार ॥१॥ अति लँगराई देतहै लंगर मोकों होत अबार ॥ जगन्नाथ कविराय के प्रभु माई मोही कान्हर क्वार ॥२॥

★ राग श्यामकल्याण ★ लालन दान लीजै हो कर सब आज निवेरौ ॥ यह मारग हम दिन आवें को करत नित झेरौ ॥१॥ तुमतो चपल हठीले ढोटा बरज्यो न मानत काहु केरौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर छबीले अंचल छाँड़हु वलि मेरौ ॥२॥

★ राग श्यामकल्याण ★ कुँवर कान्ह प्यारे जान दै हो घर मोकों बहोरि सबारे ऐहों ॥ होत अबार श्यामघनसुंदर बनमें कैसे हों घर जैहौं ॥१॥ दूध दही माखन आछी बिधि बहोत जतन करे लैहौं ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन छबिलो कुंज भवनमें पैहो ॥२॥

★ राग श्यामकल्याण ★ अहो कान दान कैधौं बरि आई ॥ तुम न जनाई मगवारी कित आई ॥१॥ बहियाँ मरोरत हार तोरत कसि कंचुकी दरकाई ॥ सूरदास प्रभु गिरिधर नागर यहे बात कित पाई ॥२॥

★ राग कल्याप्प ★ भैया हो घेरौ घेरौ हो व्रजनारी जान जो पै नहीं पावे ॥

चली ये जात उत्तर नहीं देत लेउ छिनाइ मटुकिया सीसतें ढीठ देखियत भारी॥१॥ खरिक दुहाय गोरस लियें जात अप अपनें भवन ताकौ दान माँगत जैसें काहू लादी लोंग सुपारी ॥ गोविंद प्रभु आये अनोंखे नये दानी चलौ चलौरी बुलावत घरके लालबिहारी ॥२॥

★ राग कल्याण ★ दिन दिन आईं गईं यह मग अब कछु नई ये ठठी ॥ जैसे हो तैसें राज करौजू सदा अपने ब्रज तिहारे लाल लागियै दूरहीतें पग ॥१॥ अब कहा कहत सोई कहीयै लाड़िले कुँवरजू हमें तौ समुझ नाहीं बात अथग ॥ गोविंदप्रभु कहा अटपटी लटपटी चलियै चाल ऐसी को गिनैरी माई बड़ेई श्याम नग ॥२॥

★ राग कल्याण ★ दधि न वेचिये हमारे कुल ए हो तुमसों सौ सौ बार करी नहियाँ ॥ जोपै दधि बेंचियै तौ तुमते को लेवा है सुनि ब्रजराज लाड़िले ललन कितब गहत्तहौ बहियाँ ॥१॥ खरिक दुहायें गोरस लियें जात अप अपने भवन ताकौ दान माँगत कहा अब कहीये इनसईयाँ ॥ गोविंदप्रभुसों कहत प्यारीकी सखी चलौ जू नेंकु वलिजाऊँ बैठी रानी जसोमति जहियाँ ॥२॥

★ राग कल्याण ★ रसिककुँवर वलिजाऊँ लाल कह्यौ मान मेरौ ॥ पैंड़ेतें नैंक इत उसरो जू कौन टेव तिहारी कहाँ ते भयौ भट मेरौ ॥१॥ जिहीं डगर दुरि दुरि फिरत सकल ब्रज सोई मोकों आनि भयो घरी पल पल झेरौ ॥ गोविंदप्रभुसों भौंह मोरि तृन तोरि कहत पियारी कौन सुभाव तुम केरौ ॥२॥

★ राग कल्याण ★ कुँवर कान्ह छाँड़ो हो ऐसी वतियाँ कितब करत वरिआई॥ ज्यों ज्यों बरजत त्यों त्यों होत आगरे डगरमें रोकत नारि पराई ॥१॥ दूध दहीकौ दान कान कवहूँ न सुन्यौ तुमही यह नई चाल चलाई ॥ गोविंदप्रभुसौं कहत प्यारीकी सखी अब ये बातें तुम्हेंई फबिआई ॥२॥

★ राग कल्याण ★ अरी सांवरोसो ढोटा ठाडो याही बगरमें ॥ हाथ लकुटिया कांधे कमरिया रोकत आन डगरमें ॥१॥ दान लियेबिन जान नदेही बांह पकर डारत गागरमें ॥ कैसे कीजैये गोरस ले उलटी सखी सूरसी राधानगरमें ॥२॥

★ राग अडानो ★ अहो कान्ह धीरो रै धीरो जाय कहूँ जसोदासों ।। हों दधि वेचन जात गोकुल तें निपट निकट आवे मेरे नीरो ।।१।। कापर इतनी करत ठकुराई कापर होत है तातौ सीरो ।। धौंधीके प्रभु हौं नीके जानत आखिर जात अहीरौ ।।२।।

★ राग अडानो ★ ये कनरा करत रार करूँगी पुकार कंसराय दरबार ।। हों दधि बेचन जात वृंदावन रोकी पराई नार ।।१।। दधि मेरो खाय मटुकीया फोरी उर तोर्यो मोतिन को हार ।। धोंधीके प्रभु तुम बहुनायक तुम जीते हम हार ।।२।।

★ राग अडानो ★ काहे कों दांत अंगुरियां चांपत गिरिधर पिया हँसि कछुक कह्यो री ।। हों पटई नव रंग लाडिले भलो सुन्यों तेरो जम्यो दह्यो री ।।१।। वर बिनोद ठाढ़े मग जोवत देखत हि मन बिथकि रह्यो री ।। 'कृष्णदास' प्रभु कों भज भाँमिनी भर जोवन तेरो जात बह्यो री ।।२।।

★ राग अडानो ★ आज नंद के नंदन सों ऐसेंई बढ़ गई रार री ।। उन झटकी मेरी दधिकी मटुकीयां में वाही दीनी गार री ।।१।। ललिता बीच परी झगरे में दोऊ कर लेत उसार री ।। उन उखटी मेरी तीन शाखकी में उखटी बाकी चार री ।।२।। उनपें मेरी चूक बक्षाओ मोय ले पायन पार री ।। राधाकृष्ण के झगरे उपर कृष्णदास बलिहारी ।।३।।

★ राग कान्हरो ★ अहो व्रजराजराई कौनें दान दीयो कौनें लीयौ ।। यह मारग हम सदाँई आवत जात अब कछु नई यै चलाई।।१।। जो पैं न जानदेई तौ चलोरी उलटि घर इनें तौ सबै फबी करत मनभाई ।। गोविंद प्रभुके नयननसों नयना मिले चितेई चली कुँवरि मुसिक्याई ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ गिरिधर कौन प्रकृति तिहारी अटपटी सघन बीथिनिमें व्रजवधून सूँ मारगमें अटकौ ।। तुमतौ ठाठे ठूले फिरतहो जु निश दिन हम गृहकाज करें कैसें बचबच निकसत तौऊ है ही जात भटकौ ।।१।। दानदान कर राख्यौ कोनें धों दान दियौ झूटेंई मारत गालपटकौ ।। गोविंदप्रभु आये अनोंखे नये दानी व्रज सुनरी सयानी चटमट कियैं मटकौ ।।२।।

★ राग कान्हरो ★ दै हौ लाल ईंढुरिया मेरी ए हो निहौरौ कीजत होत अबार॥ मेरे संगकी दूर जात बल कौन टेव यह तेरी ॥१॥ यद्यपि गामके ठाकुर सबके भामते तुम पैंड़ेमें व्रजबधू वन राखत घेरिघेरी ॥ गोविंदप्रभु रसमत्त परस्पर चलेरी जहाँ तहाँ कुँजगली अँधेरी ॥२॥

★ राग कान्हरों ★ समें छाँडि दधि बचन आई को है सुंदरि कौनें विधि टाटी ॥ अहो नागरी गोवर्द्धन की विन दीयें क्यों उतरै घाटी ॥१॥ रसिकराय चाख्यौ चाहत हैं तेरी मटुकिया मीटी कै खाटी ॥ मारत दान जात निशबासर कृष्णदास प्रभु यों कहि डाटी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ कापर ढोटा नयन नचावत है कोऊ तिहारे बाबाकी चेरी ॥ गोरस बेचन जात मधुपुरी आय अचानक बनमें घेरी ॥१॥ सेंननमें सब सखा बुलाये बातही बात समस्या फेरी ॥ जाय पुकारौं नंदजू के आगें जिन कोऊ छूवौ मटुकिया मेरी ॥२॥ गोकुल बस तुम ढीठ भये हौ बहुते कान करत हों तेरी ॥ परमानंददासको ठाकुर बलि बलि जाऊँ श्यामघन केरी ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ काहेकों शिथिल कीये मेरे पट ॥ नंदगोपसुत छाँड़ि अटपटी बारबार बनमें रोकत बट ॥१॥ कर लंपट परसौ न कठिन कुच अधिक व्यथा तन रहे निधरक घट ॥ ऐसौ विरुध है खेल तुमारौ पीर न जानत गहत पराई लट ॥२॥ कहूँ नही सुनी कबहूँ नहीं देखी वाट परत कालिंदीके तट ॥ परमानंद प्रीत अंतरकी सुंदर श्याम विनोद सुरत नट ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ कापै दान पहरि तुम आये ॥ चलौ जु भले इनहीं पैं जैये जिन हम रोकन तुमें पठाये ॥१॥ सखा संग ले लीने सैन दै फिरत रैनदिन बीथिन धाये ॥ नाहिंन जानत राजा कंस है मारग रोकत फिरत पराये ॥२॥ लीने छीन चीर सबहिनके लै लै कुंज सघन तर आये ॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट लै भू ढरकाये ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ जो यह दान माँगेगौ हो सखी सुन नंदकौ कुमार ॥ कर मुरली अधर धरें नदी यमुनाके तीर पर बिसरी गरेकौ हार ॥१॥ मारग माँझ

रोक रह्यौ नंदसों करूँ पुकार ॥ तू जिन जान और गूजरी बाबरी गमार ॥२॥ कर विनती चतुर्भुजदास बूझत लागे बड़ी बार ॥ ए कान्ह घर जान दै हो हमें होत अबार ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ काहूने न देख्यौ काहूने न सुन्यौ कान ॥ एसेहू कर उठावत मो हन जु दू ध दही लिये चाहत मे रे जान ।। १।। गो पसु ता लिये भवनमें री तापें कछु इनके आनकी आन ॥ गोविंदप्रभुसों कहत प्यारीकी सखी चलो यशोदारानीपें नातर सूधे देओ जान ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ छाँड़ो मेरी मटुकिया मदन मुरारी ॥ कौनके रसरूप राँचे कोनके रसबस भये कौनसी दूतीके कहे दधि दीनौ डारी ॥१॥ कहा भयौ दिनचारतें भये आगरे बोलतहौ नहीं जीभ सँभारी ॥ धोंधीके प्रभु नंदकी कानि करूँ रहौ नातर दैहों गारी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ सगरे पर दान लगत अति भारी ॥ मेरे दानकी वात बडी है काहूपै जाय है न सँभारी ॥१॥ तुमही समझौ और को समझै जिन गाँठ नवयुग धारी ॥ मेरौ दान लागत गाँटनत्तर मोहि काहे सोंह तिहारी ॥२॥ कहा कहत ऐसी कौन जिन दान निवेरौ सुधी चाल ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल कहैं तुमहौ मेरी सब ग्वाल ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ तू को है, हौं व्रजराजकुमार, कहा कहतहौ, दान माँगत, काहेकौ, तेरे गोरसकौ ॥ कबतैं लागत, जबतैं तू दै, यामें कहा सुख, तेरे दरसको ॥१॥ यह न भली, भली सोई कहौ, परस न कर, करहुँ रस बसकौ ॥ रसिकप्रीतम पिय बचन चातुरी आतुरी करि लीनी भावत अंग परसकौ ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ कापर ढोटा करत ठकुराई ॥ तुमते घाट कौन या व्रजमें नंद हू तें वृषभान सवाई ॥१॥ रोकत घाट बाट मग बनकौ ढोरत माँट करतहो बुराई ॥ निकस लैहौ बाहिर होत हौ लंपट लालच कीयें पत जाई ॥२॥ जान प्रवीन बड़े के ढोटा सुध तुम कहा बिसराई ॥ परमानंददासको ठाकुर लै आलिंगन गोपी जाई ॥३॥

★ राग केदारो ★ मोहन मैं गूजरि बरसाने की मोसों नाहक माँड़ौ रार ॥ पाँच टकाकी कामर औढै तापर इतनौ गुमान ॥ गैयाँ चरावत बाबा नंदकी मो तें माँगै दान ॥१॥ रत्न जटितकी इँढुरी और हीरा जड़िया क्रोड़ ॥ एक हीरा गिर जायगौ तेरी सब गायनकौ मौल ॥२॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे चरन कमल चितलाय ॥ नेंक चितै बलजाउँ साँवरे विमल विमल दधि खाय ॥३॥

★ राग केदारो ★ गुजरिया तू गर्व गहेली उत्तर नाहीं देत ॥ चलत गजगति गोरसकी माती अति रसरंग भरियाँ ॥१॥ दिनदिन दान मार गई है हमारौ कबहूँ पालें नहिं परियां ॥ गोविंदप्रभु कहत सखनसों घेरौ घेरौ तब धाय अंचल धरियाँ ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ रहौ रहौ ढोटा यह करियै न लरिकाई ॥ मारग में लोग इतउतकों करिहें घहर चबाई ॥१॥ और हों जाती भवन आपने बेगिही सास बुलाई ॥ तेरी सासकों हम कहेंगे जो हमनें बात लगाई ॥२॥ अहो कुँवर तुम अलप लड़ैते ग्वालिनि हँसि हँसि जाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर माथेतें गागरि दई ढुराई ॥३॥

★ राग टोडी ★ कहोजू दान लैहो कैसें हम तौ देव गोवर्द्धनपूजन आँई ॥ कोऊ दह्यो कोऊ मह्यो माँखन जोरि जोरि आछौ अछूतो लाँई ॥१॥ तुम्हें पहलें कैसें दीजें कान्हरजू तुमें तौ सबै फबि करत मनभाई ॥ नंददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अब कछू नई ये चलाई ॥२॥

★ राग टोडी ★ अब तुम ही लै लै गीदे हौ दान सोंह मोहि गोधन की गोपाल॥ तनक मथनियाँ औंधी जो देखों तौ कहा करूँ तिहिं काल ॥१॥ और ग्वालिसी मोहूकों जानत हौ करिहों तुमें बिहाल ॥ रामदास प्रभु जान देहु सब ग्वाल कहत हैं सो घर कैसें बचि है सुवन बजावत गाल ॥२॥

★ राग टोडी ★ तें कहुँ देख्यौ री आली नंदकौ नंदन मटुकी झटककें पटक गयौ ॥ माँखनचोर चोर मन हर लीनौ नेकहुँ न डर कीनौ नट ज्यों उलटकें सटक गयौ ॥१॥ मारग रोक रहत खोरनमें नैंन सैन दै अटक गयौ ॥ तानसेनके

प्रभु माधुरीसी मूरति रस गोरस लै गटक गयौ ॥२॥

★ राग टोडी ★ ऐसें कैसें कहियतु ब्रजबधून सोई ते आये धों पिछौड़ी ॥ बरबट रोकत मोकों करिहों कहा रिसाय को है बाबाकी लोंड़ी ॥१॥ दिन दिनकौ पैड़ोंरी माई नहीं जानत कछु बातरी औंड़ी ॥ नंददास प्रभु वे त्रिय और जो नचाय सब तुम कीनी कनौंड़ी ॥२॥

★ राग टोडी ★ माई दान कहा बात कहीं की आनि गहे बहींयाँ ॥ जो कछु कहौ सुनौ ताकौ उत्तर देहु कहा रे है मुँहचहीयाँ ॥१॥ किधों और ही धोखे भूलि जिन बोलत बोल मुख मोतनि नहीयाँ ॥ गंगाराम श्रीगोपाल और बालक नीकें करि निहारि दै खोजत आपु मनही महीयाँ ॥२॥

★ राग टोडी ★ छाँड़ो मेरौ अँचरा जिन गहौ ॥ बहुत बचतिहों बाबाकी सों अब अनबोले ही रहौ ॥१॥ भूले फिरत और के धोखें झूठी साँची जु कहौ॥ जिन बेलि पातौ नहीं विट्ठल विपुल बिहारी फल चहौ ॥२॥

★ राग टोडी ★ छाँडि दै हो लाल दान कबकौ लगै तिहारौ ॥ अंचर जिन गहौ नंदलाल तुम दधि मटुकी कित छोरौ ॥१॥ बहुत बेर मारग भाख्यौ ते अबके गहेन पाई छाँड़िहौ तब जब दान लैहों सारौ ॥ चतुर बिहारी लेंहु दिन दिनकौ ईकटौरौ तबही जान देहों कहत नंदकौ दुलारौ ॥२॥

★ राग टोडी ★ देखौ देखौ सखी ओझत मटुकी ॥ गोरस ढोरि दीनौ अँचरा फारि डार्‌यौ लाज न आवत दैया कैसी धों झटकी ॥१॥ जो तें दान माँग्यौ तो मैं काहे दीनौ कहा भयौ जो या मारग में अटकी ॥ गुनरूप प्रभु तुम छाँड़ि देहु निकट जात हे सखी मेरे साथ की सटकी ॥२॥

★ राग टोडी ★ कौन दान दानी को ॥ करन लागे नई रीत आए हो अनोखे जु दूध दही महि को अजहू नहिं जानी को ॥१॥ चलत हो विचित्र चाल सुबल तोक कों चखाय काहु कों कहत गाढ़ो जम्यो काहु को कहत पानी को ॥ 'नंददास' प्रभु आसपास लटक रई कनक बेल भ्रोहन की मटकन में सबहि उरु झानी को ॥२॥

★ राग टोडी ★ छोटी मटुकीया मधुर लै चली री गोरस बेचन रसाल ॥ हरबराई उठि आई प्रात तें बिथुरी अलक अरु बसन मरगजे तैसि ये सोहति कुम्हिलानी माल ॥१॥ गेह नेह सुधि नेकु न आवति मोहि रही तजि मोह जाल ॥ औरे कहति और कहि आवति मनमोहन के परी ख्याल ॥२॥ जोई बूझत हैं री कहा या में कहति फिरति कोऊ लेऊ गुपाल ॥ 'सूरदास' प्रभु के रस बस भई चतुर ग्वालिनी तनु मनु गति भई बिहाल ॥३॥

★ राग टोडी ★ करन बोहनी में पाऊं नंदकिशोरपें ॥ गोरसके मीस रसही ढंढोरत यह रस कहां छिपाउं ॥१॥ गोरस मेरो घर ही बिकेगो काहेकुं बृंदावन जाऊं ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर जसुमति जाय बसाउं ॥२॥

★ राग टोडी ★ ऐसो दान न माँगिये हो प्यारे ललना हम पै दियो न जाय। बन में पाय अकेली युवतिन बातें कहत बनाय। बार घाट ओघर जमुना तट मारग रोकत आय ॥१॥ कोऊ ऐसो दान लेत है कोने सिखये पढ़ाय। जो रस चाहो सो रस नाहीं गोरस देहों चखाय। औरन पै लै लीजे हो गिरिधर तब हम देहिं बुलाई ॥२॥ सूरश्याम कित परत अचगरी हमसों कुँवर कन्हाई ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ देत उराहनो लाज न आवत साख भरन गोपीजन आईं ॥ माट भरे विश्राम लेत तें औचक आन करी ठकुराई ॥१॥ दियौ गिराय आपही सिरतें फोर माट दधि दुध बहाई ॥ बहत तें हाथ लग्यौ जो जाके बरजत रही त्यों लूट्यौ और खाई ॥२॥ ब्यारू करत झगरौ आन्यौ कहा करतहौ लोग हँसाई॥ कुंभनदास गिरिधरन लालकों देख बदन तन नैन सिराई ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ ब्यारु करत जननी पै मोहन राधे जू गोपीजन संग आई ॥ बरजत काहे न जसोमति सुतकों दूध दही की लूट मचाई ॥१॥ देखी सुनी न आजलों ऐसी भली अनूठी सीख सिखाई ॥ कुंभनदास गिरिधरनलालकों नीकें दीजे अब समझाई ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ दूध दह्यौ लूटत बन बाँटत पीजे लाल घरही कौ ल्याई ॥ मीटौ मिलाय दुहाय तायकें दान मानकौ लेउ अघाई ॥१॥ गोपीजन जसोमति

के आगें कहत रही कछु मन सकुचाई ॥ कुंभनदास गिरिधर मुख देखत श्यामा द्वारही तें फिरि आई ॥२॥

दान के दिनन में मान के पद

★ राग बिहाग ★ नवल किशोर नवल मृगनयनी नवल नेह तेरौ लाग रह्यौरी ॥ चल चलरी तोय स्याम बुलावत काहे न करत तू मेरौ कह्यौ री ॥१॥ सुन राधे एक बात छबीली आज माँग्यौ हरि तेरौ मह्यौ री ॥ छिन छिन विलंब करत काहेकों तेरौ बिरह नहीं जात सह्यौ री ॥२॥ अधरबिंब राजत कर मुरली राधे राधे ऐसौ नाम लह्यौरी ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर लेओ न प्रेम रस जात बह्यौरी ॥१॥

★ राग बिलावल ★ नंदनंदन दान निवेरत री ॥ राखै रोकि दधि समेत ग्वालिनी सखावृंद प्रति टेरत ॥१॥ जब उठि चलत प्रबल गोपीजन तब आगें उठि घेरत ॥ बाँधि जठर पटपीत ललित गति कर लै लकुटी फेरत ॥२॥ काहूके कुच भुज अंचल गहि सबहिनकौ मन फेरत। परमानँदप्रभु रसिकशिरोमणि मुसकत निरखत हेरत ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ गृह गृहतें आवत व्रजनारी ॥ धरि धरि मटुकी माथे ऊपर गजमोतिन माँग सवारी ॥१॥ आभूषण सगरे रचि पहिरें और सुहाई पाटीपारी ॥ कंचुकी कसि लीनीजु हीये पर तन सोहत अंचल डारी ॥२॥ जुरि सब झुंड भईं इकठोरी चंद्रावलि वृषभानदुलारी ॥ आऔ तहाँ सब चलि देखें दान निबेरत हैं गिरिधारी ॥ सूधी चली गई बह नागरि आड़ी कीनी ललिता मुसिकान ॥ जाइ न कछू कहिहै हमसों काहे देत अटपटी बान ॥४॥ छाडौ नहीं दान बिनु लीनें भली बौहनी ह्वै है प्रात ॥ दधिकी मटुकी छीन सब लैहें काहे कौ अकुलात ॥५॥ उतर होत सब नंदनंदनसौ दान कहत काहे कौ नाम ॥ कौन दमनसो देहुँ लड़ैते रहत हमारे गाम ॥६॥ तुम जो चलावति एक दही की इहाँ लीजियत अँगअँगकौ दान ॥ तनकौ दान लेत सबहिनपै भरे

हैं ऐसे ठान ॥७॥ दान देंन घरतें लै आवहुँ तब तुमरौ सब देहुँ चुकाई ॥ इतनी दूर तुम जाहु काहेकों तुमहीं पै सब देहुँ बताई ॥८॥ हमपै कहा कहै किन हमसों हमहैं रीति परी तहाँ आई ॥ रीती नहीं झूठौ सौ बोलत नखशिखलों हम भरि भरि लाई ॥९॥ सो तुम कहो अहो नंदनंदन पैंड़े घाट पाइयत कैसें॥ काहे करत नाँहि किशोरी दैवेकी दीसत है वैसें ॥१०॥ मटुकी उचक लई सिरपरतें करिकरि स्वाद लाल भल खाई ॥ चितवत हँसत कहत सबहीसों कहा मेल तुम ओट जमाई ॥११॥ आजहू जान देहु घर अपने नये नये अँचरा डारे फार ॥ तुमतौ बैठिहौ घर भीतर मनसों देखौ क्यों न बिचार ॥१२॥ शिथिल भई सुनि वचन लालके सुखरस आज बढ़्यौ बन माँझ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरके ढिंगते निश भई घर आई साँझ ॥१३॥

★ राग धनाश्री ★ नीकें दान निबेरत हौ पिय लूट मचावत ॥ जिहिं तीय दाव पाय जुवती जन कछुक लगावत ॥१॥ कंचुकी कुच निहारि लाल गहि बाँह डुलावत ॥ करसों अलक छुवौ गिरिवरधर मुख चुमि चुमावत ॥२॥ यहि मारग आवतही देखत तबही उठि धावत ॥ कृष्णदास प्रभु कर ठाढ़ी लै नाम बुलावत ॥३॥

★ राग सारंग ★ राज भोग दर्शन ★ जीती हो चंद्रावलि नारि जीती हैं ब्रजमंगल राधे जीती सुंदरि गोपकुमारि ॥१॥ हारे हैं ब्रजराज लड़ैते रहे हैं सबनके बदन निहारि ॥ पकरौ पाँय कह्यौ करौ मेरौ कहि रही जिय माँझ विचारि ॥२॥ पहेरौ हार इन्हें पहेरावौ करौ कुंवर आपुन मन भाये ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर सबहीकी गहि गहि भुजा हियेसों लाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ जमुना घाट रोकीहो रसिक चंद्रावलि ॥ हँसि मुसिक्याय कहति ब्रजसुंदरि छबीले छैल छाँड़ौ अंचल ॥१॥ दान निबेरि लैहों ब्रजसुंदर छाँड़ो अटपटी कित गहत अलकावलि ॥ करसों कर गहि हृदयसों लगाय लई गोविंद प्रभुसों तू रासरंग मिलि ॥२॥

★ राग नट ★ सांजना दर्शन ★ कुँवर कुँवरि आये दान निबेर ॥ लेत बलाय

करत न्यौछावर अपने लालकौ श्रीमुख हेर ॥१॥ यह रस ऐसौई दिनदिनकौ रह्यौ चंद्रावलि कुँवरि तिहारौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर संग खेलौ गिरिधर सबहिन प्रानपियारौ ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ को जीत्यौ किन मानी हार ॥ तुम हारे व्रजराज लड़ैते हम जीतीं उदैभान कुमार ॥१॥ और सब जीती फूफी हमारी हमहूँ तौ कछु लगत तुमारे ॥ तुम दानी हम दान चुकावत जीतनमें को बहुत जितारे ॥२॥ मेरौ दान लियें तुम ठाढ़ी तुमतौ जीतत बात बनाई ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल की ललिता होई ओर किन आई ॥३॥

★ राग गौरी ★ संध्या आरती ★ तुमसों को झगरे नँदलाल ॥ चलौ चलौ घर जाउँ आपने इनतौ पकरी उलटी चाल ॥१॥ तुम रहौ घर बैठ आपुने हमतौ कहूँ न बैठनहार ॥ तुमरी जीत बहुत याही में वस करि लेत कछू पढ़ि डार॥२॥ बिगरत तुमें कहाबस मेरौ फिर फिर तुम मानौगी हार ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल तुम देखौ बोलौ बचन सँभार ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ सैनमां ★ दान निवेरि लाल घर आये ॥ आरती करत नंदजुकी रानी और हँसि हँसि मंगल गीत गवाये ॥१॥ ऐसे बचन सुने मैं श्रवणन बड़े महरि के पूत कहाये ॥ फिरि फिरि राय बात हँसि बूझत हमकों कहौ कहा तुम लाये ॥२॥ लाऊँ कहा सुनों किन मोपै छीन छीन सबने दधि खाये ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलालनें बातन ही दोऊ बौराये ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ कुँवरकुँवरि आये दान चुकाई ॥ चुंबत बदन आय द्वारमें जसुमति रोहिनी लेत बलाई ॥१॥ लियें उठाय गोद अपनी में बैठी भवन में जाई ॥ पूछत को जीत्यौ को हार्‍यौ बोले मुरि मुसकाई ॥२॥ यह ब्योहार दान को ऐसौ मेरी राधिका उमग्यौ चाहौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल संग योंही खेलौ इने खिलाहौ ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ जान दै हों घर नंदकुमार ॥ सगरो दिन झगरेमें बीत्यौ यह देखौ निपट भई है अबार ॥१॥ तव हँसि कहत लाल सबहिनसों आज कठिन

होत है जान ॥ काहेकों मोल तुम लीनौ और समझौं तुमारौ ठान ॥२॥ दान देहु कहि नंददुहाई सबन बसाऊँ मैं बनमाँह ॥ श्रीविट्ठलगिरिधर सबहीकी हँसि हँसि पकरी बाँह ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ सब दधि लीयौ लीयौ मटुकिया फोर ॥ औरकी और कहा कहा कहों सखी जैसी बिधि बाँह मरोर ॥१॥ अति घन बनमें अकेली करि पाई नाँहि करति सहति हों होरी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधरनकी अटपटी कौने लखी जात कहै तेती थोरी ॥२॥

★ राग धनाश्री ★ सूधे न बोल कहा इतरानो ॥ या ब्रज में कौन तें कौन बड़ो कहा रंक कहा रानो ॥१॥ कोन टेव दिन दिन नित प्रति की तकत अंग बिरानो ॥ जोई जोई हाल किये कहि दे हों 'अग्र स्वामि' रहे छानो ॥२॥

★ राग सारंग ★ जान अजान सुजानसों मैं हँसि भूलें बात कहो ॥ हाथ दुहायो ओट जमायो लिये जात दही ॥ध्रु॥ रोक रह्यो मग नंदको नंदन ह्वै गयो माट महीं ॥१॥ कोय कांन कांगरूको पंडित के घर भूल गई ॥ अचरज एक सुनो सखी बिन नियरे नाव बहीरी ॥२॥ छांडत नाहिं लाल मेरो गोहन अपने खिरक गईरी ॥ चतुर बिहारी गिरिधारीलाल की यह टेव न बहीरी ॥३॥

★ राग पूर्वी ★ मोहे बोलवो न चालवो बुलायवो न बोलवो जसोदाजु तिहारे कान्ह ऐसी गारी दीनी ॥ दधिपें लगायो दान दिये बिन न देत जान ऐसी अटपटी बात तिहारे कान्हकीनी ॥१॥ खोर में मरोरी बांह मटुकी झटकलीनी जानों कहाकीनी पाट इंडुरी नवीनी ॥ अकथ कहानी बरजो न मानी व्रजपति रानी में तिहारी कांन कीनी ॥२॥

★ राग नट ★ लाल तुम मांगत दान कैसो ॥ छांडो बाट हम जेहें मोहन रोकत हों मग ऐसो ॥१॥ दूध दहीं को दान सून्यो कहीं देहो कहा कहोजू तैसो ॥ नंददास प्रभु गिरिधर सुत क्यों बोलत बोल अनेसो ॥२॥

★ राग नट ★ जाओ जाओ गुजरिया झूठी ॥ लरिका मेरो घर खेलत हे कौन चोर बन लुंटी ॥१॥ माखन खायो मही ढरकायो उरमोतिन लर टूटी ॥ आसकरन प्रभु मोहननागर सर्वस्व दे ग्वालन छूटी ॥२॥

★ राग सोरठ ★ नैन नचावत गुजरी उजरेगात भोंह खसत मानों डसे जात ॥ हर्यो लहेंगा केसर भीनी अंगिया सुहि सारी गोरेतन अति सुहात ॥१॥ कहारी कहों वाके अंगकी शोभा चंदहु देख मलिन व्हे जात ॥ हँस चितवन मोहे धोंधी प्रभु काहे लालन ललचाय ॥२॥

★ राग कल्याण ★ अरे तेरी याही में बनआई ॥ यह मारग तुम रोक रहेत हो छीन छीन दधिखाई ॥१॥ तुम जानत हो घेरी हमने रही अपनी समदाई नंददास प्रभु तनक छाछ मैं निकस जात ठकुराई ॥२॥

सांझी के पद

(भाद्रपद सुदी १५ से अमावस सांजना भोग आरती मां)

★ राग पूर्वी ★ आई हूँ अकेली साँझ साँझीके कुसुम लेंन भलौ मिल गयौ तू जात घर गायले ॥ आयौ घनघोर मेह सूझत नहीं कछु गेह चुंदरी चटक रंग नीरतें बचाय लै ॥१॥ चपला चमक चकचोंधी ते डरत हों एरे निरमोही अंग संग क्यों न लगाय लै ॥ कहावत हौ सुजान कीजिये पै न मान यही है सयान कारी कामरी उढाय लै ॥२॥

★ राग गौरी ★ चल वृषभान सुता साँझीकों आई हों देख फूल रहे फूल ॥ और सखी सब गईं ल★ती मोहि मिलीं कालिंदी कूल ॥१॥ हों पठई उन बोलन तुमकों आतुरगति आई हों दौर ॥ वेगि चलौ छिन बिलँब करौ जिन वे सब चुनचुन लैंगी तोर ॥२॥ बरन बरन बिविध भाँतके फूले कुसुम शोभा देत ॥ तजि स्वारथ हों अपनो आई भलौ मनावन तुह्मरे हेत ॥३॥ कहा तेरौ नाम कौन की बेटी अबलों हम देखी नहिं बाल ॥ कीनी भली भलें तुम आईं काज परायौ करत कृपाल ॥४॥ रूपरास दुति कांति कृपानिधि देखियत हैं तुम परम उदार ॥ या छबिकी पटतर कोऊ नाहीं कोटिक चंदा डारों वार॥५॥ बास नंदगाम है मेरौ स्यामा स्यामा सब कोऊ कहत ॥ तुव प्रताप वृषभान बांह बल बहुत बरस भये व्रजमें रहत ॥६॥ मैयासों मिस कौन बने हो तुम प्रवीन

कछु करौ उपाय ॥ लै चल मोहि मिलवौ रानीसों करूँ उन मन भायौ दाव॥७॥ तब बोली राधा कीरतिसों तोहि मैया कोऊ बोलत द्वार ॥ बोल लेहु गृह काज करत हों ताहि बोलिये भवन मँझार ॥८॥ तब स्यामा कीरति पै आईं देखतही मन रह्यौ लुभाय ॥ दै असीस नीके आदर कर ढिंग बैठारी मोद बढ़ाय ॥९॥ बूझ्यौ नाम काज कहा आईं कीरति बोली हित्त उपजाय ॥ स्यामा नाम कहत हैं मेरौ तबहीं बोली मृदु मुसिकाय ॥१०॥ आई डार कुँवरि कर कंकण पायौ है रखवारे हाथ ॥ बीनत फूल काल्ह हम सबही राधा सहित हतीं सब साथ॥११॥ इन न रही सुध गिरत न जान्यौं हौं रही इकटक नयनन तान ॥ अनबोली हौं ह्वै रही रानी यों मनमें नहीं जान पहिचान ॥१२॥ अब हौं आज गई फूलनकों तब माली बोल्यौ यों माय ॥ आउरी कुँवरि सुता तू कहाँकी कहा ढूँढ़त हौं देहु बताय ॥१३॥ मैं कह्यौ वीर गयौ एक कंकण राधा गई है काल्हकी डार ॥ तब उन कह्यौ बोलि उन लावौ ताकों ताहि नीके देहुँ संभार ॥१४॥ ततछिन अति आतुर उठ धाई काज करन हित तुम्हरे पास ॥ राजकाज ज्यों कछु बनि आवै बोल भलाई और न आस ॥१५॥ तब कर जोरि कह्यौ तुम हौ धन्य कीरति बोल कुँवरि दई संग ॥ अति आनँद बढ़्यौ दुहुन मन फूले समात नहीं अंग अंग ॥१६॥ ललिता संग कुँवरिके दीनी आवौगी उलट सब बेग ॥ स्यामा सब बिध तुम प्रवीन हौ तुम विश्वास सब तज्यौ उद्वेग ॥१७॥ लै संग जाउ आउ पौंहचावन तब घर जाउ आपने काज ॥ तुम निश्चिंत निधरक रहौ मनमें आऊँ लै अब सुखके साज ॥१८॥ पहुँचे जहाँ सघन गहेवरबन ललित लता द्रुम गहबर माँहि ॥ जान एकांत चाह चित क्रीड़ा तब प्यारी धर गरेमें बाँहि ॥१९॥ देख्यौ स्थल प्यारी सुंदरवर चाहें हियेमें करन बिनोद ॥ परसत अंग मदन व्यापत तब चितवत प्यारी श्यामाकोद ॥२०॥ ललिता ललित बचन हँस बोली ए छलिया पहिचानत नाहिं ॥ मैं तौ जान रही कबहीकी समझ रही मनही मनमाँहिं ॥२१॥ क्यों न कही पहिलें सखी हमसों तुमही हमसों करत दुराव ॥ ऊपरतें अनखत ललितासों मनमें आनँद उपजत चाव ॥२२॥ रसमें

विरस क्यों करत लड़ैती यों बोली ललिता करजोर ॥ तब सुध बुध कैसेंके रहिये जब विधिना लैहें चितचोर ॥२३॥ तिय पट पलट देहु हरि मोकों पिय प्यारी कीजे कल केलि ॥ कुसुम शैया ललिता रचि कुंजन आप भई इत उत दोउ मेलि ॥२४॥ कर ओली चोलीकी वीनन गई कुसुम ललिता बनमाँझ ॥ रति रस विलस निकस कुंजनतें पिय प्यारी आये लखि साँझ ॥२५॥ उत सब सखिन लखी ललिता जब हँसत हँसत आई ता पास ॥ वूझत आज अकेली क्यों तूँ राधा छाँड़िकें करत बिलास ॥२६॥ यह पट पीत कौनकौ लहेंगा प्रकट जनावत बदन बिकास ॥ हम कहाँ कहत दुरावत हौ क्यों मेंटौ भलें तुम मन्मथ प्यास ॥२७॥ तव ललिता टेरी मनमोहन आय घिरीं सब व्रजकी बाल ॥ आलिंगन चुंबन दै हरिकों चोरी राधाकी नंदलाल ॥२८॥ मिल सब गईं लाजकी मारी इत राधा मन रही लजाय ॥ डलिया फूलनकी आगें धरि सब बिधि मिल लीनी बतराय ॥२९॥ अब घर चलौ बेर है जैहै तौ खीज बाबा वृषभान ॥ बहुरि सखीकौ भेख श्याम कर सखियन लै पहुँचे घर आन ॥३०॥ कीरति आई द्वार गान सुन अरघ दियौ अरु आरति बारि ॥ भवन माँझ लै स्यामा बोली ढिंग बैठारी कर बलहारि ॥३१॥ साँझ भई अब जिन घर जैयो रहियो सोय आज यहाँ रात ॥ साँझी खेल कीजियै व्यारू करजु कलेऊ जैयो प्रात ॥३२॥ शंक न करौ निशंक खेलौ घर अपनौ तुम मनमें जान ॥ कहत सबै बशकीनी कीरति नई सखी भइरी मनमान ॥३३॥ लीपभीत चंदन गोबर रचि चित्रित साँझी धरी बनाय ॥ जो देखत सोई रहत चक्रत है कहत और नहिं त्रिभुवन माँय ॥३४॥ धूप दीप नैवेद्य भोग धर करत आरती दोउ कर जोर ॥ चिरजीवौ राधा श्री श्यामा हरें हरें यों कहें तृण तोर ॥३५॥ कीरति कहत करौ अब ब्यारू भूखी हौ जो सबै सुकुमार ॥ सब प्रताप तिहारो घर रानी अब जैहै बहु भई अबार ॥३६॥ भलौ भद्र सिदौसी अईयो भुवन तुमारे तें उठि भोर ॥ दै असीस सब चलीं सखी घर बिहरत दंपति संग बरजोर ॥३७॥ लरियो जिन राधा श्री श्यामा तुम सोय रहौ मेरौ पलक डार ॥ ललिता पानीको ढिंग रहियो

कीरत सोई अपने दरवार ॥३८॥ सुरत केलि सव विधि सुख लूट्यौ मिसहिं मिस दोऊ परम विचित्र ॥ केतिक बुद्धि श्रुति पार न पावत बरन सकै को अगणित चरित्र ॥३९॥ भोर भयौ जागे नरनारी सव जाग्यौ बरसानौ गाम॥ करन कलेऊ कीरति टेरत राधा श्यामा लै लै नाम ॥४०॥ आलस भरे उनीदे दोऊ लेत जृंभाय अंग अकराय ॥ बदन पखार उठाय सेजतें अति हितसों भोजन करवाय ॥४१॥ पेंड़ पाँच पहुँचाय द्वारतें ललितासों कही यों पहुँचाय ॥ चिवुक परस सिर पर कर फेर्‌यौ घर पठई श्यामा समझाय ॥४२॥ पूरन पुन्य फले ललिताके पहुँचावन मिस पायौ लाव ॥ मानों कसौटी कसत कनककों देखत को पायौ है दाव ॥४३॥ त्रिय वागौ पायौ नौछावर आई उलटि घर रिझ रिझाय ॥ इत्त जसुमति सुतकों बूझत जब कहत बात मोहन समुझाय ॥४४॥ नयन सजल भरभर कर मींड़त बिगरी यों कहि तोतरे वोल ॥ मैया हम न बसेंगे व्रजमें व्रजवासिनी मद मत्त अलोल ॥४५॥ गोपीजनकौ कृष्ण अति वल्लभ गहि बाँध्यौ कर माखनचोर ॥ उपज्यौ हास सुनत सुत बतियाँ उर लायौ कर प्रान अकोर ॥४६॥ मेरे लालकों जो कोउ बाँधै बाँधूँ ताहे कोटिक बार ॥ चिरजीवौ रसिकनकी जीवन पीवत नंद यशोमति जलवार ॥४७॥

★ राग गोरी ★ श्रीवृषभान लड़ेती गाइयें कीरति कुल मंडनवाल हो ॥ सोनेकीसी बेलिहो प्यारी चंपेकीसी माल हो ॥१॥ हंसगमनी मृगलोचनी शोभित सहज सिंगार ॥ चमकत चंचल चीकने सिर सटकारे बार ॥२॥ घूँघरवारे बारन ऊपर शोभित सुंदर साल ॥ चंदके फंद परे अहिनंदन उरझे कंचन जाल ॥३॥ अतलसकौ लहेंगा कटि गाढ़ौ दरियाई की अँगिया पीत ॥ उरज सुभट कंचनकवच सजि आये रति रणजीत ॥४॥ कृश कटि केहरि देखिदुरै हरि जेहर तेहर पाय ॥ गजगमनी कमनी अवनी रवनी रति लेत बलाय ॥५॥ कर चूरौ ललकै झलकै पलकै न लगै छबि देख ॥ अँगुरिन मुँदरी पोंहोंची गजरा बाजूबंद विशेख ॥६॥ चंपकली चौकी चमकै दमकै दुलरी पिय पोति ॥ चितकों लेत चुराय चाहिकें बदन चंदकी जोति ॥७॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि श्याम

चपलता सार ॥ कमलकोशमें बैठी पंगति मानो भृंगकुमार ॥८॥ बेसर को मोती लटकै मटके खटके प्रिय प्रान ॥ श्रवन बनी रुचि मनी कनककी तनक तरकुली कान ॥९॥ पियतृखमोचन रतिरस रोचन चंचल लोचन नार ॥ कुँवर किशोर चकोर चेहैं टुबा पढ़त चंद चटसार ॥१०॥ अलिकुल गंजन रतिरसरंजन नयनन अंजन दीन ॥ क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ मानो मनसिजके मीन ॥११॥ समर सहायक नवरस नायक सायक घायक नयन ॥ कुँवर कुरंग सुरंग कमल काननसों ठानत ठैन ॥१२॥ कारी झपकारी भारी बरुनी बरनें कवि कौन ॥ भ्रोंहें सुठि सोहें मोहैं मानो हावभाव के भौन ॥१३॥ शुभ बिरियाँ दुपेहेरियां के फूलनकी बेंदी दीनी भाल ॥ इंदुबधू मानों नवलचंदकों आय मिली ततकाल ॥१४॥ शीश फूल सोहै मोहै बनी तनक कनककी आड़ ॥ चिबुक चारु मुसिकाय हँसत जब परत कपोलन गाड़ ॥१५॥ यह विधि छबि अगाधा साधा राधाजू सखियन माँझ ॥ बिटियाँ बहुत जो गोपनकी संगखेलत सांझी सांझ ॥१६॥ गोधूलकी बिरियाँ डलियाँ फूलनकी लै चलीं हाथ ॥ बीनत फूलन यमुना कूलन श्यामाजूके साथ ॥१७॥ एक लिये ओली चोली पर चाँप चिबुकतर चीर ॥ फूलन तोरत तनहिं मरोरत जहाँ भ्रमरनकी भीर ॥१८॥ एकन लै लावन्य ललित पटकी अटकी कटि छीन ॥ रमक झमक पल्लव नवाय चढ़ बीनत फूल प्रवीन ॥१९॥ कुंदी कुंद करन कोमल निरवारत बाला बेलि ॥ ललित लवंग लता बनिता पर रहे झूमका झेलि ॥२०॥ जाई जुही केतकी निवारी चमेली रायबेल ॥ फूलन की कर गेंदुक बाला बनमें खेलत खेल ॥२१॥ बौरसरीके फूलनकी नकफुली बनावत एक ॥ श्यामा अभिरामा सुख धामा खेलत खेल अनेक ॥२२॥ तिहिं छिन कुंजबिहारीजू दुरि देखत कुंजनओट ॥ रहे हैं चित्र कैसेजु चितेरे लगी दृगनकी चोट ॥२३॥ कियो सखीको रूप लालने भर गुलाबदल गोद ॥ त्रियारूप धर दरशन दीनों मनमें मानत मोद ॥२४॥ निरखि निरखि बृषभान नंदिनी बोली बचनरसाल ॥ सब सिंगार सोहै मोहै तू को हैरी नवबाल ॥२५॥ तू क्यों फिरत अकेली हेली

यह बन यमुना कूल ॥ नंदगाम घर साँझी कौ हम बीनन आईं फूल ॥२६॥ उत्कंठित्त वृषभान नंदिनी कंठ भुजा उरमेल ॥ आज अबार भई साँझीकों तू संग हमारे खेल ॥२७॥ सखी लई सब बोल बोल गौरंभन धुनि सुनि कान ॥ बड़ी बार घर जैहें तो खीजें बावा वृषभान ॥२८॥ चंदा चंद्रभगा चंद्रावलि चंचलनयनी चली धाम ॥ बहुत फूल बीनै हैं भटू री पूजे मनके काम ॥२९॥ कमल फिरावत गीतजो गावत आवत घर व्रजबाल ॥ फूलनकी कर गेंद लकुटिया फूलनकी उरमाल ॥३०॥ माय धाय उर लाय लई कीरतिजू परमप्रवीन ॥ अरग बढ़ाय लई घर भीतर आप आरती कौन ॥३१॥ मृगमद चंदन केसरसों श्यामाजू लीपी भींत ॥ कामधेनु के गोबरसों रचि साँझी फूलन चीति ॥३२॥ धूप दीप धरि भोग अमृतरस आप आरतौ उतारि ॥ गावत गीत पुनीत किशोरी श्रीवृषभानकुमारि ॥३३॥ करव्यारू सब संग खेलि चली अपने अपने धाम॥ श्यामाजू और नवल सखी सुख लूट्यौ चार्‍यौ जाम ॥३४॥ त्रिय बागौ ललिताहिं दीयौ श्यामापति सुघर सुजान ॥ रसिकरूप धर केलि करी सुखसागर प्रानन प्रान ॥३५॥ शरद निशा सुख यह विधि राधा माधौजूनित्यबिहार ॥ शोभापर बल जाय श्यामघन अवलोकत सुखसार ॥३६॥

★ राग गौरी ★ सबमिल आईं लाड़िली वृषभान नृपति के द्वार हो ॥धृ.॥ सब मिल आय कह्यौ कीरतिसों देहु लड़ेती संग ॥ बनमें फूल बिराज रहे हैं खेलन साँझी रंग ॥१॥ यह सुन कीरति बोल कुंवरिकों उबटिन्हवाई प्रीति ॥ अँग अँगोछ फुलेल केश बिच पाटी पारी चीति ॥२॥ बेनी सुरंग गूँथि माँगमें सेंदुरभरी बनाय ॥ बाँयें सीसफूल इत चंदा बिच लटकन लटकाय ॥३॥ टीकी कमलपत्र काजर दै बेसर चिबुक बिराज ॥ खुटिला खुभी और टेढ़ी बेंदी झूमक साज ॥४॥ कंठसरी तिमनी दुलरी चंपकली हार हमेल ॥ मुलकट अँगिया बाँह बिजोंठे बाजूबंदन पेल ॥५॥ चूरी गजरा कंकन पोंहोंची हाथ साँकरा मुँदरी ॥ कटि लहेंगा सारी फुफुंदी बाजत किंकिणी सगरी ॥६॥ पग नूपूर पायल जेहर अनबट बिछिया पगपान ॥ यह सिंगार कर चली लड़ैती सब मिलि

गावत गान ॥७॥ बनमें बीनत फूल हरखसों डलियाँ सोहे हाथ ॥ फूलगेंदकों आये लालन सखा न कोऊ साथ ॥८॥ खेलत गेंद परी इन बीचन प्यारी लई उठाय ॥ लालन आय गेंद माँगत हैं ललिता कह्यौ समुझाय ॥९॥ अब तो गेंद न पैहो लालन चतुराई के मूल ॥ पूछत लाल सबै क्यों आंईं बनमें बीनन फूल ॥१०॥ कह्यौ लड़ैती साँझी धरिहैं फूल सबै लै चीति ॥ लाल कह्यौ मोहि आछी आवै देखौ मेरी रीति ॥११॥ सबन कह्यौ कैसें लै चलियें एकन कह्यौ उपाय ॥ पेहेरावौ आभूषन सारी करीयें सखी सजाय ॥१२॥ सबै हरख सिंगार किये मिल चलीं आपने गेह ॥ नामधस्यौ श्यामाजू इनको तब बाँह परस्पर देह ॥१३॥ ललिता चंद्रभागा व्रजमंगल मैना नयना रूप ॥ करुणा मोहा कुमुदा रत्ना लोभा ललना अनूप ॥१४॥ रंभा कृष्णा दुर्गा ध्याना रूपा हरखा नाम ॥ रंगा हंसा दामा प्रेमा ज्ञाना जुहिला भाम ॥१५॥ चंपा बहोला सुमना नीला हीरा मुक्ता प्यारी ॥ कुंजा अमला समला विमला चंद्रावली सुकुमारी ॥१६॥ तारा कमला अमला यमुना वृंदा नंदा नारी ॥ अबला शीला सुखिया प्रमुदा नवला सुमति बिहारी ॥१७॥ चतुरा कामा रसिका श्यामा राधा लै घर आँईं ॥ एक वेश एक रूप सबनकौ देखत रही लुभाईं ॥१८॥ गावत आवत सब मन भावत आरती कीरति साज ॥ पूछत कह्यौ लड़ैती यह को जोरी भली विराज ॥१९॥ बीनत फूल यह मैं देखी पूछी इनकी बात ॥ नंदगाममें बास बसत है श्यामा नाम कहात ॥२०॥ इनमें एक बड़ो गुण मैया जानत साँझी चीति ॥ मन हरखित कीरति तब बोली खेलो सब मिलि प्रीति ॥२१॥ मुठिया वार आरती बारी भीतर गई लिवाय ॥ भीति लीप चंदनसों छिरकी साँझी धरत बनाय ॥२२॥ धूपदीप नैवेद्य धस्यौ पुनि आरती करत सँवारि ॥ कीरति कह्यौ बियारू कीजे भूखी हो सुकुमारी ॥२३॥ भोजनकर सब हाथ पखारे बीरा रत्ना देत ॥ बीरा लै कह्यौ हम घर जैहैं कीरति कह्यौ सुहेत ॥२४॥ श्यामा तुम जिन जाहु दूर घर यहाँई सोवो रात ॥ औरनसों यों कह्यौ बेगिही आवोगी उठ प्रात ॥२५॥ वे तब गईं रही है श्यामा खेलत चोपर रंग ॥ जीत परस्पर

होत दुहुनकी राधा श्यामा संग ॥२६॥ एक सेज पौढ़े तब दोऊ उठे प्रात अरसाय ॥ बेऊ सब आँई तिहिं अवसर निरख सबै मुसिकाय ॥२७॥ साँझी डलिया में धर लीनी गावत चली सुभाय॥ डलिया यमुनाजल पधराई सबै न्हात सुख पाय ॥२८॥ लाल कह्यौ अब हम घर जैहैं मैया जानतनाय ॥ यों कहि आवत जसुमति देखी रूखे भये लजाय ॥२९॥ जसुमति पूछत रात कहाँ रहे लालन कही बनाय ॥ दौरी गाय गयौ ता पाछें गोवर्द्धन लियौ बुलाय॥३०॥ आछे फल लै मोहि खवाये सोय रह्यौ ता पास ॥ द्वारकेश प्रभुकी बतियाँ सुन जसुमति आयौ हास ॥३१॥

★ राग गौरी ★ कीरति कुल मंडन गाईयें वृषभान नृपतिकी बाल हो ॥ कंचन तन सोहै मोहै उर पहेरें मुक्तामालहो ॥१॥ सखी वृंद सब आय जुरीं वृषभान नृपति के द्वार ॥ बीनन फूल चलौ बन राधे नवसत साजसिंगार ॥२॥ यह सुन कीरतिजु हँसिकें प्यारीकौ कियौ है सिंगार ॥ कबरी कुसुम गुही है मानौ उडुगणकी अनुहार ॥३॥ शीशफूल जिम चंद विराजत शोभा कही न जाय॥ कोटि चंद वारों मुसिकन पर काम रह्यौ मुरझाय ॥४॥ बंक बिराज रहे भृकुटी तट खुटिला श्रवनन पास ॥ यों लपटाय रहे दोऊ जनु नयन दरशकीआस॥५॥ करनफूल झूमक अरु बंदी लटकन बेंदि लिलार ॥ नकबेसर मोती अति सोहै लटकन परम सुढार ॥६॥ मुखही तमोल अधर अरुनाई दशन लसन अति सार ॥ चिबुक बिंदु मधुकर सुत मानौ बैठ्यौ आसन मार ॥७॥ अंजन ऊपर खंजन वारों नयन चपलता मीन ॥ कीरतिजू छबि निरखि निरखिकें दीठदिठौना दीन ॥८॥ चौकी चमक तिमनियाँ दुलरी चंपकली उपहार ॥ बाजूबंद पछेली चूरी कंकन गजरा चार ॥९॥ पोंहोंची रत्न चौक और मुँदरी नखभूषण छवि देत ॥ श्रीकर कमल बिराजत मानो उडुगण चंदसमेत ॥१०॥ क्षुद्रघंटिका कटि तट राजत जेहरि नूपुर पाय ॥ अँगुरिन बिछिया अनवट सोहें शोभा कही न जाय ॥११॥ हरे कसबकौ लेहेंगा सोहै कंचुकी केसरि अंग ॥ सारी सुही रँगी है मानों गुलाबाँसके रंग ॥१२॥ कर सिंगार कह्यौ कीरतजू जाउ लड़ैती

साथ ॥ अली यूथमें चली परस्पर फूलन डलिया हाथ ॥१३॥ चलत चाल मराल बाल श्रीराधाजू सखियन माँझ ॥ बीनत फूलन यमुना कूलन खेलत साँझीसाँझ ॥१४॥ जालरंध्र देखत है मोहन दृष्टिपरी ब्रजबाल ॥ त्रियारूप कियौ है तबही आय मिले ततकाल ॥१५॥ छवि निरखत वृषभान दुलारी बहुत करी मनुहारि ॥ बीनत फूल अकेली हेली तू को है सुकुमारि ॥१६॥ कौन गाम बसति हो सुंदरि कहा तिहारौ नाम ॥ आज अबार भई है प्यारी चलौ हमारे धाम ॥१७॥ नंदगाममें बास बसति हूँ साँवरी मेरौ नाम ॥ साँझी मिस आई हों या बन पूजे मनके काम ॥१८॥ सौनजुही चमेली चंपा रायवेलि अरुबेलि ॥ गुलाबाँसकी गेंद लिये कर करत परस्पर केलि ॥१९॥ कमल कनेर केतकी निवारौ सेवती सदा गुलाब ॥ गुलतुर्रा सदा सुहागिन फूलनकी भरि छाब ॥२०॥ ललिता चंपकलता विशाखा स्यामा भामा जेह ॥ चंद्रभगा तुंगा चंद्रावलि राधा माधव नेह ॥२१॥ ठौर ठौर सब कहत सखिनसों चलौ भटू घर जाँह ॥ स्यामाजू अरु नवल सखी दोऊ गेह परस्पर बाँह ॥२२॥ सौंधे सानि मध्य चंदन मिल करत केलि मनभाये ॥ निरख देव दुंदुभी बजावत पुष्पन वृष्टि कराये ॥२३॥ फूल गेंद सबहिन लियैं कर गावत साँझी गीत ॥ गजगति चाल चलत ब्रजसुंदरि बढ़ी परम रस प्रीत ॥२४॥ चहुँदिशि तैं सब आय जुरीं वृषभान नृपतिके द्वार ॥ कीरतिजू तब करत आरती राई लौन उतार ॥२५॥ कीरति बिहँसि कही मृदुबानी लली चली यह कौन ॥ प्यारी कह्यौ नंदगाम बसति हैं खेलन आई भौन ॥२६॥ केसर चंदन अगर अरगजा मृगमद कुंकुमगार॥ कामधेनुकौ गोबर लैकें साँझी धरत सँवार ॥२५॥ धूप दीप कर भोग धर्‍यौ आरती करी है बनाय ॥ माँगत सीख सबै ब्रजबाला हाथ जोर शिर नाय ॥२८॥ ब्यारू आज करौ मिल ह्याँहीं राधा जूके साथ ॥ कीरतिजु यों कहत सबनसौं परसूँ अपने हाथ ॥२९॥ कर ब्यारु गृह गईं सहेलीं रह्यौ खेलनकौ रग ॥ कमल सेज पर पौढ़े दोऊ मिल साँवरी राधा संग ॥३०॥ कहा कहूँ कछु कहत न आवै प्रभुकौ यही स्वरूप ॥ त्रियाबसन ललिताहीं दीये कीये हैं निजरूप ॥३१॥

वरनौं कहा यथामति मेरी रसना एक बनाय ॥ हरिदासप्रभुकी यह शोभा निरखत मन न अघाय ॥३२॥

★ राग गौरी ★ श्याम सनेही गाइयै यातें श्रीवृंदावन रज पाइयै हो ॥ध्रु.॥ राधा जिनकी भामती कुंजन कुंजन केलि ॥ तरु तमाल ढिंग अरुझी मानों लसत कनककी बेलि ॥१॥ महामोहनी मन हर्‍यौ रसवस कीने लाल ॥ कुचकलशन पर मन मल्यौ लट बाँध्यौ मैन मराल ॥२॥ नयन सैन दै तन बेध्यौ मन बेध्यौ कल गान ॥ अंजन फंदन कुँवर कुरंगन चलें दोऊ भ्रौंह कमान ॥३॥ नकवेसर बड़सी लगी चित्त चंचल मनमीन ॥ अधर सुधा दै बेधियौ चकृत किये आधीन ॥४॥ अंग अंग रसरंगमें मगन भये हरि नाह ॥ व्यास स्वामिनी सुख दियौ पिय संगमें सिंधु प्रवाह ॥५॥

★ राग गौरी ★ सखियन संग राधिका बीनत सुमनन बनमाँह ॥ साँझी पूजनकों आतुरही ठाढ़े कदंब की छाँह ॥१॥ सखी भेष दै मोहनकों लै चली आपने गेह ॥ पूछी कीरति यह को सुंदरि तब कह्यौ मेरी सनेह ॥२॥ साँझी खेल बिदाकर सबकों दोऊ पौढ़े सेज मझार ॥ सगरी राति सूर के स्वामी बसि सुख कीयौ अपार ॥३॥

★ राग गौरी ★ राधाप्यारी कह्यौ सखिनसों साँझी धरौ री माई ॥ बिटियाँ बहुत अहीरन की मिल गईं जहाँ फूल अथाँई ॥१॥ यह बात जानी मनमोहन कह्यौ सबन समुझाय ॥ भैया बछरा देखें रहियों मैया छाक धराय ॥२॥ ऐसें कहि चले श्याम सुंदरवर पोंहोंचे जहाँ सब आई ॥ सखीरूप ह्वै मिले लाड़िले फूल लिये हरखाय ॥३॥ करसों कर राधा संग शोभित साँझी चीती जाय ॥ खटरसके विंजन अरपे तब मन अभिलाष पुजाय ॥४॥ कीरतिरानी लेत बलैया विधिसों विनय सुनाय ॥ सूरदास अविचल यह जोरी मुख निरखत न अघाय ॥५॥

★ राग गौरी ★ सखियन सँग राधिका कुँवरि बीनति कुसुम दलियाँ ॥ एकही बानिक एक वेश क्रम स्यामबालके हाथन रँगीली डलियाँ ॥१॥ एक अनूपम माल बनावत एक परस्पर बेंनी गूंथत शोभित कुंद कलियाँ ॥ सूरदास मदनमोहन आय अचानक ठाढ़े भये मानो हे रँगरलियाँ ॥२॥

★ राग गोरी ★ मुरलीवारे साँवरे नेंक मारग मोहि बताव रे ॥ संग न सहेली फिरों अकेली कित नंदीसुर गाँव रे ॥१॥ भूलि परी संकेत सघन वन हों अबला कित जाऊँ ॥ मृगनयनी के बचन सुनत ही आय मिले तिहिं ठाऊँ ॥२॥ मारग मिले अंक भरि भेंटे भलौ बन्यौ है दाऊ ॥ कहि भगवान हित रामराय प्रभु राधारमन जाकौ नाऊँ ॥३॥

★ राग गोरी ★ छबरीयाँ बाँसकी फूलें फूल भरी ॥ कबहुंक कटि पर कबहुंक कर पर, कबहुंक सीस धरी ॥१॥ ढाँक ढाँक लई नीके पीयरे पट, शोभत जात न डरी ॥ धोंधीके प्रभु बोलन आवत, काहु बात अचगरी ॥२॥

★ राग हमीर ★ लाड़िले गुमानी देखत द्रगन अघानी ॥ कुसुम कली हों बीनन आई सघन लता अरु झानी ॥१॥ सोंधे सारी कमल बदन पर मधुप करत नकबानी ॥ प्रभु कल्याण गिरिधर छबि निरखत बालत्रिया छतिया सियरानी ॥२॥

★ राग हमीर ★ पूजन चली री साँझी शुभघरी शुभदिन शुभ महुरत रात ॥ चंचल चपल चपलासी डोलत चंपे जैसौ गात ॥१॥ अपने अपने मंदिर तें निकसी दीप लिऐं सब हाथ ॥ धोंधीके प्रभु तुम वहो नायक सब सखियनके साथ ॥२॥

★ राग हमीर ★ केसर फूल बीनत राधा गोरी ॥ भोरी संग सहचरी बारी ॥ जिनके अंग सुगंध केसर की अरु केसररंग सारी ॥१॥ जिनके तन बरन केसरकौ केसर पखुरी अंगुरिन पर बारी ॥ नख प्रतिबिंब देख केसरको भूल गई सुध सारी ॥२॥ बनही बन आये गिरिधर जहाँ बिहार करत सुकुमारी ॥ जीवन गिरिधर सखी रूप धरि केल करत मनुहारी ॥४॥

★ राग हमीर ★ पूजवत सांझी कीरत माय ॥ कुंवर प्यारी राधा कों लाड़ लड़ाय ॥ अरच चरच चंदन बंदनले फूलमाल पेहेराय ॥ बिबिध मधु मेवा भोग धराय ॥१॥ बोली वहे डोली घर घर तें ओलीन भर भर देत सुहाय ॥ कंचन थार उतार आरती होंसन लागत पाय ॥ ललीके भाग सुहाग मनाय ॥२॥

★ राग खमाच ★ साँझी भली बन आईरे ॥ श्रीराधे वृखभानलली ॥ बरन वरन फूल बीनकें ॥ अपने हाथ बनाईरे ॥१॥ नंदगामतें सखी भेखलै आये कुंवर कन्हाईरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवी निरखत ॥ नैन निरखि सचुपाइरे ॥२॥

★ राग खमाच ★ आली होजु अकेली अलबेली कुंजन में फूल तो चमेली चुनवेकों जाय जूटीरी। बीच मिले नंदलाल कीनो मोसों ऐसो ख्याल भइरी बेहाल मोतीमाल ले छुटीरी ॥१॥ करन सों करगहे बंगरी फुटीरी कामगेल वनमें लुंटीरी ॥ नंददास प्रभु पिय मिलेरी डगर आये पहले प्रीत हुती अब जाय तुटीरी ॥२॥

★ राग जंगलो ★ अरी तुम कौन हौरी फुलवा बीनन हारी ॥ नेहलगन कौ बन्यौ बगीचा फूल रही फुलवारी ॥१॥ मदनमोहन पीय यों बूझत हैं तू कोहै सुकुमारी ॥ ललिता बोली लालसों यह वृषभान दुलारी ॥२॥ या वनमें हम सदा वसतहैं हमही करत रखवारी ॥ बिन बूझें तुम फुलवा बीनत जोबन मद मतवारी ॥३॥ ललित बचन सुन लालके सब रीझ रहीं व्रजनारी ॥ सूरदास प्रभु रस बस कीनी विरह वेदना टारी ॥४॥

★ राग जंगलो ★ फुलवा बीनन हों गईरी जमनाकूल कुसुमन की भीर ॥ उरझ रह्यौ अरनी की डरीयाँ तिहिं छिन मेरौ अंचल चीर ॥१॥ तब कोऊ तहाँ अचानक आयौ मालती लता सघन निरबार ॥ वाहीनें मेरौ पट गुरझायौ एकटक मोतिन रह्यौ निहार ॥२॥ मन अरुझाय बसन सुरझायौ और कहा कहूँ लाज की बात ॥ हों अपने मग चली जात सखी वे सैननसों हाहाखात ॥३॥ नाम न जानौं वह श्याम बरन है पीरौपट बाकौ हतौ दुकूल ॥ अब बाई बन लै चल नागर फिर साँझी बीनन कूँ फूल ॥४॥

★ राग जंगलो ★ एरी सखी सांवरी अकेली या वन कहांते आई। तरुन तरुन चमकत तेरे नैना श्री राधाके मन भाई ॥१॥ नंदगामकी ग्वालिनी हौं श्यामा मेरो नाम। सांझी खेल कुशल सुनि राधे दरसन ही को काम ॥२॥जब ललिता भुज भरि लई अपने राधे सूं भेटाई। नये नेह सों मिलत परस्पर बरसाने ले

आई ॥३॥ सांझी भरत धरत बहु मेवा बीरा विधिसों बनाई । ले ले तन मन आरती उतारत फूली अंग न समाई ॥४॥ भई अवार कीरति जू बोली सोई रहो तुम ह्यांई । 'आरतराम' प्रभु तन मन वारत सुख लूटत सुखदाई ॥५॥

★ राग जंगलो ★ री कोऊ स्याम सखी री सांझी पूजन आवे री ॥ कर सिंगार चोली आभुखन डलियन कमल धरावे ॥१॥ भान भुवन राधाजूके गुन गावत गावत आवे ॥ नागरीया मिल नैन दोऊनके देख देख मन भावे ॥२॥

★ राग जंगलो ★ रहेरी दोऊ वदन निहार निहार ॥ सांझी पूजत स्याम सखी इत उत राधा सकुमार ॥१॥ लता सघन में ह्वै गई इत उत सकेन कोऊ निरवार ॥ नागरीया मिल नैन दोऊनके बड़े ठगन ठगवार ॥२॥

★ राग जंगलो ★ दोऊन की अंखिया अंखीयन मांझ ॥ अंखीया हूं सांझी की खेलन अखीयाँ भूली साँज ॥१॥ रूप बगीचन करत रंग भर गरे वहीयां दे अंखीया ॥ अंखीया हूं सांझी की उरजन उरजन नागर सखीयां ॥२॥

★ राग मालव ★ खेलत साँझी रंग रह्यौ ॥ नंदनंदन वृषभान नंदिनी अंतरपटजु दयौ ॥१॥ फूलन डलियाँ भर भर लीनी चित्रविचित्र भयौ ॥ बहु प्रकार व्यंजन धर आगें बिनय करत नयौ ॥२॥ आरती करत कोट की सुंदरी रागही रंग छयौ ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन कृपानिधि ब्रजजन सुखही दयौ ॥३॥

कोटकी आरती के पद

★ राग जंगलो ★ अरी सखी सांमरी हो, अकेली यह वन कहां ते आई ॥ तरुन तरुन तेरो तन प्यारी श्री राधे के मन भाई ॥१॥ नंदगाव की सांमरी हो स्यामा मेरो नाम ॥ सांझी फूल कुशल सुन राधे दरशन ही को काम ॥२॥ जब ललिता जु भुज भर अपुने श्रीराधासों भेटाई ॥ नये नेह सों मिलत परस्पर बरसाने ले आई ॥३॥ कीरतजु आदर कर लीनी सोय रहो तुम यहांई ॥ स्यामा भामा सबे मिलके फूलन डलियां लाई ॥४॥ सांझी भरत धरत बोहों मेवा बीरा विधिसों खवाई ॥ पुरुषोत्तम सखी तन मन वारत सुख लुंटत सुखदाई ॥५॥

★ राग जंगलो ★ हो राधे, फूलन मत ले। तुँ तो मेरी मदन सुखदा कुंज फूलन मत ले ॥ नित्य नित्य कलियां बीन जातहो अब वश परी हें तुं मेरी ॥१॥ चीर हरे सो भुल जातहो यह जमुना के तीरे ॥ नागरिया पिय प्यारी दोऊ मील विहरत कुंज कुटीरे ॥२॥

मुरली के पद

★ राग भैरव ★ जान्यौ जान्यौ री सयान तें प्रानेश्वर सों कीयौ मान भयौ है विहान ॥ पियकों तेरौ ही ध्यान मेरी सीख सुनलै कान जामें बसे प्रान तोसों कैसो गुमान ॥१॥ सुन मुरलीकौ गान आछी मीठी नीकी तान संकेत स्थल रच्यौ कुसुम बितान ॥ सूरदास प्रभु सुजान सकल शिरोमनि मान मदनमोहन तेरे सुखकौनिधान ॥

★ राग भैरव ★ मुरली हरि तें न छूटतहै ॥ वाहीके वश भये निरंतर वह अधरन रसलूटतहै ॥१॥ तुमतें निठुर भई वह बोलत तन तें मन उचटावतहै ॥ आरज पथ कुल कान मिटावत सबकों निलज करावतहै ॥२॥ निडरी रहत डरत नहीं काहू मुख पायें बहु फूलतहै ॥ अब यह हरितें होत न न्यारी तू काहेकों भूलतहै ॥३॥ रोमरोम नखसिख रस पागी अनुरागिन हरि प्यारी है ॥ सूरश्याम वाके रस लुब्धे जानी सौत हमारी है ॥४॥

★ राग भैरव ★ याके गुन मैं जानत हूँ ॥ अबतौ आय भई यहाँ मुरली वौ ही नातौ मानत हूँ ॥१॥ हरिकी कान करत वह को है कहा करों उनमानत हूँ॥ अबही दूर करूँ गुण कहिकें नेंकु सकुच जिय आनतहूँ ॥२॥ यातें लगी रहत मुख हरिके सुखपावत पहिचानत हूँ ॥ सूरदास यह निठुर जाति किन अब मैं यासों ठानतहूँ ॥३॥

★ राग भैरव ★ ये बंसी नाद सुर साधिकें बजाई प्रबीन कान्ह सात सुर सोधकें मधुर धुनि ॥ घरी घरी घूमत सुध न रही कछु कल न परै मेरे तन मन ॥१॥ व्याकुल भई कल नांहि परत सुनत तत छिन गई हों मधुवन ॥ धीरजके प्रभु

जनम सुफल भई निरखत श्रीनंदनंदन ॥२॥

★ राग रामकली ★ मुरली हमसों बैर दृढ़ायौ ॥ चली निपट इतराय नेंकही हरि अधरन परसायौ ॥१॥ फूली फिरत श्याम कर बैठी योंही गर्व बढ़ायौ ॥ ज्यों निरधन धन पाय अचानक नयन अकाश चढ़ायौ ॥२॥ सूरस्याम देखत सिहात हैं ताकूँ जाय रिझाये ॥ त्रिभुवनपति श्रीपति जे कहावत तिन मुरली बस पाये ॥३॥

★ राग रामकली ★ मुरली कौ मन हरिसों मान्यो ॥ हरिकौ मन मुरलीसों मिलि गयौ जैसें पय अरु पान्यौ ॥१॥ जैसें चोर चोर सों तैसौ ठग ठग एकै जान॥ कुटिल कुटिल मिल चले एक व्है दुहुन बनी पहिचान ॥२॥ ये बन बन नित धेनु चरावत वह बनही की आहि ॥ सुर गढ़ी बिधना जोड़ीकों जैसी तैसी ताहि ॥३॥

★ राग रामकली ★ बैर सदा हमसों हरि कीनौ ॥ प्रथमहिं रोक रहे गहि मारग दधिलै जान न दीनौ ॥१॥ पुनि मन हस्यौ भेदही भेदहिं इंद्रिन संग गहि लीनौ ॥ ता पाछें ए नयन बुलाये उन उनहीकों चीनौ ॥२॥ अब मुरली बैरिन उपजाई निपटि भई हम भीने ॥ सूर परे हरि खोज हमारे ऐसे परम नगीने ॥३॥

★ राग रामकली ★ सखीरी माधौ दोष न दीजे ॥ जो कछु कर सकिये सो आली या मुरलीकौ कीजे ॥१॥ बारबार बनबोल मधुर ध्वनि अति प्रतीत उपजाई ॥ मिल श्रवनन मन मोह महा रस तनकी सुध बिसराई ॥२॥ मुख मृदुबचन कपट चित अंतर हम यह बात न जानी ॥ तज तज लोकलाज विधि की विधि जो यह कही सो मानी ॥३॥ अब समुझी मिलि एक प्रकृति है सुबुधि की संगत साधी ॥ सूरदास क्यों हूँ करुणामय परत नहीं आराधी ॥४॥

★ राग रामकली ★ सजनी अब मोहि समझ परी ॥ अंग अंग जे हरिकी उपमा कबिता बनाय धरी ॥१॥ भ्रमर कुटिल कुंतलकी शोभा सो हम सही करी॥ मुख छवि शशि पटतर धर दीनौ यातें अधिक डरी ॥२॥ नवजलधर तनु कहियत

शोभा दामिनि पट फहरी ॥ सूर सहाय भई यह मुरली अपने कुलहिं जरी ॥३॥

★ राग रामकली ★ जबही मुरली अधर लगावत ॥ अंग अंग रस भर उमगत हैं तातें पुनि पुनि भावत ॥१॥ औरें दशा होत पलकन में अगम प्रीति परकासत ॥ तब चितवत काहू तन नाहीं जबहिं नाद मुख भाषत ॥२॥ ग्रीव नवाय देत है चुम्बन सुन धुनि दिशा बिसारत ॥ सुर मुरछि लटकत ताहीपर ताही रहस बिचारत ॥३॥

★ राग रामकली ★ मुरली हरिकों नाच नचावत ॥ एते पर यह बाँस बसुरिया नँदनंदनकों भावत ॥१॥ ठाढ़े रहत अधीन ताके ह्वै सकुच न बोलत बात ॥ वह निधरक आज्ञा करवावत नेंकहु नहीं लजात ॥२॥ जब जानत आधीन भये हैं देखत ग्रीव नवावत ॥ पौढ़त अधर चलत कर पल्लव रंध्र चरण पलटावत ॥३॥ हम पर रिस करि करि अवलोकत नासा पुट फरकावत ॥ सुरश्याम जब जब रीझत हैं तब तब सीस डुलावत ॥४॥

★ राग रामकली ★ मुरलीसों अब प्रीति करौरी ॥ मेरी कही मान मन राखौ उत रिस दूर हरौ री ॥१॥ तुमहिं सुनी मुरलीकी बातें दीन होय इतरानी ॥ काहे न ढेर श्याम ता ऊपर क्यों न होय पटरानी ॥२॥ हम जानी यह गर्व भरी है साधूँ न यातें और ॥ रिझै लिये हरिकों तपके बल वृथा करौ तुम सोर ॥३॥ सुरश्याम बहुनायक सजनी यह मिली एकआय ॥ तुम अपने नेंमही रहौगी नेंम न करते जाय ॥४॥

★ राग रामकली ★ मुरलिया बाजतहै बहु बान ॥ तीन ग्राम इक्कीस मूर्छना उगुनपचास कोटितान ॥१॥ सबै कला व्युत्पन्न सुघर अति या समसर को आन ॥ अति सुंदर गावत मन भावत रीझे श्याम सुजान ॥२॥ ऐसीसों नहीं बैर कीजियै दूर करो रिस ज्ञान ॥ सूरश्यामके अधरन राजत सबही अंग निधान ॥३॥

★ राग रामकली ★ स्याम मुरलिका के मनहिं ढरे ॥ करपल्लव ताकों बैठारत आपुन रहत खरे ॥१॥ बारंबार अधर परसावत उपजावत अनुराग ॥ जे वश

करत देव मुनि गंधर्व ते कर मानत भाग ॥२॥ बनमें रहत अरी को जानै कब आनी धौं जाय ॥ सूरजपुरकी बड़ी सुहागिन उपजी सौत बजाय ॥३॥

★ राग खट ★ बाँसुरी बाजत मदनमोहनजू की तट जमुनाके तीर री ॥ श्रवन सुनत मेरी सुध बुध बिसरी कहा करूँ मेरी बीर री ॥१॥ एक डरतौ मोहै सास ननँदकौ दूजौ लोक लाज कुलभीर री ॥ कृष्णदास गिरिधर नहिं मानत नहिं जानत मेरी पीर री ॥२॥

★ राग खट ★ कौन ठगोरी भरी हरि आज बजाई री बाँसुरिया रँगभीनी ॥ श्रवण परी जिनके तिननें तबही कुल कान बिदा कर दीनी ॥१॥ घुमें घरी घरी नंदकेद्वारे नवीनी कहा कहुँ बात प्रबीनी ॥ या व्रजमंडलमें रसखान सो कौन भटूरी लटू नहीं कीनी ॥२॥

★ राग खट ★ मुरली मनमोहन की सुनिकें गज गामिनी दामिनी देह भई री॥ जिनकें पतिकौ व्रत नेंम हुतो तिनहूँ तितकूँ डग द्वैक दई री ॥ अभिमान भरी पुनि तेउ गई जे नेह न जानत नार नई री ॥ दुलहा दुलहनि मधि मंडप तें कर कंकन छोरत दौर गई री ॥२॥

★ राग बिलावल ★ मुरली हरिकों अपने बस कीने माय ॥ जोइ जोइ कहत सो करत हैं अति हरख बढ़ाय ॥१॥ घर बन संग फिरैं सदा कबहुँ करत न न्यारी ॥ राधा आधी देह शयामकी तातें यह प्यारी ॥२॥ सोवत जागत चलत हूँ बैठत रस वासों ॥ दूर कौनसों होयगी लुब्धे हरि जासों ॥३॥ अब काहेकों झूकतहौ वह भई लड़ैती ॥ सूरश्यामकी भावती यह अन्त चड़ैती ॥४॥

★ राग बिलावल ★ वाहीके बल धेनु चरावत ॥ वहै लकुट जाकी वह मुरली वाते वे सुख पावत ॥१॥ वह अति निठुर वे वातें अतिही मिलिकें घात बनावत ॥ बनही बनमें रहत निरन्तर ताहि बजावत गावत ॥२॥ वाके बचन अमृत हैं इनकों ताहि अधररस प्यावत ॥ सूरश्याम बनवारी कहियत वह बन बाँस कहावत ॥३॥

★ राग बिलावल ★ सुन सजनी यह साँची बानी बारे तें नगधर कहवायौ ॥

धन्य धन्य कवि ता पितु माता जिन कहि कहि उपमा वह गायौ ॥१॥ इन्दुबदन तन श्याम सुभग घन तड़ित बसन सत भाव बतायौ ॥ अलक भृंग पटतरको साँचे कर मुख चरण कमल कर गायौ ॥२॥ ये उपमा इनहींकौं छाजै अब मुरली अधरन परसायौ ॥ सूर अंग यह आहि हमारो मुरली सबै अकेलें पायौ ॥३॥

★ राग बिलावल ★ वह मुरली बनझारकी बिन लायें आई ॥ हमहीकों दुखदेनकौं ब्रज भये कन्हाई ॥१॥ ओरहि तें हमसौं लरैं करते बरिआई ॥ गागर फोरैं घाटमें दधि माँट ढराई ॥२॥ पुनि रोकत हैं दानकों अंग भूषण माई ॥ सीखी चोरी आदितें मन लियौ चुराई ॥२॥ पुनि लोचन अटके रहे अजहूँ नहीं आये ॥ हमसों उचटे रहत हैं मुरली चित लाये ॥४॥ दोष कहा वाकौ सखी इनके गुण ऐसे ॥ सूर परस्पर नागरी कहें श्याम अनैसे ॥५॥

★ राग बिलावल ★ यह मुरली कुल दाहनहारी ॥ सुनहु श्रवन दै दै नर नारी ॥१॥ कपटी कुटिल बाँसकी जाई ॥ वनतें कहा घरहिं यह आई ॥२॥ जे अपने घर बैर बढ़ावै ॥ तनकी तन अति आग लगावै ॥३॥ ऐसीकी हरि संगत कीनी ॥ जात नही वाकी उन चीन्ही ॥४॥ जैसे वे तैसी वह आई॥ विधना जोरी भली बनाई ॥५॥ मुरली के संग बने मुरारी ॥ भाग सुहागिन पिय अरु प्यारी ॥६॥ ये कुलटा कुलीटहैं दोऊ ॥ एकतें एक घटै नहिं कोऊ ॥७॥ अधरन धरत सबन के आगें ॥ करतें नेंक कबहुँ नहिं त्यागें ॥८॥ इनके गुण कहियै सो थोरे ॥ सूरस्याम बंसी बस मोरे ॥९॥

★ राग बिलावल ★ हरि मुरली के हाथ बिकाने ॥ वह अपमान करत न लजाने ॥१॥ वह अपने कर लियें दिवाने ॥ बारबार वा यशहिं बखाने ॥२॥ ठाढ़े रहत पाँय न पिराने ॥ ऐते पर मन रहत डराने ॥३॥ आयुस देत सुनत मुसकाने ॥ जीवन जन्म सुफल कर माने ॥४॥ वह गरजत वे हरे बताने ॥ बारवार अधरन पर ठाने ॥५॥ त्रिभुवनपति जे कहियत बाने ॥ तातें सब तन दशा भुलाने ॥६॥ वा आगें हम सब बस गाने ॥

वह गावत वे सुनत पगाने ॥७॥ सूर नेति निगम निज गाने ॥ ते मुरली के नाद ठगाने ॥८॥

★ राग बिलावल ★ सुंदर साँवरे जवतें मुरली अधर धरी ॥ सुन शिव समाधि टरी ॥ सुनि थके व्योंम विमान ॥ सुर बधू चित्र समान ॥ गृह नक्षत्र त्यजत न रास ॥ बाह न बँधे धुनि पास ॥१॥ सुनि आनंद उमग भरे ॥ चल थके अचल टरे ॥ चल अचल गति विपरीत ॥ सुन वेंणु कल पद गीत ॥ झरना झरें पाखान ॥ गंधर्व मोहे गान ॥२॥ सुन खग मृग मौन धरी ॥ फल तृणकी सुधिबिसरी ॥ सुन धेनु मृग थक रहे ॥ तृण दंतहूँ न गहे ॥ बछरा न पीवें क्षीर ॥ पक्षी मनों मुनि धीर ॥३॥ द्रुम बेलि चपल भये ॥ नव अंकुर प्रकट नये ॥ तहाँ विटप चंचल पात ॥ हरि निकटकों अकुलात॥ अंकुरित पुलकित गात ॥ अनुराग नयन चुचात ॥४॥ सुन चंचल पवन थक्यौ ॥ सरिता जल चल न सक्यौ ॥ सुन थक्यौ मंद समीर ॥ उलट्यो जु यमुनानीर ॥ सुनधुनि चलीं व्रजनार ॥ सुत देह गेह बिसार ॥५॥ मनमोहन रूप धस्यौ ॥ कामकौ गर्व हस्यौ ॥ नव नील तन घनश्याम ॥ नव पीतपट अभिराम ॥ नव मुकुट नवमणि दाम ॥ लावण्य कोटिक काम ॥६॥ मन मोह्यौ मदन गोपाल ॥ तन श्याम नयन विशाल ॥ श्रीमदनमोहनलाल ॥ संग नागरी नवबाल ॥ नव कुंज यमुनाकूल ॥ देख सूरदास मनफूल ॥७॥

★ राग बिलावल ★ चलौरी मुरली सुनियै कान्ह बजाई यमुनातीर ॥ तज लोकलाज कुलकी कान गुरुजनकी भीर ॥१॥ यमुना जल थकित भयौ वछरा न पीवें क्षीर ॥ सुर बिमान थकित भये थकित कोकिल कीर ॥२॥ देहकी सुध बिसर गई बिसस्यौ तनको चीर ॥ मात तात बिसरगये बिसस्यौ पूत बालम बीर ॥३॥ मुरली ध्वनि मधुर बाजे कैसें कि धरों धीर ॥ सूरदास प्रभु मदनमोहन जानत हौ परपीर ॥४॥

★ राग बिलावल ★ बंसी बजावै साँमरो हो किहिं मिस देखन जाँउ री ॥टेक॥ में तोय पूछूँ हे सखीरी कहा कुँमर कौ नाँउ री ॥ मोर मुकुट माथें धरै वाकौ ललित

त्रिभंगी नाँउ री ॥१॥ लाल काछनी पीतांबर री पग नूपुर झनकार री ॥ कुंजन निर्तत साँमरौ जहाँ मधुप करैं गुंजार री ॥२॥ कोमलकर कटि पट गहेरी करत मुरली धुनि गान री ॥ नादसुनत मन नारहै मेरौ कैसें राखों प्रान री ॥३॥ पचिहारी हों पियसों मेरौ कह्यौ न मानें कंत री ॥ परबस वाके बस परी मेंरै लीयौ चाहे अंत री ॥४॥ दया बिहूनौ निरदई मेरौ पीउ न जानै पीर री ॥ चलती बेर आड़ौ रहै मेरौ कवको दामनगीररी ॥५॥ मायवाप वर खोजकैं मेरें बेड़ी डारी पाँव री ॥ कमलनैन निरखे बिना मेरौ रह्यौ न ऐसौ हावरी ॥६॥ इतनों कहिकें उठ चली री ज्यों कंचुकी तजि नागरी ॥ सूरस्याम सों यों मिली जैसें कंचन मिल्यौ सुहाग री ॥७॥

★ राग विलावल ★ बैरिन बाँसुरी तोय बजत न आवै लाज ॥ जलथल अनिल थकित भये तें पायौ है सुखराज ॥१॥ इतनौ सो पौंगा बाँसकौ री निकस्यौ धरती फोरि ॥ जो मैं ऐसौ जानती तोय डारती तोर मरोर ॥ बैरिन.॥२॥ इतने तैं इतनी भई री सींच सुधा रस नीर ॥ तोहि दया आवै नहीं री तू निपट कठिन बेपीर ॥बैरिन.॥३॥ और न या मुखकौं लगैरी तू जो रही मुख लागि॥ दीजै कहा उराहनौ हेली आपुस में की आगि ॥बैरिन.॥४॥ मेरे पीयसौं क्यौं रची क्यौं अधरन रस लेहि ॥ हौं वारूँ तेरे नेहकौं मेरे कंत बिसार्‍यौ गेह ॥बैरिन.॥५॥ तपसी तप खंडन भये री सुरनर मुनि आधीन ॥ तीन लोक धुनि ह्वै रही तैं कठिन दुहाई दीन ॥बैरिन.॥६॥ कामनगारी बाँसुरी तैं मोहे त्रिभुवनराय ॥ कामहीन सब तैं किये दीये अचल चलाय ॥बैरीन.॥७॥ अनहद नाद बजावही री बिन फंदा बिन डोर ॥ खग मृग सब पिंजर किये तैं लीयौ चितै चितचोर ॥बैरिन.॥८॥ मारग राख्यौ रोकिकैं जल जमुना उलट वहाय ॥ जो न भई सो तैं करी तैं सिंघ निकट प्याई गाय ॥वैरिन.॥९॥ सुरनर सब विथकित भये री तो वाजनके चाय ॥ टेढे ह्वै रहे रासमें हरि ठाढ़े एकही पाय ॥बैरिन.॥१०॥ जो मैं ऐसौ जानती तोही सों अनुराग ॥ मोय खेद या बात कौरी तोय लगन न देती लाग

॥वैरिन.॥११॥ सप्त सुरन बंसी बजी कालिंदी के तीर ॥ श्रवनन सुनत सब गोपिका सुर मुड़त न जान्यौ चीर ॥बैरिन.॥१२॥ पतिव्रता पति छांड़िकैं री उलट बसन तन आनि ॥ एक छाँड़े एक सँग लीयें इक मारें मनसिज बानि ॥बैरिन.॥१३॥ कृष्णदास प्रभु राखियो श्रीगोवरधन बाम ॥ मुरली तू मुख पाटवी तैं मोहे सुंदरश्याम ॥वैरिन.॥१४॥

★ राग विलावल ★ बेन बजायोरी सुंदर नंदके कन्हैया ॥ जल स्थल चल अचल भए है त्रन न चरत मृग गैया ॥१॥ व्योम विमान सुरन छायो गिरिराज धरनके काज लाजतज छबि निरखत और लेत बलैया ॥ उदेराज प्रभु मदनमोहन जगजीवन जायो मैया ॥२॥

★ राग विलावल ★ सुनरी सेनदई ग्वालनकों मोहनलाल बजायो बेन ॥ प्रातसमे जागे अनुरागे वृंदावन धन आनंद माई चले चरावन धेन ॥१॥ वरन वरन वानिक बनिआये पटभूषन जसोमति पहेराये भाल तिलक दे आंजे नैंन ॥ हरिनारायन स्यामदासकेप्रभु माई प्रगटभये धरि सीसचंद्रिका सब व्रजजन सुखदेन ॥२॥

★ राग आसावरी ★ बिन जानें हरि जाहि बढ़ाई ॥ वह मिल बचन मधुर कहत हैं सुनत हि दई बड़ाई ॥१॥ रिझै लियौ हरिकौं टौंनाकर तुरतहिं बिलँब न लाई ॥ उन लैकर अधरन पर धारी अनुपम राग बजाई ॥२॥ मानों एकहि संग रहे तैं ऐसे मिले कन्हाई ॥ सूरश्याम हम सबन बिसारीं जबहीतें वह आई ॥३॥

★ राग आसावरी ★ मैं अपनें बल रहत स्याम सँग तुम काहे दुख पावत री ॥ मो पर रिस पावत हौ पुनि पुनि कहा कहि बरन करावत री ॥१॥ तुमहूँ करौ सुख में वरजत हो ऐसेंहि सोर लगावत री ॥ कहा करौं मुख स्याम निवाजी कहि नहिं दूर करावत री ॥२॥ वृथा बैर तुम करतीं निश दिन आछो जनम गमावत री ॥ सूर सुनहुँ व्रजनारि सयानी मूरख ह्वै समझावत री ॥३॥

★ राग आसावरी ★ आजु नीकौ जम्यो राग आसावरी। मदनगोपाल बेनु नीकौ

बाजे नाद सुनत भई बावरी ॥ कमलनयन सुंदर ब्रज-नाइक सब गुन-निपुन कथा है रावरी सरिता थगित ठगे मृग पंछी खेवट चकित चलति नहिं नाव री ॥ बछरा खीर पिबत थन छाँड्यौ दंतनि तृन खंडति नहिं गाव री ॥ 'परमानँद' प्रभु परम विनोदी इहै मुरली-रस कौ प्रभाव री ॥

★ राग धनाश्री ★ मुरलीके ऐसे ढँग माई ॥ जबतैं स्याम परे वश वाके हमहिं सबन बिसराई ॥१॥ अपनौ गुन यह प्रगट करायौ निठुर काठकी जाई ॥ अपनी आग दहै कुल अपनौ सो गुण गुन पछिताई ॥२॥ जैसी निठुर आपने घरकौं औरन की क्यों माने ॥ सूर बड़ी यह आप स्वारथी निपट राग कर गानें ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मुरली भयें रहत लड़बो री ॥ देखत नहीं नयन निशिवासर लावत कैसी ढोरी ॥१॥ कर पर धर अधरन आगें कर राखत ग्रीव निहोरी ॥ पूरन नाद स्वाद सुख पावत तान वढ़ावत गोरी ॥२॥ आयुस लियें रहत ताहीकी डारी सीस ठगोरी ॥ सूरश्यामकी बुधि चतुराई लीनी सबै अजोरी ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ मात पिता गुण कहौं बुझाय ॥ अब इनहूंके गुण सुन लैहौ जाते श्रवण सिराय ॥१॥ उनके बेगुण निठुर कहावत मुरलीके गुण देखौ ॥ तब याकौ तुम अवगुन मानों जब कछु अचरज पेखौ ॥२॥ जाकुलतैं उपजी ता कुलकौं जार करत है छार ॥ तनहीं तनतैं अग्नि प्रकाशत ऐसी जाकी झार ॥३॥ वह जो श्याम सुने श्रवनन भर करते देहें डार ॥ सूरदास प्रभु धोखें याके राखत अधरन धार ॥४॥

★ राग धनाश्री ★ मुरली आप स्वारथिन नार ॥ ताकी हरि प्रतीत करत हैं जीत न जानत हार ॥१॥ ऐसे वश भये हरि वाके कहा ठगोरी डार ॥ लूटत है अधरनको अमृत खात देत हैं ढार ॥२॥ को बक मरै बनी है जोरी तृण तोरत हैं वार ॥ सूरस्यामको भलें कहत हौं देहुँ कहा अब गार ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ काहे न मुरली सौं हित जोरें ॥ काहे न अधरन धारें पुनिपुनि मिली अचानक भोरें ॥१॥ काहे न ताहि कर धरि राखैं क्यौं नहिं ग्रीव नवावैं॥

काहे न तन त्रिभंग कर धारैं ताके मनहि चुरावैं ॥२॥ काहे न यों आधीन रहे है ये अहीर वह बेनु ॥ सूरस्याम करते नहीं टारत बनबन चारत धेनु ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ बिधना मुरली सौत बनाई ॥ सुकठ बाँसकी बंस बिनासन सबहि निरास कराई ॥१॥ जो यह ठाट ठाट वौहि राख्यौ कुलकी होती कोऊ। तौ इतनौ दुख हमहिं न हो तो आगुन आखर दोऊ ॥२॥ ए निर्दयी निठुर वह बनकी घर अब नहीं प्रकाश ॥ सूरदास व्रजनाथ हमारे जैसे भये उदास ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ नंदलाल बजाई बाँसुरी श्रीयमुनाजू के तीर री ॥ अधरकर मिल सप्त स्वरनसौं उपजत राग रसाल री ॥१॥ व्रजयुवती ध्वनि सुन उठि धाई रही न अंग संभार री ॥ छूटी लर लपटात बदन पर टूटी मुक्ता माल री ॥२॥ बहत न नीर समीर न डोलत वृंदाविपिन संकेत री ॥ सुनि थावर अचेत चेत भये जंगम भये अचेत री ॥३॥ अफल फले फलफूल भयेरी जरे हरे भये पात री॥ उमँग प्रेम जल चल्यौ सिखरतैं गरे गिरिनके गात री ॥४॥ तृण न चरत मृगामृगी दोऊ तानपरी जब कान री ॥ सुनत गान गिर परे धरणि पर मानों लागे बान री ॥५॥ सुरभी लाग दियौ केहरिकौ रहत श्रवणहीं डार री ॥ भेक भुजंग फण चढ बैठे निरखत श्रीमुख चार री ॥६॥ खग रसना रस चाख बदन नयन मूँद मौन धार री ॥ चाखत फलहिं न परै चोंचतें बैठे पाँख पसार री ॥७॥ सुर नर असुर देव सब मोहे छाये व्योंम विमान री ॥ चतुर्भुजदास कहौ कोन वश भये या मुरलीकी तान री ॥८॥

★ राग धनाश्री ★ स्यामहिं दोष जिन माई ॥ कहौ याहिरी बाँस जात किन कौनें तोहि बुलाई ॥१॥ उनकी कथा मनहिं दै राखौ याकी चलत ढिठाई ॥ वे जो बुरे भले तौउ अपने यह लंगर निठुराई ॥२॥ ऐसी रिस आवत है मोकूँ दूर करौं झहराई ॥ सूरस्यामकी कान करत हूँ नातर करत जराई ॥३॥

★ राग धनाश्री ★ स्यामहिं दोष कहा कहि दीजे ॥ कहा बात मुरलीसौं कहियै सब अपने सिर लीजे ॥१॥ हमहीं कहत बजावहु मोहन यह नाँहीं हम जानी॥ हम जानी यह बाँस बँसुरिया को जाने पटरानी ॥२॥ बारेतैं मुख लागत लागत

अब ह्वै गई सयानी ।। सुनहीं सूर हम भोरी भारी याकी अकथ कहानी ।।३।।

★ राग धनाश्री ★ बाँसुरी बसै तौ व्रज हम ना बसैंगी लाल बाँसुरी बसाऔ तौ हमें बिदा दीजियै ।। जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेते सुर तेते शूल रौंम रौंम छीजियै ।।१।। ताननके तीखे तान लागत मोय मैंन बान श्रवण सुनत जाय बनमें बसि जियै ।। बंसी छाँड़ौ गोप श्याम बिनती करत बाम जैसी कीनी सूरश्याम तैसीहू न कीजियै ।।२।।

★ राग सारंग ★ अधर मुरली रटन लागी ।। जा रसकौ षटऋतु तनु गायौ सो रस पिवत सभागी ।।१।। कहाँ रहत कहाँते यह आई कौनें याहि बुलाई।। चकृत कहत भई व्रजबासिन यहतौ भली न आई ।।२।। सावधान क्यौं होत नहीं तुम उपजी बुरी बलाय ।। सूरदास प्रभु हम पर याकौं कीन्ही सौत बजाय ।।३।।

★ राग सारंग ★ आवत ही याकौ ये ढंग ।। मनमोहन बस भये तुरत ही है गये अंग त्रिभंग ।।१।। ना जानौं यह टौना जानत करिहै नाना रंग ।। देखौ चरित्र भये हरि कैसे या मुरली के संग ।।२।। बातनमें कहि धुनि उपजावत सर्जत तान तरंग ।। सूरदास प्रभु इंदुबदनमें पैठ्यौ बड़ौ भुजंग ।।३।।

★ राग सारंग ★ मुरली हम पर रोस भरी ।। अंस हमारौ पुनि पुनि अँचवत नेंकहु नहि न टरी ।।१।। बारबार अधरनिसौं परसत देखत सबै खरी ।। ऐसी ढीठ टरी नहीं यहाँते ज्यौं हस रिसनि जरी ।।२।। यह तौ किधौं अकाज हमारौ अब हमें जान परी ।। सूरदास प्रभु निठुर कराये ऐसी करनी करी ।।३।।

★ राग सारंग ★ यह मुरली मोंहनी कहावै ।। सप्त सुरन मधुरी कहि बग्नी जलथल जीव रिझावै ।।१।। उह रिझये सुर असुरन पढ़ रचि तिनकौं बस्य करावै ।। पुट एकौ इत मत उत अमृत आपुन अच अचवावै ।।२।। याके गुण ए सब सुख पावत हमकौं बिरह बढ़ावै ।। सूरदास याकी यह करनी स्यामहिं नीकीं.भावै ।।३।।

★ राग सारंग ★ मुरली तें हरि सबन बिसारी ।। बनकी व्याधि कहाँ यह आई

देत सबै मिलगारी ।।१।। घरघरतें अब निठुर कराई महा ओटपी नारी ।। कहा भयौ जो हरि मुख लागी अपनी प्रकृति न टारी ।।२।। सकुचतहौ काहे तुम सजनी कहौ न बात उघारी ।। अनौखी सौत भई यह हमकों और नहीं कहुँकारी ।।३।। इनहूँते अरु निठुर कहात यह आई कुलजारी ।। सूरदास ऐसी को त्रिभुवन जैसी यह त्यौंनारी ।।४।।

★ राग सारंग ★ बावरी जो बाँसुरीसौं लरै ।। वह उनसौं प्रेम नें मसौं तुमसौं नाहिन आली यातें गिरिधारी लाल लै लै अधर धरै ।।१।। जौलौं मधु पीवत रहत तौलौं जोवतहै घरीघरी पलपल छिनछिन नहि बिसरै ।। सूरदास प्रभु वाके रसबस भये रहत आली तातें वाकी सरवर कहौ धौं कवन करै ।।

★ राग सारंग ★ यह हमकौं विधना लिख राखी ।। नाम न गाम कहाँते आई श्याम अधर रस चाखी ।।१।। यह दुख काहि कहौं को जानें ऐसौ कौन निबारे ।। जो रस धरचौ कृपनकी नाँई सो सब एसेंई डारे ।।२।। यह दूषण वाहीकों कहियै कै हरिहूलौं दीजै ।। सुनहुं सूर कछु बच्यौ अधररस कैसेंहूं करि लीजै ।।३।।

★ राग सारंग ★ ग्वालिन कित उराहनौ देहु ।। बूझहु धौं यह बात श्यामसों जेते दुख जुरचौ सनेह ।।१।। जनमतही हम भईं बिरत चित छाँड़ि गाम गुण गेहु ।। एकहि पाँय रहत नित ठाढ़ी ग्रीष्मशीत ऋतु मेह ।।२।। तज्यौ मूल शाखा सुपत्र सब सोच सुकानी देह ।। मुरौ न तनमन अग्निसु लागत बिकट बनायौ वेह ।।३।। कितहो बकत बाँसुरी जाने कर कर तामस तेह ।। सूरश्यामकों तुमहुं रिझै कर क्यों न अधररस लेह ।।४।।

★ राग सारंग ★ मुरलीतौ अधरन पर गाजत ।। कैसी बैठी दोऊ करन चढ़ अँगुरी रंध्र न राजत ।।१।। श्यामहि मिलि हम सबन दिखावत नेंकहु मन नहिं लाजत ।। दान शब्द मोदसों उपजत मधुरी मधुरी बाजत ।।२।। कबहूं मौन ह्वै रहत कबहुं कहत रहत नहीं हाजत ।। सूरश्याम वाकौ सुर साजत वह उनहींतें भ्राजत ।।३।।

★ राग सारंग ★ मुरलिया ऐसे स्याम रिझाये ।। नँदनंदनके गुण नहीं जानत

अतिश्रमतैं यह पाये ॥१॥ तुव व्रतकौ फल वहै दिखायौ चीरकदंब चढाये ॥ कह्यौ कहा सब वैसेंहि आवहु युवतिन लाज छुड़ाये ॥२॥ तब दै चीर आभूषण बोले धन्य धन्य शब्द सुनाये ॥ सुनहुँ सूर व्रजनारी भारी इतनेही हरख बढ़ाये ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज नँदनंद गोविंद गिरिवरधरन तरनतनया निकट अधर मुरली धरी ॥ सुनत सुर श्रवण तजि भवन सुर सुंदरी आन आकाशतें सुमन बरषा करी ॥१॥ धेंनु और बच्छ खग मृग ध्वनि सुनि सबै रहे धर ध्यान नहीं चरत तृण मुख परी ॥ भूल प्रतिकूल जल अनिल थक्यौ ता समें शिला द्रुम द्रवित रजनीश गति मति हरी ॥२॥ सकल द्रुम बेलि प्रफुल्लित मुदित भ्रमर वर गुंज मत्तपान मधुकरत सुभता धरी ॥ नाथ बारिजबदन मदनमोहन और मोहे कोटिक मदन हरत अघवृंद री ॥३॥

★ राग सारंग ★ नैंनन नींद गई री आली निशदिन छतियाँ लाग्यौ ही रहत धरकौ ॥ जबतें मोहन मुरली धुनि कीनी सुधि न रही री कछु और महा डर घरकौ ॥१॥ छतियाँ उसास लेत ननदिया गारी देत सास तकत मेरे पाँयनकौ खरकौ ॥ कैसेंकै जईये कैसेंकै दरसन पैये प्रभु कल्यान गिरिधरकौ मेरे हाथ भयौ पाथर तरकौ ॥२॥

★ राग नट ★ मुरली भई सौत बजाय ॥ कबहूँ बनमें रहत डारी ताहि यह सुघराय ॥१॥ बचन हीं हरि रिझाय लीने अधर पूरत नाद ॥ दिनहिं दिन अधिकान लागी अब करैगी बाद ॥२॥ सुनहु री यह दूर कीजे यह करौ बिचार ॥ अबहीतैं करनी करी यह बहुरि कहा लगार ॥३॥ ढंग याके भले नाहीं बहुत गई इतराय ॥ सूरश्याम सुजान रीझे देह गति बिसराय ॥४॥

★ राग नट ★ सुनहु री मुरली की उतपति ॥ बनमें रहत बाँस कुल याकौ यह तौ याकी गति ॥१॥ जलधर पिता धरनि है माता अवगुण कहौं उघार ॥ बनहूँ तैं याकौ घर न्यारौ निपजे जहाँ उजार ॥२॥ एकतें एक गुणन है पूरे मातपिता अरु आप ॥ ना जानिये कौन फल प्रगट्यौ अतिहीं कृपा प्रताप ॥३॥

विश्वासी परकाज न जानें याके कुलकौ धर्म ।। सुनहुँ सूर मेघन की करनी ओर धरनी कौ कर्म ।।४।।

★ राग नट ★ यह तौ भली उपजी आय ।। निधरक बैठी सौत ह्वैकैं देख देख रिसाय ।।१।। कहा याकी सकुच मानत कहौ घात सुनाय ।। तबहि बस कर लियौ हरिकों हम सबन बिसराय ।।२।। प्रबल पावस शरद ग्रीषम कियौ तप तनगार ।। तिनहिं तरलै आप बैठे प्राणपति बनवार ।।३।। जो भई सो भई अब यह छोड़दै रसवाद ।। सूरप्रभुके अधर लगि लगि कहा बोलत नाद ।।४।।

★ राग नट ★ मुरली अति चली इतराय ।। अक्षयनिधि जिन लूट पाई क्यों नहीं सतराय ।।१।। आदि ज्यों यह बडी होत चलत सीस नवाय ।। सबनकों लै संग चलती दौर मिलती धाय ।।२।। बाँसतें उतपत्ति याकी कहा बुद्धि ठहराय ।। सूरप्रभु ताके बस जैसें रहत नहीं बिसराय ।।३।।

★ राग नट ★ बड़ेकी मानियै जो कान ।। कहा ओछे की करैं बड़ाई याहि ओछी बान ।।१।। बड़ौ इतरै नहीं कबहूँ ओछेही इतराय ।। नीर नारी नीच ही कूँ चलै जैसें धाय ।।२।। रही बनमें घरहि लाये महाबुरी बलाय ।। निदरक यह सबन बैठी सौत उपजी आय ।।३।। दिनहिं दिन अधिकार बाढ्यौ आगें रहत कहाय ।। सूरदास उपाधि बिधिना कहा रची बनाय ।।४।।

★ राग नट ★ और कहौ हरिसों समझाय ।। तब यह दुबिधा काहे राखत वाही मिलवे जाय ।।१।। हम अपनौ मन निठुर करायौ बात तुम्हारे हाथ ।। भली भई अब शंकन लागे कवि गावत व्रजनाथ ।।२।। अब मुरलीपति जाय कहाबहु वह बाँसिन तुम काठ ।। सूरदास प्रभुनहिं चतुराई ।। मुरली पढायौ पाठ ।।३।।

★ राग सोरठ ★ मुरली कौन तप तैं कीयौ ।। रहत गिरधर मुखहिं लागी अधरकौ रस पीयौ ।।१।। नंदनंदन पानि परसकैं तोय तनमन दीयौ ।। सूरश्रीगोपाल बस भये जगतमें जस लीयौ ।।२।।

★ राग सोरठ ★ तप हम बहुत भाँतिन करचौ ।। हिम बरषा सही सिर पर घामतें ना डरचौ ।।१।। कट बेधी सप्त रंध्रन हीयौ छूँछौ करचौ ।। तुमहिं बेग

बुलायवेकौं लालन अधर धरचौ ॥२॥ इतने तप मैं किये जबही लाल गिरधर वरचौ ॥ सूर श्रीगोपाल सुमिरत सकल कारज सरचौ ॥३॥

★ राग मल्हार ★ बंसी न काहूके बस बंसीने कीने री बस बंसीकों बजाय जानें बंसी जाके बस है ॥ अधर रस प्रेम माती छिनहू न होत हाँती कानपरी प्राण लेत वे चसके रस है ॥१॥ नये नये नेह बाढ़े मोहनलाल नचाय छाँड़े ललित त्रिभंगी कान्ह मोहन सौं अस है ॥ हित हरिवंस परस्पर प्रीतम राधा वृषभान नंदनी सों रस है ॥२॥

★ राग श्री ★ श्रीराग में कान्ह मुरली बजावै । सप्त सुर-भेद अवघर तान विकट सों गति मधुर धरि मनसिज-मोद उपजावै ॥ बजत नूपुर धरत चरन अवनी, चतुर ताल चर्चरी सों मनसि मन लावे । 'छीत-स्वामी' नवल लाल गिरिवरधरन गोप-बालक-संग बन तें आवै ॥

★ राग हमीर ★ मुरली सुनत भई मति बौरी ॥ गृह गृहतें कारज तज अपने निकस चलीं मगु दौरी ॥१॥ नेन सिंदूर माँग अंजन दै श्रवन बिजौरा साजे ॥ सीस तरौना माल गुही कच झूमक नाक बिराजे ॥२॥ एक छाँड़ि पय पान करावत अपुने सुतहिं चली ॥ निरख निरख प्रफुल्लित ब्रजचंदहिं ज्यों वर कुमुद कली ॥३॥

★ राग हमीर ★ यातें माई भवन छाँड़ बन जैयै ॥ आँखरस कानरस बातरस सबरस नँदनंदन पै पैयै ॥१॥ कल पल्लव कर कंध बाहु धर संग मिले गुन गैयै ॥ रास बिलास बिनोद अनूपम माधौके मन भैयै ॥२॥ यह सुख सखीरी कहत नहिं आवै देखें दुख बिसरैये ॥ परमानंद स्वामीको संगम भाग्य बड़े तें पैये ॥३॥

★ राग जैजेवंती ★ माई आज तेरे साँवरेनें बंसी बजाई है ॥ थकित जमुनाकौ नीर बछरा न पीवें क्षीर धीर मृग मीन अचल चलाई है ॥१॥ थकित उडुगण पति पवन की मंदगति यही गति जादों पति जैजैवंती गायहीं ॥ सूरके प्रभुकी बंसी बाजी अति नीकी सुनि ताकौ लाग्यौ बान सोई तन जानहीं ॥२॥

★ राग गोरी ★ बांसुरी बजाई आछे रंगसों मुरारी ।। सुनि कै धुनि छूटि गई संकरकी तारी ।।१।। वेद पढ़न भूलि गये ब्रह्मा ब्रह्मचारी ।। रसना गुन कहि न सकै लगी है कटारी ।।२।। रंभा सब ताल चुकी भूली नृत्यकारी ।। यमुनाजल उलटी वहै सुधि ना संभारी ।।३।। श्री वृंदावन बंसी बजी तीन लोक प्यारी ।। ग्वालबाल मगन भये व्रजकी सब नारी ।।४।। स्याम सुंदर मोहनि मूरति नटवर वपु धारी ।। 'सूर' किशोर मदनमोहन चरनन बलिहारी ।।५।।

★ राग कल्याण ★ वृंदावन सघनकुंज माधुरी लतान तर जमुना पुलिन में मधुरी बाजै बाँसुरी ।। जबतें धुनि सुनी कान मानों लागे मैंन बान प्रानन की कासौं कहूँ पीर होत होत पाँसुरी ।।१।। ब्याप्यौ जु अनंग तातें अंग सुधि भूल गई कोऊ बंदौ कोऊ निंदौ करौ उपहाँसुरी ।। ऐसे ब्रजईशजू सों प्रीति नई रीति बाढ़ी जाके उर गढ़ब रही प्रेंम पुंज गाँसुरी ।।२।।

★ राग कल्याण ★ मुरली तोउ न मौन धरे ।। हरिकर कमल युगलपर पोढी कर गेंदुवा अधरें ।।१।। कोलमकर अंगुरिन चांपत चरणन हरि हरें हरें ।। शंका अतुल रहत उर अंतरमतियह जागपरें ।।२।। स्वेद सहित सीतल अलकन हरि मंद वियार करें ।। ब्रजपति अधरसुधा रसमातीपै नेंकन सुध विसरें ।।२।।

★ राग केदारो ★ आज बन बेंनु बजावत श्याम ।। यह कह चक्रत भई ब्रज गोपी सुनत मधुर स्वर ग्राम ।।१।। कोऊ ज्यौंनार करत कोऊ बैठी कोउ ठाढ़ी है धाम ।। कोऊ जेंवत कोउ पतिहिं जिमावत कोउ शृंगार में बाम ।।२।। मानों चित्रकीसी लिख काढ़ी सुनत परस्पर नाम ।। सूर सुनत मुरली भई बौरी मदन कियौ तन ताम ।।३।।

★ राग केदारो ★ बंसीरी बन कान्ह बजावत ।। आन सुनौ श्रवणन मधुरे स्वर नादमध्य लै नाम बुलावत ।।१।। स्वर अति तान बँधान मूर्छना अमित अनागत लावत ।। जुरयुग भुजशिर शैल शेष मथ बदन पयोधि अमृत उपजावत ।।२।। मानों मोंहनी भेष धरकें मनमोहन पान करावत ।। खगमृग मीन वश भये नादरस मृतक हुतो मदनैंजु जगावत ।।३।। और कहाँ लगि कहों सूर थिर चर मोहे कोई

पार न पावत ॥ मानौं मूक मिठाईकौ गुण कहि न सकत मुख शीश डुलावत ॥४॥

★ राग केदारो ★ बंसी बनराज आज आई रणजीत ॥ मेंटतहै अपने बल सबहिनकी रीतें ॥१॥ बिडरे गज यूथ शैल सैन तुरत भाजी ॥ घूँघट पट कवच टूट छूट सब लाजी ॥२॥ काहू पतिगेह तजे काहू तन प्रान ॥ काहू सुख सरन लयौ सुनत सुयश गान ॥३॥ कोऊ पद परस गये अपने मनदेश॥ कोऊ रसरंग भरे ते भये नरेश ॥४॥ देत सबन मारुत मिल दसहूँ दिश दुहाई॥ सूरज गोपाललाल बंसी वश माई ॥५॥

★ राग केदारो ★ मुरली मोहन अधर धरी ॥ आरज पथ बिसरचौ आतुर है तनहुँकी सुधि न परी ॥१॥ पदरिपुपट अटक्यौ न सम्हारत उलटि न पलटखरी ॥ कबहुँक शिवसुत बाहन भख मिल्यौ मनहु कि बुद्ध हरी ॥२॥ दुरि गये कीर कपोत मधुप पिक सारँग सुधि न करी ॥ उडुपति विद्रुम बिंब लजानौ दामिनि अधिक डरी ॥३॥ मिलिहौं स्यामहि हंस सुतातट आनँद उमँगभरी ॥ सुरस्यामकौं मिली परस्पर प्रेम प्रवाह भरी ॥४॥

★ राग केदारो ★ सुनिये हो धर ध्यान सुधारस मुरली बाजै ॥ स्याम अधर पर बैठ बिराजत सप्तस्वरन साजै ॥१॥ बिसरी सुधि बुध गति सबहिनकी सुनि वेणु मधुर कल तान ॥ मनगति पंगु भई व्रजयुवती गंधर्व मोहे गान ॥२॥ खगमृग थके फलन तृण तजिकें बछरा न पीवत क्षीर ॥ सिद्ध समाधि थके चतुरानन लोचन बहै सब नीर ॥३॥ महादेवकी तारी छूटी अतिह्वै रहे सचेत॥ ध्यान टरचौ धुनिहीं मन लाग्यौ सुरासुर भये अचेत ॥४॥ यमुना उलट बही अति व्याकुल मीन भये बलहीन ॥ पशुपक्षी सब थकित भये हैं रहे इकटक लवलीन ॥५॥ इंद्रादिक सनकादिक नारद शारद सुनि आवेश ॥ घोष तरुणी आतुर ह्वै धाईं तजि पति पुत्र अँदेश ॥६॥ श्रीवृंदावन कुंज कुंज प्रति अति विशाल आनंद ॥ अनुरागी पियप्यारी रसबस अचेत भये सानंद ॥७॥ तीन भुवन भरनाद प्रकाश्यौ गगन धरणि पाताल ॥ थकित भये तारागण सुनिकैंचंद

भयौ बेहाल ॥८॥ नटवर वेष धरैं नँदनंदन निरख विवश भयौ काम ॥ उर नव चरण भुज पंकज नील जलद तन स्याम ॥९॥ जटित जराव मुकुट कुंडल छबि पीत बसन शोभाय ॥ वृंदावनरसरासमाधुरी निरख सूर बलि जाय ॥

★ राग केदारो ★ केतिक भार हरी या मुरलीमें ये तौ न देख्यौ वा महागिरिवरमें॥ बायें कर उठाय राख्यो सप्त रातद्योस वह झुकी रहत यह दाहिनें करमें ॥१॥ जब कबहुं उठाय लेत दुहूँ करनमें क्यौं हूँ क्यौं अवार आय लगत अधरनमें ॥ ऐतौ सुहाग भाग दीयौ गदाधर प्रभु राख्यौ अभिमान इन थिरमें न चरमें ॥२॥

★ राग केदारो ★ राधिका रमन की मुरलिका श्रवण सुनि भवन गृह काज तज गमन कीयौ भामिनी ॥ नाद रस बिवश भईं आन गति छूट गईं बिपिन आतुर चलीं रूप अभिरामिनी ॥१॥ निकट पियके गई रसिक कर गहि लई गिरिधरन श्यामघन जुवती सौदामिनी ॥ करैं वासर केलि कंठ पर भुज मेलि चतुर संग चत्रभुजदासकी स्वामिनी ॥२॥

★ राग केदारो ★ मधुर मोहन मुखहिं मुरली बाजौ । सुनहि किन कान दै सुघर व्रज-नागरी राग केदारौ, चर्चरी ताल साजैं ॥ सप्त सुर-भेद वधान तुअ नांउ लै करत गुन-गान मिलि, तुअ हित काजै । 'छीत-स्वामी' नवल लाल गिरिधरन कों वेगि मिलि भेटि, मन्मथ-दाह दाजै ॥

★ राग बिलावल ★ मुरलिया मेरी दै प्रिया तोहि वृषभान बबा की आन हो तोहि रानी कीरतिजू की सौंह हो ॥ अहो पिया मुरली सुंदर बाँस की हो सीखी में जतन अनेक ॥ मो बिन छिन जीवै नहीं और यह मुरलीकी टेक ॥१॥ अहो पिया मुरली छिन छाँडौ नहीं और जहीं जहीं हौं जाऊँ ॥ कै कटि कै करमें रहै कै अधरनपै ठाऊँ ॥२॥ बंसकुलन मुरली भई हो बसीकरनके हेत॥ तुमकौं आन मिलावही हो निज मंदिर संकेत ॥३॥ मुरली मेरी मोंहनी हो मोहे इन सब गाम ॥ गूढ़ मंत्र यामें रहै हो श्रीराधा राधा नाम ॥४॥ अहो प्रिया मुरली के गुणगान घनेरे देहु कृपा अनुराग ॥ तन मन धन वारौ सबै हो यह मेरौ बड़भाग ॥५॥ रीझ प्रिया मुरली दई और कंठकौ हार ॥ ब्रजभूषन हित लाडिली मिल बिलसे बिपिनबिहार ॥६॥

★ राग बिलावल ★ मुंदरिया मेरी दै लला तोहि बाबा नंदमहरकी आनहो ।। तोहि ब्रजरानीजू की सौंहहो ।। अहो लाल झगरौ कछुअन कीजियै हो एक गामकौ बास ।। जतीया चारें को बड़े को ठाकुर को दास ।।१।। अहो लाल इतने तें इतनी भई हो संगही खेलत खात ।। अब चितबत लज्जा भई हो सिथिल होत सब गात ।।२।। अहो लाल भूषन होय दुराइयै मोपें करन दुरायौ जाय ।। जब ग्रह गमनहौं करौं हो देखि मेरी माय रिसाय ।।३।। अहो लाल इतनी बात न जानीयै हो मुंदरी रतन अमोल ।। जतन जतनकर राखियौ तेरी सब गैयनकौ मोल ।।४।। अहो पिया मुँदरीतौ बनमें गई हो चलौ हम तुम देखन जाँय ।। ढूँढन मिस तहाँ तें चले दोऊ कंठ भुजा उर लाय ।।५।। मिस ही मिस वहाँ तें चले दोऊँ कुंजमहल में आय ।। प्रभु मुकुंद राधा मिली देखत माधौ जन सचुपाय ।।६।।

★ राग कल्याण ★ मुरली सुनत भई मति बौरी ।। गृहगृहते कारज तज अपने निकस चली मगदौरी ।।१।। नयन सिंदूरमंग अंजत श्रवण बिजोरा साजें ।। सीस तरोना मालगुहीं कचझुमक्क नाक बिराजें ।।२।। एक छांड पयपान करावत अपने सुतहि चली ।। निरखनिरख प्रफुल्लित व्रजचंदही ज्यों वर कुमुदकली ।।३।।

श्री रामचंद्रजी के करखा के पद

(आसो. सुदी १ से सुदी ९ सांजे भोग आरती वखते गावानां)

★ राग मारू ★ परदेसनि नारि अकेली ।। बिन रघुनाथ और नहीं कोऊ मात पिता न सहेली ।।१।। रावण रूप धरचौ तपसीकौ कितमें भिक्षा मेली ।। आज्ञा नहीं हीन मति मेरी रामरेख पद पेली ।।२।। विरह ताप तन अधिक जरावत जैसें द्रुम बन बेली ।। सूरदास प्रभु बेगि न मिलिहैं प्राण जात हैं खेली ।।३।।

★ राग मारू ★ हो लक्ष्मण सीता कौनें हरी ।। यह जु मढी बैरिन भई हम कौं

कंचन मृग जो छरी ।।१।। जो पै सीता होय मढ़ी में झाँकत द्वार खरी ।। सूनी मढ़ी देखि रघुनंदन आवत नयन भरी ।।२।। एक दुख हतो पिता दशरथकौ दूजौ सीय करी ।। सूरदास प्रभु कहत भ्रातसौं बनमें बिपति परी ।।३।।

★ राग मारू ★ जोपै राम रजा हौं पाऊँ ।। न करौं शंक लंक गढ़ की कछु सायर खोद बहाऊँ ।।१।। बढूँ शरीर पैठ परमित कर सकल कटक पहोंचाऊँ।। कहौ तौ रावण कुल समेत सब बाँध चरण तर लाऊँ ।।२।। हौं सेवक हरि ऐसौ कहौ तौ रावण कुल समेत सब बाँध चरण तर लाऊँ ।।२।। हौं सेवक हरि ऐसौ तुम्हारौ कहा एक मुख गाऊँ ।। सुर और असुर सबै जुर आवैं तो रण नहिं पीठ दिखाऊँ ।।३।। रावण मारि सिया घर लाऊँ तौ तुमरौ दास कहाऊँ ।। सूरदास प्रभु बिन कीयें कारज मुख नहीं आन दिखाऊँ ।।४।।

★ राग मारू ★ कपि चल्यो सीय सुधिकौं पुनि पाँयन तन लटकि कैं ।। रिपुकौ कटक विकट ताकौ चौथौ अंस पटकि कैं ।।१।। रथसौं रथ भटनसौं भट चट पटीसी चटक कैं ।। जारि कैं गढ़ लंक विकट रावण मुकुट झटक कैं ।।२।। कितेक छैल तंदुल से छरे लै लै मूशल मटक कैं ।। गिरिसौं गज गेंदसी गहि डारचौ भूमि भटक कैं ।।३।। सुरपुर आनंद उमग उरसौं आँट अटककैं ।। नंददास बहुरचौ नट ज्यों उलटि पाछौ समुद्र सटककैं ।।४।।

★ राग मारू ★ जब कुद्यौ हनुमान उदधि जानकी सुधि लैन कौं ।। देखनकौं दशमाथ अपने नाथकौं सुख दैनकौं ।।१।। जा गिरि पर चढ़ि कुलाँच लीनी उचकैयाँ ।। सो गिरि दशा योजन धँसि गयौ धरनी महियाँ ।।२।। धरनी धँस गई पाताल भार परें जाग्यौ ।। शेषहूकौ शीश जाय कमल पीठ लाग्यौ ।।३।। अरुण बदन श्वेत दशन बड़ौ पीन गात है ।। उत्तरतें दक्षिण मानों मेरु उड़्यौ जात है ।।४।। जा प्रभुकौ नाम लेत भव जल तर जात है ।। शत योजन सिंधु कूद्यौ तौ केतिक यह बात है ।।५।। रामचंद्र पद प्रताप जगतमें यश जाकौ ।। नंददास सुरनर मुनि कौतुक भूले ताकौ ।।६।।

★ राग मारू ★ यहि बिधि पार पोहोंच्यौ पवन पूत दूत श्री रघुनाथकौ ।। छूटच्यौ जानौ धनुषतें सर परम सुभट हाथ कौ ।।१।। थरथर जहाँ करत मीच ऐसी

राजधानी ॥ पैठत तिहिं लंक बंक कपि न शंकमानी ॥२॥ पुर मंदिर गिरि कंदर सुंदर मणिराई ॥ रावण रणवास ढूंढ्यौ कहूँ न सीय पाई ॥३॥ तब कह्यौ यह जेतिक नगरी सगरी उचक लीजै ॥ उहाँई लै जाय रामहिं जानकी ढूँढ़ दीजै ॥४॥ कैधों दशकंध अंध इहाँई लै मारौं ॥ कैधौं रघुवीर आगें बाँधि रिपुहिं डारौं ॥५॥ यह बिधि बल अपनौ कपि सोचत जिय माँही ॥ नंददास प्रभुकी मोहि ऐसी आज्ञा नाहीं ॥६॥

★ राग मारू ★ बनचर कौन देश तें आयौ ॥ कहाँ हैं राम कहाँ हैं लक्ष्मण कहाँ ते मुद्रिका लायौ ॥१॥ हों हनुमान रामजूकौ सेवक तुम सुधि लैन पठायौ ॥ रावण मार लै जाऊँ तुमकों राम रजा नहिं पायौ ॥२॥ तुम जिन जिय डरपौ मेरी माता जोर राम दल धायौ ॥ सूरदास रावण कुल खोयौ सोवत सिंघ जगायौ ॥३॥

★ राग मारू ★ जानकी हों रघुपति कौ चेरौ ॥ बीरा दै रघुनाथ पठायौ शोध करनकों तेरौ ॥१॥ दस और आठ पद्म बनचर लै चाहत हैं गढ़ घेरौ ॥ तिहारे कारन श्याम मनोहर निकट दियौ है डेरौ ॥२॥ अब जिन शोच करौ मेरी जननी जनम हों चेरौ ॥ सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकों शारद रंक कित फेरौ ॥३॥

★ राग मारू ★ तुमें पहेंचानत नाहिंन वीर ॥ इन नैननमें कबहुँ न देखे रामचंद्र के तीर ॥१॥ मुँदरी डार दई जब करतें तब मन उपजी धीर ॥ सूरदास प्रभु लंका घेरी बाँध्यौ सायर नीर ॥२॥

★ राग मारू ★ जारौं गढ़ लंक आज जैसें रावण भय मानें ॥ सीतापति सेवक मोहि आयौ को जानें ॥१॥ एक एक रोंम पर हने लक्ष बाना ॥ त्यों त्यों कपि फेरत है रामचंद्र आना ॥२॥ एक भेंट उनकी लै उनही कों दीजै ॥ ज्यों ज्यों लंगूर उठे त्यों त्यों कपि धीजै ॥३॥ रामचन्द्र बिपद हरन कितहूँ नहीं भूले ॥ सीता दुख परम कठिन ब्यापत उर शूले ॥४॥ इन सुखन कनक भवन तजि निधि हारे ॥ ते अब मंदिर पवन पूत विषम ज्वाल जारे ॥५॥

बीच बीच धूम धार बिच बिच झंकारे ।। बिच बिच देखियै सूरश्याम बरन कारे ।।६।।

★ राग मारू ★ आज रघुवीरकौ बीर आयौ ।। जारि लंका सकल मारि राक्षस बहुत सीय सुधि लै कुशल फिर सिधायौ ।।१।। कहत मंदोदरी सुनहु दशकंध पिय बड़ौ अपमान करि गयौ तेरौ ।। अजहूँ मन समुझिकैं मूढ़ मिल रामसों सूर मतिमंद कह्यौ मान मेरौ ।।२।।

★ राग मारू ★ लंक प्रति राम अंगद पठावौ ।। जाऔ बाली बली वीर सुत बालिका बिबिध वाणी कहैं मुखहिं भावै ।।१।। बचन अंगद कहैं कहाँ पठवत मोहि बात इतनी कहौ नाथ मेरे ।। कहौ तौ प्राकार और द्वार तोरन सहित लंककों लै धरों अग्र तेरे ।।२।। सकल बनचरनकों लै धरों लंकमें कहौ तौ गिरिशिलनसों सिंधु पूरूँ ।। सूर सुनि बोल अंगद कहत रामसों प्रबल बल कहौ तौ अरिवंश चूरूँ ।।३।।

★ राग मारू ★ वीर सहजमें होय तौ बल न कीजे ।। रात महापुरुष की आदि ते अंत लों जानिकें काहूकों दुख न दीजै ।।१।। जाय अंगद कहौ आपुनी साधुता यह बचन कहत कछु दोष नाहीं ।। लाभ अति होयगौ शत्रु करि मित्रता दीनता भाखियै जाय ताहीं ।।२।। साधु के पास जगदीश कोऊ कहै बोलियै साधुता टेक छोरी ।। बालिनंदन प्रति राम ऐसें कहें सबनकी सूर प्रभु हाथ डोरी ।।३।।

★ राग मारू ★ श्री राम आवेश अंगद चल्यौ लंककों प्रभु जब दोउ करन पीठ थापी ।। धरणि धँसि सिंधु गई सभा उलटी भई इनहिमें कौन रावण प्रतापी ।।१।। श्रीरामकों शत्रु कर आप शिर छत्र धर रहि न पावै कहूँ ऐसौ पापी ।। ठौरहि ठौर बहु रूप रावण भये सबहि अंगद प्रति बचन बोले ।।२।। सूर अंगद कहै मा हुती सूकरी बहुत रावण जने पेट खोले ।।३।।

★ राग मारू ★ आउ रघुवीरकी शरण अंगद कहै मानि रे मूढ़मति बचन मेरौ।। जाऔ रे जाऔ जब कोपि लंकेश कहै भुजन मेरी बस्यौ काल तेरौ ।।१।। सुर असुर नाग बलि जेते हैं जगत में इंद्र ब्रह्मा सबहि मैं नवाये ।। बात अद्भुत सबै

और पाछें रही रीछ कपि लैन गढ़ लंक आये ॥२॥ वाम करकी यह अल्प सी अंगुरी लंक गढ़ बंक छिनमें ढहाऊँ ॥ कहा करूँ नेंक मोहि शंक रघुवीरकी रंक तोहि मार अबही उड़ाऊँ ॥३॥ होहि ऐसौ बली काहे न मुग्ध बल बालिसे बापकौ बैर लीनौ ॥ तातके भ्रातकी मात पत्नी करी शत्रुकी शरण जाय मूँड़ दीनौ ॥४॥ हुते मम तातके रावरे से लक्षण धर्मकी मेंड़ जिन तोर डारी ॥ परिरहैं अब धूर ततकाल तेरे बदन राम अवतार खल दंडधारी ॥५॥ सुनतही बचन मानों फनग कौ फन चप्यौ सिंघकी पूँछ सोवत मरोर्‌यौ ॥ ज्वलित पावक सदृश बीश लोचन विकल पटक भुज उठत मंत्री निहोर्‌यौ ॥६॥ जौ लों आये ऐंड़ अभिमान मद धरत ग्रीवमें बंक दै दृष्टि डीठी ॥ सुर सुरी बंकुरी भुजा रघुबीरकी जौ लौं मतिमंद तैं नाहीं दीठी ॥७॥ चपल बनचरकी जात अति बोलनी कहा राजानसों बोल जानें ॥ छत्रकी छाँह इंद्रादि थर थर करें बंक यह ढीट नहिं शंक माने ॥८॥ करूँ जिय शंक जो अधिक तोकों गिनूँ जो कछु अपनपौ घट बिचारूँ ॥ भुजनसों पलटि दिगपाल सब दल मलूँ धरनि नभछत्र जो फार डारूँ ॥९॥ रहि रे सुभट समसेर अधसेरतू अपनकौ बल जिय नहिं बिचारै ॥ कहत परधान महाराज रावण बली अवनि रहि आभसों बाथ मारै ॥१०॥ पर्‌यौ बलि द्वार परिहार वामन गदा किंकिरी कोर दै दै जिवायौ ॥ तात मम पालनें आनि बाँध्यौ जबै रैपटन मार कैइबार खायौ ॥११॥ मरमकौ बचन सुन खेद हियमें भयौ चटपटी लाय भृकुटी चढ़ावै ॥ है कोऊ सूर सामंत मेरी सभा मार लैहौं मंद नहिं जान पावै ॥१२॥ एक रैपट दियें मुकुट उड़ि जायँगे सभा सब चरणसों चाँपि डारूँ॥ बालिकौ पूत है शोच जियमें करूँ सिंघ है मेंड़कन कहा मारूँ॥१३॥ करत अपराध उतपात छोटेनकूँ बड़ेनकूँ क्षमा भूषण कहावै ॥ जान देहु दूत अबलों न मार्‌यौ कहूँ पशुनसों लरत जिय लाज आवै ॥१४॥ सूर किशोर जब बालिनंदन कह्यौ शीश अब कौन तो सौं पचावै ॥ नेंक धर धीर रणधीर रघुवीर भट देख तरबार कैसी चलावै ॥१५॥

★राग मारू ★ बड़ौ बालि नंदन बली बिकट बनचर महाद्वार रघीवुरकौ बीर

आयौ ।। पौरितें दौरि दरबान दशशीशसौं जाय शिरनाय यौं कहि सुनायौ ।।१।। सुन श्रवन दशबदन सदन अभिमानकौ नयनकी सैंन अंगद बुलायौ ।। विविध आयुध धरें सुभट सबही खरे छत्रकी छाँय निर्भय जनायौ ।।२।। देख हरि वेष लंकेश हरहर हँस्यौ सुनहुँ भट कटककौ पार पायौ ।। देव दानव महाराज रावण सभा कहनकों मंत्र तहाँ कपि पठायौ ।।३।। अरे रंक रावण कहा तंक तेरौ इतौ दुहुँ कर जोर बिनती बितारों ।। परम गंभीर रघुबीर तन राम पर बीस भुज शीश दश बारि डारों ।।४।। झटकि हाटक मुकुट पटक पट भूमिसों झार तरबार तुव शिर सिंघारों ।। जानकीनाथके हाथ तेरौ मरन कहा मतिमंद तोहि मध्य मारो ।।५।। पाक पावक करै वारि सुरपति भरै पवन पावन करै द्वार मेरैं।। गान नारद करै वार सुर गुरु कहै वेद ब्रह्मा पढ़ै पौर टेरें ।।६।। यक्ष बासुकी प्रभृति नाग गंधर्व मुनि सकल विश्वजीत मैं किये चेरे ।। अरे सुन शठ दशकंधकों कौन भय राम तपसी आय किये डेरे ।।७।। अरे तप बली सत्य तापेश्वरी तप बिना कौन पाषाण तारे ।। कौन ऐसौ सुभट जगत जननी जन्यौ एकही बाण तक बालि मारे ।।८।। परम गंभीर रघुवीर दशरथ तनय शरन गये कोटि अवगुण बिसारे ।। जाहि मिल अंध दशकंध गहि दंत तृण तौ भलें मृत्यु मुख तें उबारे ।।९।। कोप करबाल गहिकाल लंकाधिपति मूढ़ रिपु रामकों शीश नाऊँ ।। शंभुकी शपथ सब कुपथ कायर कृपण श्वास आकाश बनचर उड़ाऊँ ।।१०।। परहिं भैराय भभकंत रिपु धाय सो कर कदन रुधिर भेरों अघाऊँ ।। सुभट साजे सबै देव दुंदुभी अभै एकतें एक रणकर दिखाऊँ ।।११।। चढ़्यौ रावण सुन्यौ शीश तब शिव धुन्यौ उमग रणरंग रघुवीर आयौ ।। रामशर लागि जनु आगि गिरि प्रज्वलित छाँड़ि छिनु सीस नभ भानु छायौ ।।१२।। रुंड भुकरुंड धुक परत छर धरनि पर रुधिर सरिता समर पार पायौ ।। मार दशकंध नृप बँधुकृत सूर प्रभु जानकीनाथ गृह सीय लायौ ।।१३।।

★ राग मारू ★ आज रघुपति चढ़े लंक गढ़ लैनकों ।। अवनि चंचल भई शेष सुधि बुधि गई कमठकी पीठ फट मिल गई रैनकों ।।१।। होत अंदोल सागर

सप्त दिगपाल भये भयभीत अति उड़ि चले गैनकों ।। कहत मंदोदरी सुनहुँ दशकंध पिय लै मिलौ सीय राजीवदलनैनकों ।।२।। वे तौ जगदीश को ईशकौ बल कहा एक बनचर आय जारि गयौ ऐनकों ।। हरिनारायन श्यामदास के प्रभुसों बैर कर कंथ पावै न सुख चैनकों ।।३।।

★ राग मारू ★ चढ़े हरि कनक पुरी पर आज ।। कँपी धरणि थर हरचौ अंबर देख दलनकौ साज ।।१।। असुर सबै पंछी ज्यों भाजे लक्ष्मण छूटे बाज ।। सूरदास प्रभु लंका आये दैन बिभीषण राज ।।२।।

★ राग मारू ★ पिय मेरे लंका बनचर आयौ ।। कर प्रपंच हरी तें सीता लंका कोट ढहायौ ।।१।। तबही मूढ़ मरम नहीं जान्यौ जबही मैं समुझायौ ।। अब किन मिल अपराध क्षमा वे रामचंद्र चढ़ि आयौ ।।२।। ऊँची ध्वजा देख रथ ऊपर लक्ष्मण धनुष चढ़ायौ ।। गहि पद सूरदास भामिनि कहै राज बिभीषण पायौ ।।३।।

★ राग मारू ★ देखि हो कंथ रघुनाथ आयौ ।। छिप्यौ शशि सुर अति चाह चकृत भयौ धूरसों पूर आकाश छायौ ।।१।। तब न मान्यौ कह्यौ आपने मद रह्यौ देहके गर्व अभिमान बाढ़चौ ।। सुनव हो कंथ अब कठिन भयौ छूटवौ गहे भुज बीस करबाल गाढ़ौ ।।२।। सिंधु गंभीर दल छाँड़ि दै मुग्धबल तें न कीनी कहूँ टेक गाढ़ी ।। बचें क्यों डूबते माँझ लाग्यौ धका लंकसी नाव द्वै टूक फाड़ी ।।३।। कहत सुन सूर तू गिन्यौ पंछीनमें आन अचरज पर आज खेले ।। भजे क्यों उबरि हे बाज हनुमानपैं मूढ़ जब जानकीनाथ मेले ।।४।।

★ राग मारू ★ मान दशकंध मतिमंद मेरौ कह्यौ जानकी दै मिल संग कीजै।। कोपि कर चढ़चौ रनधीर कौशल कुमर चरण गहि दान पिय माँग लीजे ।।१।। जाके ऋक्ष बानर सुभट अटक मानै नहीं कौन सन्मुख होय उनहिं वारे ।। मेरो कह्यौ मान जिय जाँन साँची कहूँ शीश दस बीस भुज काट डारे ।।२।। पवन पावक अटल देव दानव सकल चरण गहि शरण मम नित्य आवै ।। सुनौ रे नार करतार थर थर करै रंक रघुबीरकी को चलावै ।।३।। उठे जो कुंभ जिन शंभु

सेव्यौ सदा सकल बनचर चरैं भूख भागें ।। मेरौ कह्यौ मान जिय जान साँची कहुँ दीपक पतंग ज्यों मृत्यु आगें ।।४।। एक हनुमान अभिमान तेरौ हन्यों कुँवर सँहार सब लंक जारी ।। अजहुँ रे समझ हित हेतकी बात सब अंत आयौ कंत कहत नारी ।।५।। शरण सुधीर रघुवीर अशरण शरण ताहिसों क्यों पिया बाद कीजै ।। मेरौ कह्यौ मान अज्ञान तज दुष्टता छाँड़ि पीयूष विष काहे कूँ पीजै ।।६।। मेरौ नाम रावण त्रैलोक कंटक कहै शीश दस बीस भुज चरण नाऊँ ।। खड़ग जो कर धरों मरणते कहा डरों दीनता भाख कहा कुल लजाऊँ ।।७।। मनोहर दास कैलाश जीत्यौ सकल अब देख बैकुंठ पर बाथ बाऊँ ।। धन्य मम मात अरु धन्य मम तातकों मृत्यु रघुनाथके हाथ पाऊँ ।।८।।

★ राग मारू ★ निरख मुख राघौ धरत न धीर ।। करुणावंत विशाल कमलदल लोचन मोचत नीर ।।१।। बोलत कैसें न रहे मौन ह्वे विपति कटावन बीर ।। बारह बरस नींद बन त्यागी मेरे प्रानन पीर ।।२।। सीता हरन मरन दशरथकौ रण बैरिन की भीर ।। अब तो सूर सुमित्रा सुत बिन कौन लगावे तीर ।।३।।

★ राग मारू ★ रघुपति मन संदेह न कीजै ।। मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहें मोकों आज्ञा दीजै ।।१।। कहौ तौ सुरज उगन न दैहौं नहीं दिश ऊगै ताम ।। कहौ तौ गन समेत ग्रसि खाऊँ यमपुर जाय न राम ।।२।। कहौ तौ कालै टूक टूक कर खंड खंड कर डारौ ।। कहौ तौ मीच मारि जारिकें गहि पातालै गारों।।३।। कहौ तो चंदा लै आकाश तें लक्ष्मण मुखहिं निचोरों ।। कहौ तौ सिंधु सुता कौ सागर तुम समीप लै घोरों ।।४।। मोसौ जन सेवक है जाकौ ताहि कहा सकराई ।। सूरदास मिथ्या नहीं भाखों मोय रघुबीर दुहाई ।।५।।

★ राग मारू ★ कहौ कपि राघौकौ संदेश ।। कुशल क्षेम लक्ष्मण बैदेही श्रीपति सकल नरेश ।।१।। जिन पूँछी कुशलात नाथकी अहो भरत बलवीर ।। बिमल देह दुख भरहिं रहत है या जलनिधी के तीर ।।२।। गहबर बसत निशाचर छल कियौ हरी सिया मो मात ।। ता कारण लक्ष्मण शिर दीनौ भये राम बिन भ्रात ।।३।। इतनी श्रवन सुनत शिर ढारयौ निरख भूमि परयौ सोई ।। हाय

हाय कर पुत्र पुत्र कहि लोट सुमित्रा रोई ॥४॥ धन्य सो पूत पिता पन राखै धन्य सो कुल जिहिं लाजे ॥ धन्य सो सेवक अंत के अवसर आवै प्रभु के काजै ॥५॥ ता कारन रघुनाथ पठायौ हों जु लैन गिरि आयौ ॥ है अति दूर निशा सब बीती को लक्ष्मणहिं जिवायौ ॥६॥ लै पर्वत शर बैठ पवन सुत हों प्रभुपैं पहोंचाऊँ ॥ सूरदास पाँवरिव्रत मेरे तव लगि भरत कहाऊँ ॥७॥

★ राग मारू ★ सुनौ कपि कौशल्या की बात ॥ यह पुर जिन आऔ मन वाँछित विन लक्ष्मण लघु भ्रात ॥१॥ छाँड़ि राज काज माता हित तुम चरणन चितलाय ॥ ताहि विमुख जीवन धीक रघुपति कहियो कपि समुझाय ॥२॥ जो तुम कुशल क्षेम वैदेही तौ आन राजपुर कीजो ॥ नाँतर सूर सुमित्रा सुतपर वारि अपनपौ दीजो ॥३॥

★ राग मारू ★ रघुपति अपनो बचन प्रतिपास्यौ ॥ तोरी लंक बंक गढ़ गढ़पति घर घर कौ कर डास्यौ ॥१॥ कहुँ शिर कहुँ भुज कहुँ धड़ लोटत मानों मद मतवारौ ॥ रह्यौ माँसकौ पिंड प्रान लै गयौ बाण अनियारौ ॥२॥ जाके डर बरुन इंद्र कुवेर यम डरत सुभट रण भारौ ॥ सो रावण रघुनाथ छिनकमें कियौ गीधकौ चारौ ॥३॥ छाँड़ि रामसकल सुखसागर बाँध्यौ जल अति खारौ ॥ सुरनर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मास्यौ ॥४॥ रावण मार लंक गढ़ छीन्यौ कियौ सबकौ निस्तारौ ॥ दियौ बिभीषण राज सूर प्रभु कर सुर लोक उजारौ ॥५॥

★ राग मारू ★ पाँयतौ पूँजि चलै रघुनाथ ॥ हनुमान आदि लै बड़रे योधा लीने साथ ॥१॥ सेत बाँधिकैं लंका लूटी रावण के काटे माथ ॥ कृष्णदास सीता घर लाये बिभीषण कियौ सनाथ ॥२॥

★ राग मारू ★ अंतरयामी हो रघुवीर ॥ करुणासिंधु अकाम कल्पतरु जानत जनकी पीर ॥१॥ बाली त्रास बनबास विषमवृत व्यापत सकल शरीर ॥ सो सुग्रीव कियौ कपि कुलपति मेंटि महा रिपुभीर ॥२॥ वेद पुरानन महा मुनिन कृत यश गावत मुनि कीर ॥ बहोरि यों कर थाप्यौ सूर प्रभु रामचंद्र रणधीर ॥३॥

★ राग मारू ★ धन्य जननी जो सुभट जाये ॥ भीर परें रिपुकौं दल मलिकैं कौतुक प्रभुहि दिखाये ॥१॥ जीवत्त सुख भुगवे होय यश बहु बिधि कीरति गाये ॥ मरे तौ मंडल भेद भानुकौ सुरपुर जाय बसाये ॥२॥ कौशल्या सों कहत सुमित्रा जिन स्वामिन दुख पाये ॥ लक्ष्मणते हों भई सपूती रामकाज जो आये ॥३॥ लौह गहें लालच करै जियकौ औरों सुभट लजाये ॥ सूरदास प्रभु जीत शत्रुकों कुशलक्षेम घर आये ॥४॥

नव बिलास के पद

★ राग मालव ★ प्रथम विलास कियौ श्यामाजू कीनौ विपिन बिहारजू ॥ उनके बिधकी शोभा बरनों कहत न आवै पारजू ॥१॥ बाके यूथकी गणना नाहीं निर्गुण भक्त कहावें ॥ ताकी संख्या कहत न आवे शेषहू पार न पावें ॥२॥ घोषघोष प्रति गलिनगलिन प्रति रंगरंग अंबर साजें ॥ कियौ शृंगार नखसिख अंग युवती ज्यों करनी गण राजें ॥३॥ बहु पूजा लै चली वृंदावन पान फूल पकवानै ॥ ताके यूथ मुख्य चंद्रावलि चंद्रकलासी बानै ॥४॥ पोहौंची ज़ाय निकुंज भवन में दरसी वृंदादेवी ॥ ताके पद बदन करि माँग्यौ श्यामसुंदर बर एवी ॥५॥ तिहिंछिन प्रभुजी आप पधारे कोटिक मन्मथ मोहे ॥ अंगअंग प्रति रूपरूप प्रति उपमा रवि शशि कोहै ॥६॥ द्वैजुग जाम श्याम श्यामा संग केलि बिबिध रंग कीने ॥ उठत तरंग रंगरस उछलित दास रसिक रस पीने॥७॥

★ राग मालव ★ द्वितीय बिलास कियौ श्यामाजू खेल समस्या कीनी ॥ ताकी मुख्य सखी ललिताजू आनंद महारस भीनी ॥१॥ चली संकेत बिहार करन बलि पूजा साजि संपूरन ॥ वहु उपहार भोग पायसलै बाँह हलावत मूर ॥२॥ मंदिर देवी गान करत यश आय मिले गिरिधारी ॥ मनकौ भायौ भयौ सबनकौ काम वेदना टारी ॥३॥ स्यामा कौ शृंगार श्याम कौ ललिता नीवी खोली ॥ लीला निरखत दास रसिकजन श्रीमुख स्यामावोली ॥४॥

★ राग मालव ★ तृतीय बिलास कियौ स्यामाजू प्रवीन । खेलनकौ उच्छाह सखी

एकत्र कीन ॥१॥ तिनमें मुख्यसखी विशाखाजू ऐन ॥ चलीनिकुंज महेलमें कोकिला ज्यौं बैंन ॥२॥ भोग धरि सँवार बासोंधी सनी ॥ कुसुमरंग अनेक गुही कामिनी ॥३॥ गानस्वर कियौ बनदेवी विहार ॥ नव त्रियाकौ वेष कोटि काम वार ॥४॥ ढिंग आसन कराय प्यारीकों बैठाय ॥ दोउ एकत्र कीन निरखत लेत बलाय ॥५॥ यह लीलाकौ ध्यान मम हृदय ठहराय ॥ देखत सुरनर मुनिभूले रसिक बलबल जाय ॥६॥

★ राग मालव ★ चौथौ बिलास कियौ श्यामाजू परासौली वन माँई ॥ ताके वृक्षलता द्रुमवेली तन पुलकित आनँद न समाईं ॥१॥ चंद्रभगा मुख्य यूथावलि अपनी सखी सब न्यौति बुलाईं ॥ खंडमंडा जलेबी लडुवा प्रत्येक अंगकौ भाव जनाई ॥२॥ साज कियौ पूजन देवीकौ बहु उपहार भेट लै आई ॥ खेलन चली बनी तिहिंशोभा ज्यों घनमें चपला चमकाई ॥३॥ पोहोंची जाय दरस देवी तब ह्वै गये श्यामकिशोर कन्हाई ॥ मनकौ चीत्यौ भयौ लालनकौ हास बिलास करत किलकाई ॥४॥ श्यामाश्याम भुज भर भेंटे तृण तोरत और लेत बलाई ॥ कही न जाय शोभा ता सुखकी कुंजन दुरे रसिक निधिपाई ॥५॥

★ राग मालव ★ पाँचौ बिलास कियौ श्यामाजू कदली बन संकेत ॥ ताकी सखी मुख्य संजावलि पिया मिलनके हेत ॥१॥ चली रली उमगी युवती सब पूजनदेवी निकसीं ॥ धूप दीप भोग संजावलि कमलकली सो विकसीं ॥२॥ आनँद भर नाचत गावत बधु रसमें रस उपजाती ॥ मंडलमें हरि ततच्छिन आये हिल मिल भये एकपाँती ॥३॥ द्वै युग जाम श्यामश्यामा संग भामिनि यह रस पीनौ ॥ उनकी कृपा दृष्टि अवलोकत रसिक दास रसभीनौ ॥४॥

★ राग मालव ★ छठौ बिलास कियौ श्यामाजू ॥ गोधन बनकों चली भामाजु ॥ पहेरें रंगरंग सारी ॥ हाथन पूजा थारी ॥१॥ ताकी मुख्य सहचरी राई ॥ खेलनकों बहुत सुघराई ॥छंद॥ चली बनवन बिहसि सुंदरि हार कंकण जगमगे ॥ आय मंदिर पूजदेवी भोग सिखरन सगमगे ॥२॥ तासमय प्रभुजी आप पधारे कोटिक मन्मथ मोहहीं ॥ निरख सखियन कमल मुख मानों निधन

धन जों सोहहीं ॥३॥ खेलकौ आरंभ कीनौ राधा माधौ बिच किये ॥ वाकी परछाँई परी तब रसिक चरणन चित दिये ॥४॥

★ राग मालव ★ सातौ बिलास कियौ स्यामाजू गहबरबनमें मतौजु कीन ॥ मुख्य कृष्णावती सहचरी लघु लाघव अतिही प्रवीन ॥१॥ बनदेवी हे गुंजाकुंजा पुहुपन गुही सुमाल ॥ चंद्रावली प्रमुदित बिहसत मुख जैसें मुनियालाल ॥३॥ रच्यौ खेल देवी ढिंग युवती कोक कला मनोज ॥ अति आवेश भये अवलोकत प्रगटे मदन सरोज ॥३॥ कोऊ भुजधर करचरन उर कोऊ अंगअंग मिलाय॥ कुंवर किशोरकिशोरी रसिकमणि दासररसिक दुलराय ॥४॥

★ राग मालव ★ आटों बिलास कियौ श्यामाजू शांतनकुंड प्रवेशजू ॥ उनकी मुख्य भामा सारंगी खेलत जनित आवेशजू ॥१॥ सूरज मंदिर पूजन कर मेवा सामग्री भोगधरी ॥ आनँद भरी चली व्रज ललना क्रीड़न बनकों उमगि भरी॥२॥ भद्रवन गमन कियौ वनदेवी पूजन चंदनवंदन लीने ॥ भोग स्वच्छ फेनी ऐनी सब अंबर अभरनचीने ॥३॥ गावत आवत भावत चितवत नंदलालके रसमाती ॥ कृष्णकला सुंदर मंदिरमें युवती भई सुहाती ॥४॥ देखि स्वरूप ठगी ललना ते चकचोंधीसी लाई ॥ अँचवत दृगन अघात दासरसिक बिहारिन राई ॥५॥

★ राग मालव ★ नवमों बिलास कियौ जु लड़ैती नवधा भक्त बुलाये ॥ अपने अपने सिंगार सबै सज बहु उपहार लिवाये ॥१॥ सब स्यामा जुर चलीं रंगभीनी ज्यों करिणी घनघोरें ॥ ज्यों सरिता जल कूल छांड़िकें उठत प्रवाह हिलोरें ॥२॥ बंसीवट संकेत सघन वन कामकला दरसाये ॥ मोहन मूरत्ति वेणुमुकुट मणि कुंडल तिमिर नसाये ॥३॥ काछनी कटि तट पीत पिछौरी पग नूपुर झनकार करें॥ कंकण वलय हार मणि मुक्ता तीनग्राम स्वर भेद भरें ॥४॥ सब सखियन अवलोक स्याम छबि अपनौ सर्वसु वारें ॥ कुंजद्वार वैठे पियप्यारी अद्भुतरूप निहारें ॥५॥ पूआ खोवा मिठाई मेवा नवधा भोजन आनें ॥ तहाँ सतकार कियौ पुरुषोत्तम अपनों जन्मफल मानें ॥६॥ भोग सराय अचवाय बीराधर

निरांजन उतारे ॥ जयजय शब्द होत तिहुँपुरमें गुरुजन लाज निवारे ॥७॥ सघनकुंज रसपुंज अलिगुंजत कुसुमन सेज सँवारी ॥ रतिरण सुभट जुरे पिय प्यारी कामवेदना टारी ॥८॥ नवरस रास बिलास हुलास व्रजयुवतिन मिलकीने ॥ श्रीवल्लभ चरण कमल कृपातें रसिक दास रसपीने ॥९॥

दश उल्लास (श्री हरिराय महाप्रभु विरचित) के पद

★ राग मालव ★ मूलपुरुष-वत् ★ (१) श्री पुरुषोत्तम करुं प्रनांउ, इनको उल्लास परम रुचि गाऊं, श्रीवल्लभकृपा अनुग्रह करही, मो मतिहीन शारदा शुद्ध धरही, एक समे प्रभु अति ही उल्लास, देख स्वरूप नख चंद प्रकाश; सौरभ सुगंध तुलसीदास आयो, इच्छा रमन द्वे रूप मन भायो ।

(वलण) इच्छा भइ द्वे रूपकी तब कोटि मन्मथ मोह ही; अकल कला सौन्दर्यसीमा, वाम भाग जु प्रकट ही, देख प्रभु उन रूप अद्भुत, रमन चित वीचारियो, दक्षिण भाग जु और ललना, रसमें रस निर्धारियो । जुगल रसको रस बढावन, मध्य रूप प्रकाशही; अधिक बढतो घाट आवे घाट बढतो जा सही साम दाम जो भेद उनके मध्यको अधिकार हे; यह उल्लासनि रासरसमय रसिक मन निर्धार है ।

(२) स्व इच्छाके महेल बनाये, उनकी शोभा बरनी न जाये, वाके गुन नहीं होत है न्यारे, एक एक महेल छ ऋतु अनुसारे; रत्नजटित के छाजे तिबारी हाटिक स्फाटिककी फुलवारी ।

(वलण) फुले वृक्षलता वेली द्रुम, निबिड कुंजन रचपची, हंस कोकिल कीर कलरव, पांती बगदल अति मची । बहत मंद सुगंध शीतल, मोर कुंहुकनी अति बनी, रटत पिय पिय सुखद चातक, चकोर चंदा चक्षनी, चकवा रु चकइ तीर सरिता, नीर जहां झरनां झरे, श्रीपतिको कहा सदन शोभा स्वइच्छा कोन सरभर करे । निज धामको गोलोक कहयित, गाय बछरा अति घने; शब्द होत है मथनको यह उल्लास रसिक मन गमे ।

(३) सखी यूथको हे बिस्तारा, वाकी गिनती न आवे पारा; मेघ बूँद ओर रविकी किरनी, श्रीपुरुषोत्तमलीला कौन वरनी । शेष महेशन ध्यान समाधा, कविजन रंक

कहा करे सांधा ? यूथ मुखीकी संख्या करही तुच्छ बुद्धि कैसें चित्त धरही ?
(वलण) धरूं कैसे चित्तमें जु, बानीहू थकी जात हे, अप्राकृत लीला प्राकृत चातक सब घन कैसे समात हे ? कोटि साडे तीन मुखिया, पुरुषोत्तम निज दास हे, ओरकी को गिने संख्या यह चरन रजकी आस हे, चरनको झंकार सखियन, घोष शब्द जु गाजही, चलत अति उत्साह सखियन, रसिक सरिता भ्राज ही। श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको, कहुं बेद पार न पावही, मूढ केसे चित्त लावे ? रसिक मन न समावही।
(४) वाम भाग सिंगार बखानो, एक रसना मुख कहत न आनो, उनके बसन नीलांबर सारी, श्याम कंचुकी लहेंगा लाल कीनारी।
(वलण) श्याम कंचुकी लाल ल्हेंगा, फूंदनां मखतूल हे, नीवी कटि पर फबी रही, किंकिनी नग बहु मूल हे। देख रूप स्वरूप सुंदर, रमा कोटिक वारने, श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको रसिक चित्त बिचारने।
(५) केसर आड सुभाल मनोहर, बीच मुक्ता बिंदु मानो शशी हर, नैन बिशाल भ्रुकुटी मसिबिंद, वदनकमलके ढिंग अली फंद, श्रवन तरु कली मनिकी ज्योति, बेनी जटित झंघालों पोती, ढेलरी तीलरी पंचलरी मनि मुक्ता, रत्नजटित नगहार उरयुक्ता ।
(वलण) रत्नपदक रु हरी चोकी, भीर भूखन फबी रही, केशके बीच मनि मुक्ता, जबी झुमखसू गुही, बाजूवंध जराव फुंदना, चुरीयनकी पंक्ति बनी, नासबेसर वलय कंकन, मुद्रिका दर्पन अनी, जेहर तेहर तायल अनवट बिछुवन महावर चित्र कीये, हस्त मेंदी मुकर दीने, चंद्र नख शशी जिये, नखसिखलों सिंगार कहां लो, बानी हू थकी जात हे, श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको रस रसिक मन ललचात हे।
(६) नित्यलीलामें प्रभु बिराजे, ज्यों जल धार तुटत न समाजे, ज्यों सरिता प्रवाह नही थामें, अविच्छिन्न धार चलत तट आवे, कबहुक नृत्य कर कल गाने, कबहुक भक्त करत सन्माने, कबहुक रास क्रीडा उद्योती, कबहुक जलक्रीडा कब पोती।
(वलण) पोतमें हरि यूथ बैठे, खेवट आपु कहावही, चलत इत उत विहंसी मुख, प्रीतम प्यारीकों रीझावहीं। प्यारी को मुख देख विन प्रभु, ओर कछु न सुहातरी,

चकोर चंदा निरखके ज्यों पलक नैंन समातही। कबहुक ऋतु शरदको जस गान ललना स्वर भरे, पूरन ब्रह्म स्वरूप सुंदर, सकल कारज अनुसरे। कबहुक तांबूल आप श्रीमुख, भक्त मुखमें मेलही, श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको रस रसिक रसमें झेंलही।
(७) योग शक्तिको आवरन करही, जन भीतर लीला सब धरही, गोलाकृत ज्यों रविकी ज्योति, त्यों मायाको तेज उद्योती।
(वलण) तेज पुंजको जानके, निराकार मतकों अनुसरे, माया संगी जीव दुष्टी भरम भूले पचमरे, न जाने जो ईश ब्रह्मा वेद हू नित गावही, श्रीपुरुषोत्तम उल्लास रस तज गणितानंदको ध्यावही।
(८) परमानंद उल्लास वढ्यो जब, सुजस बंदीजन गान करे सब, रुचि उपजी हरिजुको भायो, निकसी ऋचा स्वरूप मुख आयो।
(वलण) निकसी ऋचा स्वरूप श्रीमुख सुयश गान सुनावही, आप सुनियत मग्न ह्वैकें, वर मांगो जु दीवावही, तब ऋचा रूप कहे वरजु देहु, यह लीलाको अनुभवे, श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको रस रसिक को चाहन लहे।
(९) वाको प्रभु जु वर दीनो, मेरोही ब्रज मोही रस भीनो, प्रकट होय तुम द्वार रस मानो, पाछे तें मोही आयो जांनो।
(वलण) जांनो जो आयो मोहिको, अब यह लीला सुख तुम देहहू ; श्री गोवर्धन यमुना वृंदावन रसमें रसहों नित रहुं ; ओर सखी खट दश हजारे, बाको वर दीनो जबे, बेहु प्रगट जु होयगी तब, तुम इनको सुख देहो सबे। कल्प सारस्वत ब्रजकी लीला पंछीजन लख आसहे, ताही दैवी सृष्टि रसिकन श्रीपुरुषोत्तम उल्लास हे।
(१०) दैवी सृष्टि उद्धारन कारन श्रीवल्लभप्रिया मुखी सुधारन, बत्तीस लक्ष जीवकी गिनती, लीलारस ते भक्त प्रतीति ; ह्वै चिंता करि तपत बुझावन, आज्ञा भई वल्लभ मन भावन।
(वलण) आज्ञा भई निज वल्लभकों, ब्रह्मसंबंध तुमजु करावहु, सकल दुष्कृत दूर करि, सेवा प्रयत्न जतावहू। श्रीगोवर्धन गिरि कंदरामें देवदमन कहावही ; आपु सेवा करो करावो, प्रगट लीला दिखावही, पवित्रा माल उरधार वश कर, जीय बत्तीस

लक्ष वरे; गिरिराजधरको रूप सुधारस, पीवत नैना दुःख हरे, श्रीगोवर्धनधरकी लीला मेरे हृदयमें रम रहो, श्रीपुरुषोत्तम उल्लासको रस रसिक जन मिल नित कहो।

देवीपूजन के पद

★ राग बिलावल ★ व्रत धरि देवी पूजी ॥ जाके मन अभिलाष न दूजी ॥ कीजै नंदपुत्र पति मेरे ॥ पैहों जो अनुग्रह तेरे ॥छंद॥ कर अनुग्रह बर दियौ जब बरस भरलों तप कियो ॥ त्रैलोक्य सुंदर पुरुष भूषण रूप गुण नाहिन वियौ ॥ इत उबटि सोल सिंगार सखियन कुँवरि चौरी जहाँ बनी ॥ जा हितके व्रत नेम संयम सोघरी बिधना ठनी ॥१॥ मुकुट रचि मौर बनायो ॥ माथें धरि हरि वर आयो ॥ तन सांवल पीत दुकूले ॥ देखतही घन दामिनी भूले ॥छंद॥ दामिनी घन कोटि वारों जब निहारों मुख छबि ॥ कुंडल विराजत गंडमंडल नही शोभा शशि रवि ॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जामाहिं हैं ॥ मानों मोर नाचत संग डोलत मुकुटकी पर छांहिं हैं ॥२॥ गोपी सब न्योतें आईं ॥ मुरली धुनि पठै बुलाईं ॥ जहाँ सब मिलि मंगल गाये ॥ नव फूलनके मंडप छाये ॥छंद॥ छायेजु फूलन कुंज मंडप पुलिनमें बेदीरची ॥ बैठेजु श्यामा स्याम वर त्रैलोककी शोभा सची ॥ उत कोकिलागण करें कुलाहल इत सबें व्रजनारियां ॥ आईजु न्योंते दुहुदिशतें देत आनंद गारियां ॥३॥ रासमंडल भुज जोरी ॥ स्याम सांवरे श्रीराधागोरी ॥ पाणि ग्रहण विधिकीनी॥ तब मंडप भ्रम भांवरदीनी ॥ दीनीजु भांवर कुंजमंडप प्रीति गांठ हृदय परी ॥ शरदनिश पून्यौ विमल शशि निकट वृन्दा शुभघरी ॥ गायेजु गीत पुनीत सखियन वेद रुचि मंगलध्वनी ॥ नंदसुत वृषभान तनया रासमें जोरी बनी ॥४॥ जहाँ मन्मथसेन वराती ॥ तहाँ द्रुम फूले नाना भांती ॥ सुर बंदीजन यश गाये ॥ तहां मघवा वाजिंत्र बजाये ॥ वाजिंत्र बाजे शव्द नभसुर पुष्प अंजुली वरखहीं ॥ देव व्योंम बिमान बैठे जय शव्द करकें हरखहीं ॥ सूरदासहिं भयौ आनंद पूजी मनकी साधिका ॥ मदन मोहनलाल दूल्हे दुलहनि श्रीराधिका ॥५॥

★ राग बिलावल ★ नवनिकुंज देवी राधिके वरदाइनी देवप्रिये वृंदावन वृंद

वासिनी ॥ करतलाल आराधन साधन करमन प्रतीत नामावलि मंत्र जपत जयविलासिनी ॥१॥ प्रेंम पुलकि भावित गावत अति आनंद भर नाचत रूप छवि देख मंद हासिनी ॥ अंगन पट भूषन पहेराय आरसी दिखाय तोरत त्रण लै बलाय सुख निवासिनी ॥२॥ कर जोरें चरण गहे अमृत चारु वचनावलि विनती सुनौ दासकी दुखरासि नासिनी ॥ प्रतिपालौ करुणा मई मोसु [illegible] गानई प्राणदान दैहौ बदत ब्यास दासिनी ॥३॥

★ राग टोडी ★ देवीके देवालयतें निकस देवी दुलहिनिजु [illegible] मग अरबरात मनमें ॥ कहाँ दुरे गोविंद गरुड़ध्वज महाभुज ऐसें [illegible] नैननमें प्रान हरितनमें ॥१॥ जवहिं दृष्टि परे तरुन तन श्रीवल्लभ तारिनमें चंद्र जैसें नृपतिनके गनमें ॥ नंददास प्रभु संग धाय आय रथ बैटी बिछुरी बिजुरी मानों आय मिली घनमें ॥२॥

★ राग नूर सारंग ★ गोर मैं यमुना देवी पूजी। मैं मनमें निश्चै ये कीनो ऐसी और नही दूजी ॥१॥ भाग्य सोहाग सबै फलदाता चरण अलज्यो ब्रुजी। श्यामसुंदर वर याहीते पाये सब कोऊ कहत है बहुजी ॥२॥ करत कृपा वाहेन पै ऐसी जिन श्री वल्लभपद सुजी। 'श्री विट्ठल गिरिधरन लाल' प्रिय मनकी आशा पूजी ॥३॥

★ राग ईमन ★ पूजन चलौ हो कदम वनदेवी आऔ हमारे कोऊ संग ॥ पुजवत सकल घोखकी कामना वलन काहूकी कछुलेवी ॥१॥ भाव भक्ति सवहिनकी मानत शीतल सुखद सरस सुरसेवी ॥ गोविंद प्रभुसों कहत वृषभान नंदिनी सुनाय सुनाय कछुक बात औरेंवी ॥२॥

★ राग ईमन ★ श्रीराधे कौन गौर तें पूजी ॥ वृन्दावन गोकुल गलियनमें सब कोऊ कहत बहूजी ॥१॥ मदनमोहन पियकौमन हरलीनौ कौन बुद्धि ताहि सूझी ॥ परमानंददासकौ ठाकुर तो सम तिया न दूजी ॥२॥

दशहरा के पद

★ राग पूर्वी ★ परव दसहरा जानि जसोमति लाल उबटि न्हवावही ॥ सेत वागो लाल सूथन सेत कुलही बनावही ॥१॥ आभूखन पहेराये हितसों काजर नैन लगावही ॥ नंदराय बुलाव लिये अथैयां तें आवही ॥२॥ अश्वको सिंगार लाये विप्र वेद पढावही ॥ तिलक सिर धरन जवारा यह बात घर घर जावही॥३॥ बारी तिबारी चोगनी भीतर देख हँस मुसक्यावही ॥ अश्व चढ हरि प्रेरि लाये हरखि मंगल गावही ॥४॥ आये लिवाये वधाय लीने नंद हँसि लपटावही आरती कर माई जसोमती द्वारकेस बल जावही ॥५॥

★ राग बिलावल ★ उलटो झगा उलटी है सूथन कहत बन्यो नीकोरी मैया । पांय पनैया नंदबाबा की सीस पाग पहली बांध बूझत वलि मो मे को सुंदर है भैया ॥१॥ कटि फेटा और बडी कटारी थकि ढरकि ठोडी तर आय कहूं लपटानो घैया । 'कृष्णजीवन' हरि प्रभु कल्यान की ये छवि निरखत नंदजसोदा भये फिरत गाडी कैसे पैंया ॥२॥

★ राग बिलावल ★ आज दशहरा शुभ दिन नीको पाँयतौ जूजौ हो गोपाल ॥ व्रजरानी व्रजराज कुँवरकौ करौ सिंगार परम रसाल ॥१॥ तब व्रजराज अश्व सिंगारे तापर चढ़े श्रीगिरिधरनलाल रसिक प्रीतम पिय चले कुदावत जहाँ बैठी वृषभान की बाल ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ विजय दशहरा परव बडो हे आज ॥ व्रजवनिता सब मंगल गावत बाजन रह्यो व्रज गाज ॥१॥ भरि बहुत अंगना तीबारी महेल अटारी छाज ॥ वडे परवको यह बडो सुख देखनकी नहि लाज ॥२॥ दशविध भक्त भोग ले आई गोपन आनंद काज ॥ द्वारकेश प्रभु बोलके बीरा देत समाज॥३॥

★ राग सारंग ★ शरदऋतु शुभ जान अनूपम दशमीकौ दीन आयौ री ॥ परम मंगल दिन आज व्रजमें सब मन हरख न मायौ री ॥१॥ केसर सोंधो घोर जननी प्रथम लाल न्हवायौ री ॥ नानाविधिके भूषण आभरण अंग शृंगार बनायौ

री ॥२॥ पाग पिछौरा और उपरना बागौ विचित्र धरायौ री ॥ परमानंद प्रभु विजया दशमी व्रजजन मंगल गायौ री ॥

★ राग सारंग ★ धरत जवारा श्री गोविंद ॥ आश्विन मास सुभग दशमी शुक्ल पक्ष घड़ी शुभकंद ॥१॥ केसर सोंधौ घोर यशोदा प्रथम न्हवाये कान्ह गोविंद॥ नाना विध शृंगार पाग बनी जरकसी बागौ पहरन छंद ॥२॥ कहत यशोदा सुनौ मेरे लाला जोई जोई भावे तिहारे मन ॥ सोई सोई भोजन करौ दोऊ भैया गावत गुण तहाँ परमानंद ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज दशहरा शुभ दिन नीकौ ॥ गिरिधरलाल जवारे बाँधत बन्यौ है भाल कुंकुमकौ टीकौ ॥१॥ आरती करत देत नौछावर चिरजीयौ लाल भामतौ जीकौ ॥ आसकरन प्रभु मोहन नागर त्रिभुवनकौ सुख लागत फीकौ ॥२॥

★ राग सारंग ★ विजय दशमी परम सुहाई ॥ गोधन अगुवा दियौ पटाई ॥१॥ गोप सकल बैठे हैं अथाँई ॥ कुशल मनावौ शुभदिन माई ॥२॥ व्रजरानी व्रजराज कुँवरकों कीरति ललिता न्योंत बुलाई ॥ आज हमारें बड़ौ पर्व है तुम सब जेंवन आवौ धाई ॥३॥ करत सिंगार गिरिधरनलालकौ चंबेली तेल सरस सुखदाई ॥ सुथन पीत श्वतबागौ खुल्यौ लाल पाग शिर पर पहराई ॥४॥ काजर आँजि भौंह बिंदुका दै तृणतोरत और लेतबलाई ॥ रसिक प्रीतम प्रभु विजय कियौ वृषभान कुँवरि मन भाई ॥५॥

★ राग सारंग ★ आज दशहरा शुभदिन नीकौ पाँयतो पूजौ हो गोपाल ॥ व्रजरानी व्रजराज कुँवरकौ करौ सिंगार परम रसाल ॥१॥ तब व्रजराज अश्व सिंगारे तापर चढ़े श्रीगिरिधरलाल ॥ रसिक प्रीतम पिय चले कुदाबत जहाँ बैठी वृषभान की बाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ गृह गृह आँगन होत बधाई ॥ श्रीरामचंद्र सिंहासन बैठे छत्र चमर ढुराई ॥१॥ मंगलसाज लिये सब सुंदरि नवसत सजिकें आई ॥ तिलक कियौ जब अंकुर शिर धर आरती लौन कराई ॥२॥ जयजयकार भयौ त्रिभुवनमें

देवन दुंदुभी वजाई ॥ सुरनर मुनिजन कोटि तेतीसों कौतुक अंवर छाई ॥३॥ चिरजीयौ अविचल रजधानी भक्तन के सुखदाई ॥ श्रीरघुनाथ चरणकमल रज रामदास निधि पाई ॥४॥

★ राग सारंग ★ विजयदशमी और विजय मुहूरत श्रीविठ्ठलगिरिधर पहेरावत ॥ कर सिंगार विचित्र भाँतिनकौ निरख निरख नयनन सुख पावत ॥१॥ सुथन लाल और श्वेत चोलना कुल्हे जरकसी अति मन भावत ॥ विविध भाँत भूषण अंग शोभित केकी पक्ष गुंजा पहिरावत ॥२॥ साज कनक नग थार हाथ लै कुंकुम तिलक ललाट बनावत ॥ अक्षत दै जव अंकुर शिर पर निरख निरख मन मोद वढ़ावत ॥३॥ वहुत भोग वीरा धर आगें व्रजभामिनि मिलि मंगल गावत ॥ निजजन निरख निरखकें श्रीमुख गोविंद हरख हरख गुण गावत ॥४॥

★ राग सारंग ★ जवारे पैहेरत श्रीगोवर्द्धन नाथ सुंदर मुख निरख सुख उपजत व्रजजन किये सनाथ ॥१॥ श्वेत जरी शिर पाग लटक रही कलगी तामें लाल॥ तनसुखकौ वागौ अति राजत कुंडल झलक रसाल ॥२॥ अंगअंग छबि कहाँलों वरनों नाहिंन वरन्यौ जात ॥ चतुर्भुजप्रभु गिरिधर छवि निरखत आनँद उर न समात ॥३॥

★ राग सारंग ★ आज दशहरा परम मंगल दिन धरें जवारे गोवर्द्धनधारी ॥ कुंकुम तिलक सुभाल विराजत अद्भुत शोभा लागत भारी ॥१॥ अश्व सवार भये नँदनंदन चले कुदावत महा सुखकारी ॥ मनकी अटक जहाँ भये ठाढ़े चढ़ी अटा वृषभानकुमारी ॥२॥ चार्‍यौ नयन भये जब सन्मुख सेंन बजावत भुजा पसारी ॥ गोविंद प्रभु पिय रसिक कुँवर वर प्रथम समागम मिले पिय प्यारी॥३॥

★ राग सारंग ★ आज दशहरा शुभ दिन नीकौ जवारे पहरत गिरिधरलाल ॥ आसपास सब व्रजके बालक मध्य मनोहर वाल ॥१॥ करत आरती मात यशोदा वारत मोतिन माल ॥ आसकरन प्रभु मोहननागर प्रेम पुंज व्रजवाल ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज पयाने कौ दिन नीकौ ॥ कुशल केलि उर क्रीड़त है

पूँजिवे मनोरथ जीकौ ॥१॥ अतुलित बल अतुलित सेंना में हनूमान सिर टीकौ ॥ जाम्बवान सुग्रीव नील नल अंगद बाल बलीकौ ॥२॥ विजय दसमी और सींग दाहिनौ बाँयौ घर जोगिनीकौ ॥ दिशाशूल मारत पाछे तें रावण मरण सहीकौ ॥३॥ शृंगी ऋषि मुनि इष्ट करत हैं जोड़ा कर कोटीकौ ॥ अग्र स्वामि कारज सब सरिहै उतरै भार महीकौ ॥४॥

★ राग सारंग ★ विजय-सुदिन आनंद अधिक छबि मोहन वसन विराजत । सीस पाग रही वाम भाग पर लटकि जवारे छाजत ॥ तिलक तरल द्वै रेख भाल पर कुंडल-तेज तरनि द्वै काननि । मुख की सोभा कहाँ लौ वरनों मगन होत मन माननि ॥ कटि-पट छुद्र-घंटिका मनि-गन सोहत जोहत मोहत । 'परमानंद' निरखि नँद-रानी लेति बलैया दोऊ हत ॥

★ राग सारंग ★ सुदिन सुमंगल जानि जसोदा लाल कों पहिरावति वागौ ॥ अँग-अँग भूषन ललित मनोहर लटकि जवारें पागौ ॥ ब्रज-सुंदरी निरखि मन हरषति मगन होत मन फूलत । रूप-रासि रस-रसिक लाडिलौ देखियतु नव तन भूलत ॥ मैया देखति लेति बलैया मुख चूँवति सचु पावति । 'परमानंददास' मन हरषत सुमिरि-सुमिरि गुन गावति ॥

★ राग सारंग ★ जवारे पहिरें गिरिवरधारी । जुवती-जन-मन-ताप-निवारन आनंद मंगलकारी ॥ सुंदर लाल माल ललित तन देखि जननी कर वारी । मनमोहन के रसिक रूप पर 'परमानँद' बलिहारी ॥

★ राग सारंग ★ आज हमारे विजय दशहरा धरिये लाल जवारे हो ॥ कर सिंगार स्याम सुंदरको अपनो तन मन वारे हो ॥१॥ सब सखियन मिल मतो उपायो चलिये जमुनातीर हो ॥ परमानंद जसोमती अति प्रफुल्लित बहु गोपिनकी भीर हो ॥२॥

दशहरा मान कौ पद

★ राग सारंग ★ आज दशहरा शुभ दिन नीकौ विजय करौ पिय प्यारीपै आज॥

घेरी है बिकट मदन गढ़ गाढ़ें तोर मेंड़ लालन कर हो राज ॥१॥ इतनी बात सुनत नँदनंदन बिहँसि उठे दल कीनों साज ॥ रसिकप्रभु पिय रति पति जीत्यो नुपूर किंकिणी रुनुझुनु बाज ॥२॥

★ राग सारंग ★ सुभग महूरत विजयदशमीकौ प्रथम समागम पिय हुलास ॥ दूति विनती करत प्यारीसों बेग पधारौ पियके पास ॥१॥ मंजन कर आभूषण धारौ कनक अंग पटचीर सुबास ॥ धीर धरौ वृषभान नंदिनी पूरन करौ प्रीतम की आस ॥२॥ नवनागर संगम नवनागरि नवसंगम बरनत हरिदास ॥ श्रीवल्लभ पदरज कृपाकों नित्यही नवल हृदय प्रकाश ॥३॥

★ राग सारंग ★ आलीरी तेरी लटकनमें अटक्यौ पीयकौ मन नैंकु न इत उत अटक्यौ ॥१॥ देख रूप ठगी तबतें मन अनत न गोंहन हटक्यौ ॥ एते पर तू मान करत है क्यौं हु न मानत विधु रथ उत अटक्यौ ॥ रसिक प्रीतम प्रीय दूतीके बचन सुनि मान तुरत ही सटक्यौ ॥२॥

★ राग सारंग ★ आली री मानिनी मानगढ़ कर लीयें रहत ताकी ओट ॥ नैन बंदूक तामें सकुच दारू भरें बोल गोला चलाबत झक झोट ॥१॥ भौंह धनुष तामें अंजन पनछ दीने बरूनी मारें बान तिरछी हैं चोट ॥ संधि लागि धाये नंददास प्रभु छूट्यौ हठ तूट्यौ है री कामकोट ॥२॥

★ राग सारंग ★ आभूषन अंगअंग तेऊ अनुचर संग रूप भूप लीयें राजत शोभा पाय ॥ नवयौवन छत्र धरें सौभगता चमर ढरें गर्व सिंहासन बैठी आय ॥१॥ मानों नयना तुरंग कवच कंचुकी कस अंग कीयौ मुकाम अनंग मैत्री मिलाबन सुहाय ॥ अंचल ढाल ढरकत गज उर पर सूरदास मदनमोहन परे हैं राधा बस रीझ दान दीजे मृदु मुसक्याय ॥२॥

★ राग केदारो ★ बेग चलि साजि दल चतुर चंद्रावली । कसब कंचुकी बंद राखि आनन्दकन्द नंदनंदनकुंवर मिलन को दावरी ॥१॥ नैन पंकज लोल मधुर मोहन बोल राजत भोंह कपोल उदधि को भावरी । चंद्रावली करत केलि मानो मन्मथ पेलि सुरत सागर झेल सहज चढि रावरी ॥२॥ चले गयंद गति नूपुर किंकिनी

वजति देख गजवर लजित चलन को भावरी । 'दास मुरारी' प्रभु कर कमल मेलि उर जीत गिरिधरन अब प्रेम लडबावरी ॥३॥

दशहरा के दूसरे दिन मंगला के पद

★ राग बिभास ★ चोवा में चहल रहे हौ लालन कहाँ कहाँ गये रात दशहरा मनावन ॥ एकतें एक सुघर घोष नारी तुमतौ छैल गिरिधारी सबहिन के मन भावन ॥१॥ कर माँझ कर लीनौ हँसि एक बीरा दीनौ लै लै नाम लागे मोही पै गिनावन ॥ धोंधीके प्रभु बिनु सुभट ईत जनावत बातन बतरावत जात सखी आई समुझावन ॥२॥

रास के पद

★ राग भैरव ★ माँन लाग्यौ गिरिवर गावै ॥ तत थेई तत थेई तत ताथेई थेई भैरों राग मिल मुरली बजावै ॥१॥ नाचत नव वृषभान दुलारी अब घर गतिमें गति उपजावै ॥ गिरिधर पियप्यारी की पद रज कृष्णदास लै शीश चढ़ावै ॥२॥

★ राग भैरव ★ प्यारी भुज ग्रीवा मेलि निर्तत पिया सुजान ॥ मुदित परस्पर लेत गति में गति गुणरास राधे गिरिधरन गुण निधान ॥१॥ सरस मुरली धुनि मिले मधुर स्वर रास रंगभीने गावै अब घर तान बंधान ॥ चतुर्भुज प्रभु श्यामाश्यामकी नटन देख मोहे खग मृग वन थकित व्योंम विमान ॥२॥

★ राग भैरव ★ नर्तत गोपाल संग गोपिका मिली ॥ अद्भुत नट भेख देख कोटि काम अति विशेष मुरली अधर मधुर सप्तस्वरन सों रली ॥१॥ गावत पिक कंठ सरस परम रीझ भींझ तान भामिनी सुजान श्रीवृषभानकी लली ॥ बलय नूपुर किंकिणी कटि झनकत तत थेई थेई उघटत मुख शब्दावलि ग्रीव भुज पिली ॥२॥ बाजत मधुरे मृदंग ताधिलाँग गति सुगंध संग लेत देत ताल रास मंडली ॥ कोलाहल करत हंस मोर सोर चहूँ ओर भोर भये फूली मानों कंज की कली ॥३॥ श्रीवृंदावन नवनिकुंज प्रेम पुंज भये हरख निरख तरणि तनया तीर चाँदनी भली ॥ श्रीबल्लभ चरणारविंद पंकज मकरंद सरस करत दान मानदास मोंहना अली ॥४॥

★ राग भैरव ★ नाचत वृषभान कुँवरि हंससुता पुलिन मध्य हंस हंसनी मयूर मंडली बनी ॥ नाचत गोपाल लाल मिलवत झपताल चाल गुंजत अति मत्त मधुप कामिनी अनी ॥१॥ पदक लाल कंठमाल तरुणि तिलक झलक भाल अवनि फूल वर दुकूल नासिका मनी ॥ नील कंचुकी सुदेस चंपकली गलित केश मुकुलित मणि वन दाम कटि सु काछनी ॥२॥ मरकत मणि वलयराव मुखर नूपुर ध्वनि सुभाव यावक युत चरणन नख चंद्रिका घनी ॥ मंदहास भ्रुव विलास रास लास सुख निवास अलग लाग लेत निपुण राधिका गुनी ॥३॥ कामसिंधु कृत्तव विंदु रीझ रहे चरण गहे साधु साधु कहत फिरत राधिका धनी ॥ भेंटत गहि बाँह मूल उरज परस भई फूल व्यास बचन सानुकूल रसिक जीवनी ॥४॥

★ राग भैरव ★ मदन मोहन कमल नयन नर्तत रास रंगे ॥ ततथेई ततथेई थेईथेई गति अनेक लेत मान गान करत रूप सहज सरस अति सुधंगे ॥१॥ विलुलित बनमाल उरसि मोरमुकुट रुचिर सरस युवतिन मनहरन अरूण दृग तरंगे॥ कानन कुंडल झलमलात पीत वसन फरहरात रुनन झुनन धरत चरण भृकुटी भाव भंगे ॥२॥ मोही सुर ललना भामिनी सिद्ध सकल सुनत श्रवण मुरली नाद ग्राम जात अधर कल उपंगे ॥ गोविंद प्रभु ललितादिक सहचरी मिलि यूथ सहित वार फेर मदन कोटि देत अंग अंगे ॥४॥

★ राग भैरव ★ नवनिकुंज नयना रति रंग रंगे ॥ प्रिय प्रेमावली रस रास रसमसे आलसवर माधुरी अंग अंगे ॥१॥ रूप जोबन गुण चपलता आगरी मधुप खंजन मीन मानभंगे ॥ कहें कृष्णदास कामिनि उरसि प्रति गति सुखद गिरिधरन प्रतिविंव संगे ॥२॥

★ राग भैरव ★ हाहा हो हरि नृत्य करौ ॥ जैसें कर मैं तुमहि रिझाऊँ त्यौं मेरौ मन तुम्हुँ हरौ ॥१॥ तुम जैसें श्रम बाहु करत हौ तैसें मैं हूँ डुलाऊँगी ॥ मैं श्रम देख तिहारे उरकों भुजभर कंठ लगाऊँगी ॥२॥ मैं हारी त्योंही तुम हारे चरन चाँपि श्रम मेंटोंगी ॥ सुरश्याम ज्यों उछँग लेहु मोहि त्योंही तुम हारे मैं भेटोंगी ॥३॥

★ राग भैरव ★ सुधंग नाचत नवल किशोरी ॥ थेईथेई करत चाहत प्रीतम दिश बदन चंद मानों तृषित चकोरी ॥१॥ तान बंधान मानमें भामिनी रीझे श्याम कहत हो होरी ॥ हित हरिवंश परस्पर प्रीतम बरवट लियौ मोहन चित चोरी ॥२॥

★ राग भैरव ★ अद्भुत नट भेख धरें नाचत गिरिधरनलाल उघटत संगित तत थेई थेई थेई थेई ता थे ॥ लेत उरप मान लाग डाट सुघर तान आन आन गननननननन गति बंधान साधे ॥१॥ शरद निशा पूरनचंद त्रिविध वायु बहत मंद खगमृग द्रुमवेली पत्र पत्र रटत राधे राधे ॥ युवतीमंडल समूह राग रंग अति कौतूहल रामकृष्ण हित दामोदर चरण अंबुज आराधे ॥२॥

★ राग रामकली ★ देखौ देखौरी नागरनट निर्तत कालिंदी तट गोपिन के मध्य राजें मुकुट लटक ॥ काछिनी किंकणी कटि पीतांवर की चटक कुंडल किरण रवि रथकी अटक ॥१॥ तत थेई ताता थेई शब्द सकल घट उरप तिरप गति पगकी पटक ॥ रास में श्रीराधे राधे मुरलीमें एक रट नंददास गावै तहाँ निपट निकट ॥२॥

★ राग रामकली ★ निर्तत श्यामश्यामा हेत ॥ मुकुट लटकन भृकुटी मटकन नारी मन सुख देत ॥१॥ कबहुँ चलत सुधंग गति लै कबहुँ उघटत बैन ॥ लोल कुंडल गंडमंडित चपल नयनन सैन ॥२॥ श्याम की छबि निरख नागर रही इकटक जोई ॥ सूर प्रभु उर लाय लीनी प्रेम गुण कर पोई ॥३॥

★ राग रामकली ★ रिझवत पियहिं बारंबार ॥ निरख नयन लजात पिय के नहीं शोभा पार ॥१॥ चाल स्वल्प गज हंस मोहत कोक कला प्रवीन ॥ हँसि परस्पर तान गावत करत पिय आधीन ॥२॥ सुनत बन मृग होत व्याकुल रहत चित्रित आय ॥ सूर प्रभु वश किये नागर जान शिरोमणिराय ॥३॥

★ राग रामकली ★ रीझे परस्पर नरनारि ॥ कंठ भुज भुज धरें दोऊ सकत नहीं निरबारि ॥१॥ गौर श्याम कपोल शोभा अधर अमृतधार ॥ परस्पर दोऊ पिय प्यारी रीझ लेत उगार ॥२॥ प्राण एक द्वै देह कीनी भक्ति प्रीति

प्रकाश ॥ सूर स्वामी स्वामिनी मिल करत रंग विलास ॥३॥

★ राग रामकली ★ मोहन मोहनी रसभरे ॥ भोंह सोंहन नयन फेरत ताहि रस में ठरे ॥१॥ अंग निरख अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराय ॥ एक हि की कहा चलै शत शत कोटि रहत लजाय ॥२॥ करत परस्पर रंग हस्तक छबि नृत्य भेद अपार ॥ उड़त अंचल प्रगट कुच दोउ कनक घट रस सार ॥३॥ तरकि कंचुकी ढरक माला रही धरणी जाय ॥ सूर प्रभु करती सखी कर नृत्य लेत उठाय ॥४॥

★ राग रामकली ★ निर्तत मोहन रसिक सखनसंग गिडगिड ततथेई ततथेई तत्ता ॥ मृदंग धृम धृम धृम ताल उरपसप्त सुरजो मिलवत मधुप मत्ता ॥१॥ टिपारो सिर पीतपटलाल काछनी बनी किंकिनी रुनझूनात गावत सुरसत्ता ॥ गोविंद प्रभुके जु गोपबालकसंग जे जे जे करत प्रेम अनुरत्ता ॥२॥

★ राग बिलावल ★ चलहु राधिके सुजान तेरे हित गुणनिधान रास रच्यो कुँवर कान्ह तट कलिंदनंदिनी ॥ निर्तत युवती समूह रास रंग अति कौतूहल बाजत रसमूर मुरलिका आनंदिनी ॥१॥ बंसीवट निकट जहाँ परम रम्य भूमि तहाँ सकल सुखद बहत मलय वायु मंदिनी ॥ जाती ईषद विकास कानन अतिशै सुवास राकानिशि शरद मास विमल चंदिनी ॥२॥ कुंभनदासप्रभु निहार लोचनभर घोषनारि नखशिख सौंदर्य सीम दुख निकंदिनी ॥ विलसो भुज ग्रीव मेल भामिनी सुख सिंधु झेल गोवर्द्धनधरन केलि जगतवंदिनी ॥३॥

★ राग बिलावल ★ आज नागरी किशोर भाँवती विचित्र जोर कहा कहों अंग अंग परम माधुरी ॥ करत केल कंठमेल वाहुदंड गंडमंडल परस सरस लास्य हास रास मंडली जुरी ॥१॥ श्याम सुंदरी बिहार बाँसुरी मृदंग तार सकल घोष नूपुरादि किंकिणी चुरी ॥ देखत हरिवंश आलि नृत्यत सुधंग ताल वार फेर देत प्राण देह सुंदरी ॥२॥

★ राग बिलावल ★ निर्तत राधा नंदकिशोर ॥ ताल मृदंग सहचरी बजावत बिच बिच मोहन मुरली कलघोर ॥१॥ उरप तिरप पगधरत धरणि पर मंडल

फिरत भुजन भुज चार ॥ शोभा अमित विलोक गदाधर रीझ रीझ डारत तृणतोर ॥२॥

★ राग बिलावल ★ नाचत है नागर बलवीर । नागर नवल नागरी नागर नागर नवरंग स्याम सरीर ॥१॥ नागर सरस सघन वृन्दावन नागर तरनितनूजा तीर। नागर मधुप कोकिला मृग गन नागर मन्द सुगन्ध समीर ॥२॥ नागर चरन कमल सुर सेवत नागर नूपुर मुख मंजीर । नखसिखलों नागर नन्दनन्दन नागर भूखन नागर चीर ॥३॥ 'कृष्णदास' स्वामी नट नागर नागर सुडटी गोपिका भीर । नागरलाल गोवर्धनधारी नागर जस गावत मुनिधीर ॥४॥

★ राग टोड़ी ★ बन्यौ रास मंडलमें माधौ गतिमें गत उपजावें हो ॥ कर कंकण झनकार मनोहर प्रमुदित वेणु बजावे हो ॥१॥ श्याम सुभग तन पर दक्षिन कर कूजत चरण सरोजे हो ॥ अबलावृंद अवलोकित हरि मुख नयन विकास मनोजें हो ॥२॥ नीलपीतपट चलत चारु नट रसनागत नूपुर कूजें हो ॥ कनक कुंभ कुच वीच पसीना मानों हर मोतिन पूजें हो ॥३॥ हेम लता तमाल अवलंवित शीश मल्लिका फूली हो ॥ कुंचित केश बीच अरुझाने मानों अलिमाला झूली हो ॥४॥ शरद बिमल निशि चंद बिराजत क्रीड़त यमुना कूलें हो ॥ परमानंदस्वामी कौतूहल देखत सुर नर भूलें हो ॥५॥

★ राग टोड़ी ★ विशद कदंब सघन बृंदावन रच्यौ रास तरणि तनयातट ॥ शरदनिशा उड़पति उजियारी पूर्यौनाद मुरली नागरनट ॥१॥ श्रवण सुनत चली व्रजसुंदरि साजि सिंगार पेहेर भूषणपट ॥ अति हुलास कुमदिनी ज्यों प्रफुल्लित निरख लाल ठाढ़े बंसीबट ॥२॥ मंडल मधि नाचत पिय प्यारी गावत स्वर टोडी तान बिकट ॥ दास सखी देखत नयनन भर वार फेर डारों कोटि मदनभट॥३॥

★ राग टोडी ★ रुचिर रमित रचि रासं ॥ कुसुमित कानन सम द्रुमवेली निजकृत उडुप प्रकाशं ॥१॥ युवती युगल युगल प्रति माधौ करत विनोद विलासं ॥ वेणु मृदंग मँजीर किंकिणी क्वणित मधुर शब्दमृदुहासं ॥२॥ यमुनातीर भीर खगमृगकी मंद समीर सुवासं ॥ बरषत कुसुम इंद्रसुर धावत शंकर

त्यजतकैलासं ॥३॥ निरख नयन छबि मुरझ्यौ मन्मथ लोचन पद्मपलाशं ॥ विष्णुदास प्रभु गिरिधर क्रीड़त कथाकथित शुक व्यासं ॥४॥

★ राग टोड़ी ★ देख व्रजसुंदरी मोहन बनकेलि ॥ अंस अंस बाहु दियें किशोर जोर रूप राशि तरु तमाल अरुझ रही सरस कनक वेलि ॥१॥ नव निकुंज भ्रमर गुंज मंजु घोष प्रेम पुंज गान करत मोर पिकन स्वरसों स्वरमेलि ॥ मदनमूरति अंगअंग बीच बीच स्वर तरंग पल पल हरिवंश पीवत नयन चक्रित झेलि ॥२॥

★ राग टोडी ★ सुनौ हो श्याम एक बात नई ॥ आज रास राधा अवलोक्यौ मेरे मन अति फूलभई ॥१॥ हँस बोलन डोलन बन बिहरन वे चितवन न जात चितई ॥ कौन कहै वृषभान नंदिनी प्रगट भई मानों मदन जई ॥२॥ तुम सम नयन बैन तुमही सम तुम सम आनंद केलि भई ॥ तुमारौ रूप धरैं तुमारी सों तुमही परसभई तुमहिं मई ॥३॥ माथें मुकुट पीतपट मुरली बनमाला छवि छाय रई रंचक भेद रह्यौ या तनमें और सकल छबि पलट लई ॥४॥ त्रिया आलिंगन पिय अवलंबन पियकों हँसिकें अंक दई ॥ फिर चितवन और मुरि मुसिकावन उघटन मिसकर नृत्य ठई ॥५॥ यह कौतुक अनूप मनमोहन मानों घोष रसवेलि छई ॥ सूरदासप्रभुके उर परसत ललित बलित बलिहार गई ॥६॥

★ राग टोडी ★ श्रीवृषभाननंदनी नाचत रास रंग भरी ॥ उरप तिरप लागडाट उघटत संगीत शब्द तततेई थेईथेई बोलत जगत वंदिनी ॥१॥ नाचत स्वर तालमृदंग लेत युवती सुधंग कोककला निपुण सरस कामकंदिनी ॥ रीझ वारदेत प्राण प्रभुमुकुंद अतिसुजान मोही कलगान त्रिय प्रेम फंदिनी ॥२॥

★ राग टोडी ★ निर्तत मंडल मध्य नंदलाल ॥ मोरमुकुट मुरली पीतांबर गरें गुंज बनमाल ॥१॥ ताल मृदंग संगीत बजत है तत थेई बोलत बाल ॥ उरप तिरप तान लेत नटनागर गंधर्व गुनी रसाल ॥२॥ बाम भाग वृषभाननंदिनी गजगति मंद मराल ॥ परमानंद प्रभु की छबि निरखत मेंटत उरके साल ॥३॥

★ राग टोडी ★ जैसें जैसें वंसी बाजे तैसें तैसें नाँचै ॥ पाँय पैंजनी अरु कटि किंकिणीरव तैसेंई सप्त स्वरन साँचै ॥१॥ बिचबिच बाललीला भाव दिखावत

त्यों त्यों व्रज युवतिनमें हास माँचै ॥ मिलनकी लालसा उपजत मनमें सह न सकत विरह आँचे ॥२॥ ऐसी अद्‌भुत लीला श्रवण सुनत ते मूढ़मति मन न राँचे ॥ रसिक प्रीतमकी यह छबि निरखत देवमुनि नारद शारद कहत न वाँचें ॥३॥

★ राग टोडी ★ बन्यौ रास पुलिन मध्य कलिंदनंदिनी ॥ जल सीकरता सहित मलय वायु मंदिनी ॥१॥ कुसुमित्त राजीव शरद रैन चंदिनी ॥ मधुप पाँत सुभग चरणकमल वंदिनी ॥२॥ गोवर्द्धननाथकी गतिगयंदिनी ॥ कृष्णदास सगुण शरद चंद फंदिनी ॥३॥

★ राग टोडी ★ मंडल जोर सबे एकत्र भयें निर्तत रसिक शिरोमनी ॥ मुकुट धरैं शिर पीत पट कटितट बाँधें तान लेत बनि ठनी ॥१॥ एक एक हरि कीन व्रज बनिता अरु सोहे गनी गनी ॥ चढ़ विमान सुरयुवति निरख कहैं परस्पर गिरिवरधर पियधनी ॥२॥ गोपवधू बालक मिल गावत मध्य नृत्य करत बलमोहन ॥ परमानंददासकौ ठाकुर सब मिल गावत धन धन ॥३॥

★ राग टोडी ★ रास करन मन कीनौ सरद विमल मधि तरनि तनया तट सघन वन ॥ गावत सप्त सुर तीन ग्राम ताल जंत्र उघटित शब्द गति परत परन ॥१॥ बंसीकी धुनि सुनि धाईं आईं व्रजनारि मनमथ वेदन कीनौ प्रान हरन ॥ कोऊ पति सुत छाँड़्यौ स्यामसों स्नेह बाढ़्यौ प्रेमकी तरंग तामें लगी तरन ॥२॥ ए सुख शोभा दिन दिन यहे गृह सरस बधाई ए गीतन गाय ॥ आनंदघन व्रजजीवन जोरी रसिक सदाँ सहाय ॥३॥

★ राग खट ★ आज नँदनंद गोविंद गिरिवरधरन तरणि तनया निकट अधर मुरली धरी ॥ सुनत स्वर श्रवण त्यज भवन सुरसुंदरी आन आकाश तैं सुमन बरखा करी ॥१॥ धेंनु अरु बच्छ खग मृग ध्वनि सुन सबे रहे धर ध्यान नहीं चरत तृण मुख परी ॥ भूल प्रतिकूल जल अनिल थक्यौ ता समैं शिला द्रुम द्रवत रजनीश गति मति हरी ॥२॥ सकल द्रुमबेलि प्रफुलित मुदित भ्रमरवर गुंज मत्तपान मधु करत शुभ ता घरी ॥ नाथ वारिजबदन मदनमोहन और मोहे कोटिक मदन हरत अघवृंदरी ॥३॥

★ राग खट ★ आज कमनीय नवकुंज वृंदाविपिन मदनमोहन सुखद रासमंडल रच्यौ ॥ उदित उडुराज लख मुदित व्रजराजसुत प्रान प्यारी सहित विविध गति मति जच्यौ ॥१॥ मुकुटकी लटक कुंडलकी चटक भृकुटीनकी मटक पगपटक बरनी न परत ॥ हार उर रुरित कंकण ललित किंकिणी मुखर मंजीर ध्वनि सुनत जनमन हरत ॥२॥ एक तें एक व्रज सुंदरि अधिक गुणरूप रसमत्त गिरिधरन सँग स्वर भरत ॥ सबै जोवन भरीं उरप पुनि तिरप संगीत गति अलग मति तत्त थेई थेई करत ॥३॥ श्रवण सुन सुरबधू मुरलिका काकली यद्यपि पति निकट तौऊ नाँहि धीरज धरत ॥ रसिकमणि मुकुट नंदलालकी केलि यह गदाधर मिश्रके नेंक न मनतें टरत ॥४॥

★ राग खट ★ रास विलास रच्यौ नागर नट ॥ जुरि मंडल निर्तत व्रज बनिता नवल निकुंज सुभग यमुनातट ॥१॥ उपजत तान बंधान सप्त स्वर बाजत ताल मृदंग बीन रट ॥ सन्मुख ह्वै नाचत पियप्यारी लेत सुधंग चाल गति अटपट॥२॥ रसिक बिहार निरख शशि हार्‍यौ शरदनिशा भूल्यौ अपनी अट ॥ कृष्णदास गिरिधर श्रीराधा राजत मेघ मानों दामिनी घट ॥३॥

★ राग खट ★ मोहन रास रच्यौ वृंदाबन भानुसुता के कूलें जू ॥ शरद चंद विकसत मनोहर कुंज लता द्रुम फूलें जू ॥१॥ टौर टौर कुसुमन के गुच्छा छबि पावत अति झूलें जू ॥ बाजत ताल मृदंग चंग वर बंसीवट के मूलें जू ॥२॥ नाचत गावत मंडल कीयें सखियन मध्य अति टूलें जू ॥ सुनि धुनि अति मन मनोहर शिव विरंचि सुधि भूलें जू ॥३॥ जय जय जय यदुराय मनोहर सुर मुनि बरखत फूलें जू ॥ वृंदावन प्रभुकौ सुख निरखत मिटत सकल तन शूलें जू॥४॥

★ राग खट ★ खेलत रास रसिक नंदलाल ॥ यमुना पुलिन शरद निशि शोभित रचि मंडल ठाढ़ी व्रजबाल ॥१॥ तत थेई थेई तत थेई शव्द उघटत बाजत झाँझ पखावज ताल ॥ जम्यौ सरसही राग परस्पर गुंजत कोमल वेणु रसाल ॥२॥ सन्मुख लेत हैं उरप तिरप दोऊ राधा रसिकनि मदनगोपाल ॥ मानों जलद दामिनी रसपूरण कनक लता मानों श्यामतमाल ॥३॥ सुरपुर नारि निहार परम रस

और रतिपति मनमें भयौ बेहाल ॥ थकित चंद गति मंद भयौ अति चूके मुनि ध्यान धरत तिहिं काल ॥४॥ परम बिलास रच्यौ नटनागर विलुलित उरसि मनों अलिमाल ॥ कृष्णदास लालगिरिधर गति पावत नाहिंन हस्ती मराल ॥५॥

★ राग खट ★ चलचल जहाँ श्रीगोवर्द्धनधर बहुबिधि शोभा राजैं री ॥ नंदकिशोर यशोदानंदन कोटिमदन छबि लाजैं री ॥१॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै मुख मुरली कलबाजें री ॥ श्रीमद्वल्लभ यह अवसर रसिकन शिर नित्य गाजै री ॥२॥

★ राग खट ★ आज ब्रजराजकौ ललन ठाढ़ौ सखी ललित संकेत बट निकट सोहै ॥ देखरी देख अनिमेष या भेखकों मुकुटकी लटक त्रिभुवनहिं मोहै ॥१॥ स्वेदकन झलक कछु झुकीसी पलक प्रेमकी ललक रस रास कीये ॥ धन्य बड़भाग वृषभान नृप नंदिनी राधिका अंस पर बाहु दीये ॥२॥ मनि जटित भूमि पर रही नवलता झूमि कुंज छबि पुंज बरनी न जाई ॥ नंदनंदन चरन परसि हित जानकें मुनिन के मनन मिलि पाँति लाई ॥३॥ महा अद्भुत रूप सकल रस भूप यह नंदनंदन बिना कछु न भावै ॥ धन्य हरिभक्त जिनकी कृपातें सदा कृष्णगुन गदाधर मिश्र गावै ॥४॥

★ राग श्रीराग ★ यह गति नाचत नाच नई ॥ वृंदावन मैं रास बिलास सुख बाढ़त सई ॥१॥ भाँति भाँति राग गावत अलाप कैई ॥ उरप तिरप मान लेत तत थेई ॥२॥ स्याम सुंदर करत क्रीड़ा प्रेम घटा छई ॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधर छिनु छिनु प्रीति नई ॥३॥

★ राग सारंग ★ बन्यौ रास मंडल अहो युवति यूथ मध्य नायक नाचैं गावैं ॥ उघटत शब्द तत थेई ता थेई गतमें गत उपजावें ॥१॥ बनी श्रीराधाबल्लभ जोरी उपमाकों दीजै कोरी लटकत हैं बाँह जोरी रीझरिझावें ॥ सुर नर मुनि मोहे जहाँ तहाँ थकित भये मीठी मीठी तानन लालन वेणु बजावें ॥२॥ अंग अंग चित्र 'कियें मोरचंदा माथें दियें काछनी काछें पीतांबर शोभा पावें ॥ चतुरबिहारी

प्यारी प्यारे ऊपर वार डारी तन मन धन यह सुख कहत न आवें ॥३॥

★ राग सारंग ★ नागरी नागरसों मिलि गावत रासमें सारंग राग जम्यौ ॥ तान बंधान तीन मूर्छना देखत वैभव काम कम्यौ॥ अद्भुत अवधि कहाँ लगि बरनों मोहन मूरति बदन रम्यौ ॥ भजि कृष्णदास थकित नभ उडुपति गिरिधर कौतुक दर्प दम्यौ ॥२॥

★ राग सारंग ★ तरणि तनया तीर लाल गावत बने अधर कर मुरलिका रत्न हाटक खची ॥ तेरे हित रसिक शिर मौर गिरिवरधरन सुनहुँ चरचरी ताल राग सारंग सची ॥१॥ और अद्भुत देख लेत अव घर तान आन आन गति भई भृगभ्रू हैं नची ॥ स्वर सु मिलवत यूथ मधुप मधुपनि मिले तुव मान उघट कित रहत सुंदरि बची ॥२॥ सखी बचनामृत श्रवण पुट पानकर चली नवरंग वर रूप मन्मथ मची ॥ कृष्णदास निनादकौ जु वैभव निरख गगन सुरपति सहित सुभग लज्ञित सची ॥३॥

★ राग सारंग ★ रास में नाचत लालबिहारी नचवत हैं सब व्रजकी नारी ॥ ता थेई ता थेई तत ता थेई थेई थुंगनिथुंगनि तटकित तारी ॥१॥ श्रीराधा एक तरजत मिलवत लेत अलाप सप्त स्वर भारी ॥ कृष्णदास नट नास्य रसिकवर कुशल केलि श्रीगोवर्द्धनधारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ नटवरगति नृत्यत हैं भक्तन उर परसत हैं पुलकित तन हरखत हैं रासमें लालबिहारी ॥ बाजत ताल मृदंग उपंग बाँसुरी बिना स्वर तरंग ग्रग्रता ग्रग्रता थुंग थुंग लेत छंद भारी ॥१॥ कटी काछिनि पीत सुरंग मोर मुकुट अति सुधंग राख्यौ अर्धभाल ललित शीश पेच सँवारी ॥ आरती वारति यशोदा माय लेत कंठ उर लगाय देखत सुरनर मुनि और रामदास बलिहारी ॥२॥

★ राग सारंग ★ तरणि तनयातीर लाल गिरिवरधरन राधिका संग नृत्यत सुभग रास में ॥ तत थेई तत थेई करत गति भेद सों पिय अंग अंग मिलत सुंदरी ता समें ॥१॥ नंदनंदन निरख सुरसहित सुरनारि वेणु कलनाद सुनि मोहे आकाशमें ॥ थक्यौ घन चंद तारिका थकि रहीं तान स्वर गान व्रजपति करत जा समें ॥२॥

★ राग सारंग ★ करत हरि नृत्य नवरंग राधा संग लेत नवगति भेद चरचरी तालके ॥ परस्पर दरस रसमत्त भये तत्त थेई थेई गति लेत संगीत सुरसालके ॥१॥ फरहरत वर्हिवर थरहरत उपहार भरहरत भ्रमर वर विमल वनमालके ॥ खसित सित कुसुम शिर हँसत कुंतल मानों लसत कल झलमलत स्वेद कण भालके ॥२॥ अंग अंगन लटक मटक भृंगन भ्रोंह पटक पटताल कोमल चरण चालके ॥ चमक चल कुंडलन दमक दशनावली विबिध विद्युत भाव लोचन विशालके ॥३॥ बजत अनुसार द्रिम द्रिम मृदंग निनाद झमक झंकार कटि किंकिणी जालके ॥ तरल ताटक तड़ित नील नव जलद में यौं विराजत प्रिया पास गोपालके ॥४॥ युवति जन यूथ अगणित बदन चंद्रमा चंद्र भयौ मंद उद्योत तिहिं कालके ॥ मुदित अनुराग वश राग रागिणी तान गान गत गर्व रंभादि सुर बालके ॥५॥ गगनचर सघन रास मगन बरषत फूल बार डारत रत्न जतन भर थालके ॥ एक रसना गदाधर न वर्णत बनै चरित्र अद्‌भुत कुँवर गिरिधरन लालके ॥६॥

★ राग सारंग ★ सकल कला गुन प्रवीन एरी ए वृंदावन रंग ॥ सा री ग म प ध नी अलाप करत सरस उपजत अवधर तान तरंग ॥१॥ सीस टिपारो कटि लाल काछनी वनजु धात विचित्र सोहे सुभग अंग ॥ गोविंद प्रभु के अंग अंग परवारों कोटि अनंग ॥२॥

★ राग सारंग ★ आपुन नाचै आपुन गावै । ऐसी बहुत घोष जुवतिनसों तुम कौन नाच गाय छिपावै ॥१॥ केलिकला कौतूहल नागर कुनित मुरलिका गति उपजावै । चलत वसन कटि मुखर मेखला तान तरंग अनंग बढावै ॥२॥ त्रिजग मोह किये त्रिलोकी देवनागरि किन्नर मन भावै । गिरिधर पद पराग रस वासु 'कृष्णदास' नोछावर पावे ॥३॥

★ राग सारंग ★ संगीत रसकुशल निर्त आवेस वस लसति राधा रासमंडल बिहारिनी । दिव्यगति चरण चंचल चक्रवर्तिनी कुंवरी श्यामल मनोहर मनोहारिनी ॥१॥ लोचन विशाल मृदुहास मन उल्लास नंदनंदन मनसिज मोद विस्तारनी।

मृदुल पदविन्यास चलित वलयावलि किंकिनी रुनझुनतकार झंकारिनी ॥२॥ रूप निरुपम कांति भांति वरनी न जाती पहरि आभरन रवि षोडस सिंगारनी । मृदंग बीना ताल सुर संच संचार चारुता चातुरी सार अनुसारिनी ॥३॥ उघट मुख शब्द पियूष बरखत मनो सींची पिय श्रवन तन पुलक कुलकारिनी । कही 'गदाधर' जू गिरिराजधरतें अधिक विदित रसग्रन्थ अद्भुत कलाधारिनी ॥४॥

★ राग सारंग ★ निर्तत मोहन रास विलास । गुन गावति वृषभानु-नन्दिनी उघटत सब्द ताथेई तास ॥ करतल ताल मिलत मुरली-सँग बिच-बिच मोहन-मुख-मृदु-हास । जै-जै करत कुसुम सुर बरषत गुन गावत 'परमानँददास'॥

★ राग सारंग ★ बलिहारी रास बिहारिन की । मरकत मनि कञ्चन-मनिमाला ग्रथन नन्दकुमार की ॥१॥ सारंग राग अलापत गावत बिच मिलवतयति ताल की नाचत गावत बेन बजावत लेत उदार उगाल की ॥२॥ यमुना सरस मल्लिका मुकुलित त्रिविध समीर सुढ़ार की । 'कृष्णदास' बलि गिरिधर नवरंग सुरतनाथ सुकुमार की ॥३॥

★ राग सारंग ★ सप्त सुरन तीन ग्राम येकईस मूर्छना तान उनचास मिले मंडल मधि गावै । चारु करन हस्तक सुर नैन भेद भांति भांति उपजति गति निर्त कर नचावै ॥१॥ धिधि किट थुंग थुंग कुकुझे कुकुझे झिनिकट धिमिकिट धिमिकिट धिमिकिट मृदंग बजावै । 'रसिक' प्रीतम छबि निरखत देवजुवति मोहत मन उमगि विविध कुसुम बरखत सुख पावै ॥२॥

★ राग सारंग ★ अरुझी कुंडल लट बेसरि सों पीत पट बनमाला बीच आन अरुझे हैं दोऊ जन ॥ नयनन सों नयना प्राणन सों प्राण अरुझि रहे चटकीली छबि देख लटपटात श्यामघन ॥१॥ होड़ा होड़ी नृत्य करैं रीझरीझ आकों भरें तत थेई तत थेई रटत मगन मन ॥ सूरदास मदनमोहन रास मंडल में प्यारीकौ अंचल लै लै पोंछत हैं श्रमकन ॥२॥

★ राग सारंग ★ नागरी नट नारायण गायौ ॥ तान मान बंधान सप्त स्वरराग सों राग मिलायौ ॥१॥ चरण घुंघरू जंत्र भुजन पर नीकौ झमक जमायौ ॥

तत थेई तत थेई लेत गति में गति पति ब्रजराज रिझायौ ॥२॥ सकल त्रियन में सहज चातुरी अंग सुधंग दिखायौ ॥ व्यास स्वामिनी धन्य धन्य राधा रास में रँग मचायौ ॥३॥

★ राग सारंग ★ सकल कला प्रवीन एरी एहाँ वृंदावन रंग ॥ सारीगमपधनी अलाप करत रस उपजत तान तरंग ॥१॥ निर्तत गत जत लेत ग्रग्रततत किटधिमकधिलांग थोंग बाजत मृदंग ॥ गोविंदप्रभुके जु अंग अंग पर वारों कोटि अनंग ॥२॥

★ राग सारंग ★ आज बन नीकौ रास बनायौ ॥ पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट मोहन वेणु बजायौ ॥१॥ करकंकण किंकिणी ध्वनि नूपुर सुन खगमृग सचुपायौ ॥ युवती मंडल मध्य श्याम घन नट नारायण गायौ ॥२॥ ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिल रस सिंधु बढ़ायौ ॥ बिबिध विशद वृषभान नंदिनी अंग सुधंग दिखायौ ॥३॥ अभिनय निपुण लटक लट लोचन भूकुटी अनंग लजायौ ॥ तत थेई तत थेई लेत नौतनगति पति ब्रजराज रिझायौ ॥४॥ परम उदार रसिक चूड़ामणि सुखवारिद बरखायौ ॥ परिरंभण चुंवन आलिंगन उचित युवती जन पायौ ॥५॥ बरखत कुसुम मुदित नभनायक इंद्र निशान बजायौ ॥ हित हरिवंश रसिक राधापति यश वितान जग छायौ ॥६॥

★ राग पूर्वी ★ निर्तत गोपाललाल तरणि तनया तीरे ॥ युवती जन संग दियें मन्मथ मन करख लियें अंग अंग सुखद कियें राजत बलवीरे ॥१॥ लावण्यनिधि गुणआगर कोककला गुण सागर त्रिविध ताप हरत शीतल समीरे ॥ आसकरन प्रभु मोहननागर गुणनिधान संगीतसार रिझवत ब्रजवधू नागरि फरकत पट पीरे ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ रासमंडल में बने गिरिधरन लाल ॥ सुभग यमुनापुलिन प्रफुलित कदंब वन शरदरैन शशि देख थकित ब्रजबाल ॥१॥ भूषण बसन अंग अंग नौतन सखी कंठधर बाँह करें अधर मधुर मधुपान ॥ बनी गौर श्याम छवि शोभा कहा कहे कवि कोटि काम मोहे कुंभनदास जीय जान ॥२॥

★ राग पूर्वी ★ आजु रासरंग रह्यौजु ॥ हरि राधा खेलत रासमें प्रेम सिंधु बह्यौजु ॥१॥ नैन चपल कर नवल चरन चल आछे ॥ पिय के सिर मुकुट लटकि वैनी प्यारी पाछे ॥२॥ किंकिनी कटि चारु हार नूपुर रव सोहै ॥ मुरली धुनि श्रवण सुनि सो को है जो न मोहै ॥३॥ पीय धरे तिरप तान सुनि सरिता थक्यौ ॥ चंद थक्यौ गगन मध्य नेंकु न रथ हँक्यौ ॥४॥ निर्त भयौ दृगन रंग कापै जात कह्यौ ॥ हित दामोदर ललिता सुख सरिता ज्यों बह्यौ॥५॥

★ राग मालव ★ मोहन नंदराय कुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥ प्रथम चरण सरोज वंदौ स्याम घन गोपाल ॥ ललित कुंडल गंड मंडित चारु नयन विशाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला शेष शंकर हेत ॥ दास परमानंदप्रभु हरि निगम गावत नेत ॥३॥

★ राग मालव ★ तत थेई रासमंडल में बन नाचत पियके संग प्रीतमप्यारी ॥ गावत सरस सुजात मिलावत चपल कुटिल भ्रू अनियारी ॥१॥ मालव राग अलापत भामिनी लेत उरप नागरनारी ॥ प्यारी के संग वेणु वजावत सुघरराय गिरिवरधारी ॥२॥ कृष्णदासप्रभु सौभग सीमा सब युवतिनमें सुकुमारी ॥ जोरी अद्‌भुत प्रगटित भूतल केलिकला रस मनुहारी ॥३॥

★ राग मालव ★ अलाग लागन उरप तिरप गति नचवत व्रजललना रासे ॥ उघटत शब्द तत थेई तत थेई मृगनयनी ईषद हासे ॥१॥ चाल चंद लजावत गावत बाँधत मदन भ्रोंह पाशे ॥ चलत उरज कटि किंकिणी कुंडल श्रमजल कण शोभित आशे ॥२॥ नूपुर रुनित क्वणित कटिमेखला कटितट काछें नीलन वासे ॥ अवघर तान मान बंधाने मोहत विश्व चरणन्यासे ॥३॥ मोहनलाल गोवर्धनधारी रिझवत छैल सुघर लासे ॥ अपने कंठ की पिय श्रमदल की माला देत कृष्णदासे ॥४॥

★ राग मालव ★ नाचत रासमें गोपाल संग मुदित घोषनारी ॥ तरु तमाल श्यामलाल कनकवेलि प्यारी ॥१॥ चल नितंब किंकिणी कटि लोल बंक ग्रीवा ॥ राग तान मान सहित वेणु गान सीवा ॥२॥ श्रमजलकण सुभर भरे

रंग रेंनु सोहै ॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधर व्रजजन मन मोहै ॥

★ राग मालव ★ मदन गोपाल रासमंडलमें मालव राग रसभर्‍यौ गावै ॥ अवघर तानबंधान सप्तस्वर मधुर मधुर मुरलिका बजावै ॥१॥ निर्तत सुलपलेत नौतनगति बहुविध हस्तक भेद दिखावै ॥ उघटत शव्द तत थेई तत थेई युवतिवृंद मनमोद बढ़ावै ॥२॥ थक्यौ चंद मोहे खग नग मृग प्रतिक्षण अमित अनागति लावै ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नटनागर सुरनर मुनि गति मति बिसरावै ॥३॥

★ राग मालव ★ कमलनयन प्यारौ अवघर तान जानै ॥ अलाग लाग सुराग रागिणी बहुत अनागत आनै ॥१॥ रसिकराय शिर मौर गुणिनमें गुण तुमही हौ जानै ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्धनधर हरत लाल सबकौ मन जबही करत हौ गानै ॥२॥

★ राग मालव ★ चलियैजू नेंकु कौतुक देखन रच्यौ है रासमंडल राधे हौं आई तुम्हें लैन ॥ मृगमद घसि अंग लगाये मुकुट काछनी बनाये मुरली पीतांबर विराजत यह छबि मोपै कही न परै बैन ॥१॥ सब सखी मिलि नाचें गावें ताल मृदंग मिलि बजावें नृत्य करें मध्य मूरति मैन ॥ सूरदास मदनमोहन हँसत कहा हौ जु पाउँ धारियै जो पै सुख दीयौ चाहौं नेन ॥२॥

★ राग मालव ★ वृंदावन अद्भुत नट देखियत बिहरत कान्हर प्यारौ ॥ गोवर्धनधर श्याम चंद्रमा युवतिन लोचनतारौ ॥१॥ सुखद किरण रोमावलि वैभव उर नव मणिगण हारा ॥ ललन युवति पर भेख बिराजत पान करत मधुधारा ॥२॥ व्रजजन नवल चकोर अति लोचन श्रवत अमृत अनुसारा ॥ भज कृष्णदास सुरत सुख जलनिधि हुलसत बारंवारा ॥३॥

★ राग मालव ★ रास बिलास गहें करपल्लव एक एक भुज ग्रीवामेली ॥ द्वै द्वै गोपी बिच बिच माधौ निर्तत संग सहेली ॥१॥ टुट परी मोंतिनकी माला ढूँढ़त फिरत सकल ग्वारी ॥ विगलित कुसुम माल कच विलुलित निरख हँसे गिरिवरधारी ॥२॥ शरद विमल नभ चंद बिराजे निर्तत नंदकिशोरा ॥ परमानंदप्रभु बदन सुधानिधि गोपी नयन चकोरा ॥३॥

★ राग मालव ★ साजें नटवर भेष गोपाल ॥ मधुर वेणु सुशब्द उघटत तत थेई थेई ताल ॥१॥ तरणि तनयातीर मरकत श्याम घन गोपाल ॥ व्रज की नारि समूह मंडल बनी कंचनमाल ॥२॥ रास रसगति निरख उडुपति तजी पश्चिम चाल ॥ चतुर्भुज प्रभु देव गण मन हर्‍यौ गिरिधरलाल ॥३॥

★ राग मालव ★ चंद गोविंद गोपी तारागण वने रासमें बनवारी ॥ मुख प्रताप रंजित वृंदावन नवल युवति जनसुखकारी ॥१॥ कमल नयन कमनीय मनोहर मनहरनी गोकुलनारी हस्त कमल पर गलित कुसुमदल नृत्य मान प्रीतम प्यारी ॥२॥ रसमय रास रसिकनी भामिनी अति रसाल वने बिहारी ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिकराय गिरिबरधारी ॥३॥

★ राग मालव ★ जाऊँगी वृंदावन भेटोंगी गोपालें ॥ देखोंगी नयनभर श्याम तमालें ॥१॥ कालिंदी तट चारत धेंनु ॥ संग सखा बजावत मृदु वेंनु ॥२॥ मौर मुकुट गुंजा अवतंस ॥ देशबसत कूजत कलहंस ॥३॥ परमानंद प्रभु त्रिभुवनपाल ॥ लीला सागर गिरिधरलाल ॥४॥

★ राग मालव ★ रासविलास रसभरे निर्तत नवलकिशोर औ नवलकिशोरी ॥ एकही वेष एक रूप गुण गिरिधर श्याम राधिका गोरी ॥१॥ नव पटपीत अरु नवभूषण नवकिंकिणी कटि युग थोरी ॥ दुहुँ दिसि सकल सिंगार बिराजत मानों त्रिभुवन सौभगता चोरी ॥२॥ तान बंधान वेणु रव सों मिलि बिधिना रची सुघर यह जोरी ॥ कुंभनदासप्रभु गोवर्धनधर सुरत केलि में कंचुकी छोरी ॥३॥

★ राग मालव ★ आई गोपी पाँयन परन ॥ सोई करौ जैसें संग न छूटै राखौ श्यामशरन ॥१॥ जब तुम बैन बजाय बुलाई अब जिय कित निठुराई ॥ तुमारे भजत पाप किहिं लागे किन यह बुद्धि उपाई ॥२॥ चित नहीं चलत चरण गति थाकी मन न जात गृह पास ॥ परमानंद स्वामी उदार तुम छाँडौ बचन उदास ॥३॥

★ राग मालव ★ नृत्यत लाल गोपाल रास में सकल व्रज बधू संगे ॥ गिडगिड तकधुंग तत थेई तत थेई भामिनि रति रस रंगे ॥१॥ शरद बिमल नभ उडुपति

राजत गावत तान तरंगे ॥ तालमृदंग झाँझ और झालर बाजत सरस सुधंगे॥२॥ शिव विरंचि मोहे सुर नर मुनि रतिपति गति मति भंगे ॥ गोविंद प्रभु रसरास रसिक मणि भामिनि लेत उछंगे ॥३॥

★ राग मालव ★ व्रजबनिता मध्य रसिक राधिका बनी शरद की राति हो ॥ नृत्यत तत थेई गिरिधर नागर गौर श्याम अंग कांति हो ॥१॥ एक एक गोपी विचबिच माधौ बनी अनूपम भांति हो ॥ जयजय शव्द उच्चारत सुरमुनि कुसुमन बरख अघातिहो ॥२॥ निरखि थक्यौ शशि आयौ शीश पर क्यों हूँ न होत प्रभात हो ॥ परमानंद प्रभु मिलै यह अवसर बनी है आजकी बात हो ॥३॥

★ राग मालव ★ रासमें पिय संग नाचत लेत गति ध्रुवतालकी ॥ राग तान सुर अलापत मिलबत बेन रसालकी ॥१॥ वाम अंस धरें सुशीतलबाहु मदनगोपालकी ॥ कहें कृष्णदास रसिक मनमोहन केलि गिरिधरलालकी॥२॥

★ राग मालव ★ आज गोपाल रासरस खेलत पुलिन कल्पतरु तीरा ॥ शरद विमल नभ चंद बिराजत रोचत त्रिविध समीरा ॥१॥ चंपक बकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित अलि कीरा ॥ लेत सुधंग रागिन कों व्रज युवतिनकी भीरा ॥२॥ मघवा मुदित निसान बजावत व्रत छाँड़त मुनि धीरा ॥ हित हरिवंश मगन मन श्यामा हरत मदनमन पीरा ॥३॥

★ राग मालव ★ बन्यों रासमंडल वर तामें महा मुदित मृदुल राधाप्यारी ॥ वरणों कहा बानिक अँग अँगकी एकरूप एकवेश एकरंग एकरास तामें लेत उपजत अति गति न्यारी ॥१॥ गावत तान तरंग निर्तत उरप तिरप लाग डाट उघटत शव्द उपज महारी ॥ यमुनापुलिन सुभग शीतल समीर मद चंद थक्यौ निशि सब दिशि लागत उजियारी ॥२॥ मोरमुकुट माथें अंग अंग चित्र काछें ग्रीवा भुज मेलि दोउ निर्तत बिहारी ॥ कल्याण के प्रभु प्रिय प्रेम मगन ह्वै लटकत फिरत करत रस क्रीड़ा ऐसे रीझ वश भये गिरिधारी ॥३॥

★ राग सोरठ ★ मोहन वृंदावन क्रीड़त कुंज बन्यौ एक भाय ॥ शरदनिशा जगमग रही मोहन बेंन बजाय ॥१॥ बेंन बजावत टेरसों ठाढ़े द्रुम की छाँईं॥

व्रजनारी व्याकुल भईं घर घरते उठि धाईं ॥२॥ नंदलाल तुम्हें जानिकें आईं तिहारे पास ॥ सो चरित्र विधिनें रच्यौ सँग मिलि खेलें रास ॥३॥

★ राग सोरठ ★ पियको बीन सिखावत प्यारी। कुंज महलमें बैठी श्री राधा संग लिये ललिता री ॥१॥ पियकी अंगुरी ले अपने कर धरत तार पै प्राणआधारी। मध्यम पंचम सुर हि भरावत लाल लकुट कर धारी ॥२॥ रीस करत मनमें मुसुकावत पलका पै सुंदर सुकुमारी। सखी वृंद खंभ छिप ठाडी जाली कोऊ चढी अटारी ॥३॥ जलकी फूही परत जल भीतर मेघघटा निर्तत नटकारी। मोर चकोर कोकिला गावत तेसीय सावन की अंधियारी ॥४॥ मेरी नई बीन है मोहन बंसी निठुर नाही हितकारी। ताहि ते तुमको यह सिखावत बातें करत विचार विचारी ॥५॥ सुनि प्रिया वचन स्याम जू बोले सुनि हो श्री वृषभान दुलारी। तुमारी कृपा बिन हम बंसी धरी सो अव ही विसारी ॥६॥ सुनि पिय वचन हरखि के प्यारी सिखवत रिझवत देकर तारी। भक्त सदा करे आस दरसकी तट सोभित है भानसुता री ॥७॥

★ राग श्री ★ घोष नागरी मंडल मध्य नाचत गिरिधारी लाल लेत गति अनेक भाँति चरन पटकनी गिडगिडता गिडगिडता तातातततततततथेई थेईथेई बीच बीच अधर मधुर मुरलिका मटकनी ॥१॥ भुजसों भुज जोर जोर लेत तान नवकिशोर गावत श्रीराग मिलि ग्रीव लटकनी ॥ सूरदास प्रभु सुजान नंदनंदन कुँवर कान्ह मदनमोहन छवि निरखत काम सटकनी ॥२॥

★ राग श्री ★ सारी गम पधनी सप्त स्वर अलंकृत श्रीराग गावत व्रज भामिनी॥ कोकिल कलरव वर सुंदर सकल मानिनी मैं वर कामिनी ॥१॥ रिझवत तत थेई तानबंधान शरद विमल शशि राका यामिनी ॥ कृष्णदास प्रभु गोवर्द्धन धारी लाल रिझ्यौ चाहत संग स्वामिनी ॥२॥

★ राग श्री ★ श्रीराग गावत व्रज भामिनी ॥ नृत्यत कोक कला गुण सुंदरि सकल भामिनीमें वर कामिनी ॥१॥ मिलवत तत थेई अवघर तान बंधान विमल शशि राका यामिनी ॥ तरणि तनया तीर बिमल सुखद यामिनी त्रिया गान

करत अंग अंग अभिरामिनी ॥२॥ सजल श्यामघन नवल नंद किशोर हियें लागी सोहै मानों सौदामिनी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिगोवर्द्धनधारीलाल रिझ्यौ चाहत संग स्वामिनी ॥३॥

★ राग गोरी ★ खेलत रास दुलहनि दूलहु ॥ सुनहु न सखी सहित ललितादिक निरख निरख नयनन किन फूलहु ॥१॥ अतिकल मधुर महामोहन ध्वनि उपजत हंससुता के कूलहु ॥ थेई थेई बचन मिथुन मुख निरसत सुरमुनि देह दशा किन भूलहु ॥२॥ मृदु पदन्यास उठत कुंकुमरज अद्भुत बहत समीर दुकूलहु ॥ कबहुँ श्यामश्यामा दोऊ नृत्यत कच कुचहार छुवत भूजमूलहु ॥३॥ भृकुटी बिलास हास रसबरखत हित हरीवंश प्रेमरस झूलहु ॥ अति लावण्य रूप अभिनय गुण नाँहिन कोटि काम समतूलहु ॥४॥

★ राग गोरी ★ नृत्य मान प्रीतम संग नीकें करगान सुलप उरप तिरप बंद बदन जोति थकित चंद गिडगिडता गिडगिडता थेईथेईथेई मिलईतान ॥१॥ दंदंदं ननन मृदंग धिधिकटतारावली खरजादिक सुघर विमल स्वरजात बंधान ॥ कृष्णदास प्रभु नवरंग रसिकन चुड़ामणि इषदहास भुवबिलास रिझयौ गिरिधर सुजान ॥२॥

★ राग गोरी ★ कान्ह कामिनि संग रास मंडल मध्य युवती नाचत तरणि तनयाकूले ॥ उदित मन्मथ भाव सरस रंजित बदन देख मुख युवति जल कमल फूले ॥१॥ क्वणित मधुर मुरलिका थकित मृगलोचनी शिथिल कटितट नीवी वर दुकूले ॥ कनक बेलि मानों नव तमाल बिलसत रही लपटाय आनंद मूले ॥२॥ कोटि कंदर्प लावण्य प्रकटित रूप संगीत सुरत हिंडोल झूले ॥ कृष्णदासनिनाथ लालगिरिधरवरन निरख नभ मधन उडुराज भूले ॥३॥

★ राग गोरी ★ रासनायक कुँवर संग लेत अतिसुधंगे ॥ काछनी कटि शिर टिपारौ नई नई गति रंगे ॥१॥ जोरी अति सौभग सीमा समर मान भंगे ॥ कृष्णदास प्रभु बिलसत युवति यूथ संगे ॥२॥

★ राग गोरी ★ नाचत गोपाल संगे प्रेम सहित रासरंगे ततथेई ततथेई करते घोषनागरी ॥ रूपरास अंग अंगे तततान वर सुधंगे लास्य भेद निपुण कोकरस

उजागरी ॥१॥ लेत सुलप उरप तिरप अवनि उरज बदन फिरत मुखरित्त मणि दाम मिले अलग लागरी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर मोह लीये सुवश कीये तरणि तनया तीर बधू गुणन आगरी ॥२॥

★ राग गोरी ★ कृष्ण तरणि तनया तीर रासमंडलरच्यौ अधर कर मधुर स्वर वेणु बाजै ॥ युवती जन यूथ संग नृत्यत अनेक गति निरख अभिमान त्यज कामलाजै ॥१॥ स्याम तनपीत कौशेय पद नख रुचिर चंद्रिका सकल भुव तिमिर भ्राजै ॥ ललित अवतंस भ्रुव धनुष लोचन चपल चितवनि मानो मदन बाण साजै ॥२॥ मुखर मंजीर कटि किंकिणी क्वणित रव बचन गंभीर मानों मेघ गाजें ॥ दास कुंभननाथ हरिदास वर्य धर नखशिख स्वरूप अद्भुत बिराजें ॥३॥

★ राग गोरी ★ ततथेई ततथेई तततताथेई थेई ॥ नाचत गाबत गोपी नाना नई ॥१॥ मृदंग धीधीकटि द्रुमद्रुम दई ॥ त्रिवट ताल गति लेत नई नई ॥२॥ गोवर्द्धनधारी लाल रीझे अति सई ॥ कृष्णदास प्रभु प्यारी आँकों भरि लई ॥३॥

★ राग गोरी ★ गोपबधू मंडल मध्य नायक गोपाललाल रुचिरानन विंबाधर मुरलिका धरे ॥ अद्भुत नटवर विचित्र भेष टेक अति सुदेश कनक कपिश काछ शिखी शिखंड शिखरे ॥१॥ कुकुझाँ कुकुझाँ झनकत थोंगथोंग थोंगतकिट धिकिट धिधींकिट तकथेई उघटत्त रास रसभरे ॥ जयजय गिरिराजधरन कोटि मदन मूरति पर हरिजीवन बलबल व्रजपुरंदरे ॥२॥

★ राग गोरी ★ यह गति नाच नचाव नई ॥ वृंदावनमें रासबिलास सुख बाढति सई ॥१॥ भाँतिभाँति राग गाबत स्वर अलापत केई ॥ उरप तिरप मान लेत तत ताथेई ॥२॥ श्याम सुंदर करत क्रीड़ा प्रेमघटा छई ॥ कुंभनदास प्रभु गिरिधर छिनि छिन प्रतिनई ॥३॥

★ राग गोरी ★ हो बल निर्तत मोहन जति ॥ ऐसी सुगंध प्रवीन ग्र ग्र तत थेई थेई लेत गति ॥१॥ पीत काछनी कटि लाल टिपारो छब सोहत अति ॥

गोविंद प्रभु त्रैलोक विमोहित कुंवर दोउ व्रजपति ॥२॥

★ राग हमीर ★ रास में रस भरी राधिका आवै ॥ बाहु पिय अंस धरि हंस गति लटकती कुच कनकघट रसिक मन सुहावै ॥१॥ तिरप तांडव लास्य उरप सुलपनि भेद निर्तत पीय संग मधुर कल गावै ॥ लोल कटि देश मूरति रत्न मेखला नूपुर क्वणित हस्तक दिखावै ॥ चपल मोहे नैन रुचिर मुसिक्यावनी रूप गुन रासि प्रानपति रिझावै ॥ वृषभान नंदिनी गिरिधरन नंदसुत चरन रेणु नित तहाँ कृष्णदास पावै ॥३॥

★ राग हमीर ★ सरस गावत लालन त्रिभंगी ॥ राग कल्यान मिल चर्चरी तालसों मधुर कर मुरलिका मोहन गुनंगी ॥१॥ रासमंडल मध्य सुबिध नाचत वे अलाग लागन लाग जुवती जन संगी ॥ कोक संगीत सुखसिंधु साँवल रत्न नंदनंदन केलि मन्मथ तरंगी ॥२॥ सप्तस्वर भेद अवघर तान मानसों मंद चाल सुरति श्रीधर्म भंगी ॥ कृष्णदासनिनाथ लालगिरिधरनसों चल क्यों न मिलत लोचन कुरंगी ॥३।

★ राग नायकी ★ रासमंडल मध्य बने दोऊ री ॥ निर्तत भीने नागरी नागर रूप उजागर चंद कोटि कोटि बारने कीने री ॥१॥ कुंडल लोलनि बोलनि मुख थेई थेई अरस परस अंसन भुज दीने री ॥ आसकरन कोउ ताल बजावत कोउ मृदंग कोउ मधुरे गावत सुर झीने री ॥२॥

★ राग रायसो ★ गिरिधरन लाल तेरे कारनें रुचिकर तल्प सवारी ॥ बैठे अकेले कुंजमें नेंक चलौ हा हारी ॥१॥ कालिंदिके कूलपै फूलन महेल बनाय ॥ जल बरखत द्रूमकी लता सुरत्त पवन सुहाय ॥२॥ चलौ पिया पै भामनी बैठे नंदकिशोर ॥ अली गुंजत सघन बन बोलत कोकिल दादुर मोर ॥३॥ निरमल निशि शशी शरदकौ है वर्षाकौ अंत ॥ बहोरयौ रास मंडल रच्यौ सखि तिहारे कंथ ॥४॥ जोबन रूप कुसुमकौ ताहि कौन पतीजै ॥ पछितायवेकौ मन रहे सुखबिलास रस लीजे ॥५॥ दूति के बचन सुन राधिका मनमें अति रुचि बाढ़ी ॥ तन जो भूषण साजही भई तत्क्षण ठाढ़ी ॥६॥ निरबारत चली कुंज

में जब मोहन सुधि पाय ॥ प्रभु मुकुंद माधौ मिले रहसि कंठ लपटाय ॥१॥

★ राग रायसो ★ पिय सन्मुख गवनत गज गामिनी ॥ साज सिंगार पहर पट भूषण नखसिख अंग अंग अभिरामिनी ॥ यमुना पुलिन सुभग वृंदावन तैसीय सुभग शरद की जामिनी ॥ कुंजकुंज प्रफुलित द्रुमवेली देखत प्रेम मगनभर भामिनी ॥२॥ अति उदार गिरिधरन रसिक पिय भुजभर भेंटत वह कामिनी॥ चत्रभुज प्रभु गिरिधर ऐसे शोभित मानों नवघन में दामिनी ॥३॥

★ राग कल्याण ★ मोहनलाल के संग ललना सोहै जैसें तरु तमालके ढिंग फुल सोनजरदकौ ॥ बदनक्रांति अनुप भाँति नहिं समात नीलांबर गगनमें जैसें प्रगट्यौ शशि पूरन शरदकौ ॥१॥ मुक्ता आभूषण द्युति विंबित अंग अंग चूने मिले रंग दूनौ होत जेसें हरदकौ ॥ सूरदास मदन मोहन गौहन की छबि बाढ़ी मेंटत दुख निरखि नैन मैंन दरदकौ ॥२॥

★ राग कल्याण ★ रासमें नृत्यत मदन मोहन नीके सुलप संचगति भेद द्रिमिद्रिम झननननन मृदंग बजाई री ॥ धिधिकट तितिकट ताल झाँझ उघटत धुंगधुंग सप्तसुर सोहाई री ॥१॥ उरपमें तिरप लेत तिरपमें उरप माँझ नखमणि शोभा बरनी न जाई ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर ये राधिका गुण आगरी सब सुखदाई ॥२॥

★ राग कल्याण ★ नंदलाल संग नाचत नवलकिशोरी ॥ खरज रिखभ गंधार सप्तस्वर मध्य तार लेत ग्रग्र ततततततहोरी ॥१॥ जहांरसिक गिरिधर शब्द उघटत ग्रग्र धुंग धुंगन होरी ॥ गोविंदप्रभु बनी नवनागरी गिरिधर रस जोरी ॥२॥

★ राग जैजैवंती ★ वृंदावन बंसी रट बंसीबट यमुनाके तट रासमें रसिक प्यारी खेल रच्यौ बनमें ॥ राधा माधौ कर जोरें रविशशि होतभोरें मंडलमें नृत्यत दोऊ सरस सघनमें ॥१॥ मधुर मृदंग बाजे मुरली की ध्वनि गाजे सुधि न रही री कछू सुरमुनि जनमें ॥ नंददास प्रभु प्यारौ रूपउजियारौ कृष्ण क्रीड़ा देख थकित सब जन मनमें ॥२॥

★ राग ईमन ★ रासरंग कान्हसंग नृत्यत व्रजभामिनी ॥ मेघ चक्र मध्य बनी

मानों सौदामिनी ॥ अवघर गति उरप तिरप लेत चपल भ्रोंह भामिनी ॥ हुलसत मानों मदन केलि शरद विमल यामिनी ॥१॥ गोवर्द्धनधरनलाल रिझवत वर कामिनी ॥ थकित निरखि उडुपति सुख कृष्णदास स्वामिनी ॥२॥

★ राग ईमन ★ नृत्यमान भामिनी गोपाल संग सुभग रास ॥ तरणि तनया पुलिन बिमल बिगसत्त जाती सुवास ॥१॥ लेत सुलप उरप तिरप दरसत बर ईषद हास ॥ बदनजोति स्वच्छ कृत मोहे उडुपति आकाश ॥२॥ नीलपट कसि कंचुकी उतंग नव बिलास ॥ गोवर्द्धनधरनलाल रिझवत प्रभु कृष्णदास ॥३॥

★ राग ईमन ★ ग्रग्रधुंग थुंग तित किट धुंगन एक चरण करसों भलें जू भलें मृदंग बजावै ॥ दूसरे कर चरणसों कठताल झंझंझं झपतालमें अब घर गति उपजावै ॥१॥ कंठ सरस सुरहि गावै मोहन मधुरतान लावै सकल कला पूरण वृषभानुनंदिनी पिय मनभावै ॥ गोविंदप्रभु पिय रिझि रहे मुरझाई दशन दशन धरकें रहसि उरसि लपटावै ॥२॥

★ राग ईमन ★ लाल संग रासरंग लेत मान रसिकवन ग्रग्रता ग्रग्रता ततत्तत ततथेईथेई गति लीने ॥ सारीगमपधनी ध्वनि सुन व्रजराज कुँवर गावत री अति जति संगति निपुण तननननननन आन आन गति चीने ॥१॥ उदित मुदित शरद चंद बंद टूटे कंचुकी के वैभव निरखि निरखि कोटिमदन हीने ॥ विहरत बन रास बिलास दंपति मन ईषद हास छीत स्वामी गिरिवरधर रसवश तब कीने ॥२॥

★ राग ईमन ★ मोहनी मदन गोपाललालकी बाँसुरी ॥ मधुरे श्रवण पुट सुनत स्वर राधिके करत रतिराज के तापकौ नास री ॥१॥ शरद राका रजनी विपिन वृंदा सुखद अनिल तन मंद अति शीतल सुवास री ॥ सुभग पावन पुलिन भृंग सेवत नलिन कल्पतरु रुचिर बलवीर कृत रास री ॥२॥ सकल मंडल भली जहाँ हरिसों मिली बनिता बर बनी उपमा कहौं कासु री ॥ कूंज कंचन तनी लालमरकतमनी उभै कलहंस हरिवंश बलिदास री ॥३॥

★ राग ईमन ★ बन्यौ है रासमंडल माई कमलनयन मधुर कल वेणुस्वर गावें ॥ हस्तक भेद दिखावैं गोपिन प्रेम बढ़ावैं ॥ मानों भूपति रतिरण जीते आवैं ॥१॥ युवतिवृंद संग नाचत अपने रंग तानतरंग अनागति उपजावैं ॥ थकित सघन चंद रथ न पश्चिम धावैं ॥ इंद्र मुदित मन नभ निशान बजावैं ॥२॥ गोवर्द्धन धारी लाल मदन ताप नसावैं ॥ चारुचरण रज कृष्णदास पावैं ॥३॥

★ राग ईमन ★ श्याम सजनी शरद रजनी पुलिन मध्य नृत्यनाट तांतृगता तांतृगता तिरप बंद करत कामिनी ॥ गिड़िगिडां गिडिगिडां गिडगिडगिडगिडगिडां धिधी किटता लागदई झांझांझां झननननननन सुरउपंगनी ॥१॥ श्यामाकों यह नाद भावे तांत्रगता तांत्रगता गतिहिं लावे तततततत शब्द लेत कोटिकामिनी ॥ कृष्णदास यशहिं गावै कर ताथेई थेई नचावे काकृति काकृति काकृति काकृति करै मृदंगनी ॥२॥

★ राग ईमन ★ श्याम नवल नवल बधू कुंजन मध्य नवल केलि चंद नवल रास रचित शरद शर्वरी ॥ ताल धरनि एक मृदंगनि एक रबाब बजावे उपंगन मध्य नायक नाँचत गावत जोरी कर्वरी ॥१॥ तट तरंगन निकट तरुणी कटितट मृदु चंपक बरणी बाम दक्षिण प्रीति भाव करत गर्व री ॥ गिरिवरधर मदनमोहन भूलि रह्यौ सकल गगन मगन कृष्णदास कहत बहुत प्रेम पर्व री ॥

★ राग ईमन ★ बिकट बिकट निकट निकट भेदन मृदंग बाजैगौ ॥ गिरिधरलाल बजावत गावत सप्त स्वरन मिलि ताधिलां ताधिलां धिलांता गिडगिडगिड गाजैगौ ॥१॥ उघटत शब्द तत ताथेईथेई यहि बिधि ब्रजवनिता नाचत नवसत सिंगार साजैगौ ॥ चंचल शशि प्रभु रिझवत कर बुझबत सैन दै दै रतियुत रतिपति लाजैगो ॥२॥

★ राग ईमन ★ गिडगिडतांतांतां धिताधितां मंदिलरा बाजे ॥ तांधिला धिलांधिलां धिधिकट धिधिकट थननननथुंग गिडगिडथुं गिडिगिडथुं घन प्रचंड गाजै ॥१॥ थुंगथुंगथुंगथुंगथरथरतनननननन थेई थेई शब्द उघटत नटवर नट राजै ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्यारी संग नृत्य करै अंग-अंग कोटि सुलक्षण मन्मथ मन लाजै ॥२॥

★ राग ईमन ★ गावत गिरिधरन संग परम मुदित रास रंग ऊरप तिरप लेत तान नागर नागरी ॥ सारीगमपधनी ऊघटत गति सप्त सुरन लेत लाग डाट सुलप अति उजागरी ॥१॥ चर्बित तांबूल देत ध्रुवताल गतिहीं लेत गिडगिडता थुंगथुंग अलाग लाग री ॥ सुरति केलि रति बिलास बलि बलि बलि कुंभनदास श्रीनंद नंदन राधावर सुहाग री ॥२॥

★ राग ईमन ★ मंद मंद मुरली धुनि बाजै निर्तत कुमर कन्हैया ॥ जैसीय निरमल शरद चाँदनी तैसीय बनी दुल्हैया ॥१॥ चंदन की खोर करैं बनमाला कंठ धरैं कंचन की वेली मानों सरस ऊल्हैया ॥ कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे दोऊ कर लेत बलैया ॥२॥

★ राग ईमन ★ तैसौई त्रिवट मुख उघटत पाँयन लेत तैसौई मृदंग बाजै धाधिलांग ॥ जहीं जहीं हस्तक तहीं तहीं दृष्टि मन तहीं भाव गति बिलास ग्रीव टक भ्रकुटी भंग ॥१॥ ऊरप तिरप हुर्मईस लाग डाट कर सुदेश लेत अनाघात फरकत सब अंग ॥ सूरदास मदन मोहन रीझे हाथ धर माथ बाँह जोरी कीयें डोलत प्यारी के संग ॥२॥

★ राग ईमन ★ सुघर राधिका प्रवीन बंसीबट रास रच्यौ स्यामा संग वर सुधंग तरनि तनया तीरे ॥ आनंद कंद वृंदावन सरद चंद पवनमंद कुसुमपुंज ताप दवन धुनित अलिकुटीरे ॥१॥ रुनित किंकिनी सुचारु नूपुर मणि बलयहार अंगवर सुधंग तार तिरप तरल चीरे ॥ गावत अति रंग रह्यौ व्यास रस प्रवाह बह्यो निरख नैनमीन करत प्रेमसिंधु सीरे ॥२॥

★ राग ईमन ★ आज श्यामा वनी श्याम संगे ॥ पहरि तन कंचुकी नीलसारी बनी बिबिध मोतिन गुही सुभग मंगे ॥१॥ मंद मुसिक्यान मृदु चपल मृगलोचनी लटकि लपटात हरि मृदुल अंग ॥ भेंट तन ताप हीयें भेंट भर भुजनसों करत मधुपान पीय लै उछंगे ॥२॥ किंकिनी कुनित कटि पेंजनी झनक पग निर्तत सुलप लेत थेई थुंगे ॥ सकल सुख करन श्रीलालगिरिवरधरन दास कुंभन विपिन रास रंगे ॥३॥

★ राग ईमन ★ आलीरी मंदमंद मुरलीधुनि बाजत नृत्यत कुंवर कन्हैया ॥ तैसीये सरदकी चांदनी निरमल तैसी बनी दुल्हैया ॥१॥ चंदनकी खौरकिये और वनमाल हिये कंचनकी बेली मानों बनी दुल्हैया ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे दोऊ कर लेत बलैया ॥२॥

★ राग ईमन ★ थेईत थेईत गीडी गीडी तक तक थोंग थोंग ॥ ततथेई थेई नृत करत नट नागर अवघर गति आन आन ॥ तकधिलांग तकधिलांग धुमकिट धुमकिट मधुर मधुर बाजे मृदंग ॥ अलग लाग उरप तिरप सरत सूरन मिली तान ॥१॥ बीन कीन्नरी पिनांग म्हुवर कर कठताल लाल लाडली गुण निधान ॥ परम विचित्र अति सुजान ॥ कृष्णदास प्रभु गोपाल मोही सव ब्रज की बाल ॥ बांकी भ्रोंह बांके नैन मारत मानो सर कमान ॥२॥

★ राग ईमन ★ गोपी गोपाल लाल रास मंडल मांही ॥ थेई थेई थेई ताधिलांग निर्तत गल बांही ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग झनननन रूप रंग ग्रग्रत ग्रग्रत ताधिलांग उघटित रसनारी ॥१॥ बीच बाल बीचलाल प्रति प्रति प्रति द्युति रसाल ओघट अति गति उताल निरख द्रग सिराई ॥ श्री राधा मुख शरद चंद पोंछत श्रम जल आनंद नंद नंदन लटक लटक करत मुकुट छांई ॥२॥ ततततत थेई सुघर द्योत शशिय रथ क्यों मध्यनि ठाठ उरप तिरप लाग डाट दंपति अति सांधे ॥ गावत रस भरे रंग तान ताल सुर उमंग आनंद उपजत अनंग रीझत हरि राधे ॥३॥ ठाडे व्योमन विमान देखत सुर शक भान देव अंगना निधान रीझ प्राण वारे ॥ चकित थकित जमुना नीर खग मृग डग मग शरीर जे जे बलवीर सूर बल सखा तिहारे ॥४॥

★ राग ईमन ★ नर्तत रास रंग ए प्यारो ॥ रसिकन रस भरे हो सुलप संच गति लेतहें ग्रग्रताता थेई थेई बाजत मृदंग ॥१॥ ताल जंत्र किन्नरी कतर भेद तेसीय मिलिहें सरस उपंग ॥ गोविंद प्रभु के जू मदमाती युवती युथ ग्रथित कुसुम सिर मोतिन मंग ॥२॥

★ राग बिहाग ★ राजत रंगभिनी भामिनी साँवरे प्रीतम संगे ॥ निर्तत चंचल

गति कही न परत दुति लहलहान सीखी नवघन जहाँ दामिनी ॥१॥ जुवति मंडल में मध्य रूप गुनकी अवधि तातें कहावै संगीतकी स्वामिनी ॥ राग रंग की रानी ततथेई की कलबानी कछुक सीखी कोकिला की कामिनी ॥ नंददास रीझे तहाँ अपने पौ बास्यौ जहाँ रवन रंभा अभिरामिनी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पतिहाये नैना कहें देत रावरे कैसें चोरी दुरै ॥ तुम मुकरत हौ ये आनन चढ़ि गरजत गाजि बादर करत कैसेंधौं मुख मुरे ॥१॥ साँचे न झूठे करत इन बातन साह भयौ चहत असि बिधि तुमहीकों फुरै ॥ चतुरबिहारी गिरिधारी जानि पहचाने जू तूमसों झगरौ कौन करै ॥२॥

★ राग बिहाग ★ लाल साँवरे हो तैसीयै बिहारनि गोरी ॥ ता छीनुकी बलि जाऊँ सखीरी जा कर करत निहोरी ॥१॥ कंकण मणि मर्कत मणि प्रगटि बरसांनौ नंदगाँउ रे ॥ बिधना रचित न होय श्रीभट राधा मोहन नाउरे ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ साँमल मृदुल मनोहर मूरति नंद सुवन युवतिन संग गावत॥ रागरंग रसरसिक रसिकनी राधामोहन प्रेम बढ़ावत ॥१॥ नूपुर रुनत क्वणित कटि किंकिणी सुरवरसों मिलि वेणु बजावत ॥ तानमान बंधान अनागत अवघरतान भेद उपजावत ॥२॥ कौतुक रासविलास सुधानिधि कमल नयन मनसिज शर लावत ॥ नृत्यमान प्यारी प्रीतम पदरज कृष्णदास नौछावर पावत ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ नृत्यमान रासरंग कान्ह संग घोषनार गिड़गिडततथेईथेई नवबिलासनी ॥ बदनजोति मोहत नभ सघन चंद रूपरस बामबाहु नाथ अंस ईषद हासनी ॥१॥ बीच बीच सुरतकेलि जानों तमाल कनकबेलि अरुझ रही अंगअंग बिगतबासनी ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर अधरामृत रंगराची भुवि बिलास मत्त मदन गर्वनासिनी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ बन्यौ मोर मुकुट नटवरबपु स्यामसुंदर कमल नयन बाँकी भ्रोंह ललित भाल घुँघरवारी अलकें ॥ पीतबसन मोतीमाल हियें पदक कंठलाल हँसन बोलनि गावन गंडन श्रवण कुंडल झलकें ॥१॥ करपद भूषण अनूप

कोटि मदन मोहनरूप अद्भुत बदनचंद देख गोपी भूली पलकें ॥ कहि भगवान हितरामरायप्रभु ठाढ़े रासमंडलमें राधासों बाँह जोटी कियें हियें प्रेमललकें ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ नृत्यत रासरंगा रसिकरस भरे हो ॥ सुलप संचगति लेत ग्रग्रततततथेईथेई बाजत मृदंगा ॥१॥ ताल झाँझ किन्नरि कतर भेद तैसीये मिली सरस सुर उपंगा ॥ गोविंदप्रभुके रस माते युवती यूथ मधि खसित कुसुम शिर मोतीनमंगा ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ सिखवत हरिकों मुरली बजावन ॥ सप्तरंध्र पर धरत अँगुरीदल कंध बाहु धर मधुरे गावन ॥१॥ सरसभेद जति राग कान्हरो गति बिलास वर नयन नचावन ॥ कृष्णदास बल बल वैभवकी गिरिधर पियप्यारी मनभावन ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ अरी मिलनियाँ मोहन गावत ॥ अधर वेणु धर सप्त सुरन सों राधे नाम लै तोहि बुलावत ॥१॥ यह जानी गति प्राणनाथ की तानन राग अनंग बढ़ावत ॥ राका रजनी शरदचंद की रंजित छबि कौतुक उपजावत ॥२॥ सुरत दैन युवती मृगनयनी चपलनयन भ्रौंहन सरलावत ॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर रासरसिक बड़भागिन पावत ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ कालिंदी के कूल मनोहर खेलत युवती संग ॥ रासविनोद नंदनंदन पिय भीजे रतिरस रंग ॥१॥ तान बंधान सप्त स्वर मिलवत वीणावेणु उपंग ॥ बाजे अनेक कहाँलौं बरनौं किन्नरि ताल मृदंग ॥२॥ गुणनिधान हरि लेत नृत्य में अवघर तान तरंग ॥ श्रम जलकण भर वदन प्रियाकौ पौंछ सुधारत मंग ॥३॥ सुघरराय गोवर्द्धन नायक भामिनी सौभग अंग ॥ कृष्णदास प्रभु विश्व विमोहन देव सती व्रत भंग ॥४॥

★ राग कान्हरो ★ राग कान्हरो तुम ही पै सुनियत सुनि वृषभान नंदनी राधे॥ तान वंधान अनूपम गतिसौं करत सुंदरी मो मन साधे ॥१॥ कोक कला संगीत निपुन री उघटत शब्द ताताथेई ताधे ॥ कृष्णदास गिरिधरन प्रशंसित कहा कहों रस सिंधु अगाधे ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ अधर बेंन मधुर मधुर गावत गोपालराई अद्भुत सुर तान मान परम मुदित करत गान ॥ जुवती सत जूथ मिलि गतिही झप ताल लेत बोलत ततथेईथेई थोंग थोंग परतमान ॥१॥ नद्रंद्रंद्रंननननि मृदंग गति तिकटि तालावली धीधीधीधीधीधीधीधीधीधीधीधी सुर भाँति विधान ॥ कृष्णदास प्रभु नवरंग रसिक चूड़ामनी ईषद हास भ्रुवबिलास रिझये गिरिधर सुजान ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ नंदसुवन संग नाचत व्रज भामिनि अखारें पाँचपिरोजा झलकत गंड मंडित भूमि ॥ जुगल रंध्र ऊठत अद्भुत गीतावली बिविध तान फौंदा रहे झूमि ॥१॥ राग तान ताल गति रिझवत प्रानपति तिरप बंधान रस लेत प्रान पूमि ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर पीयकों ऊगार पायौ तैं प्रेमानंद बंस कीयौ कामदूमि ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ गिरिधर पीय रिझवत सुमुखी अलापत राग कान्हरो ॥ मन अटक्यौ मनमोहन महीयाँ लेत तान है गयौ तानरो ॥१॥ चपलनैन पलकन लगत बिगलित भ्रुव करत गानरो ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक मुकट मणि गाढ़े आलिंगन दै बन्यौ बानरो ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ श्याम तेरे डहडहे नैन कमल फूले बिमल अमल सरोवर अंतर ॥ शोभित तारे कारे कजरारे मानों बीच बसे री मधुकर ॥१॥ ढुरन मुरनि चितवनि हँसोंहीं लजौहीं अँखियनमें मनहरनी छबि आप रीझ बस कीये नंदकुमरवर ॥ मुरारीदास प्रभु तिहारे ऐसे द्रग मग सुभाव हाव कटाक्षलोचन काम दुख मोचन अरु जीते हैं समर सर ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ प्यारी पग हौलेंहौलें धर ॥ जैसें तेरे नूपुरन बाजही जागत व्रजको लोग नाहीं सुनायवेयोग हाहारी हठीली नेक मेरो कह्योकर ॥१॥ जौलों बनवीथिनमांहि सघनकुंजकी परछांहि तौलों मुखढांप चल कुंवररसिकवर ॥ नंददासप्रभु प्यारीछिनहुं नहोय न्यारी शरदउजियारी जामें जैहो कहूँरर ॥२॥

★ राग अडानो ★ मंडल मध्य रंग भरे श्यामा श्याम राजेंरी ॥ धररररररररररमुरली घोर गाजैं री ॥१॥ गान करत व्रजकी बाम सप्तसुरन

तीनग्राम अंगअंग अभिराम मन्मथ मन लाजैं री ॥ मंदमंद हास करें रीझिरीझि आँकौ भरैं नयनन मध्य लेत मान अति सुदेश छाजैंरी ॥२॥ युवती जन नृत्य करैं स्याम ग्रीव भुजा धरैं श्यामा संगीत उघट रसही रस साजैंरी ॥ धिधिकिटता धिधिकिटता धिलां धिलां धिलां धिधिकिटधिधिकिट थेईथेई गिडगिडतक बाजैंरी ॥३॥ रररैंन रीझ रही ययमुना थकित भई चचचचंद गगगगन पपपपपश्चिम रथन भाजैंरी ॥ कृष्णदास प्रभु विलास बरखत नव रूपरास वृंदावन वर विलास रंग बढ्यौ आजैंरी ॥४॥

★ राग अडानो ★ बंसीबटके निकट हरि रास रच्यौ है मोर मुकुट अरु ओढ़े पीतपट ॥ श्रीवृंदावन कुंज सघन बन सुभग पुलिन ओर यमुनाके तट ॥१॥ आलस भरे उनींदे दोउ जन श्रीराधाजू ओर नागरनट ॥ व्यास रसिक तन मन धन फूले लेत बलैयाँ कर अँगुरिन चट ॥२॥

★ राग अडानो ★ चटकीलौ पट लपटानौ कटि बंसीवट जमुनाके तट ठाढौ नागर नट ॥ मुकुट लटक और कुंडल चटक भ्रुकुटी बिकट तामैं अटक्यौरी मदनभट ॥१॥ चरण लपेट आछे कनक लकुट चटकीली बनमाल कर टेकें द्रुम डाल टेढ़े ठाढ़े नंदलाल छबि छाँई घटघट ॥ नंददास प्रभु प्यारी बिन देखें गोपीग्वाल टारी न टरत यातैं निपट निकट आवै सौंधेकी लपट ॥२॥

★ राग अडानो ★ निर्तत रास मंडल मधि रंग रह्यौ फिरत बाँहजोटी गोपिनमिल कान्ह ॥ पाँइन नुपूर वजावै हस्तक भेद बतावै गिडिगिडि ताथेई ताथेई ताथेई थेई लेत उरप तिरप मान ॥१॥ मुरली धुनिनाद छायौ मनकी गति पंग भई श्रीयमुना थकित रही सुरनर मुनि टर्यौ ध्यान ॥ चिरजीयौ श्रीराधा मदनमोहनजू की जोरी ऊपर जनहरिया प्रभु बारत अपनौ तन मन प्रान ॥२॥

★ राग अडानो ★ मंडल मधि वृंदावन नृत्यत मोहन कुंज बिहारी ॥ नूपुर धुनि सुनि मोहे बाजत मृदंग द्रुम बेली प्रफुल्लित शरद चंद उजियारी ॥१॥ कान्ह कुँवर हितकारी सुनि वृषभान दुलारी चलि राधे हा हा री तू प्राननतैं प्यारी ॥ सूरदास प्रभु प्यारी छिन नहीं होत न्यारी कह्यौ मानि मेरौ नटनागर सों पग धारौ ॥२॥

★ राग केदारो ★ पूरत मधुरे वेणु रसाल ॥ चारु ध्वनि वे सुनत श्रवणन बिमोही व्रजबाल ॥१॥ राजऋतु गिरि गोवर्द्धन तट रच्यौ रास गोपाल ॥ निरख कौतुक चंद भूल्यौ तजी पश्चिम चाल ॥२॥ सुनि थके सुरनर पवन पशु खग सुधि न रही तिहिं काल ॥ दास कुंभनप्रभु हर्यौ मन गोवर्द्धनधर लाल ॥३॥

★ राग केदारो ★ गोविंद करत मुरली गान । अधर करधर स्याम सुंदर सप्तस्वर बंधान ॥१॥ बिमोही व्रजनारि पशु खग सुनत धर रहे ध्यान ॥ चल अचल सबकी भई यह गति अनूपम आन ॥२॥ सुनत तजी समाधि मुनिजन थके व्योम विमान ॥ कुंभनदास सुजान गिरिधर रची अद्‌भुत तान ॥३॥

★ राग केदारो ★ सुन ध्वनि मुरली बन बाजे हरि रास रच्यौ ॥ कुंजकुंज द्रुमवेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मणिन खच्यौ ॥१॥ नृत्यत युगल किशोर युवतिजन मन मिल राग केदारो सच्यौ ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नीकें आज गोपाल नच्यौ ॥२॥

★ राग केदारो ★ रैन रीझी हो प्यारे हरिकौ रास देख याही तें अधिक बढ गई री गैन ॥ चल न सकत हरि रूप बिमोही रही एकटक आछे नक्षत्र नैन ॥१॥ छबिसों छूटत मानों बिचबिच तारे हीरा के आभूषण पर बार डारों जग ऐन ॥ चंदाहू थकित भयौ देखबेके लालच रह्यौ भयौ देखकें परम चैन ॥२॥ जौ लौं इच्छा भई तौलौं नाँचें हैं गोपी गोपाल अद्‌भुत गति मौ पै कही न परत बैन ॥ नंददासप्रभु को बिलास रास देखबेकुँ मन्ममथहूकौ मन मथ्यौरी मन ॥३॥

★ राग केदारो ★ रास रच्यौ बन कुँवर किशोरी ॥ मंडल बिमल सुभग वृंदावन यमुनापुलिन स्यामघन गोरी ॥१॥ बाजत वेणु रवाब किन्नरी कंकण नूपुर किंकिणी सोरी ॥ ततथेई ततथेई शब्द उघटत पीय भले बिहारी विहारिन जोरी ॥२॥ बरहा मुकुट भ्रकुटी तट आवत धरें भुजन में भामिन भोरी ॥ आलिंगन चुंबन परिरंभण परमानंद डारत तृणतोरी ॥३॥

★ राग केदारो ★ रासमें रसिक मोहन बने भामिनी ॥ सुभग पावन पुलिन सरस सौरभनलिन मत्त मधुकर निरक शरदकी यामिनी ॥१॥ त्रिविध रोचक

पवन ताप दिनमणि दवन तहाँ ठाढ़े रवन संग शत कामिनी ॥ ताल वीणा मृदंग सरस नाचत सुधंग एकतें एक संगीतकी स्वामिनी ॥२॥ रागरागिन जमी विपिन बरखत अमी अधरबिंबन रमी मुरली अभिरामिनी ॥ लाग डाप उरप सप्तस्वरनसों सुलप लेत सुंदर सुभग राधिका नामिनी ॥३॥ ततथेईथेई करत गतिब नूतन धरत पगन डगमग धरत मत्त गजगामिनी ॥ धाय नवरँग धरी उरसि राजत खरी उभय कलहंस हरिवंश घनदामिनी ॥४॥

★ राग केदारो ★ आज मोहन रची रासरस मंडली ॥ उदित पूरण निशा नाथ निरमल दिशा देख दिनकर सुता सुभग पुलिन स्थली ॥१॥ वीच हरि बीच हिरणाक्ष माला रची तरुलता पिच्छ मानों कनक कदली रली ॥ पवन वश चपल द्रुम डुलनसी देखियत चारु हस्तक भेद भाँत भारी भली ॥२॥ चरण विन्यास कर्पूर कुंकुम धूरि पूरि रही दिश विदिश कुंजनबनकी गली ॥ कुंद मंदार अरविंद मकरंद मिलि कुंज पुंजन मिले मंजु गुंजत अली ॥३॥ गान रस तनक वाण बेध्यो विषपान अभिमान मुनि ध्यान जिय दलमली ॥ अधर गिरिधरनके लाग अनुराग मिल जगत विजई भई मुरलिका काकली ॥४॥ रसभरे मध्य मंडल बिराजत खरे नंदनंदन वृषभानजूकी लली ॥ देख अनमेष लोचन गदाधर युगल लेख जिय आपने भाग्य महिमा फली ॥५॥

★ राग केदारो ★ पूरीपूरी पूरणमासी पूर्यौ पूर्यौ शरदकौ चंदा ॥ पूर्यौ है मुरली स्वर केदारो कृष्ण कला संपूरण भामिनी रास रच्यौ सुख कंदा ॥१॥ तान मान गति मोहन मोहे कहियत औरही मन मोहंदा ॥ नृत्य करत श्रीराधा प्यारी नचवत आप बिहारी उघटत थेईथेई थुगन छंदा ॥२॥ मन आकर्षि लियौ व्रजसुंदरि जयजय रुचिर रुचिर गति मंदा ॥ सखी असीस देत हरिवंशी तैसेंई बिहरत श्रीवृंदावन कुँवरिकुंवर नंदनंदा ॥३॥

★ राग केदारो ★ राखत रंग गिरिवरधरन ॥ रासरंग सरस रच्यौ नृत्य गति मनहरन ॥१॥ शरद उडुपति किरण रंजित बिपिन नाना बरण ॥ तरणि तनया पुलिन में सुख रासि प्रकटित करण ॥२॥ सुभग युवति कदंब संगीत

सुरत सागर तरण ॥ भर्तृ काव्य सुधा सरोवर राज बिहरन ॥३॥ तत थेई तत थेई थेई शब्द गति उच्चारण ॥ कृष्णदासनिनाथ निज भुज त्रिया उर विस्तरण ॥४॥

★ राग केदारो ★ नृत्यत रास में रंगरह्यौ ॥ भये मोहित चलअचल हरि जबही वेणु गह्यौ ॥१॥ बिपिन वृंदा सच्यौ जो सुख परत नाँहि कह्यौ ॥ प्रेम प्रभु संग रंग रसकौ उमंग वारिधि बह्यौ ॥२॥

★ राग केदारो ★ श्याम संग राधिका रासमंडल बनी ॥ बीच नँदलाल व्रजबाल चंपक वरण जनु घन तड़ित बिच कनक मरकत मणी ॥१॥ लेत गति मान तत थेई हस्तक भेद सारीगमपधनी ए सप्तस्वर मंदनी ॥ नृत्य रस पहिर पट नील प्रकटित छबि बदन जनु जलद में हिमकिरन की चाँदनी ॥२॥ रागरागणी तानमान संगीत मध्य थकित राकेश नभ शरदकी यामिनी ॥ मिलत हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी दूर कर मदन मत्त गजगामिनी ॥३॥

★ राग केदारो ★ आलीरी रासमंडल मध्य नृत्य करत मदन मोहन अधिक सोहन लाड़िली रूप निधान ॥ चलन चारु हस्तभेद मिलवत आछी भाँत-भाँत मंदहास भ्रुव बिलास लेत नयन नहीं में मान ॥१॥ दोऊ मिल राग केदारो अलापत होड़ाहोड़ी उघटत बिकट तान ॥ परमानंद निरख गोपीजन वारत हैं निज प्राण ॥२॥

★ राग केदारो ★ रिझयौ सखीरी तें साँवरौ सुजानराय ॥ तान बंधान अनूपम गतिसों मधुर ताल स्वर सुघर गाय ॥१॥ राखे प्रेम प्रमोद प्राणपति गूढ़भाव सैंनन जनाय ॥ उघटत शब्दसंगीत स्वामिनी नृत्यत पग नूपुर बजाय ॥२॥ हरिसंग रासरंग राख्यौ मिलिके अंगअंग गुण बहुत भाय ॥ चत्रभुज गिरिगोवर्द्धनधारीलाल लेत रहसि हँसकंठ लाय ॥३॥

★ राग केदारो ★ शरद सुहाई हो यामिनी भामिनी रास रच्यौ ॥ बंसीबट यमुनातट शीतल मंद सुगंध समीर सच्यौ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग राधा संग मोहन सरस सुधंग नच्यौ ॥ उरप तिरप गति लेत सुलप अति बिथकित लज्जित

मदन लच्यौ ॥२॥ कोक कला संगीत गीत रस रूप मधुरता गुणन वच्यौ ॥ भृकुटी बिलास हास रस बरखत ब्यास परम सुख नयन जच्यौ ॥३॥

★ राग केदारो ★ आज नंदनंद मुखचंद बन राजें ॥ जटित मणि मुकुट और सुभग कुंडल चटक बसन पट पीत भ्रुव मटक छाजैं ॥१॥ रासमें रसिक वर ललित संगीत स्वर मधुर मुरली मृदंग ताल बाजैं ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरन क्वणित नूपुर चरण सुनत भई घोष त्रिय थकित आजैं ॥२॥

★ राग केदारो ★ श्रीवृषभान नंदिनी नाचत लालन गिरिधरन संग लाग डाट उरप तिरप रासरंग राख्यौ ॥ झपताल मिल्यौ राग केदारो सप्तस्वरन अवघर वर सुघर तान गान रंग राख्यौ ॥१॥ पाई सुख सुरति सिद्धि भरत काम बिबिध रिद्धि अभिदल नवसत सुहाग हुलास रंगराख्यौ ॥ बनिता शतयूथके पीय निरख थक्यौ सघन चंद बलिहारी कृष्णदास सुयश रंग राख्यौ ॥२॥

★ राग केदारो ★ अद्भुत नटभेख धरें यमुनातट श्यामसुंदर गुणनिधान गिरिवरधर रास रंग नाचें ॥ युवतीयूथ संग लियें गावत केदारो राग अव घर वर वेणु मधुर मधुर सप्त स्वरन साचें ॥१॥ उरप तिरप लागडाट ततत्तत तत थेई थेई उघटत शब्दावली गति भेद कोऊ न बाँचें ॥ चत्रभुजप्रभु बनविलास मोहे सब सुर अकाश निरखथक्यौ चंदको रथ पश्चिम नहीं खाँचें ॥२॥

★ राग केदारो ★ रासरंग नृत्यमान अद्भुत गति लेत तान यमुनापुलिन परम रवनिगिरिवरधर राजें ॥ बनिता शतयुथ मंडल गंडन पर झलकें कुंडल गावत केदारो राग सप्तस्वरन साजें ॥१॥ दोऊ श्यामा मध्य मोहन रचित मरकतमणि कंचनखचित शिथिल वसन कटितटतें अपुने हाथ समाजें ॥ कुंभनदास नवरंग सकल कला गुण निधान खरजादिक लेत तान अंगही अंग बिराजें ॥२॥

★ राग केदारो ★ नाचत लाड़िली लालन रास में सुनौ हो सहेली रंग रह्यौ ॥ ताही समय रसरास सहायक सुखद मलयसौ पवन बह्यौ ॥१॥ उडुपति किरण सुरंजित कानन नवकुसुमावलि तिमिर दह्यौ ॥ युवती मंडल मध्य श्याम घन राग वारि निधि वेणु गह्यौ ॥२॥ बोलत तोहि सुरत मिलबनकौं उठ चल मान किन

मेरौ कह्यौ ॥ कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर तेरौ बिलंब नहीं जात सह्यौ ॥३॥

★ राग केदारो ★ भूषण सजे सामल अंग ॥ लाड़िली वृषभानजूकी लिये हैं हरि संग ॥१॥ रच्यौ रास बिलास कानन रसिक वर नवरंग ॥ कला नटवर धरत जब कछु देख लज्जित अनंग ॥२॥ बेणु ध्वनि सुनि थकित मुनिगण गति लेत थेई थेईथुंग ॥ श्रीविट्ठलगिरिधरनकी बलि जाऊँ ललित त्रिभंग ॥३॥

★ राग केदारो ★ आज गोपाल रच्यौ रास देखत होत जिय हुलास नाचत वृषभान सुता संग रंग भीने ॥ गिडगिड तक थुंगथुंग ततततततत थेई थेई थेई गावत केदारो राग सरस तान लीने ॥१॥ फुले बहुभाँत फूले सुभग पुलिन यमुना कूल मलय पवन बहत गगन उडुपति गति छीने ॥ गोविंदप्रभु करत केलि भामिनी रससिंधु झे जयजय सुर शब्द कहत आनंद रसभीने ॥२॥

★ राग केदारो ★ रास रच्यौ मोहनलाल शोभित सँग व्रजकी बाल वृंदावन यमुनातट रसिक रसिकनी ॥ चरण गति अनेक भाँत कटि की लचक मध्य चमकत श्रुति भेद ग्रीवा लटक भ्रूह मटकनी ॥१॥ नयन कटाक्ष हावभाव उपजत अति रंग चाव सकल क्रला निपुण सरस कामरंगिनी ॥ गान करत कुंभनदास गिरिधर मुख मंद हास थकित भये युवती यूथ प्रेमफंदिनी ॥२॥

★ राग केदारो ★ आज सखी श्यामा संग श्रीराधा नवलकुँवरि करत हैं बिहार दोऊ यमुना जलकेलि ॥ हावभाव ग्रीव लटक नयनसैन भ्रौंह मटक हासरंग प्रेम उमग ग्रीवा भुज मेलि ॥१॥ अंतरंग सखी ठाढ़ी देखत अति तृषा बाढ़ी बारबार कहत आज नीकौ बन्यौ खेल ॥ चत्रभुज प्रभु बन बिलास उपजत है अति हुलास श्रीगिरिधर गजराज बाहु युवती दलपेल ॥२॥

★ राग केदारो ★ गावत गिरिधरन संग परम मुदित रास रंग उरप तिरप लेत तान नागर नागरी ॥ सारीगम पध निगमप धनी उघटत गति सप्तसुरन लेत लाग डाट सुलप अति उजागरी ॥१॥ चर्बित तांबूल देत ध्रुवताल गतिहीं लेत गिडिगिडिगिडि थुंगथुंग अलाग लागरी ॥ सुरतिकेल रतिबिलास बलि बलि बलि कुंभनदास श्रीराधानंदनंदन बर सुहागरी ॥२॥

★ राग केदारो ★ प्यारीतू मोहनलाल रिझावत ।। मधुर मधुर तानन गावत सुख समुह बढ़ावत ।।१।। तेरे गुनरूप की सम नाँहि कोउ आवै री उपमा कौं तुहि अंत न पावत ।। जब तू भृकुटी भंग करत कोटिक काम लजावत ।।२।। कोक कला संगीत निपुन उघटत त्रिवट गति तत थै ततथै थै थै मृदंग बजावत।। सूरदास मदनमोहन रिझि दीयौ है अपने यौं बन वृंदा की रानी कहावत ।।३।।

★ राग केदारो ★ चलौ नवनागरी रूप गुन आगरी रास ठान्यौ लाल सुभग जमुना तीर ।। साज भूषन सकल मुदित करि मुख कमल बिबिध सौरभ मिल्यौ पहरि दक्षिण चीर ।।१।। अधर मुरली लसै प्रान तो में बसें नहिं भावै कछु बढ़ी अति समर पीर ।। जाय मिलि बिमल मति ठाठ सब अगम गति ज्यों जीय सुख लेहु मीन पावै नीर ।।२।। कटि जटित पीतपट सीस लटकत मुकुट क्वणित नूपुर मधुप हंस कोकिल कीर ।। दास कुंभनप्रभु सप्तसुरसों मिले गावत केदारो राग गिरिवरधरन धीर ।।३।।

★ राग केदारो ★ ए दोऊ निर्तत लालन गिरिधारी प्यारी ।। जोरी भली बनी एक सारी उपजत छबि न्यारी न्यारी ।। किंकिनी नूपुर बाजैं झनकक झनकारी प्यारी ।।१।। ताल भेद जात तारी उरप तिरप गति न्यारी गावत्त केदारो राग सब सुधि बिसारी ।। प्यारी रीझ भरत अँकवारी चितत्तैं न टरत टारी जुगल रसिक पर कृष्णदास बलिहारी ।।२।।

★ राग केदारो ★ नंदनंदन सुघरराय मोहन बंसी बजाई सारीगम पधनी सप्त सुरन मिलि गावै ।। अति अनाधाति संगीत सरस सुर नीके अवघर तान मिलावै ।।१।। सुर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुन लघु गुरु तरजति पुलक भेद मृदंग बजावै ।। सूरदार मदन मोहन सकल कलागुन प्रवीन आपुन रिझरिझावै ।।२।।

★ राग केदारो ★ राजत निर्तत पीय संग सुंदर जई ।। मंडल के बीच बीच भेख धरत तई ।। व्रज बिलास दृग बिलास भेद करत कई ।। निरखि यमुना चंद थक्यौ अनिलपद दई ।।२।। गिरिधर संगीत निपुन भेद काछ कछई ।। उरप तिरप लेत सुलप संचन सुरसई ।।३।। धोंधीके प्रभु नट नागर अद्भुत गति

लई ।। सूर सुरपति व्योंम थाके सुखद बेलि बई ।।४।।

★ राग केदारो ★ राधिका रसिक गोपाल की भाँवती ।। गहे कर तल कमल केलि लीला सहित सेज सुख रति रंग लटकती आवती ।।१।। सघन वृंदाबिपिन तरुन तनिया तीर सरदकौ चंद्रमा सरस प्रफुलामती ।। पहरि आभरन चीर सरस सुकुमार तन सौरभ रुचिर पाइँन लगावती ।।२।। भ्रौंह नृत्यत मदनरूप जोबन सिखर सिंधु गोवरधनधरन मन उपजावती ।। कहै कृष्णदास प्रभु चतुर तें चतुर अति संग मिलि सुरति पीय मधुर कल गावती ।।३।।

★ राग केदारो ★ घोष सुंदरी नीके कल गावै ।। बाम बाहु धरि रसिक कुँवर के मुरली बजावै नवतान सुनावै ।।१।। हरि मूरति पद सुरस चाखत चल अंगुलीदल गति उपजावै ।। गौर स्याम जोरी मनमोहन रूप कांति रतिपति ही लजावै ।।२।। कमलनैंन मृगनैंनी अंचल तरल मानबस प्रेम बढ़ावै ।। गिरिधर पीय प्यारी की पदरज कृष्णदास न्यौछावर पावै ।।३।।

★ राग केदारो ★ शरद उजियारी कैसी नीकी लागै निकस कुंजतें ठाढ़े ।। बरन बरन फूल फूलनके आभूषण सोंधे भींजे बागे ।।१।। गावत राग रागिनिसों मिलि मन मिल्यौ जति केदारो रागे ।। हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कछुक रजनी जागे ।।२।।

★ राग केदारो ★ आज तन बहारे औरही चटक ।। शोभा देत सरस सुंदर यह चलन हंस गति लटक ।।१।। स्याम सरोज नैंन तेरे खटपद पीयरौ रंग टक ।। त्रखित भये अंग अंग फूली गई बिरह की खटक ।।२।। कुंजभवनमें चली निडर तज लोक लाज की अटक ।। चत्रभुज प्रभु गिरिधर नागरसों मिलवन रति रन कटक ।।३।।

★ राग केदारो ★ केलि करैं प्यारी पिय पौढ़े लखि चाँदनी में नेहसौ लग गये जोबन के जोस में ।। अँगिया दरक गई मानों प्रात देखबेकौं चौंच काढ़ि चक्रवाक कामतर रोस में ।।१।। आरससों मोरी बाँह दोऊ कुच गहे पिय रतिके खिलौना मानों ढाँपि दीये ओसमें ।। रूपके सरोबरमें नंददास देखे आली चकईके छौनाँ बैठे कंचन के कोस में ।।२।।

★ राग केदारो ★ निर्तत गोपाल लाल अद्‌भुत नट भेष धरैं गान करत ब्रजसुंदरि रास रंगिनी ।। अति कोमल बन्यौ कूल बहुभाँति फूलेफूल जल स्थिर रहत तहाँ तट तरंगिनी ।।१।। सरद सर्वरी छिटकत मधुप जूथ सुर मिलाबत बिहँसत पीय संग चपल दृष्टि कुरंगिनी ।। गिडगिडता गिडगिडता तांतां कटि तकिट तारावली झंझंझननननन बाजे मृदंगिनी ।।२।। ततथेई ततथेई उचारत उरप तिरप टूटे हारि बिलसत पीय बाम भाग कुचउतंगिनी ।। कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेष राधिका रसिक कंठ लाय लई सुख देत अंगिनी ।।३।।

★ राग केदारो ★ नाचत वृषभान कुमरि गिरिवरधर लाल संग जमुना पुलिन सरद रैन रास रंग रेई ।। उरप तिरप तानमान परम मुदित करत गान गिडगिडता गिडिगिडि तक थुंग थुंग थेई ।।१।। दां दां दननन मृदंग तितीकट तारावलि तनन तनन नननन आन आन लेई ।। धिकतां धिकतां धिधीकट धीकीटतक थुंग गावत केदारो राग अद्‌भुत सुरसेई ।।२।। ब्रह्मादिक शिव सुजान मोहे सब सुर बिमान निरख थक्यौ सघन चंद उडुगण पग देई ।। धौंधीके प्रभु नट नागर राधिका के कंठ बाहु कोक कला निपुन नागरि गिरिधर सुख देई ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ बनमें रास रच्यौ बनबारी ।। यमुनापुलिन मल्लिका फूली शरदरैन उजियारी ।।१।। मंडल बीच श्यामघन सुंदर राजत गोप कुमारी ।। प्रकटत कला अनेक रूप तिहिं अवसर लाल बिहारी ।।२।। शीश मुकुट कुंडल की झलकन अलक बनी घुँघरारी ।। कंबु कंठ ग्रीवा की डोलन छीन लंक लैहै कारी ।।३।। धायधाय झपटत उर लपटत उरप तिरप गति न्यारी ।। नृत्यत हँसत मयूर मंडली लागत शोभा भारी ।।४।। बेणुनाद ध्वनि सुन सुरनर मुनि तनकी दशा बिसारी।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल की बानिक पर बलिहारी ।।५।।

★ राग बिहागरो ★नृत्यत रास में पिय प्यारी ।। यमुना पुलिन सुभग वृंदाबन शरदरैन उजियारी ।।१।। बाजत ताल मृदंग झाँझ और सप्तस्वरन गति न्यारी।। उरप तिरप गति लेत सुलप अति लाड़िली लाल बिहारी ।।२।। जयजय कहि बरखत कुसुमावलि सुरन सहित सुरनारी ।। श्रीविठ्ठलगिरिधरनलाल पर सर्वसु डारत बारी ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ रास रच्यौ बंसीबट के तट ।। नृत्यत प्रेम भरे पिय प्यारी चंद बदन पर छूट रही लट ।।१।। सुंदरश्याम सुभग कर मुरली अधर धर उघटत थेई थेई रट ।। मोर मुकुट कुंडल की डोलन मुरझि परच्यौ लखि मेंन महाभट ।।२।। व्रजबनिता छबि देख बिमोहीं बार देत आभूषण औरे पट ।। लीलाललित महामुनि मोहे श्रीविट्ठलगिरिधर नागर नट ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ खेलत रास रसिक रसनागर ।। मंडित नव नागरी निकर वर रूपकौ आगर ।।१।। बिकसत बन बनिता राजत जानों शरद अमल ।। राका सुभग सरोवर मानों फूले हैं कमल ।।२।। नबल किशोर सुंदर सांबल अंग कंचन तन व्रजबाला ।। मानों कंचनमणि मर्कतमणि वृंदाबन पैहेरी माला ।।३।। या छबिकी उपमा कहिबे कों ऐसौ कौन पढ़्यौ है ।। नंददास प्रभुकौ कौतुक लखि कामकों काम बढ्यौ है ।।४।।

★ राग बिहागरो ★ नवकिशोर नवकिशोरी बनी है बिचित्र जोरी शोभा सिंधु मदनमोहन रूपरास भामिनी ।। राजत तन गौर श्याम प्यारी पिय भाग बाम नवघन गिरिधरन अंगअंग मानों दामिनी ।।१।। पेहैरें पट पीयरौ भूषण भूषित मनोहर अंग गजवर गोपाल नागर नागरी गजगामिनी ।। दास चत्रभुज दंपति उपमाकों नाहिं कोउ काम मूरति कमल लोचन मृगनयनी कामिनी ।।२।।

★ राग बिहागरो ★ मानों माई घनघन अंतर दामिनी ।। घन दामिनी दामिनीघन अंतर शोभित हरि व्रजभामिनी ।।१।। यमुना पुलिन मल्लिका मुकुलित शरद सुहाई यामिनी ।। सुंदर शशि गुण रूप राशि निधि आनँद मन विश्रामिनी ।।२।। रच्यौ रास मिल रसिकराय सौं मुदित भई व्रजभामिनी ।। रूपनिधान श्यामघन सुंदर अंग अंग अभिरामिनी ।।३।। खंजन मीन मयूर हंस पिक भई भेद गज गामिनी ।। कौतुक घने सूर नागर सँग काम विमोह्यौ कामिनी ।।४।।

★ राग बिहागरो ★ पियकौं नचबन सिखवत प्यारी ।। वृंदावन में रास रच्यौ है शरदरैन उजियारी ।।१।। तालमृदंग उपंग बजावत अति प्रबीन ललिता रीं ।।

रूपभरी गुण हाथ छरी लियें डरपत लालबिहारी ।।२।। बीणा बेणु नूपुर ध्वनि बाजत खग मृग बुद्धि बिसारी ।। ब्यास स्वामिनी की छबि निरखत रीझ देत करतारी ।।३।।

★ राग बिहागरो ★ स्यामा स्याम रास मधि नायक व्रज जुवती जूथ सहायक।। एक ह्वै क्रम बाँह जोरी रच्यौ रास मंडल निर्तत मधि अइत सुंदर सुखदायक ।।१।। जैसी बिधि कहियत ग्रंथन की संगीत मध्य तातें गति अधिक लेत बीना बैंन सहायक ।। प्रभु कल्याण गिरिधर श्रीराधा निरख निरख त्रैताप दूर करत मनसा बाचा कायक ।।२।।

★ राग केदारो ★ तू गोपाल बोली चल बेग मृगलोचनी नटवर गिरिराजधरन मुदित रासरंगे ।। सप्तस्वरन बेणुनाद अद्भुत झपताल मिल्यौ गावत केदारो राग युवति यूथ संगे ।।१।। सुरत दैनकौं कुमारि नागरी बिचित्र नारि और नाँही त्रिभुवनमें मोहनी सुधंगे ।। नाचत पिय मुरजादिक लेत तान तत थेई नाहिंन रस सच्यौ जात बीना उपंगे ।।२।। उरप तिरप लेत मान निरख थके सुर विमान सघन चंद बिथकित भयौ रूप मान भंगे ।। कृष्णदास स्वामिनी मनोज भेख राधिका रसिक कंठ लाय लई सुखद अंगअंगे ।।२।।

★ राग केदारो ★ मिलहिं नागर नबल गिरिधर सुजानकौं ।। सुंदरी कनक तन साजि भूषन बसन कुंज के महल चल बेग तज मान कौं ।।१।। तरनि तनया तीर परम रमनीय बन बिहर संग करहिं बस सब गुन निधानकौं ।। राग केदार सुन श्रवण बड़भागिनी निरख नटवर रसिक मुरली कल गानकौं ।।२।। चत्रभुज दास प्रभु चतुर चूड़ामणि करत अभिलाष तुव अधर मधु पानकौं ।। अर्पि सरबस कुसुम सेज सखी बैठ तू भेंट सुंदर सुभग अंगअंग सुठानकौं ।।३।।

★ राग केदारो ★ उडुपति खसित पश्चिम देस ।। मान तिमिर न घट्यौ तेरौ कुटिल काम बिसेस ।।१।। लाल गिरिधर लता ग्रह स्थित मदन मोहन बेस ।। आकुलता तुव संग कारन समन मनमथ सेस ।।२।। कुनित पद मंजीर धुनि सुनि जीत लै सुरतेज ।। कृष्णदास निनाथ भजि तजि बक्रता लवलेस ।।३।।

★ राग केदारो ★ दोऊ मिलि करत भामती बतियाँ ।। मदनगोपाल कुँबरि राधेकैं नखमनि अंक लिखत उर छतियाँ ।।१।। तैसीय छिटक रही उजियारी पून्यौ चंद शरद की रतियाँ ।। केलि रूपिनी यमुना श्रीभट वृंदावन फूल्यौ बहु भतियाँ ।।२।।

★ राग केदारो ★ झुक रही नींद श्यामके नैंनन ।। चिबुक उठाय पिया मुख निरखत शोभा कही न जाय कछु बैनन ।।१।। आरसभरी अकुलाय अंक भर हियौ सिंचबत चैनन ।। सूर स्वामिनी चंद उजियारे सुख समुद्र बढ्यौ मैनन ।।२।।

★ राग केदारो ★ पौढ़े रंग महल गोविंद ।। श्रीराधिका संग सरद रजनी उदित पून्यौ चंद ।।१।। बिबिध चित्र बिचित्र चित्रित कोटि कोटिक बंद ।। निरख निरख बिलास बिलसत दंपती रसछंद ।।२।। मलय चंदन अंग लेपन परस्पर आनंद ।। कुसुम बीजना प्यार ढोरत सजनी परमानंद ।।२।।

★ राग बिभास ★ शरद के दूसरे दिन मंगलामें सगबगे से अलग प्रात रास वलित ललित गति लटकत ब्रजराज आवें मुकुट डोलनी ।। घूमत नैंन सरसजाति अरुन रगमगे अरसात मुख जृंभात श्रमजल कण रस झकोलनी ।।१।। उरसि चित्र नखहिं घात जात मदन किरन भाँत डगमगात चरन मुक्त माल लोलनी ।। काछनी कछनी रसाल उपरैना फरहरात बल बल बल कृष्णदास मृदुहास बोलनी

★ राग सारंग ★ एरी यहाँ श्री वृंदावनरंग ।। सा री ग म प ध नि अलाप करत उपजत अवधर तानतरंग ।।१।। निर्तत अतजत लेत ग्रग्रततत धिकट धिलांग द्रुम बाजत मृदंग ।। गोविंदप्रभुकेजु अंगअंगपर वारफेर डारों कोटि अनंग ।।२।।

श्री वर्षोत्सव के कीर्तन
प्रथम भाग समाप्त